In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

॥ श्री ॥

हरितक्यादिनिघंट.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गोरधन बाइन्डिंग हाउस,
कूंचा चेलान,खारीबावली,देहली
Gordhan Binding House.
Kucha Chelan,
Khari Bsoli, DELHI.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

8:14

पं० जयनारायण कपूरिया वैद्य
६०, गाँधी गली, देहली-६

अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन
श्री शंकर दाजी शास्त्री पदे स्मारक पुस्तकालय

आयुर्वेद विद्यापीठ महाविद्यालय
दिल्ली

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

136

पं० जयनारायण कपूरिया वैद्य
६०, गाँधी गली, देहली-६

श्रीः ।

भावमिश्रविरचित भावप्रकाशान्तर्गत

हरीतक्यादिनिघण्ट

भाषाटीकासहित.

पं० जयनारायण कपूरिया वैद्य
६०, गाँधी गली, देहली-६

श्रीसुमेरपुरनिवासी शास्त्री रघुवंशशर्मा आवसथीद्वारा

सानुवाद परिशोधित.

All India Ayurvedic Congress,
"Dhanwantari Bhavan,"
Road 66, Punjabi Bagh; New Delhi-1100..

इसे

भागीरथात्मज हरिप्रसादजीने

बंबईमें,

" जगदीश्वर " छापखानेमें छपाके प्रसिद्ध किया.

आवृत्ति २ री.

पं० जयनारायण कपूरिया वैद्य
६०, गाँधी गली, देहली-६

शक १८३२, संवत् १९६७.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Vaidyaraj Zandu Bhatji
National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
LX
15 N10

इसके सबप्रकारके हक प्रसिद्धकर्तानें स्वाधीन रक्खे हैं.

000031

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विज्ञप्ति ।

प्रकट हो कि यह **हरीतक्यादिनिघंट** नामक ग्रंथ अखिल निघंटोंमें उत्तम है. सब चिकित्सा करनेवाले वैद्यलोग अनेक प्रकारके औषध आदि उपचार करते हैं, परंतु उनको अनेकविध ओषधि, वनस्पति, धातु, रस इत्यादिकोंका भाषामें यथार्थ ज्ञान होनेमें अत्यंत प्रयास पड़ता है. इस आपत्तिको दूर करनेवाला यह ग्रंथ है. इसमें सब विषयोंका अच्छे प्रकारसे विवरण किया है, इसलिये प्राय: बहुतसे बड़े बड़े विद्वज्जनोंको इस ग्रंथके संग्रह करनेकी अत्यंत अभिलाषा रहती है. क्यों कि इस ग्रंथमें बहुत ओषधियोंकी जाति, वर्ण, देश, उत्पत्ति इत्यादि उपयुक्त विषय बहुत प्रयत्नसे शोधकरके विशेषत: लिखे गये हैं, इससे जब किसी प्रसंगमें किसीको किसी ओषधीके ज्ञानकी आवश्यकता पड़ेगी, तब जैसा इस ग्रंथसे औषधि, वनस्पति आदियोंका यथार्थ स्वरूप मालूम पड़ेगा वैसा अन्य ग्रंथोंसे नहीं पड़ता है, यह बात सत्य है. यह ग्रंथ श्रीमान् भावमिश्रप्रणीत भावप्रकाशान्तर्गत है. परंतु ऐसा सर्वोपयुक्त ग्रंथ अबतक छापके प्रसिद्ध हुआ नहीं, अत: प्रसिद्ध करनेकी अत्यंत आवश्यकता है ऐसा अनेक वैद्यवरोंकी संमति लेकर इस सर्वसुखदायक ग्रंथकी श्रीयुत पंडित **रंगीलाल** तथा **श्रीजगन्नाथ** शास्त्रीजीने व्रजभाषामें टीका बनायी थी. वह उपरि लिखित टीकासहित ग्रंथ पंडितोंको साद्यंत दिखाय, उसपर उनकी अच्छेप्रकार संमति लेकर, मैंने टीकाकारसे हक्कसहित लेकर विद्वानोंसे उसका शोधन करवाके छापके प्रसिद्ध किया । अब सबको सानुनय विज्ञापना यह है कि इस नवीन टीकामें यदि अशुद्ध आदि दोष क्वचित् स्थलविशेषमें रहगया हो तो उसपरकी दोषदृष्टिको त्यागकर गुणदृष्टिवाले, ग्रंथ करनेके परिश्रम और शोधनके प्रयासको जाननेवाले, सारग्राही, विद्वान् कृपादृष्टिसे उसमेंसे दोष निकाल कर अपने उदार आश्रयके दानसे मेरा परिश्रम सफल करके ग्रंथका आदर करनेकी कृपा करें । यही अनेकश: प्रार्थना है.

हरिप्रसाद भगीरथ.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्वितीयावृत्ति-विज्ञप्ति ।

इस परमोपयोगी ग्रंथपर विद्वानोंका अतिशय प्रेम देखकर प्रकाशक महाशयके अनुरोधसे मैंने इस द्वितीयावृत्तिमें मूलाशुद्धि और अर्थाशुद्धि आदि दोषोंको दूर करते हुए पूर्वानुवादको शुद्ध सरल हिन्दीभाषामें परिवर्तित कर यथोचित विषयविभागपूर्वक अनेक नव्य सुयोजनाओंसे सुभूषित किया है. यद्यपि यह अनुवाद नये सिरेसे लिखा नवीन जाता तो अत्युत्तम होता तथापि प्रकाशककी तादृश इच्छा न होनेसे पूर्वानुवादकोही अन्यरचित अनुवादमें शोधिनपद्धतिके अनुसार शोधकद्वारा जितना शोधन हो सकता है उतना करते हुए भाषासौन्दर्यकी ओर भी यथासंभव लक्ष्य दिया है. किं बहुना, अबकी वार इस नूतनाविष्कारमें ऐसा परिष्कार किया गया है कि जिससे इस अनुवादके सर्व साधारणको असाधारण उपयोगी होनेमें अब किसी प्रकारकी त्रुटि नहीं रही. आशा है कि सहृदय पाठकगण इसके लोकोत्तर गुणोंकी ओर दृष्टि देते हुए पूर्ववत् किंवा उससे भी कुछ अधिक अपना उदार आश्रय प्रदान कर मेरे अपार परिश्रमको सफल करने और प्रकाशकके प्रशस्त उत्साहको परिवर्द्धित करनेमें कोई कसर नहीं रक्खेंगे. उपसंहारमें समस्त सहृदय महोदयोंसे सानुनय निवेदन यह है कि मनुष्यस्वभावानुसार अक्षरयोजकादिकोंके प्रमादसे यदि भूल रहगई हो तो उसे सदयहृदय होकर क्षमा करें.

निवेदक—

शास्त्री रघुवंशशर्मा.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

६०, गाँधी गली, देहली-६

अथ

हरीतक्यादिनिघण्टे

विषयानुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठ.
हरीतक्यादिवर्गः ।	
हरीतकीविषे प्रश्न	१
हरीतकीके उत्पत्तिप्रकार	,,
उसके नाम....	,,
उसके सात भेद	२
दूसरे रेखाक्रमसे भेद....	,,
हरीतकीके प्रयोग करनेके प्रकार	,,
हरीतकीके अनेकविध भेद	३
हरीतकीके स्वभाव.	४
उसके अवयवसे भेद	५
चर्वण आदिके गुण	,,
लवणादियोगसे गुणविशेष	६
हरीतकीके सेवनका निषेध	,,
बहेड़ेके नाम और गुण	,,
आमलकीके नाम और गुण	७
[illegible]लाका लक्षण और गुण	,,
[illegible]ठके नाम और गुण....	८
अदरखके नाम और गुण	,,
पिप्पलीके नाम और गुण	९
मरिचके नाम और गुण	१०
त्रिकटुके नाम लक्षण और गुण, ...	११
पिप्पलीमूलके नाम और गुण	,,
चतुरूषणका लक्षण और गुण	१२
चव्यके नाम और गुण	,,
गजपिप्पलीके नाम और गुण....	,,
चित्रकके नाम और गुण	,,
पंचकोलका लक्षण और गुण....	१३
षडूषणके लक्षण और गुण	,,
यवानीके नाम और गुण	१४
[illegible] और गुण	,,
खुरासानी अजमायनके ना[illegible] और गुण	१५
सफेद जीरा, काला जीरा और कलाजीके नाम तथा गुण	,,
धान्यकके नाम और गुण	१६
शतपुष्पाके नाम और गुण	,,
मेथी और वनमेथीके नाम और गुण	१७
चंद्रसूरके नाम और गुण	१८
मेथिकाचतुष्टयके गुण	,,
हिङ्गुके नाम और गुण....	,,
बचके नाम और गुण	१९
खुरासानी बचके नाम और गुण	,,
कुलींजनके नाम और गुण	,,
अन्य सुगंधा कुलींजनके नाम और गुण	२०
चोबचीनीके नाम और गुण	,,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय.	पृष्ठ.
हपुषाके नाम और गुण	,,
बायबिडंगके नाम और गुण	२१
तुंबुरुफलके लक्षण, नाम और गुण	,,
वंशलोचनके नाम और गुण	२२
अन्यच्च	,,
समुद्रफेनके नाम और गुण	,,
अष्टवर्गके लक्षण और गुण	२३
जीवक और ऋषभककी उत्पत्ति, नाम और गुण	,,
मेदा और महामेदाकी उत्पत्ति, लक्षण और नाम	२४
अन्यच्च	२५
दोनों मेदाओंके गुण....	,,
काकोली तथा क्षीरकाकोलीकी उत्पत्ति	,,
तथा लक्षण	,,
काकोली और क्षीरकाकोलीके नाम और गुण	२६
ऋद्धिवृद्धिके नाम और गुण	,,
उसका प्रतिनिधि	२७
मधुयष्टी[illegible] नाम और गुण	२८
[illegible]पिल्लके नाम और गुण	,,
अमलतासके नाम और गुण	२९
कुटकीके नाम और गुण	,,
किराततिक्तके नाम और गुण	३०
इंद्रयवके नाम और गुण	,,
मयनफलके नाम और गुण	३१
रास्नाके नाम और गुण	,,
नाकुलीके नाम और गुण	३२
काकमाची (किमाच) के नाम और गुण	,,
तेजवतीके नाम और गुण	३३
कटभी (मालकांगनी)के नाम और गुण	,,
कुष्ठ (कूट) के नाम और गुण	,,

विषय.	पृष्ठ.
पुष्करमूलके नाम और गुण....	३४
हेमाह्वा (चोक) के नाम और गुण....	,,
शृंगी (कांकड़ाशिंगी) के नाम और गुण	,,
कट्फल (कायफल) के नाम और गुण	३५
भार्ङ्गीके नाम और गुण	,,
पाषाणभेदके नाम और गुण	३६
धातकी (धावई) के नाम और गुण	,,
मंजिष्ठा (मजीठ) के नाम और गुण	,,
कुसुंभके नाम और गुण	३७
लाक्षा (लाह) के नाम और गुण	,,
ब्राह्मणीके नाम और गुण	,,
हरिद्रा (हलदी) के नाम और गुण	३८
कर्पूरहलदीके नाम और गुण....	,,
वनहलदीके नाम और गुण	३८
दारुहलदीके नाम और गुग	३९
रसांजन ([illegible]) के नाम और गुण	,,
बाकुचीके नाम और गुण	,,
चक्रमर्दके (चकवँड़) के नाम और गुण	४०
अतिविषाके नाम और गुण	,,
लोध्र (लोध) के नाम और गुण	,,
लशुनके नाम और गुण	४१
पलांडु (प्याज)के नाम और गुण	४३
भल्लातक (भिलावां) के नाम और गुण	,,
भंगा (भांग) के नाम और गुण	४४
खसफल (पोस्त) के नाम और गुण	,,
आफूक (अफीम) के नाम और गुण	४५
खसखसके नाम और गुण	,,
सैंधवके नाम और गुण	,,
सांभरनमकके नाम और गुण....	४६
पांगानमकके नाम और गुण	,,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय.	पृष्ठ.
बिडनमकके नाम और गुण	,,
सौवर्चल (सोंचर) नमकके नाम और गुण	४७
कचलोन नमकके नाम और गुण	,,
चणकक्षारनमकके नाम और गुण	,,
जवाखारके नाम और गुण	४८
सौभाग्य (सुहागा) के नाम और गुण	,,
क्षारद्वय तथा क्षारत्रयके नाम और गुण	४९
क्षाराष्टकके नाम और गुण	,,
चुक्र (चोक) के नाम और गुण	,,
कर्पूरादिवर्गः ।	
कपूरके नाम और गुण	५०
चीनी कपूरके नाम और गुण....	५०
कस्तूरीके नाम और गुण	५१
मुश्कदानाके नाम और गुण	,,
गंधमार्जार (जवादि कस्तूरी) के नाम और गुण	,,
चंदनके नाम और गुण	५२
पीतचंदनके नाम और गुण	,,
रक्तचंदनके नाम और गुण	५३
पतंगके नाम और गुण	,,
अगरुके नाम और गुण	,,
देवदारुके नाम और गुण	५४
धूपसरल (देवदारु) के नाम और गुण	,,
तगरके नाम और गुण	५५
पद्माकके नाम और गुण	,,
गुग्गुलुके नाम और गुण	,,
सरलनिर्य्यासगुग्गुलके नाम और गुण	५७
राळके नाम और गुण	५८
कुंदुरु सुगंधिद्रव्यशल्लकीनिर्यासके नाम और गुण	,,
शिलारसके नाम और गुण	,,

विषय.	पृष्ठ.
जायफलके नाम और गुण	५९
जावित्रीके नाम और गुण	,,
लवंगके नाम और गुण	६०
बड़ी इलायचीके नाम और गुण	,,
गुजराती इलायचीके नाम और गुण	,,
त्वक्पत्र (तज) के नाम और गुण	६१
दालचिनीके नाम और गुण	,,
तमालपत्रके नाम और गुण	,,
नागकेशरके नाम और गुण	६२
त्रिजात चतुर्जातके नाम और गुण	,,
कुंकुम(केशर)की उत्पत्तिके स्थान, नाम और गुण	,,
गोरोचनाके नाम और गुण	६३
नख(नखी) के नाम और गुण	६४
सुगंधबालाके नाम और गुण	,,
वीरणके नाम और गुण	,,
खशके नाम और गुण	६५
जटामांसीके नाम और गुण	,,
शैलेय (छरीला)के नाम और गुण	,,
नागरमोथाके नाम और गुण	६६
कचूरके नाम और गुण	,,
एकांगीके नाम और गुण	६७
गंधपलाशीके नाम और गुण....	,,
प्रियंगुके नाम और गुण	,,
रेणुकाके नाम और गुण	६८
ग्रंथिपर्णके नाम और गुण	,,
स्थौणेय (थुनेर) के नाम और गुण	६९
ग्रंथिपर्णके दूसरे भेदके नाम और गुण	,,
तालीसपत्रके नाम और गुण	७०
कंकोलके नाम और गुण	,,
गंधकोकिलाके नाम और गुण....	,,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय.	पृष्ठ.
ग्रामज्जकके नाम और गुण	७१
एलबालुकके नाम और गुण	,,
जलमोथाके नाम और गुण	७२
स्पृक्का सुगंधद्रव्यके नाम आरै गुण	,,
पर्पटी (पद्मावती) के नाम और गुण	
नलिकाके नाम और गुण	७३
प्रपौंडरीकके नाम और गुण	,,
गुडूच्यादिवर्गः।	
गुडूचीकी उत्पत्ति तथा नाम और गुण	७४
नागरपानके नाम और गुण	७५
बेलफलके नाम और गुण	७६
गंभारीके नाम और गुण	,,
पाण्डरी कंठपांडरीके नाम और गुण	७७
अँगेथुके नाम और गुण	७८
श्योनाक (सोनापाठा)के नाम और गुण	,,
बृहत्पञ्चमूलेक नाम और गुण....	७९
शालिपर्णीके नाम और गुण	,,
पृश्निपर्णी (पिठवन) के नाम और गुण	,,
वार्ताकी (बड़ी कटेरी) के नाम और गुण	८०
कंटकारी (भटकटैया) के नाम और गुण	,,
बृहती (कटेली) के फलके गुण	८१
गोक्षुर (गोखरू) के नाम और गुण....	,,
लघुपंचमूललक्षण तथा गुण	८२
दशमूललक्षण और गुण	,,
जीवंतीके नाम और गुण	,,
मुद्गपर्णी (वनमूंग) के नाम और गुण	८३
माषपर्णीके नाम और गुण	,,
जीवनीयगणके लक्षण और गुण	८४
शुक्ल और लाल एरंडके नाम और गुण	,,
शुक्ल अर्कके नाम और गुण	८५
सेहुंडके नाम और गुण....	८६
सेहुंडका भेद शातलाके नाम और गुण	८७
शुक्लपुष्पी (कलिहारी) के नाम और गुण	,,
शुभ्र और लाल कनेरके नाम और गुण	८८
धतूराके नाम और गुण....	,,
वासक (अरूसा) के नाम और गुण	८९
पित्तपापड़ाके नाम नाम और गुण	,,
निंबके नाम और गुण	,,
ब्रकायनके नाम और गुण	९०
जलनीमके नाम और गुण	९१
कचनारके नाम और गुण	९१
सहँजनाके नाम और गुण	९२
विष्णुक्रान्ताके नाम और गुण....	,,
सिंदुवार (संभालू) के नाम और गुण	,,
कुटज (कुरैया) के नाम और गुण	९४
करंजद्वयके नाम और गुण	,,
अरारिके नाम और गुण	९५
श्वेतरक्तगुंजाके नाम और गुण....	,,
किमाचके नाम और गुण	९६
रोहिणीके नाम और गुण	,,
चिह्लकके नाम और गुण	,,
टंकारीके नाम और गुण	९७
बेतसके नाम और गुण	,,
जलवेतसके नाम और गुण	,,
समुद्रफलके नाम और गुण	९८
अंकोट (हिंगोट) के नाम और गुण	,,
बरिआरी, सहदेवी, ककहिया, गुलशकरी इस चतुष्टयके नाम और गुण	,,
लक्ष्मणाके नाम और गुण	९९
स्वर्णवल्लीके नाम और गुण	,,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय.	पृष्ठ.
कपासके नाम और गुण	१००
बांसके नाम और गुण	,,
नलके नाम और गुण	१०१
मुंज (शरपत) के नाम और गुण	,,
भुंजके नाम और गुण....	,,
कासके नाम और गुण	,,
गंधपटेरके नाम और गुण	१०२
मोथाके नाम और गुण	,,
कुशके नाम और गुण	,,
रोहिष (सोधिया)के नाम और गुण	१०३
भूतृणके नाम और गुण	,,
नीलदूर्वाके नाम और गुण	,,
श्वेतदूर्वादिके नाम और गुण	१०४
गांडरदूर्वाके नाम और गुण	,,
विदारीकंदके नाम और गुण	,,
मुसलीकंदके नाम और गुण	१०५
शतावरी महाशतावरीके नाम और गुण	,,
असगंधके नाम और गुण	१०६
पाठाके नाम और गुण	,,
श्वेत निसोतके नाम और गुण....	१०७
श्याम निसोतके नाम और गुण....	,,
लघुदंतीके फलके गुण	१०८
बृहद्दंतीके नाम और गुण	,,
लघुदंतीके नाम और गुण	,,
जमालगोटाके नाम और गुण....	,,
छोटी तथा बड़ी इन्द्रायणके नाम और गुण	१०९
नीलिकाके नाम और गुण	,,
शरफोंकाके नाम और गुण	११०
दुरालभा (जवासा) के नाम और गुण	,,
मुंडीद्वयके नाम और गुण	,,

विषय.	पृष्ठ.
अपामार्ग (चिरचिरा)के नाम और गुण	१११
लाल चिरचिराके नाम और गुण	,,
तालमखानाके नाम और गुण	११२
हडसंघारीके नाम और गुण	,,
कुमारी (घीकुवार) के नाम और गुण	११३
श्वेतपुनर्नवाके नाम और गुण....	,,
रक्तपुनर्नवाके नाम और गुण	११४
गंधप्रसारणीके नाम और गुण	,,
कारीसांवके नाम और गुण	,,
गोरीसांवके नाम और गुण	११५
भृंगराजके नाम और गुण	,,
शणपुष्पीके नाम और गुण	११६
त्रायमाणके नाम और गुण	,,
मूर्वाके नाम और गुण	११६
केवैयाके नाम और गुण	११७
कौआढोढीके नाम और गुण	,,
काकजंघा (ककई) के नाम और गुण....	,,
नागपुष्पीके नाम और गुण	११[illegible]
मेढाशिंगीके नाम और गुण	
हंसपादी (हंसराज) के नाम और गुण	
सोमवल्लीके नाम और गुण	१[illegible]
आकाशवल्लीके नाम और गुण	,,
पातालगरुडीके नाम और गुण	१५९
वन्दाके नाम और गुण	,,
वटपत्रीके नाम और गुण ... और गुण	१६०
हिंङ्गुपत्रीके नाम और	,,
....	१६१
वंशपत्रीके नाम और	,,
मत्स्याक्षीके नाम और ... म और गुण....	१६२
सरहटी—गंडिनीके ... और गुण	,,
शंखपुष्पीके नाम और	

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय.	पृष्ठ.
...पुष्पीके नाम और गुण	,,
लज्जालूके नाम और गुण	,,
अलंबुषा (हाऊबेर)के नाम और गुण	,,
दूधीके नाम और गुण	,,
...इआंवराके नाम और गुण	,,
ब्राह्मी और मण्डूकपर्णीके नाम तथा गुण	,,
द्रोणपुष्पी (गुमा) के नाम और गुण	१२३
हुरहुर व दूसरे हुरहुरके नाम और गुण	,,
वंध्याककोंटकी नाम और गुण....	१२४
मार्कण्डिका (भुइँखखसा)के नाम और गुण	,,
देवदाली (सोंनैया) के नाम और गुण	,,
जलपिप्पली (पनिसगा)के नाम और गुण	१२५
गोजिह्वा (गोभी) के नाम और गुण	,,
नागदमनीके नाम और गुण	१२६
वरितरु (बरबेल)के नाम और गुण....	,,
छिक्कनी (ककुंदन)के नाम और गुण	१२७
सुदर्शन तथा आखुपर्णीके नाम और गुण....	,,
...कर्णी (मूसाकर्णी)के नाम और गुण	,,
...शिखाके नाम और गुण	१२८
पुष्पादिवर्गः ।	
...के नाम और गुण	१२९
लघुपं... नाम और गुण	१३०
... और गुण	,,
दशमूललक्षण... गुण	१३१
जीवंतीके नाम...	,,
मुद्गपर्णी (वनमूंग...	,,
माषपर्णीके नाम और... नाम और गुण	१३२
जीवनीयगणके लक्षण....	,,
शुक्ल और लाल एरंड...और गुण....	,,
शुक्ल अर्कके नाम और....	१३३
... गुण	,,
जुही तथा सुवर्णजुहीके नाम और गुण	,,
चंपाके नाम और गुण	,,
बकुल (मौलसिरी)के नाम गुण	१३४
बड़ी मौलसिरीके नाम और गुण	,,
कदंबके नाम और गुण	,,
कुब्जक (कूजा)के नाम और गुण....	१३५
मल्लिकाके नाम और गुण	,,
माधवीके नाम और गुण	,,
सुवर्णकेतकी(केवडाके)नाम और गुण....	,,
किंकिरातके नाम और गुण	१३६
कर्णिकारके नाम और गुण	,,
अशोक (असोगी) के नाम और गुण	,,
बाणपुष्पके नाम और गुण	,,
कटसरैयाके नाम और गुण	,,
कुंदके नाम और गुण....	,,
मुचुकुंदके नाम और गुण	१३८
तिलकके नाम और गुण	,,
बंधूकके नाम और गुण	,
ऊर्ध्वपुष्पाके नाम और गुण	,,
सेंदूरीके नाम और गुण	,,
अगस्तिके नाम और गुण	,,
तुलसी शुक्ला और कृष्णाके नाम और गुण	,,
मरुता (मरुआ) के नाम और गुण	,,
दमनक (दवना) के नाम और गुण....	१४०
वर्वरीके नाम और गुण	,,
वटादिवर्गः ।	
बड़के नाम और गुण	१४१
पीपलके नाम और गुण	,,
पारसपीपलके नाम और गुण....	,,
नंदिवृक्षके नाम और गुण	१४२

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय.	पृष्ठ.
उदुंबरके नाम और गुण	,,
कटुंभरीके नाम और गुण	,,
प्लक्ष (पाकर) के नाम और गुण	१४३
शिरीषके नाम और गुण	,,
क्षीरवृक्षादि पंचवल्कलके नाम और गुण	,,
शालके नाम और गुण	१४४
सर्जकके नाम और गुण	,,
शल्लकी (शालई) के नाम और गुण	,,
शिंशपा (शीसम) के नाम और गुण	१४५
ककुभ (कोह) के नाम और गुण	,,
बीजक (विजयसार) के नाम और गुण	,,
खैरके नाम और गुण....	१४६
श्वेत खैरके नाम और गुण	,,
इरिमेदके नाम और गुण	,,
रोहितकके नाम और गुण	१४७
बब्बूलके नाम और गुण	,,
अरिष्टक (रीठा) के नाम और गुण	,,
पुत्रीजीवके नाम और गुण	१४८
इंगुदीके नाम और गुण	,,
जिंगिनीके नाम और गुण	,,
तमालके नाम और गुण	,,
तूणीके नाम और गुण	,,
भूर्जपत्रके नाम और गुण	१४९
पलाशके नाम और गुण	,,
शाल्मली (सेमर) के नाम और गुण	१५०
मोचरसके नाम और गुण	,,
कूटशाल्मलीके नाम और गुण	,,
धवके नाम और गुण	१५१
धामिनके नाम और गुण	,,
करीरके नाम और गुण	,,
सहोराके नाम और गुण	१५२
वरुणके नाम और गुण	,,
कटभीके नाम और गुण	,,
मोक्षवृक्षके नाम और गुण	,,
शिरीषिकाके नाम और गुण	१५३
शमीके नाम और गुण	,,
सप्तपर्णीके नाम और गुण	,,
तिनिशके नाम और गुण	१५४
भूमीसह (भुइसई) के नाम और गुण	,,

आम्रादिफलवर्गः ।

विषय.	पृष्ठ.
आमके नाम और गुण	१५५
बालाम्र(कच्ची अमियाके)नाम और गुण	,,
शुष्काम्रफल (अमचुरके) नाम और गुण	,,
पके आमका गुण	१५६
आमके रसका गुण	,,
आम्रखण्डके गुण	,,
आमका अति सेवन....	१५७
आम्रावर्त (अमावट) के गुण....	,,
आमके बीजके नाम और गुण	१५८
आम्रपल्लवके गुण	,,
आम्रातकके नाम और गुण	,,
राजाम्रके नाम और गुण	,,
कोशाम्रके नाम और गुण	१५९
फनसके नाम और गुण	,,
क्षुद्र फनस (बड़हल) के नाम और गुण	१६०
कदलीके नाम और गुण	,,
चिर्भटके नाम और गुण	१६१
नारियलके नाम और गुण	,,
कालिंद (तरबूज) के नाम और गुण....	१६२
खरबूज (कर्कटी)के नाम और गुण	,,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय.	पृष्ठ.
त्रपुसके नाम और गुण	....१६३
पूगफल (सुपारी) के नाम और गुण	,,
तालके नाम और गुण	....१६४
बिल्वके नाम और गुण	,,
और भी बिल्वके नाम और गुण	,,
कपित्थ (कैथ) के नाम और गुण	....१६५
नारंगीके नाम और गुण	,,
तेंदुकके नाम और गुण	....१६६
कुपीलुके नाम और गुण	,,
फलेंद्रा (फरेंद)के नाम और गुण	,,
जामुनीके नाम और गुण	....१६७
बेरके नाम और गुण	,,
आमलक (आंवली , के नाम और गुण	१६८
लवलीके नाम और गुण	,,
करमर्द(करोंदा)के नाम और गुण	,,
प्रियाल (चिरोंजी)के नाम और गुण	....१६९
राजादन (खिरनी) के नाम और गुण	,,
विकंकतके नाम और गुण	....१७०
पद्मबीजके नाम और गुण	,,
माषान्नके नाम और गुण	....१७०
सिंघाड़ाके नाम और गुण	,,
कुमुदबीजके नाम और गुण	....१७१
मधुकके नाम और गुण	,,
परूषकके नाम और गुण	,,
सहतूतके नाम और गुण	....१७२
दाड़िम (अनार) के नाम और गुण	,,
बहुवारके नाम और गुण	....१७३
कतक(निर्मली) के नाम और गुण	,,
द्राक्षा (दाख)के नाम और गुण	,,

विषय.	पृष्ठ.
गोस्तनी(मुनक्का) के नाम और गुण	....१७४
करमर्दिकाके नाम और गुण	,,
भूमिखर्जूरिकात्रयके नाम और गुण	,,
सुलेमानी खजूरके नाम और गुण	....१७५
बादामके नाम और गुण	....१७६
सेवके नाम और गुण	,,
अमृतफलके नाम और गुण	,,
पीलूके नाम और गुण	....१७७
अखरोटके नाम और गुण	,,
बीजपूर (बिजौरा) के नाम और गुण	,,
चकोतराके नाम और गुण	,,
जंबीरके दो भेदोंके नाम और गुण	,,
निंबूके नाम और गुण	....१७८
मीठे निंबूके नाम और गुण	,,
कर्मरंगके नाम और गुण	....१७९
इमलीके नाम और गुण	,,
अम्लवेतसके नाम और गुण	,,
वृक्षाम्लके नाम और गुण	....१८०
चतुरम्ल तथा पञ्चाम्लके नाम और गुण	,,
परिभाषा	,,
धातुओंका लक्षण और गुण	....१८१
सुवर्णकी उत्पात्ति, लक्षण, नाम और गुण	१८२
रौप्यकी उत्पात्ति, लक्षण, नाम और गुण	१८४
तांबाकी उत्पत्ति, लक्षण, नाम और गुण	१८५
वंगके नाम, लक्षण और गुण	....१८६
जसदके नाम और गुण	....१८७
सीसकी उत्पत्ति,लक्षण,नाम और गुण....	,,
लोहकी उत्पात्ति,लक्षण,नाम और गुण....	,,
सारलोहका लक्षण, नाम और गुण	....१८९
कांतलोहके लक्षण, नाम और गुण	,,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय.	पृष्ठ.
लोहकिट्टके लक्षण, नाम और गुण	१९०
उपधातुओंके लक्षण, नाम और गुण....	,,
स्वर्णमाक्षिकके नाम, लक्षण और गुण....	१९१
तारमाक्षिकके लक्षण, नाम और गुण....	१९२
तुत्थ (तूतिया) के नाम और गुण	,,
कांसाके नाम और गुण	१९३
पित्तलके नाम और गुण	,,
सिंदूरके नाम और गुण	१९४
शिलाजतुकी उत्पत्ति,नाम और लक्षण....	,,
रसकी निरुक्ति	१९५
पारदकी उत्पत्ति,लक्षण, नाम और गुण	,,
उपरसोंका लक्षण	१९७
हिंगुलके नाम, लक्षण और गुण	१९८
गंधककी उत्पत्ति, लक्षण, नाम और गुण	१९९
अभ्रककी उत्पत्ति, नाम, लक्षण और गुण	२००
हरितालके लक्षण, नाम और गुग	२०२
मनःशिलाके नाम और गुण	२०३
सुरमा (सौवीर) के नाम और गुण	,,
सुहागाके नाम और गुण	२०४
फिटकरीके नाम और गुण	,,
राजावर्तके नाम और गुण	२०५
चुंबकके नाम और गुण	,,
दोनो गेरुओंके नाम और गुण	,,
खटी तथा गौरखटीके नाम और गुग	,,
बालूके नाम और गुण	२०६
खर्परीके नाम और गुण	,,
कासीसके नाम और गुण	,,
सौराष्ट्रीके नाम और गुण	,,
काली मिट्टीके नाम और गुण....	२०७

विषय	पृष्ठ.
कर्दमके गुण	,,
बोलके नाम और गुण	,,
कंकुष्ठकी उपात्ति, लक्षण, नाम और गुण	,,
रत्ननिरुक्ति	२०८
रत्नके नाम और रूप	,,
नव रत्न	,,
हीरकके नाम, लक्षण और गुण	२०९
मारित हीरकके गुण	२१०
गारुत्मतके नाम	,,
माणिकके नाम	२११
पुखराजके नाम	,,
नीलम और गोमेदके नाम	,,
लहसुनियाके नाम	,,
मोतीके नाम	,,
मोतीके उत्पत्तिस्थान	,,
प्रवालके नाम	,,
सर्वरत्नभक्षणधारणके गुण	२१२
ग्रहप्रिय रत्न	,,
उपरत्नके नाम और गुण	,,
विषके नाम	२१३
विषके भेद	,,
वत्सनाभका स्वरूप	,,
हारिद्रका स्वरूप	,,
सक्तुकका स्वरूप	,,
प्रदीपनका स्वरूप	,,
सौराष्ट्रिकका स्वरूप	२१४
श्रृंगिकका स्वरूप	,,
कालकूटका स्वरूप	,,
हालाहलका स्वरूप	,,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय.	पृष्ठ.
ब्रह्मपुत्रका स्वरूप	....२१५
विषसामान्यके गुण	,,
उपविषोंकी जातियां	....२१६

धान्यवर्गः ।

विषय.	पृष्ठ.
धान्योंके भेद	....२१७
शालिधान्यके लक्षण	,,
शालिभेद	,,
शालिसामान्यके गुण	....२१८
रक्त शालिके गुण	....२१९
व्रीहिधान्यके लक्षण और गुण....	,,
षष्टिकोंके लक्षण, और गुण	....२२०
शूकधान्य	....२२१
यवके नाम और गुण	,,
गेहूंके नाम आदि	....२२२
शिम्बी धान्यके नाम और गुण	....२२३
मूंगके नाम और गुण	,,
माषके नाम और गुण	....२२४
राजमाषके नाम और गुण	,,
निष्पावके नाम और गुण	....२२५
मकुष्ठके नाम और गुण	,,
मसूरके नाम और गुण	,,
अरहरके नाम और गुण	....२२६
चणकके नाम और गुण	,,
कलायके नाम और गुण	....२२७
त्रिपुटके नाम और गुण	,,
कुलित्थके नाम और गुण	,,
तिलके नाम और गुण....	,,
अतसीके नाम और गुण	....२२८
तुवरीके नाम और गुण	,,
सिरसमके नाम और गुण	२२९
राईके नाम और गुण	,,
क्षुद्रधान्यके नाम और गुण	,,
कंगुके नाम और गुण	....२३०
चीनाकके नाम और गुण	,,
श्यामाकके नाम और गुण	,,
कोद्रवके नाम और गुण	,,
चारुकके नाम और गुण	....२३१
वंशयवके नाम और गुण	,,
कुसुमबीजके नाम और गुण	,,
गवेधुकाके नाम और गुण	,,
प्रसाधिकाके नाम और गुण	....२३२
यावनालके नाम और गुण	,,
परिभाषा	,,

शाकवर्गः ।

विषय.	पृष्ठ.
शाकोंका निरूपण और गुण	२३४

पत्रशाक ।

विषय.	पृष्ठ.
बथुआके नाम और गुण	....२३५
पोतकीके नाम और गुण	,,
मारिषके नाम और गुण	,,
तंडुलीयके नाम और गुण	....२३६
पालकके नाम और गुण	,,
नाडिकाके नाम और गुण	....२३७
पट्टशाकके नाम और गुण	,,
कलंबीके नाम और गुण	,,
लोणीके नाम और गुण	,,
चांगेरीके नाम और गुण	....२३८
चुक्रिकाके नाम और गुण	,,
चिंचाके नाम और गुण	....२३९

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय.	पृष्ठ.
हुरहुरके नाम और गुण	,,
शितिवारके नाम और गुण	,,
मूलकपत्रके नाम और गुण	२४०
गूमापत्रके नाम और गुण	,,
यवानी शाकके नाम और गुण	,,
दद्रुघ्नपद्दक्के नाम और गुण	,,
सेहुण्डपत्रके नाम और गुण....	,,
पर्पटके नाम और गुण	२४१
गोजिह्वाके नाम और गुण	,,
पटोलपत्रके नाम और गुण	,,
गुडूचीपत्रके नाम और गुण	,,
कासमर्दके नाम और गुण	२४२
चणकशाकके नाम और गुण	,,
कलायशाकके नाम और गुण	,,
सर्षपशाकके नाम और गुण	,,
पुष्पशाक।	
अगास्तिपुष्पके नाम और गुण	२४३
कदलीपुष्पके नाम और गुण	,,
शिग्रुपुष्पके नाम और गुण	,,
शाल्मली पुष्पशाकके नाम और गुण	,,
फलशाक।	
कूष्माण्डके नाम और गुण	२४४
कूष्माण्डीके नाम और गुण	,,
अलाबूके नाम और गुण	,,
कटुतुंबीके नाम और गुण	२४५
कर्कटीके नाम और गुण	,,
चिर्चिंडाके नाम और गुण	,,
कारवेल्लके नाम और गुण	२४६
महाकोशातकीके नाम और गुण	,,
धामावर्गवके नाम और गुण	,,
पटोलके नाम और गुण	२४७
बिम्बीके नाम और गुण	,,
शिम्बी (सेम) के नाम और गुण	,,
कोलशिम्बी(सुअरासेम) के नाम और गुण	२४८
सहेंजना (मुनगा) के नाम और गुण	,,
वृंताक (बैंगन) के नाम और गुण....	,,
डिंडिशके नाम और गुण	२४९
पिंडारके नाम और गुण	,,
कर्कोटीके नाम और गुण	,,
विषमुष्टिके नाम और गुण	२५०
कंटकारीफलके नाम और गुण	,,
नालशाक	
सार्षपनालके गुण	,,
कन्दशाक।	
सूरणके नाम और गुण	,,
आलूके नाम और गुण	२५१
आलुकी (अरुई) के नाम और गुण	२५२
मूलकके नाम और गुण	,,
गृजनके नाम और गुण	२५३
कदलीकंदके नाम और गुण....	,,
मानकन्दके नाम और गुण	,,
वाराही कन्दके नाम और गुण	,,
हस्तिकर्णीके नाम और गुण	२५४
केमुकके नाम और गुण	,,
कसेरुकके नाम और गुण	,,
पद्मादि कंदोंके नाम और गुण	२५५
त्याज्य कन्दशाक	,,
संस्वेदज शाकोंके नाम और गुण	२५६
मांसवर्गः।	
मांसके नाम और गुण	२५७
मांसके भेद	,,
जांगलमांसके लक्षण और गुण	,,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय.	पृष्ठ.
आनूप मांसके लक्षण और गुण	....२५८
जंघाळ (जंगली) पशुओंकी गणना और विशेष गुण....	,,
बिलेशयोंकी गणना और गुण	२५९
गुहाशयोंकी गणना और गुण	,,
पर्णमृगोंकी गणना और गुण	....२६०
विष्किरोंकी गणना और गुण	,,
प्रतुदोंकी गणना और गुण	....२६१
प्रसहोंकी गणना और गुण	,,
ग्राम्य पशुओंकी गणना और गुण	....२६२
तीरमें चरनेवालोंकी गणना और गुण....	,,
प्लवोंकी गणना और गुण	....२६३
कोशस्थोंकी गणना और गुण	,,
पादि (पशुओं) की गणना और गुण....	,,
मत्स्योंके नाम और गुण	....२६४
जंघालोंके नाम और गुण उनमें हरिणके गुण	,,
एण (काले हरिण) के नाम और गुण	२६५
कुरंगके नाम और गुण	,,
ऋष्य (नीलगायके) के नाम और गुण	,,
पृषत् (चित्रमृग) के नाम और गुण	,,
न्यंकु (बारासींगा)के नाम और गुण	,,
साबरके गुण	....२६६
राजीवके गुण....	,,
मुंडिके गुण	,,
बिलेशय।	
खरगोशके नाम और गुण	,,
सेधाके नाम और गुण....	....२६७
पक्षियोंके नाम और गुण	,,
वर्तक (बटेर) के नाम और गुण	,,
लावके नाम और गुण	,,
वालीक(बगेरा)के नाम और गुण	,,
तित्तिरि (तीतर) के और गुण	,,
चटकके नाम और गुण	,,
कुक्कुटके नाम और गुण	,,
हारीतके नाम और गुण	,,
पांडु (पेंडकी) के नाम और गुण	....२६९
मयूरके नाम और गुण	....२७०
पारावत (कबूतर)के नाम और गुण	,,
पक्षियोंके अंडोंके गुण	,,
बकरेके नाम और गुण	....२७१
मेंढाके नाम और गुण	....२७२
दुम्माके नाम और गुण	,,
बैलके नाम और गुण	,,
अश्व (घोड़ा) के नाम और गुण	२७३
भैंसेके नाम और गुण	,,
मंडूकके नाम और गुण	,,
कच्छपके नाम और गुण	....२७४
सद्योहतादि मांसके गुण	,,
जात्यादिपरत्वसे मांसके गुण....	,,
अण्डे आदिके गुण	....२७५
रोहित मत्स्यके गुण	,,
सिलन्ध मछलीके गुण	....२७६
भकुर मछलीके गुण	,,
मोचिका मछलीके गुण	,,
पाठीन मछलीके गुण	,,
सींगिया मछलीके गुण	....२७७
इलुस (हिल्सा) मछलीके गुण	,,
सौरी मछलीके गुण	,,
गर्गरा मछलीके गुण	,,
कविका मछलीके गुण	,,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय.	पृष्ठ.
वर्मिमत्स्यके गुण	२७८
दण्डमत्स्यके गुण	,,
एरंगी मछलीके गुण	,,
पाप्ला मछलीके गुण	,,
गरई मछलीके गुण	,,
मद्गुरी मछलीके गुण	,,
सपाद (टेंगरा) मत्स्यके गुण	२७९
प्रोष्ठी मत्स्यके गुण	,,
क्षुद्रमत्स्योंके गुण	,,
अतिसूक्ष्म (बहुत छोटी)मछलियोंके गुण	,,
मछलियोंके अण्डोंके गुण	,,
सूखी मछलियोंके गुण	२८०
दग्ध मत्स्यके गुण	,,
कुआ आदिकी मछलियोंके गुण	,,
ऋतुविशेषमें मत्स्यविशेषके गुण	,,
कृतान्नवर्गः ।	
परिभाषा	२८२
भातके नाम, बनानेकी रीति और गुण	,,
दालके नाम, बनानेकी रीति और गुण	२८३
खिचड़ीके नाम, बनानेकी रीति और गुण	,,
तहरीके नाम, बनानेकी रीति और गुण	२८४
खीरके नाम, बनानेकी रीति और गुण	,,
नारियलकी खीर ,, ,,	,,
सेंबई ,, ,, ,,	२८५
मण्डक ,, ,, ,,	,,
पूरी ,, ,, ,,	२८६
लप्सी ,, ,, ,,	,,
रोटी ,, ,, ,,	२८७
बाटी ,, ,, ,,	,,
जौकी रोटी ,, ,, ,,	,,
उड़दकी रोटी (झर्झरी) ,, ,,	२८८
चनेकी रोटी ,, ,,	,,
बेढ़ई ,, ,, ,,	,,
पापड़ ,, ,, ,,	२८९
कचौरी ,, ,, ,,	,,
बड़े ,, ,, ,,	२९०
कांजीके बड़े बनानेकी विधि और गुण	,,
अमिलीके बड़े बनानेकी विधि और गुण	२९१
मूंगके बरा बनानेकी विधि और गुण	,,
उर्दकी बड़ी बनानेकी विधि और गुण	,,
कुम्हड़ेकी बड़ी बनानेकी विधि और गुण	२९२
मूंगकी बड़ी बनानेकी विधि और गुण	,,
अलीकमत्स्यके गुण	,,
कढ़ी बनानेकी विधि और गुण	२९३
मूंगकी बड़ीकी विधि और गुण	,,
फुलौड़ीकी विधि और गुण	२९४
मांसका प्रकार ।	
शुद्ध मांस (सुधवा) बनानेकी रीति और गुण	,,
सहार्द्रक (सहवांसु या कीमा) बनानेकी रीति और गुण	२९५
तक्रमांस (अखनी) रीति और गुण	,,
हरीसा (आस) बनानेकी रीति और गुण	२९६
तलित मांस बनानेकी रीति और गुण	,,
शूल्य (कबाब) बनानेकी रीति और गुण	,,
मांसके सिंघाड़े बनानेका प्रकार और गुण	,,
मांसरस (शोरबा) के गुण	२९८
शाक बनानेकी रीति	,,
मठली बनानेकी रीति और गुण	२९९
गुझिया बनानेकी रीति और गुण	,,
कर्पूरनालिका	३००

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय.	पृष्ठ.
सूतफेनी बनानेकी रीति और गुण	,,
शष्कुलीके नाम और गुण	....३०१
सेविकाके नाम और गुण	,,
बूंदीके लड्डू बनानेकी रीति और गुण	३०१
सेंवनमोदक बनानेकी रीति और गुण	३०२
दुग्धकूपिका बनानेकी रीति और गुण	,,
जलेबी बनानेकी रीति और गुण	३०३
शिखरणीके नाम और गुण	....३०४
सरबतके नाम और गुण	....३०५

प्रपानक।

विषय.	पृष्ठ.
आम्राफलप्रपानकके गुण	....३०५
अम्लिकाफलप्रपानकके गुण	,,
निम्बुफलप्रपानकके गुण	....३०६
धान्यकप्रपानकके गुण	,,
कांजीके गुण	,,
जालिके गुण	,,
तक्रके नाम और गुण	....३०७
दूधके गुण	,,
सत्तुओंका प्रकार तथा गुण....	....३०८
जौके सत्तूके गुण	,,
चनेके सत्तूके गुण	,,
चावलोंके सत्तूके गुण	,,
सामान्य परिभाषा	....३०९
धाना (बहुरी) बनानेकी रीति और गुण	,,
खील ,, ,,	,,
चिपिटके नाम और गुण	....३१०
होलकके गुण	,,
ऊचीके गुण	,,
कुल्माषगुण	,,

विषय.	पृष्ठ.
पललके गुण	३११
तिलकिट्टके गुण	,,
तण्डुल (चावल) के गुण	,,

वारिवर्गः।

विषय.	पृष्ठ.
पानीके नाम और गुण	....३१२
पानीके भेद	,,
धाराजलके लक्षण और गुण	....३१३
धाराजलके भेद	,,
गांग और सामुद्रके लक्षण और गुण....	,,
अनार्तव जलके लक्षण और गुण	....३१४
ओलोंके जलका गुण	....३१५
तुषारजलका लक्षण और गुण	,,
हिमजलका लक्षण और गुण	,,
भौमजलके भेद,लक्षण और गुण	....३१६
नादेय जलका लक्षण और गुण	....३१७
औद्भिदजलका लक्षण और गुण	....३१८
नैर्झर जलका लक्षण और गुण	,,
सारस जलका लक्षण और गुण	,,
ताडाग जलका लक्षण और गुण	....३१९
वाप्य जलका लक्षण और गुण	,,
कौपजलका लक्षण और गुण	,,
चौंजजलका लक्षण और गुण....	....३२०
पाल्वल जलके लक्षण और गुण	,,
चिकिर जलका लक्षण और गुण	....३२१
कैदारजलका लक्षण और गुण....	,,
वार्षिक जलका लक्षण और गुण	,,
ऋतुपरत्वसे जलके गुण	,,
शीतल जलपानके गुण	,,
जलग्रहणकाल	....३२३
जलपानविधि	,,
शीतजलपाननिषेध	....३२४
अल्प जल पीनेके विषय	,,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय.	पृष्ठ.
जल पीनेकी आवश्यकता	,,
प्रशस्त जल	३२५
निन्दित जल	,,
निन्दितजलशोधनप्रकार	,,
पिये हुए जलकी पाकविधि	३२६

दुग्धवर्गः।

विषय.	पृष्ठ.
दूधके नाम और गुण	३२७
गायके दूधके गुण	३२८
गायके वर्णपरत्वसे दूधके गुण	,,
छोटे बछड़ेवाली तथा बिन बच्चेकी गायके दूधके गुण	,,
बष्कयणी (बकेनी) गायके दूधका गुण	३२९
देशविशेषसे गायके दूधके गुण	,,
आहारविशेषसे गायके दूधके गुण	,,
भैंसके दूधके गुण	,,
बकरीके दूधके गुण	३३०
मृगीके दूधके गुण	,,
भेड़के दूधके गुण	,,
घोड़ीके दूधके गुण	,,
ऊंटनीके दूधके गुण	३३१
हथिनीके दूधके गुण	,,
नारीदुग्धके गुण	,,
धारोष्ण गोदुग्धके गुण	,,
गव्यादिभेदसे धारोष्ण आदिके गुण	३३२
कच्चे दूधके गुण	,,
शृतोष्णादि दूधके गुण	,,
पीयूष, किलाट और क्षीरशाकके गुण	,,
तक्रपिंड और मोरटके लक्षण और गुण	,,
मलाईके गुण	३३३
शर्करादिमिश्रित दुग्धके लक्षण और गुण	३३४
प्राभातिकादिदुग्धसेवनके गुण	,,
समयविशेषसे दुग्धसेवनके गुण	,,
मथे हुए दूधके गुण	३३५
दूधके फेनके गुण	,,
वर्जित दूध	३३६

दधिवर्गः।

विषय.	पृष्ठ.
दहीके नाम और गुण	३३७
दहीके भेद	,,
मन्दनामक दहीके लक्षण और गुण	,,
स्वादु (मीठे) दहीके लक्षण और गुण	३३८
स्वाद्वम्ल (खट्टे मीठे) दहीके लक्षण और गुण	,,
अम्ल (खट्टे) दहीके लक्षण और गुण	,,
अति खट्टे दहीके लक्षण और गुण	,,
गौके दहीके नाम गुण	३३९
भैंसके दहीके गुण	,,
बकरीके दहीके गुण	,,
पक्के दूधके दहीके गुण	,,
सारहीन दूधके दहीके गुण	३४०
गालित दहीके गुण	,,
शर्करादियुक्त दहीके गुण	३४०
रात्रिमें दहीका निषेध	,,
ऋतुविशेषसे दहीका विधि निषेध	३४१
विना विधि दहीसेवनके दोष	,,
सर और मस्तुके लक्षण तथा गुण	,,

तक्रवर्गः।

विषय.	पृष्ठ.
तक्रके नाम और गुण	३४३
सामान्यतः समुद्धृत घृतादि तक्रके भेद और गुण	३४४

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय.	पृष्ठ.
दोषव्याधि विशेषसे तक्र विशेषके गुण	,,
कच्चे और पक्व तक्रके गुण	....३४५
उसके सेवनके विषय	,,
तक्रका निषेध	३४६
गव्यादि तक्रविशेषके गुण	,,
नवनीतवर्गः ।	
मक्खनके नाम और गुण	....३४७
भैंसके मक्खनके गुण	,,
दुग्धज नवनीतके गुण	,,
ताजे मक्खनके गुण	....३४८
पुराने मक्खनके गुण	,,
घृतवर्गः ।	
घीके नाम और गुण	....३४९
गायके घीके गुण	....३५०
भैंसके घीके गुण	,,
बकरीके घृतके गुण	....३५१
ऊंटनीके घीके गुण	....३५१
भेड़के घीके गुण	,,
नारीघृतके गुण	,,
घोड़ीके घीके गुण	,,
तत्काल दुग्धसे कियेहुए घृतके गुण	....३५२
एकदिनके दहीसे निकाले हुए दहीके गुण	३५२
पुराने घीके गुण	,,
नये घीके विषय	,,
घृतनिषेध	....३५३
मूत्रवर्गः ।	
गोमूत्रके गुण	....३५४
नरमूत्रके गुण	....३५५
जातिपरत्वसे मूत्रके गुण	,,

विषय.	पृष्ठ.
तैलवर्गः ।	
तैलका स्वरूप	....३५६
तिलतैलके गुण	,,
सरसों और राईके तेलके गुण	....३५८
तुवरीतैलके गुण	,,
अलसीके तेलके गुण	....३५९
कुसुमके तेलके गुण	,,
खसबीज तैलके गुण	....३६०
एरंडतैलके गुण	,,
रालतैलके गुण	,,
सब तेलोंके गुण	....३६१
संधानवर्गः ।	
कांजीके लक्षण और गुण	....३६२
तुषोदकके लक्षण और गुण	....३६३
सौवीरके लक्षण और गुण	,,
आरनालके लक्षण और गुण	,,
धान्याम्लके लक्षण और गुण	....३६४
शण्डाकीके लक्षण और गुण	,,
शुक्त (सिरका) के लक्षण और गुण	,,
आसुतके लक्षण और गुण	....३६५
मद्यके नाम, लक्षण और गुण	,,
अरिष्टके लक्षण और गुण	....३६६
सुराके लक्षण और गुण	,,
वारुणीके लक्षण और गुण	,,
शीधुके लक्षण और गुण	....३६७
आसवके नाम और गुण	,,
नये पुराने मद्यके गुण	,,
प्रकृतिभेदसे मद्यके गुण	....३६८
मद्य पीनेकी रीति	,,
मधुवर्गः ।	
मधुके नाम और गुण	....३६९

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय.	पृष्ठ.
मधुके भेद	३७०
माक्षिकके लक्षण और गुण	,,
भ्रामरके लक्षण और गुण	,,
क्षौद्रके लक्षण और गुण	३७१
पौत्तिकके लक्षण और गुण	,,
छात्रके लक्षण और गुण	३७२
आर्घ्यके लक्षण और गुण	,,
औद्दालक मधुके लक्षण और गुण	३७३
दालके लक्षण और गुण	,,
नये पुराने मधुके गुण	३७४
शीतोष्ण मधुके गुण	,,
मोमके गुण	,,

इक्षुवर्गः ।

विषय.	पृष्ठ.
इक्षुके नाम और गुण	३७६
इक्षुके भेद	,,
पौण्ड्रक और भीरुक ईखके गुण	३७७
कोशकार ईखके गुण....	,,
कान्तार ईखके गुण	,,
दीर्घपत्र ईखके गुण	,,
शतपोरक ईखके गुण	,,
तापस ईखके गुण	३७८
काण्ड ईखके गुण	,,
सूचीपत्र, नीलपोर, नैपाल और दीर्घपत्रके गुण	,,
मनोगुप्ताके गुण	,,
बाल आदि ईखके गुण	,,
अंगभेदसे ईखके गुणोंमें भेद	३७९
दांत, यंत्र आदिसे पीडित इक्षुरसका गुण	,,
बासी रसके गुण	,,
पके ईखके रसके गुण	३८०
इक्षुविकारोंके गुण	,,
राबके लक्षण और गुण	,,
मत्स्यण्डी (मींजा) के लक्षण और गुण	३८१
गुडके लक्षण और गुण	,,
पुराने गुडके गुण	३८२
नवीन गुडके गुण	,,
अनुपानभेदसे गुडके गुणोंके भेद	,,
खांडके गुण	,,
शर्करा (चीनी बूरा) के गुण	३८३
सफेद बूराके गुण	,,
मिश्रीके गुण	,,
मधुजशर्करा (शहदकी शकर)के गुण	,,
परिभाषा	३८४

अनेकार्थनामवर्गः ।

विषय.	पृष्ठ.
दो अर्थवाले शब्द	३८५
तीन अर्थवाले शब्द....	,,
अनेक अर्थवाले शब्द	३९१

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्रीः ।

हरीतक्यादिनिघण्टे

हरीतक्यादिवर्गः ।

पं० जयनारायण कपूरिया वैद्य
६०, गाँधी गली, देहली-६

हरीतक्युत्पत्त्यादि ।

दक्षं प्रजापतिं स्वस्थमश्विनौ वाक्यमूचतुः ।
कुतो हरीतकी जाता तस्यास्तु कति जातयः ॥ १ ॥
रसाः कति समाख्याताः कति चोपरसाः स्मृताः ।
नामानि कति चोक्तानि किं वा तासां च लक्षणम् ॥ २ ॥
के च वर्णा गुणाः के च का च कुत्र प्रयुज्यते ।
केन द्रव्येण संयुक्ता कांश्च रोगान् व्यपोहति ॥ ३ ॥

टीका—स्वस्थ प्रजापतिको अश्विनीकुमारोंने पूछा कि, हरीतकीकी अर्थात् हरड़की उत्पत्ति कहांसे है और उसकी कितनी जातियां हैं? ॥१॥ तथा उसमें रस कितने हैं और उपरस कितने होते हैं और उसके नाम कितने हैं और उनका लक्षण क्या है? ॥ २ ॥ और उनके वर्ण तथा गुण कितने हैं और कौन कहांपर देनी चाहिये और कौनसे द्रव्यके साथ देनेसे किन रोगोंका नाश करती है?॥३ ॥

प्रश्नमेतद्यथापृष्टं भगवन् वक्तुमर्हसि ।
अश्विनोर्वचनं श्रुत्वा दक्षो वचनमब्रवीत् ॥ ४ ॥

टीका—हे भगवन्,जैसे यह प्रश्न हमने पूंछा है वैसे इसको आप कहनेको समर्थ हो. ऐसा अश्विनीकुमारोंका वचन सुनकर दक्षप्रजापति कहते भये ॥ ४ ॥

पपात बिन्दुर्मेदिन्यां शक्रस्य पिबतोऽमृतम् ।
ततो दिव्यात्समुत्पन्ना सप्तजातिर्हरीतकी ॥ ५ ॥

टीका—जिस समय इन्द्रनें अमृत पिया उस समय उसमेंसे एक बूंद पृथ्वीमें गिरा. फिर उस अमृतकी बूंदसे सात जातकी हरीतकी उत्पन्न हुई ॥ ५ ॥

हरीतक्यभया पथ्या कायस्था पूतनाऽमृता ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हैमवत्यव्यथा चापि चेतकी श्रेयसी शिवा ॥ ६ ॥
वयस्था विजया चापि जीवन्ती रोहिणीति च ।

टीका—हरीतकी १, अभया २, कायस्था ३, पूतना ४, अमृता ५, हैमवती ६, अव्यथा ७, चेतकी ८, श्रेयसी ९, शिवा १०, ॥ ६ ॥ वयस्था ११, विजया १२, जीवंती १३ और रोहिणी १४ ये चौदह हड़के नाम हैं ।

विजया रोहिणी चैव पूतना चामृताऽभया ॥ ७ ॥
जीवन्ती चेतकी चेति विज्ञेयाः सप्त जातयः ।

टीका—अब हरडोंकी जाति कहते हैं. विजया १, रोहिणी २, पूतना ३, अमृता ४, अभया, ५, ॥ ७ ॥ जीवन्ती ६, चेतकी ७ ये सात प्रकारकी हरड होती हैं. और इन्ही सातोंको मिलाके बहुतसे निघंटोंमें हडके २१ एकवीस नाम कहे हैं.

अलाबुवृत्ता विजया वृत्ता सा रोहिणी स्मृता ॥ ८ ॥
पूतनास्थिमती सूक्ष्मा कथिता मांसलाऽमृता ।
पञ्चरेखाभया प्रोक्ता जीवन्ती स्वर्णवर्णिनी ॥ ९ ॥

टीका—अब हड़की पहिंचान लिखते हैं. जो हड़ तूंबीके समान गोल हो उसको विजया कहते हैं और जो गोल हो उसको रोहिणी कहते हैं ॥ ८ ॥ और जिसमें छोटी गुठली हो उसको पूतना, और जो गूदेदार हो उसको अमृता कहते हैं और जिस हड़में पांच लकीरें हो उसको अभया, और जिसका सोनेकासा रंग हो उसको जीवन्ती कहते हैं ॥ ९ ॥

त्रिरेखा चेतकी ज्ञेया सप्तानामियमाकृतिः ।
विजया सर्वरोगेषु रोहिणी व्रणरोहिणी ॥ १० ॥

टीका—और जिसमें तीन रेखा हों उसको चेतकी कहते हैं, सातोंप्रकारकी हड़ोंके ये स्वरूप कहे हैं. और विजया समस्त रोगोंमें दे[illegible] चाहिये, और घावोंके भरनेमें रोहिणी श्रेष्ठ है ॥ १० ॥

प्रलेपे पूतना योज्या शोधनार्थेऽमृता हिता ।
अक्षिरोगेऽभया शस्ता जीवन्ती सर्वरोगहृत् ॥ [illegible] ॥

टीका—लेपमें पतना श्रेष्ठ है, और शोधनके अर्थ अमृता श्रे[illegible] है, और नेत्ररोगमें अभया देनी अच्छी है, और जीवन्ती सर्वरोगोंको हरनेवाली [illegible] है ॥ ११ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चूर्णार्थे चेतकी शस्ता यथायुक्तं प्रयोजयेत् ।
चेतकी द्विविधा प्रोक्ता श्वेता कृष्णा च वर्णतः ॥ १२ ॥

टीका—और चूर्ण बनानेमें चेतकी श्रेष्ठ होती है. उसकी योगके अनुसार योजना करनी. और चेतकी रंगमें दोप्रकारकी होती है,एक सफेद दूसरी काली ॥१२॥

षडङ्गुलायता शुक्ला कृष्णा त्वेकाङ्गुला स्मृता ।
काचिदास्वादमात्रेण काचिद्गन्धेन भेदयेत् ॥ १३ ॥

टीका—सफेद छअंगुल लंबी और काली एक अंगुल लंबी होती है; कोई खानेमात्रसे दस्त लाती है और कोई सूंघनेमात्रसेही दस्त लाती है ॥ १३ ॥

काचित्स्पर्शेन दृष्ट्यान्या चतुर्धा भेदयेच्छिवा ।
चेतकीपादपच्छायामुपसर्पन्ति ये नराः ॥ १४ ॥
भिद्यन्ते तत्क्षणादेव पशुपक्षिमृगादयः ।
चेतकी तु धृता हस्ते यावत्तिष्ठति देहिनः ॥ १५ ॥
तावद्भिद्येत वेगैस्तु प्रभावान्नात्र संशयः ।
न धार्या सुकुमाराणां कृशानां भेषजद्विषाम् ॥ १६ ॥

टीका—कोई स्पर्श करनेसे और कोई देखनेसे ही दस्त लाती है. ऐसी चार प्रकारकी चेतकी हड़ होती है. जे। मनुष्य चेतकीके वृक्षकी छायामें जाते हैं ॥१४॥ उनको उसी क्षण दस्त लगजाता है,और मनुष्यके शिवाय पशु पक्षी मृगादिकोंको भी दस्त लगजाता है, और मनुष्य चेतकीको जबतक हाथमें धारण करते हैं ॥ १५ ॥ तबतक उसके प्रभावसे दस्त लगता है. इसमें कुछ संदेह नहीं है. सुकुमार अवस्थावाले और कृश और औषधिके शत्रु इनको धारण करने योग्य नहीं है ॥ १६ ॥

चेतकी परमा शस्ता हिता सुखविरेचनी ।
सप्तानामपि जातीनां प्रधानं विजया स्मृता ॥ १७ ॥

टीका—चेतकी सुखविरेचनमें बहुत अच्छी होती है और इन सातों जातकी हड़ोंमें विजयानामकी हड़ सबमें प्रधान कही है ॥ १७ ॥

सुखप्रयोगसुलभा सर्वरोगेषु शस्यते ।
हरीतकी पञ्चरसा लवणा तुवरा परम् ॥ १८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—सुखपूर्वक योगमें देनेयोग्य और सुलभ होती है सब रोगोंमें प्रशस्त होती है. हरीतकी पांच रसोंसे युक्त और लवणसे रहित तथा बहुत कसेली होती है॥१८॥

रूक्षोष्णा दीपनी मेध्या स्वादुपाका रसायनी।
चक्षुष्या लघुरायुष्या बृंहणी चानुलोमनी ॥ १९ ॥
श्वासकासप्रमेहार्शःकुष्ठशोथोदरकृमीन्।
वैस्वर्यग्रहणीरोगविबन्धविषमज्वरान् ॥ २० ॥

टीका—रूखी, गरम, अग्निको दीपन करनेवाली, पवित्र, मधुरपाकवाली, रसायनी होती है, नेत्रोंको हित करनेवाली और हलकी तथा आयुको हितकारक, बृंहणी तथा वायु और मलको नीचे करनेवाली होती है ॥ १९ ॥ श्वास, कास, प्रमेह, बवासीर, कोढ़, सूजन, उदररोग, कृमि, स्वरभंग, ग्रहणी, विबंध अर्थात् कब्जियत और विषमज्वर ॥ २० ॥

गुल्माध्मानतृषाच्छर्दिहिक्काकण्डूहृदामयान्।
कामलां शूलमानाहं प्लीहानं च यकृत्तथा ॥ २१ ॥
अश्मरीं मूत्रकृच्छ्रं च मूत्राघातं च नाशयेत्।
स्वादुतिक्तकषायत्वात्पित्तहृत्कफहृत्तु सा ॥ २२ ॥

टीका—वायुगोला, आध्मान, तृषा, वमन, हुचकी, खाज, हृदयरोग, कामला, शूल, आफरा, तापतिल्ली, यकृत् ॥२१॥ पथरी, मूत्रकृच्छ्र, और मूत्राघात इतनो रागोंको हरीतकी नाश करती है. मीठेपनसे और तीखेपनसे तथा कसेलेपनसे यह पित्तका नाश करती है ॥ २२ ॥

कटुतिक्तकषायत्वादम्लत्वाद्वातहृच्छिवा।
पित्तकृत्कटुकाम्लत्वाद्वातकृन्न कथं शिवा ॥ २३ ॥
प्रभावाद्दोषहन्तृत्वं सिद्धं यत्तत्प्रकाश्यते।
हेतुभिः शिष्यबोधार्थं न पूर्वं कथ्यतेऽधुना ॥ २४ ॥
कर्मान्यत्वं गुणैः साम्यं दृष्टमाश्रयभेदतः।
यतस्ततो नेति चिन्त्यं धात्रीलकुचयोर्यथा ॥ २५ ॥

टीका—कटुपनेसे और तिक्तपनेसे तथा कसैलेपनेसे और खट्टेपनेसे हरीतकी वातका नाश करती है. कड़वे और खट्टेपनसे हरीतकी पित्तको करनेवाली है, तब वा-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तको करनेवाली क्यों नहीं है ? ॥ २३ ॥ प्रभावसे जो दोषकी नाशकता सिद्ध है उसको कहते हैं. शिष्यबोधके अर्थ प्रथमहेतुओंसे नहीं कहा. अब आश्रयके भेदसे गुणोंकी समता और कर्मान्यता देखी जिससे चिंतवन करनेके योग्य नहीं है जैसे आंवले बड़हलोंकी ॥ २४ ॥ २५ ॥

पथ्यायां मज्जनि स्वादुः स्नायावम्लो व्यवस्थितः ।
वृन्ते तिक्तस्त्वचि कटुरस्थितस्तुवरो रसः ॥ २६ ॥
नवा स्निग्धा घना वृत्ता गुर्वी क्षिप्ता च याऽम्भसि ।
निमज्जेत्सा प्रशस्ता च कथिता सा गुणप्रदा ॥ २७ ॥
नवादिगुणयुक्ता च तथैकत्र द्विकर्षता ।
हरीतक्याः फले यत्र द्वयं तच्छ्रेष्ठमुच्यते ॥ २८ ॥

टीका—हड़की मज्जामें मधुर और स्नायुमें अम्ल रहता है, परदेमें तिक्तता और छिलकेमें कड़वापन और अस्थिमें कसैला रस होता है॥ २६॥ नवीन,स्निग्ध, घन,गोल,भारी और पानीमे डालनेसे डूब जाय वह हरीतकी अच्छी और समस्त गुणोंके देनेवाली होती है ॥ २७ ॥ नवादिगुणकरके युक्त और एक जगह दो तोलेकी श्रेष्ठ है और जो हरीतकीके दो फल एकसाथ जुड़ेहुए हों वहभी श्रेष्ठ है॥२८॥

चर्विता वर्धयत्यग्निं पेषिता मलशोधिनी ।
स्विन्ना संग्राहिणी पथ्या भृष्टा प्रोक्ता त्रिदोषनुत् ॥ २९ ॥
उन्मीलिनी बुद्धिबलेन्द्रियाणां निर्मूलिनी पित्तकफानिलानाम् ।
विस्रंसिनी मूत्रशकृन्मलानां हरीतकी स्यात्सह भोजनेन॥ ३० ॥
अन्नपानकृतान्दोषान्वातपित्तकफोद्भवान् ।
हरीतकी हरत्याशु भुक्तस्योपरि योजिता ॥ ३१ ॥

टीका—चर्वण अर्थात् चबाईहुई हड़ अग्निको बढाती है, पीसीहुई मलको शोधन करती है, और तलीहुई संग्रह करती है, तथा भुनीहुई हरीतकी त्रिदोषनाशक है ॥ २९ ॥ हरीतकी भोजनके साथ बुद्धि, बल, इन्द्रियोंको प्रकाश करनेवाली और पित्त, कफ, वायु इनको नाश करनेवाली तथा मूत्र मल दोषोंको निकालनेवाली होती है. ॥ ३० ॥ वात, पित्त, कफसे उत्पन्न हुए दोष और अन्नपानसे हुए दोषोंको भोजनके उपरांत सेवन की हुई हरीतकी शीघ्रही नाश करती है ॥ ३१॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लवणेन कफं हन्ति पित्तं हन्ति सशर्करा।
घृतेन वातजान् रोगान् सर्वरोगान् गुडान्विता॥ ३२॥

टीका—हरीतकी लवणके साथ खानेसे कफको नाश करती है और शर्कराके साथ खानेसे पित्तको शांत करती है तथा घृतके साथ सेवन करनेसे वातरोगोंको और गुडके साथ सेवन करनेसे समस्तरोगोंको नाश करती है॥ ३२॥

सिन्धूत्थशर्कराशुण्ठीकणामधुगुडैः क्रमात्।
वर्षादिष्वभया प्राश्या रसायनगुणैषिणा॥ ३३॥

टीका—सेंधानोन, शर्करा, सोंठि, पीपल, मधु, और गुड क्रमसे हरीतकीको इनके साथ वर्षादि ऋतुओंमें रसायनके गुण चाहनेवालोंको सेवन करना चाहिये॥ ३३॥

अध्वातिखिन्नो बलवर्जितश्च रूक्षः कृशो लंघनकर्षितश्च।
पित्ताधिको गर्भवती च नारी विमुक्तरक्तस्त्वभयां न खादेत्॥३४॥

टीका—मार्गसे अतिखिन्न हुआ, बलसे रहित, रूखा, कृश, लंघन करनेसे दुर्बल हुआ, अधिक पित्तवाला, गर्भवती स्त्री और फस्त लिया हुआ इत्यादि मनुष्योंको हरीतकी खानी नहीं चाहिये॥ ३४॥

अथ बिभीतकस्य नामानि गुणाश्च।

बिभीतकस्त्रिलिङ्गः स्यान्नाक्षः कर्षफलस्तु सः।
कलिद्रुमो भूतावासस्तथा कलियुगालयः॥ ३५॥

टीका—अब बहेडेके नाम तथा गुण लिखते हैं. बिभीतक त्रिलिंग है और पुंलिग अक्ष, कर्षफल, कलिद्रुम, भूतावास, कलियुगालय, ये नाम बहेड़ेके हैं॥३५॥

बिभीतकं स्वादुपाकं कषायं कफपित्तनुत्।
उष्णवीर्यं हिमस्पर्शं भेदनं कासनाशनम्॥ ३६॥
रूक्षं नेत्रहितं केश्यं कृमिवैस्वर्यनाशनम्।
बिभीतमज्जा तृट्छर्दिकफवातहरो लघुः॥ ३७॥
कषायो मदकृच्चाथ धात्रीमज्जापि तद्गुणा।

टीका—बहेड़ा पाकमें मधुर, कसेला, कफ पित्तका नाशक है, उष्णवीर्यवला,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्पर्शमें शीतल, भेदन, कासका नाशक है ॥ ३६ ॥ रूखा, नेत्रको हित करनेवाला है और केशोंको हित करनेवाला है और कृमि तथा स्वरभंगका नाश करता है और बहेड़ेकी गिरी तृषा, वमन, कफ, वात इनको नाश करनेवाली और हलकी होती है ॥ ३७ ॥ तथा कसेली और नशा करनेवाली होती है; और आमलेकी गिरी भी इसीके समान गुणोंको करती है.

अथामलक्या नामानि गुणाश्च ।

त्रिष्वामलकमाख्यातं धात्री त्रिष्वामलामृता ॥ ३८ ॥
हरीतकीसमं धात्रीफलं किन्तु विशेषतः ।
रक्तपित्तप्रमेहघ्नं परं वृष्यं रसायनम् ॥ ३९ ॥
हन्ति वातं तदम्लत्वात् पित्तं माधुर्यशैत्यतः ।
कफं रूक्षकषायत्वात् फलं धात्र्यास्त्रिदोषजित् ॥ ४० ॥
यस्य यस्य फलस्येह वीर्यं भवति यादृशम् ।
तस्य तस्यैव वीर्येण मज्जानमपि निर्दिशेत् ॥ ४१ ॥

टीका—अब आमलेके नाम और गुण कहते हैं. आमलक शब्द तीनों लिंगोंमे है और धात्री तथा तीनों लिंगोंमें प्रसिद्ध आमला शब्द और अमृता ये नाम आमलेके प्रसिद्ध हैं ॥ ३८ ॥ और हरितकीके समानही धात्रफिलके भी गुण जानो. किंतु विशेष करके रक्त पित्त और प्रमेहका नाशक और अत्यन्त वृष्य तथा रसायन होता है ॥ ३९ ॥ वह खट्टेपनसे वायुका नाश करता है, मधुरता और शीतलतासे पित्तका नाश करता है, रूखे ओर कसेलेपनसे कफको करता है. ऐसे आँवला त्रिदोषको जीतनेवाला है ॥ ४० ॥ यहांपर जिस जिसके फलका वीर्य जैसा होता है उस उसके मज्जाको भी वैसाही जानलेवे ॥४१॥

अथ त्रिफलाया लक्षणनामगुणाः ।

पथ्याबिभीतधात्रीणां फलैः स्यात्त्रिफला समैः ।
फलत्रिकं च त्रिफला सा वरा च प्रकीर्तिता ॥ ४२ ॥
त्रिफला कफपित्तघ्नी मेहकुष्ठहरा सरा ।
चक्षुष्या दीपनी रुच्या विषमज्वरनाशिनी ॥ ४३ ॥

टीका—इसके अनंतर त्रिफलाके नाम और लक्षण तथा गुण लिखते हैं. हड़,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बहेड़ा और आमला इन तीनों फलोंको समान लेकर मिलानेसे त्रिफला होती है फलत्रिक, त्रिफला और वरा भी कही गई है ॥ ४२ ॥ त्रिफला कफ और पित्तकी नाशक होती है तथा प्रमेह और कुष्ठका भी नाश करती है और दस्तावर है और नेत्रोंको हित करनेवाली है, अग्निकी दीपन करनेवाली है तथा रुचिको करती है और विषमज्वरका नाश करती है ॥ ४३ ॥

अथ शुण्ठ्या नामानि गुणाश्च ।

शुण्ठी विश्वा च विश्वं च नागरं विश्वभेषजम् ।
ऊषणं कटु भद्रं च शृङ्गबेरं महौषधम् ॥ ४४ ॥
शुण्ठी रुच्यामवातघ्नी पाचनी कटुका लघुः ।
स्निग्धोष्णा मधुरा पाके कफवातविबन्धनुत् ॥ ४५ ॥
वृष्या सर्या वमिश्वासशूलकासहृदामयान् ।
हन्ति श्लीपदशोथार्शआनाहोदरमारुतान् ॥ ४६ ॥
आग्नेयगुणभूयिष्ठं तोयांशं परिशोष्य यत् ।
संगृह्णाति मलं तत्तु ग्राहि शुण्ठ्यादेया यथा ॥ ४७ ॥
विबन्धभेदनी या तु सा कथं ग्राहिणी भवेत् ।
शक्तिर्विबन्धभेदे स्यात् यतो न मलपातने ॥ ४८ ॥

टीका—सोंठके नाम तथा गुण लिखते हैं–शुंठी, विश्वा, विश्वनागर, विश्वभेषज, ऊषण, कटु, भद्र, शृंगबेर, महौषध, ये सोंठके नाम हैं ॥ ४४ ॥ सोंठ रुचिको करनेवाली और आमवातकी नाश करनेवाली है, और पाचन है, कड़वी है, हलकी है, चिकनी, गरम, पाकमें मधुर, कफ, वात और बिबंध इनको नाश करनेवाली है॥४५॥ वृष्य, मलकी अनुलोमन करनेवाली तथा वमन, श्वास, शूल, खांसी, हृदयके रोग, श्लीपद, सूजन, बवासीर, अफरा, उदररोग और वातरोग इनका नाश करती है॥४६॥ जो वस्तु बहुत गरम, है और जलके अंशको शोषण करके मलको बांधती है वह ग्राही है, जैसे शुंठ्यादिक ॥ ४७ ॥ शंका–जो विबंधको भेदन करनेवाली है, कैसे ग्राहिणी होती है, उ०–विबंधभेदमें शक्ति है, मलपातनमें नहीं ॥ ४८ ॥

अथार्द्रकनामगुणाः ।

आर्द्रकं शृङ्गबेरं स्यात्कटु भद्रं तथार्द्रिका ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आर्द्रिका भेदनी गुर्वी तीक्ष्णोष्णा दीपनी मता ॥ ४९ ॥
कटुका मधुरा पाके रूक्षा वातकफापहा ।
ये गुणाः कथिताः शुण्ठ्यास्तेऽपि सन्त्यार्द्रकेऽखिलाः ॥ ५० ॥
भोजनाग्रे सदा पथ्यं लवणार्द्रकभक्षणम् ।
अग्निसंदीपनं रुच्यं जिह्वाकण्ठविशोधनम् ॥ ५१ ॥
कुष्ठपाण्ड्वामये कृच्छ्रे रक्तपित्ते व्रणे ज्वरे ।
दाहे निदाघशरदोर्नैव पूजितमार्द्रकम् ॥ ५२ ॥

टीका—अब अदरकके नाम और गुण कहते हैं. अदरक १, शृंगवेर २, कटुभद्र ३, आर्द्रिका ४ ये अदरकके चार नाम हैं. अदरक भेदन करनेवाला और भारी, तीखा, गरम, दीपन, कहा गया है ॥ ४९ ॥ कडवा, पाकमें मधुर, रूखा, वात और कफका नाशक है. जितने गुण सोंठमें कहआये हैं उतने ही सब अदरकमें भी जानों ॥ ५० ॥ भोजन करनेसे पहिले अदरक और नमकका सेवन करना पथ्य है, अग्निका दीपन करनेवाला तथा रुचि करनेवाला है, जीभ और कंठ इनका विशोधन है ॥ ५१ ॥ कुष्ठ, पांडुरोग और मूत्रकृच्छ्र, तथा रक्तपित्त, घाव और ज्वर इनमें भी पथ्य है. दाहमें और ग्रीष्ममें तथा शरदमें अदरक अच्छा नहीं होता ॥ ५२ ॥

अथ पिप्पल्या नामानि गुणाश्च ।

पिप्पली मागधी कृष्णा वैदेही चपला कणा ।
उपकुल्योषणा शौण्डी कोला स्यात्तीक्ष्णतण्डुला ॥ ५३ ॥

टीका—अब पिप्पलीके नाम और गुण कहते हैं. पिप्पली १, मागधी २, कृष्णा ३, वैदेही ४, चपला ५, कणा ६, उपकुल्या ७, ऊषणा ८, शौंडी ९, कोला १०, तीक्ष्णा ११, तंडुला १२. ये पीपलके बारह नाम हैं ॥ ५३ ॥

पिप्पली दीपनी वृष्या स्वादुपाका रसायनी ।
अनुष्णा कटुका स्निग्धा वातश्लेष्महरी लघुः ॥ ५४ ॥
पिप्पली रेचनी हन्ति श्वासकासोदरज्वरान् ।
कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शःप्लीहशूलाममारुतान् ॥ ५५ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आर्द्रा कफप्रदा स्निग्धा शीतला मधुरा गुरुः ।
पित्तप्रशमनी सा तु शुष्का पित्तप्रकोपिनी ॥ ५६ ॥
पिप्पली मधुसंयुक्ता मेदःकफविनाशिनी ।
श्वासकासज्वरहरा वृष्या मेध्याग्निवर्धिनी ॥ ५७ ॥
जीर्णज्वरेऽग्निमान्द्ये च शस्यते गुडपिप्पली ।
कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ॥ ५८ ॥
द्विगुणः पिप्पलीचूर्णाद्गुडोऽत्र भिषजां मतः ।

टीका—अब पिप्पलीके गुण कहते हैं. पीपली दीपनी और पुष्टा, पाकमें मधुर, रसायनी, कुछेक गरम, कटु, चिकनी, और वातकफको दूर करनेवाली, तथा हलकी है ॥ ५४ ॥ और दस्तावर तथा श्वास, कास, उदररोग, और ज्वर इनको नाश करनेवाली है. कोढ़, प्रमेह, बायगोला, बवासीर, शूल, आमवात, इनको नाश करती है ॥ ५५ ॥ और गीली पीपली कफको पैदा करती है. चिकनी, शीतल, मधुर, भारी, पित्तकी शमनी होती है, और पीपली, बहुत सूखी हुई पित्तका प्रकोप करनेवाली होती है ॥ ५६ ॥ पीपलीको सहतके साथ खानेसे मेद, कफ, इनका नाश करती है तथा श्वास, कास, ज्वर, इनका नाश करती है. पुष्ट है. बुद्धिको बढ़ानेवाली है. अग्निको दीपन करनेवाली है ॥ ५७ ॥ जीर्णज्वरमें और मंदाग्निमें पीपली गुडके संग सेवन करनी अच्छी होती है. कास, अजीर्ण, अरुचि तथा श्वास, इन रोगोंको नाश करनेवाली है. पांडुरोग, कृमिरोग, इनको नाश करती है ॥ ५८ ॥ पीपलके चूर्णसे दुगुना गुड लेना वैद्योंने कहा है ।

अथ मरिचस्य नामानि गुणाश्च ।

मरिचं वेल्लजं कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम् ॥ ५९ ॥
मरीचं कटुकं तीक्ष्णं दीपनं कफवातजित् ।
उष्णं पित्तकरं रूक्षं श्वासशूलकृमीन् हरेत् ॥ ६० ॥
तदार्द्रं मधुरं पाके नात्युष्णं कटुकं गुरु ।
किञ्चित्तीक्ष्णगुणं श्लेष्मप्रसेकि स्यादपित्तलम् ॥ ६१ ॥

टीका—अब मरिचके नाम और गुण कहते हैं. मरिच, वेल्लज, कृष्ण, ऊषण,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धर्मपत्तन ये मरिचके नाम हैं ॥ ५९ ॥ मिरच कडवी, तीखी, दीपन, कफवातकी नाशक होती है. उष्ण, पित्तको करनेवाली, रूखी, श्वास, शूल, कृमि, इनको नाश करती है ॥ ६० ॥ गीली पाकमें मधुर होती है, और न बहुत गरम, कडवी, भारी, होती है. कुछ तीखी गुणवाली, कफको निकालनेवाली, पित्तको करनेवाली होती है ॥ ६१ ॥

अथ त्रिकटुकनामलक्षणगुणाः ।

विश्वोपकुल्या मरिचं त्रयं त्रिकटु कथ्यते ।
कटुत्रिकं तु त्रिकटु त्र्यूषणं व्योष उच्यते ॥ ६२ ॥
त्र्यूषणं दीपनं हन्ति श्वासकासत्वगामयान् ।
गुल्ममेहकफस्थौल्यमेदश्लीपदपीनसान् ॥ ६३ ॥

टीका—अब त्रिकटुके नाम और लक्षण तथा गुण कहते हैं. सोंठ, पीपल, मिरच, इन तीनोंको त्रिकटु कहते हैं. कटुत्रिक, त्रिकटु, त्र्यूषण, व्योष, ये त्रिकटुके नाम हैं ॥ ६२ ॥ त्रिकटु दीपन है, श्वास, कास, त्वचाके रोग इनको नाश करता है. गुल्म, प्रमेह, कफ, स्थूलता, मेद, श्लीपद, पीनस, इनको भी नाश करता है ॥ ६३ ॥

अथ पिप्पलीमूलस्य नामानि गुणाश्च ।

ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलमूषणं चटकाशिरः ।
दीपनं पिप्पलीमूलं कटूष्णं पाचनं लघु ॥ ६४ ॥
रूक्षं पित्तकरं भेदि कफवातोदरापहम् ।
आनाहप्लीहगुल्मघ्नं कृमिश्वासक्षयापहम् ॥ ६५ ॥

टीका—अब पीपलामूलके नाम और गुण कहते हैं. ग्रंथिक, पीपलीमूल, ऊषण , चटकाशिर, ये पीपलामूलके नाम हैं. पीपलामूल दीपन, कडुवा, उष्ण, पाचन, हलका होता है ॥ ६४ ॥ रूखा, पित्तको करनेवाला, भेदन करनेवाला; कफ, वात, उदररोग, इनका नाशक. अफरा, प्लीह, बायगोला, इनका नाशक तथा कृमि, श्वास, क्षय इनका नाशक है ॥ ६५ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ चतुरूषणस्य लक्षणगुणाः ।

त्र्यूषणं सकणामूलं कथितं चतुरूषणम्
व्योषस्यैव गुणाः प्रोक्ता अधिकाश्चतुरूषणे ॥ ६६ ॥

टीका—अब चतुरूषणके लक्षण और गुण कहते हैं. त्र्यूषण अर्थात् त्रिकटु पीपलीमूलके सहित चतुरूषण कहा गया है. त्रिकटुके ही अधिक गुण चतुरूषणमें होते हैं ॥ ६६ ॥

अथ चव्यं नाम गुणाः ।

भवेच्चव्यं तु चविका कथिता सा तथागुणा ।
कणामूलगुणं चव्यं विशेषाद्गुदजापहम् ॥ ६७ ॥

टीका—अब चव्यके गुण लिखते हैं. चव्य और चविका चव्यके नाम है. और जो गुण पीपलालमूमें हैं वही चव्यमें भी जानो. और विशेषकरके चव्य बवासीरको शांत करता है ॥ ६७ ॥

अथ गजपिप्पल्या नामानि गुणाश्च ।

चविकाया फलं प्राज्ञैः कथिता गजपिप्पली ।
कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरश्च सा ॥ ६८ ॥
गजकृष्णा कटुर्वातश्लेष्महृद्वह्निवर्धनी ।
उष्णा विहन्त्यतीसारं श्वासकण्ठामयकृमीन् ॥ ६९ ॥

टीका—अब गजपीपलके नाम तथा गुण लिखते हैं. चविकाके फलको शास्त्रमें गजपीपल कहते हैं. फिर यह कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वशिर, इन चार नामोंसे प्रसिद्ध है ॥ ६८ ॥ और गजपीपल स्वादमें कडवी और वातकफके रोगोंको नाश करनेवाली तथा अग्निको दीप्त करनेवाली और उष्ण यानी गरम होती है, और अतीसार यानी दस्तोंकी बीमारी, श्वासरोग, और कंठरोग, कृमिरोग इन सब रोगोंको हरती है ॥ ६९ ॥

अथ चित्रकनामगुणाः ।

चित्रकोऽनलनामा च पीठो व्यालस्तथोषणः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चित्रकः कटुकः पाके वह्निकृत्पाचनो लघुः ॥ ७० ॥
रूक्षोष्णो ग्रहणीकुष्ठशोथार्शःकृमिकासनुत्।
वातश्लेष्महरो ग्राही वातार्शःश्लेष्मपित्तहृत् ॥ ७१ ॥

टीका—चित्रक और अग्निके नामोंवाला अर्थात् जो नाम अग्निके हैं वेही इसके भी जानो. पीठ, व्याल.ऊषण, ये चित्रकके नाम हैं. और चित्रक पाकमें कडुवा है, अग्निकी दीप्ति करनेवाला है, तथा पाचन और हलका होता है ॥ ७० ॥ रूखा है, उष्ण यानी गरम है. संग्रहणी, कोढ़, सूजन, तथा बवासीर, क्रमि, और कास इनको हरनेवाला है तथा वात, कफ इनका नाश करनेवाला है और ग्राही है; बवासीरका तथा कफपितका नाशक है ॥ ७१ ॥

अथ पञ्चकोललक्षणगुणाः।

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः।
पञ्चभिः कोलमात्रं यत्पञ्चकोलं तदुच्यते ॥ ७२ ॥
पञ्चकोलं रसे पाके कटुकं रुचिकृन्मतम्।
तीक्ष्णोष्णं पाचनं श्रेष्ठं दीपनं कफवातनुत् ॥ ७३ ॥
गुल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्नं पित्तकोपनम्।

टीका—अब पंचकोलके लक्षण और गुण लिखते हैं. पीपल, पीपलामूल चव्य, चित्रक, सोंठ, इन पाँचों औषधोंको एकएक कोल यानी आठ२ मासेको पंचकोल कहा है ॥ ७२ ॥ पंचकोल रसमें और पाकमें कडवा है, तथा रुचिका करनेवाला हैं, और रूखा है, उष्ण अर्थात् गरम है, पाचन है, बहुत अच्छा, दीपन है, कफ तथा वातरोगोंका हरनेवाला है ॥ ७३ ॥ गुल्म, बायगोला, प्लीहा, तथा उदरके रोग, अफरा, और शूल इन सब रोगोंका नाशक है, और पित्तको दूषित करनेवाला होता है.

अथ षडूषणस्य लक्षणगुणाः।

पञ्चकोलं समरिचं षडूषणमुदाहृतम् ॥ ७४ ॥
पञ्चकोलगुणं तत्तु रूक्षमुष्णं विषापहम्।

टीका—अब षडूषणके गुण और लक्षण लिखते हैं. पंचकोलमें मिरच मिला-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नेसे षडूषण कहलाता है ॥ ७४ ॥ और इसमें पंचकोलके ही समान गुण होते हैं. तथा रूखा, उष्ण, अर्थात् गरम और विषका नाशक भी होता है ।

अथ यवान्या नामानि गुणाश्च ।

यवानिकोग्रगन्धा च ब्रह्मदर्भाऽजमोदिका ॥ ७५ ॥
सैवोक्ता दीप्यका दीप्या तथा स्याद्यवसाह्वया ।
यवानी पाचनी रुच्या तीक्ष्णोष्णा कटुका लघुः ॥ ७६ ॥
दीपनी च तथा तिक्ता पित्तला शुक्रशूलहृत् ।
वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहकृमिप्रणुत् ॥ ७७ ॥

टीका—यवानिका, उग्रगंधा, ब्रह्मदर्भा, अजमोदिका ॥ ७५ ॥ दीप्यका, दीप्या, यवसाह्वया, ये अजमायनके नाम हैं. अजमायन पाचन करनेवाली, और रुचिको हित करनेवाली, और तीखी, तथा उष्ण, कडवी और हलकी है ॥ ७६ ॥ तथा अग्निको दीपन करनेवाली और पित्तको करनेवाली तथा शुक्र और शूलकी नाशक होती है. और वातरोग, कफरोग, अफरा, तथा बायगोला, तापतिल्ली, और कृमि इनको भी हरनेवाली होती है ॥ ७७ ॥

अथ अजमोदानामानि गुणाश्च ।

अजमोदा खराश्वा च मयूरो दीप्यकस्तथा ।
तथा ब्रह्मकुशा प्रोक्ता काकोली च समस्तका ॥ ७८ ॥
अजमोदा कटुस्तीक्ष्णा दीपनी कफवातनुत् ।
उष्णा विदाहिनी हृद्या वृष्या बलकरी लघुः ॥ ७९ ॥
नेत्रामयकफच्छर्दिहिक्काबस्तिरुजो हरेत् ।

टीका—अब अजमोदके नाम और गुण लिखते हैं. अजमोदा, खर, अश्वा, मयूर, दीप्यक, ब्रह्मकुशा, काकोली, समस्तका, ये आठ नाम अजमोदके हैं ॥ ७८ ॥ अजमोदा, कडवी है, तीखी है, दीपन है, और कफवातको हरनेवाली है, और गरम तथा विदाहको करनेवाली है, हृद्य, वृष्य; और बलदायक है, हलकी है ॥ ७९ ॥ नेत्ररोग, कफ, वमन, हिचकी तथा पेडूके दर्द इतने रोगोंको हरनेवाली है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ (पारसीकय०) खुरासानीगुणाः ।

पारसीकयवानी तु यवानीसदृशी गुणैः ॥ ८० ॥
विशेषात्पाचनी रुच्या ग्राहिणी मादिनी गुरुः ।

टीका—खुरासानी अजमायन अजमायनके ही सदृश गुणवाली होती है, अर्थात् जो गुण अजमायनके हैं वेही खुरासानी अजमायनके जानो ॥८०॥ विशेष करके पाचन करनेवाली, और रुचिको करनेवाली, और ग्राहिणी, तथा मद करनेवाली, और भारी होती है ।

शुक्लजीरा-कालाजीरा-कलोंजीनामगुणाः ।

जीरको जरणोऽजाजी कणा स्याद्दीर्घजीरकः ॥ ८१ ॥
कृष्णजीरं सुगन्धश्च तथैवोद्गारशोधनः ।
कालाऽजाजी तु सुषवी कालिका चोपकालिका ॥ ८२ ॥
पृथ्वीका कारवी पृथ्वी पृथुः कृष्णोपकुश्चिका ।
उपकुश्ची च कुश्ची च बृहज्जीरक इत्यपि ॥ ८३ ॥

टीका—अब सफेद जीरा और काला जीरा तथा कलोंजी इनके नाम गुण लिखते हैं. जीरक, जरण, अजाजी, कणा, दीर्घजीरक, ये पांच सफेदजीरेके नाम हैं ॥८१॥ कृष्णजीरक, सुगंध, उद्गारशोधन, कालाजाजी, सुषवी, कालिका, उपकालिका, ॥ ८२ ॥ पृथ्वीका, कारवी, पृथ्वी, पृथु, कृष्णा, उपकुंचिका ये चौदह कृष्णजीरेके नाम हैं. उपकुंची, कुंची, बृहज्जीरक, ये भी जीरेके नाम हैं ॥ ८३ ॥

जीरकत्रितयं रूक्षं कटूष्णं दीपनं लघु ।
संग्राहि पित्तलं मेध्यं गर्भाशयविशुद्धिकृत् ॥ ८४ ॥
ज्वरघ्नं पाचनं वृष्यं बल्यं रुच्यं कफापहम् ।
चक्षुष्यं पवनाध्मानगुल्मच्छर्द्यतिसारहृत् ॥ ८५ ॥

टीका—ये तीनों जीरे रूखे, कड़वे, तथा गरम, दीपन, और हलके होते हैं, और ग्राही हैं, तथा पित्तकारक हैं, बुद्धिको बढ़ानेवाले और गर्भाशयकी शुद्धि करनेवाले हैं ॥ ८४ ॥ और ज्वरके नाश करनेवाले पाचन तथा पुष्टिको करनेवाले तथा बलको देनेवाले और रुचिको करनेवाले होते, हैं कफको नाश करनेवाले हैं

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और नेत्रोंको हितकारक, वायुरोग, अफरा, बायगोला, तथा वमन और अतीसार इनके भी हरनेवाले होते हैं ॥ ८५ ॥

अथ धान्यकस्य नामानि गुणाश्च ।

धान्यकं धानकं धान्यं धाना धनियकं तथा ।
कुनटी धेनुका छत्रा कुस्तुम्बुरु वितुन्नकम् ॥ ८६ ॥
धान्यकं तुवरं स्निग्धमवृष्यं मूत्रलं लघु ।
तिक्तं कटूष्णवीर्यं च दीपनं पाचनं स्मृतम् ॥ ८७ ॥
ज्वरघ्नं रोचकं ग्राहि स्वादुपाकि त्रिदोषनुत् ।
तृष्णादाहवमिश्वासकासकार्श्यकृमिप्रणुत् ॥ ८८ ॥
आर्द्रं तु तद्गुणं स्वादु विशेषात्पित्तनाशि तत् ।

टीका—धान्यक, धानक, धान्य, धाना, धानेयक, कुनटी, धेनुका, छत्रा, कुस्तुम्बुरु, वितुन्नक, ये धनियेके दस नाम हैं ॥ ८६ ॥ धनियां कसैला है, चिकना है, पुरुषत्वको नाश करनेवाला है, मूत्रको लानेवाला है, और हलका है, तिक्त है, कडुवा है, गरम वीर्यवाला है, दीपन और पाचन है ॥ ८७ ॥ ज्वरका नाश करनेवाला है, रुचिको उपजानेवाला है, दस्तोंको बंद करता है, पाकमें मधुर है, त्रिदोषका नाशक है, और तृषा, दाह, वमन, तथा श्वास, कास, दुर्बलता और कृमि इन रोगोंका हरनेवाला है ॥ ८८ ॥ और हरा धनिया भी यही गुणवाला जानो, मधुर है, विशेषकरके पित्तका नाश करनेवाला है ।

अथ शतपुष्पानामगुणाः ।

शतपुष्पा शताह्वा च मधुरा कारवी मिसिः ॥ ८९ ॥
अतिलम्बी सितच्छत्रा संहिता छत्रिकापि च ।
छत्रा शालेयशालीनौ मिश्रेया मधुरा मिसिः ॥ ९० ॥
शतपुष्पा लघुस्तीक्ष्णा पित्तकृद्दीपनी कटुः ।
उष्णा ज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत् ॥ ९१ ॥
मिश्रेया तद्गुणा प्रोक्ता विशेषाद्योनिशूलनुत् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—अब सौंफ और सोया दोनोंके नाम और गुण क्रमसे लिखते हैं. शतपुष्पा, शताह्वा, मधुरा, कारवी, मिसि ॥ ८९ ॥ अतिलम्बी, सितच्छत्रा, संहिता, छत्रिका, ये सौंफके नव नाम हैं. अब सोआके नाम कहते हैं. छत्रा, शालेय, शालीन, मिश्रेया, मधुरा, मिसि, ये छे नाम सोआके हैं ॥ ९० ॥ सौंफ हलकी है, तीखी है, पित्तको करनेवाली है, और दीपन तथा कड़वी है. उष्णज्वर, वात, कफ, व्रण, शूल, और नेत्ररोग इनको हरनेवाली है ॥ ९१ ॥ और सोआमें भी ऐसे हीं गुण जानों. विशेषकरके योनिशूलके नाश करनेवाला है.

अग्निमान्द्यहरी हृद्या बद्धविट्कृमिशुक्रहृत् ॥ ९२ ॥
रूक्षोष्णा पाचनी कासवमिश्लेष्मानिलान् हरेत् ।

टीका—मंदाग्निको नाश करनेवाली, तथा हृदयके रोगोंको हरनेवाली, कब्जियतको हरनेवाली, तथा कृमि और शुक्र इनको हरनेवाली है, रूखी है ॥ ९२ ॥ उष्ण है, पाचन है; कासरोगको, वमनको, तथा कफवातको, हरनेवाली है.

मेथीवनमेथीनामगुणाः ।

मेथिका मिथिनी मेथिर्दीपनी बहुपत्रिका ॥ ९३ ॥
बोधनी बहुबीजा च जातिगन्धफला तथा ।
वल्लरी कामथा मिश्रा मिश्रपुष्पा च कैरवी ॥ ९४ ॥
कुंचिका बहुपर्णी च पित्तजिद् वायुनुद् द्विधा ।
मेथिका वातशमनी श्लेष्मघ्नी ज्वरनाशिनी ॥ ९५ ॥
ततः स्वल्पगुणा बल्या वाजिनां सा तु पूजिता ।

टीका—मेथिका, मिथिनी, मेथी, दीपनी, बहुपत्रिका ॥ ९३ ॥ बोधनी, बहुबीजा, जातिगन्धफला, वल्लरी, कामथा ये ११ मेथीके नाम हैं. अब इसके उपरांत वनमेथीके नाम लिखते हैं. मिश्रपुष्पा, कैरवी ॥ ९४ ॥ कुंचिका, बहुपर्णी, पित्तजित्, वायुनुत् ये दो प्रकारकी वनमेथी होती है. मेथी वातके रोगोंको हरनेवाली, कफरोगोंका नाश करनेवाली, तथा ज्वरको हरनेवाली होती है ॥ ९५ ॥ और थोड़े गुणवाली, बलको देनेवाली, तथा घोड़ोंको भी अच्छी होती है.

२

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चंद्रशूरनामगुणाः ।

चन्द्रिका चर्महन्त्री च पशुमेहनकारिका ॥ ९६ ॥
नन्दिनी कारवी भद्रा वासपुष्पा सुवासरा ।
चन्द्रशूरं हितं हिक्कावातश्लेष्मातिसारिणाम् ॥ ९७ ॥
असृग्वातगदद्वेषि बलपुष्टिविवर्धनम् ।

टीका—अब चंद्रशूरके नाम तथा गुण लिखते हैं. चंद्रिका, चर्महंत्री, पशुमेहनकारिका ॥ ९६ ॥ नन्दनी, कारवी, भद्रा, वासपुष्पा, सुवासरा, ये ८ चंद्रशूरके नाम हैं. चंद्रशूर हिचकीरोग, वातकफजनित रोगों, तथा अतीसाररोगोंमें हित करनेवाला है ॥ ९७ ॥ रक्तरोगोंको, वातरोगोंको हरनेवाला तथा रक्तवातको हरनेवाला, और बल तथा पुंष्टिको बढ़ानेवाला है.

मेथिकादिचतुष्टयगुणाः ।

मेथिका चन्द्रशूरश्च कालाजाजी यवानिका ॥ ९८ ॥
एतच्चतुष्टयं युक्तं चतुर्बीजमिति स्मृतम् ।
तच्चूर्णं भक्षितं नित्यं निहन्ति पवनामयम् ॥ ९९ ॥
अजीर्णं शूलमाध्मानं पार्श्वशूलं कटिव्यथाम् ।

टीका—अब चार दानेके लक्षण और गुण लिखते हैं. मेथी, चंद्रशूर, काला जीरा, तथा अजमायन ॥ ९८ ॥ इन चारोंको समान लेकर मिलानेसे चार दाना तथा चतुर्बीज कहते हैं. फिर इसके चूर्णको नित्य सेवन करनेसे वातके रोगोंको ॥ ९९ ॥ और अजीर्णको, तथा शूलको, अफराको, तथा पसलीके दर्दको और कमरकी पीडाको इत्यादि रोगोंको हरता है.

अथ हिङ्गुनामगुणाः ।

सहस्रवेधि जतुकं बाह्लीकं हिङ्गु रामठम् ॥ १०० ॥
हिङ्गूष्णं पाचनं रुच्यं तीक्ष्णं वातबलासहृत् ।
शूलगुल्मोदरानाहकृमिघ्नं पित्तवर्धनम् ॥ १०१ ॥

टीका—अब हींगके नाम तथा गुण लिखते हैं. सहस्रवेधी, जतुक, बाल्हीक,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हिंगु, रामठ ये हींगके नाम कहे हैं ॥ १०० ॥ हींग गरम है, पाचन है, और रुचिको करनेवाला, तीखा, वातरोगोंको तथा कफरोगोंको हरनेवाला, और शूलरोग, गुल्मरोग, बायगोला, उदररोग अफरा और कृमिरोग इनका हरनेवाला है तथा पित्तको बढ़ानेवाला है ॥ १०१ ॥

अथ वचानामगुणाः ।

वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ।
क्षुद्रपत्री च मङ्गल्या जटिलोग्रा च लोमशा ॥ १०२ ॥
वचोग्रगन्धा कटुका तिक्तोष्णा वान्तिवह्निकृत् ।
विबन्धाध्मानशूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधिनी ॥ १०३ ॥
अपस्मारकफोन्मादभूतजन्त्वनिलान् हरेत् ।

टीका—अब वचके नाम तथा गुण कहते हैं. वच, उग्रगन्धा, षड्ग्रन्था, गोलोमी शतपर्विका, क्षुद्रपत्री, मंगल्या, जटिला, उग्रा, ये बचके नव नाम हैं ॥ १०२ ॥ बच कड़वी है, तिक्त है, और उष्ण है, और वमन तथा अग्निको करनेवाली है, कब्ज है, अफरा और शूल इनको हरनेवाली है, तथा मल और मूत्रका शोधन करनेवाली है ॥ १०३ ॥ मिरगी, कफरोग, उन्माद, मूत्र, कृमि, और वातजनित रोग इनको भी हरती है.

अथ खुरासानीवचानामगुणाः ।

पारसीकवचा शुक्ला प्रोक्ता हेमवतीति सा ।
हैमवत्युदिता तद्वद्वातं हन्ति विशेषतः ॥ १०४ ॥

टीका—अब खुरासानी बचके नाम तथा गुण लिखते हैं. पारसीकवचा, शुक्ला, हैमवती, हेमवती ये पांच नाम हैं. विशेषकरके वातजनित रोगोंको हरनेवाली कही है ॥ १०४ ॥

अथ सुगन्धा (कुलींजन) नामगुणाः ।

सुगन्धाप्युग्रगन्धा च विशेषात्कफकासनुत् ।
सुस्वरत्वकरी रुच्या हृत्कण्ठमुखशोधिनी ॥ १०५ ॥

टीका—सुगंधा, उग्रगंधा, ये दो नाम कुलींजनके हैं, और यह विशेष करके

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कफरोग और कासरोगोको हरनेवाला है और स्वरको अच्छा करनेवाला है, तथा त्वचाको भी अच्छी करनेवाला कहा है, और रुचिको करनेवाला, हृदय, कंठ, और मुख इनका शोधन करनेवाला होता है ॥ १०५ ॥

अपरासुगन्धानामगुणाः ।

स्थूलग्रन्थिः सुगन्धा स्यात् ततो हीनगुणा स्मृता ।

टीका—मोटी गांठवाली बच सुगंध होती है और उससे हीनगुणवाली होती है.

अथ द्वीपान्तरवचा (चोबचीनी) नामगुणाः ।

द्वीपान्तरवचा किञ्चित्तिक्तोष्णा वह्निदीप्तिकृत् ॥ १०६ ॥
विबन्धाध्मानशूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधिनी ।
वातव्याधिमपस्मारमुन्मादं तनुवेदनाम् ॥ १०७ ॥
व्यपोहति विशेषेण फिरङ्गामयनाशिनी ।

टीका—अब चोबचीनीके नाम तथा गुण लिखते हैं. अन्यद्वीपकी वचको इस देशमें चोबचीनी कहते हैं. चोबचीनी किंचित् तिक्त और उष्ण होती है, और अग्निको दीपन करती है ॥ १०६ ॥ कब्जियत, अफरा और शूल इनको हरनेवाली है, तथा मल और मूत्रका शोधन करनेवाली है. और वातरोगोंको, मृगीको, उन्मादरोगको, समस्त शरीरकी पीडाको शमन करती है ॥ १०७ ॥ और अधिककरके फिरंगरोगका नाश करनेवाली है.

अथ हपुषानामगुणाः ।

(तन्मध्ये प्रथमं फलं मत्स्यसदृशं विस्रगन्धं द्वितीयमश्वत्थफलसदृशं मत्स्यगन्धं तयोर्नामनि गुणाश्च.)

हपुषा पुष्पवत्सा च पराश्वत्थफला मता ॥ १०८ ॥
मत्स्यगन्धा प्लीहहन्त्री विषघ्नी ध्वांक्षनाशिनी ।
हपुषा दीपनी तिक्ता मृदूष्णा तुवरा गुरुः ॥ १०९ ॥
पित्तोदरसमीरार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृत् ।
पराप्येतद्गुणा प्रोक्ता रूपभेदो द्वयोरपि ॥ ११० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—अब दोनोंप्रकारके हाऊबेरोंके नाम तथा गुण लिखते हैं. [जिसमें पहिलेका फल मछलीके सदृश कच्चे मांसके समान गंधवाला होता है, और दूसरा पीपलके फलके सदृश आकारवाला मछलीके गंधके समान गंधवाला होता है.] हपुषा, पुष्पवत्सा, और दूसरा अश्वत्थफला कहा है ॥ १०८ ॥ मत्स्यगंधा, प्लीहहंत्री, विषघ्नी, ध्वांक्षनाशिनी, ये हाऊबेरके नाम हैं. और हाऊबेर तिक्त, मृदु, उष्ण, तथा कसेला और भारी होता है ॥ १०९ ॥ पित्तोदर और वातजनित बवासीर तथा संग्रहणी, बायगोला और शूलरोग इन समस्त रोगोंका हरनेवाला है, और दूसरा हाऊबेर भी इसीके समान गुणवाला होता है, और इन दोनोंके रूपमें भेद भी है ॥ ११० ॥

अथ विडंगनामगुणाः ।

पुंसि क्लीबे विडङ्गं स्यात्कृमिघ्नं जन्तुनाशनम् ।
तण्डुलश्च तथा वेल्लममोघा चित्रतण्डुला ॥ १११ ॥
विडङ्गं कटु तीक्ष्णोष्णं रूक्षं वह्निकरं लघु ।
शूलाध्मानोदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत् ॥ ११२ ॥

टीका—अब बायबिडंगके नाम तथा गुण लिखते हैं. पुल्लिंग और नपुंसकलिंगमें विडंग होता है, कृमिघ्न, जन्तुनाशक, तण्डुल, वेल्ल, अमोघ, चित्रतण्डुल, ये बायबिडंगके नाम हैं ॥ १११ ॥ बायबिडंग कड़वा, तीखा, उष्ण, और रूखा है, अग्निको करनेवाला है, तथा हलका है, और शूलरोग, आध्मानरोग, उदररोग, कफरोग, कृमिरोग, वातरोग, कब्जियत, इतने रोगोंको हरनेवाला है, [और बहुतसे ग्रंथोंमें क्षुद्र, भूतन्दुला, घोषा, कराला, मृगगामिनी ये भी नाम बायबिडंगके लिखे हैं.] ॥ ११२ ॥

अथ तुम्बरुफलनामगुणाः ।

तुम्बरुः सौरभः सौरो वनजः सानुजोऽन्धकः ।
तुम्बरु प्रथितं तिक्तं कटु पाकेऽपि तत्कटु ॥ ११३ ॥
रूक्षोष्णं दीपनं तीक्ष्णं रुच्यं लघु विदाहि च ।
वातश्लेष्माक्षिकर्णोष्ठशिरोरुग्गुरुताकृमीन् ॥ ११४ ॥
कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणि नाशयेत् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—तुम्बरु, सौरभ, सौर, वनज, सानुज, अंधक, ये पांच नाम तुंबरुफलके हैं. यह तिक्त है, और कटु है, तथा पाकमें भी कटु है ॥ ११३ ॥ और रूखा, उष्ण, दीपन, तीखा, और रुचिको उत्पन्न करनेवाला, हलका, तथा विदाही है, वातजनित रोगोंको और कफजनित रोगोंको और नेत्ररोगोंको, कर्णरोगोंको, मस्तकके रोगोंको, ओष्ठके रोगोंको और कृमियोंको ॥ ११४॥ कुष्ठरोगको, शूलको, अरुचिको, श्वासको, प्लीहोंको तथा मूत्रकृच्छ्रको इतने रोगोंको नाश करनेवाला है.

अथ वंशलोचननामगुणाः।

स्याद्वंशरोचना वांशी तुगाक्षीरी तुगाह्वया ॥ ११५ ॥
त्वक्क्षीरी वंशजा शुभ्रा वंशक्षीरी च वैणवी।
वंशजा बृंहणी वृष्या बल्या स्वाद्वी च शीतला ॥ ११६ ॥
तृष्णाकासज्वरश्वासक्षयपित्तास्रकामलाः।
हरेत्कुष्ठं व्रणं पाण्डुं कषाया वातकृच्छ्रजित् ॥ ११७ ॥

टीका—वंशरोचनानाम तथा गुण- वंशरोचना, वांशी, तुगाक्षीरी, तुगाह्वया, ॥ ११५॥ त्वक्क्षीरी, वंशजा, शुभ्रा, वंशक्षीरी, वैणवी, ये ९ वंशलोचनके नाम हैं. वंशलोचन वीर्यको बढ़ानेवाला है, पुष्ट है, बलको देनेवाला है, मधुर है, शीतल है ॥ ११६ ॥ तृषारोगको, कासरोगको, ज्वरको, श्वासरोगको, क्षयरोगको, रक्तपित्तरोगको, कामलारोगको, हरनेवाला होता है. तथा कुष्ठ, व्रण, पांडुरोग, और वातसे उत्पन्न मूत्रकृच्छ्रको नाश करता है तथा कसेला है ॥ ११७ ॥

अन्यच्च।

वंशजा वेणुजा क्षीरी त्वक्क्षीरी वंशरोचना।
तुगाक्षीरी तुगावंशी वंशक्षीरी शुभा सिता ॥ ११८ ॥

टीका—और ग्रंथोंके मतसे वंशलोचनके ये भी नाम हैं, सो लिखते हैं. वंशजा १, वेणुजा २, क्षीरी ३, त्वक्क्षीरी ४, वंशरोचना ५, तुगाक्षीरी ६, तुगावंशी ७, वंशक्षीरी ८, शुभा ९, सिता १० ॥ ११८ ॥

अथ समुद्रफेननामगुणाः।

समुद्रफेनः फेनश्च डिण्डीरोऽब्धिकफस्तथा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

समुद्रफेनश्चक्षुष्यो लेखनः शीतलश्च सः ॥ ११९ ॥
कषायो विषपित्तघ्नः कर्णरुक्कफहृल्लघुः ।

टीका—समुद्रफेन १, फेन २, डिण्डीर ३, अब्धिकफ ४, ये चार समुद्रफेनके नाम हैं. समुफेन नेत्रोंको हित करनेवाला है, लेखन और शीतल होता है ॥ ११९ ॥ और कसैला है, विषका तथा पित्तका नाश करनेवाला है, और हलका है.

अथ अष्टवर्गस्य लक्षणगुणाः ।

जीवकर्षभकौ मेदे काकोल्यौ ऋद्धिवृद्धिके ॥ १२० ॥
अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैः कथितश्चरकादिभिः ।
अष्टवर्गो हिमः स्वादुर्बृंहणः शुक्रलो गुरुः ॥ १२१ ॥
भग्नसंधानकृत् कामबलासबलवर्धनः ।
वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयापहः ॥ १२२ ॥

टीका—जीवक १, ऋषभक २, मेदा ३, महामेदा ४, काकोली ५, क्षीरकाकोली ६, ऋद्धि ७, वृद्धि ८, ॥ १२० ॥ इन आठोंको अष्टवर्ग कहते हैं, यह चरकादि मुनियोंका वाक्य है. अष्टवर्ग शीतल है, मधुर है, और धातुओंकी वृद्धि करनेवाला है, और वीर्यको पैदा करनेवाला है, और भारी है ॥१२१॥ टूटेहुए हाड़को जोड़नेवाला है, कामदेवको बढ़ानेवाला है, कफ और बल इनकी वृद्धि करनेवाला है. वात, पित्त, रक्त, प्यास, दाह, और ज्वर, प्रमेह तथा क्षय इनका हरनेवाला है ॥ १२२ ॥

अथ जीवकर्षभकोत्पत्तिलक्षणनामगुणाः ।

जीवकर्षभकौ ज्ञेयौ हिमाद्रिशिखरोद्भवौ ।
रसोनकन्दवत्कन्दौ निःसारौ सूक्ष्मपत्रकौ ॥ १२३ ॥
जीवकः कूर्चकाकारो ऋषभो वृषशृंगवत् ।
जीवको मधुरः शृंगा ह्रस्वांगः कूर्चशीर्षकः ॥ १२४ ॥
ऋषभो वृषभो धीरो विषाणी द्राक्ष इत्यपि ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जीवकर्षभकौ बल्यौ शीतौ शुक्रकफप्रदौ ॥ १२५ ॥
मधुरौ पित्तदाहास्रकार्श्यवातक्षयापहौ ।

टीका—अब जीवक और ऋषभक दोनोंके उत्पत्ति, लक्षण और नाम तथा गुण सब लिखते हैं. जीवक और ऋषभक दोनों हिमाचलपर्वतके ऊपर होते हैं, जैसा लहसुनका कंद होता है इसीके समान होते हैं, तथा साररहित छोटे छोटे पत्तेवाले होते हैं ॥ १२३ ॥ और कूंचीके आकारवारला तौ जीवक होता है, और वृषभके सींगके समान ऋषभक होता है. अब क्रमसे इनके नाम कहते हैं. जीवक १, मधुर २, शृंग ३, हस्वांग ४, कूर्चशीर्षक ५, ये पांच जीवकके नाम हैं ॥ १२४॥ और ऋषभ १, वृषभ २, धीर ३, विषाणी ४, द्राक्ष ५; ये पांच नाम ऋषभकके हैं. जीवक और ऋषभक ये दोनों बलको बढ़ानेवाले हैं, शीत तथा शुक्र और कफ इनको करनेवाले हैं ॥ १२५ ॥ और मधुर हैं तथा पित्त, दाह, रक्त, कृशता और वातक्षय इनको हरने वाले हैं.

अथ मेदामहामेदयोरुत्पत्तिलक्षणनामगुणाः ।

महामेदाभिधः कन्दो मोरंगादौ प्रजायते ॥ १२६ ॥
महामेदा तथा मेदा स्यादित्युक्तं मुनीश्वरैः ।
शुक्लार्द्रकनिभः कन्दो लताजातः सुपाण्डुरः ॥ १२७ ॥
महामेदाभिधो ज्ञेयो मेदालक्षणमुच्यते ।

टीका—महामेदा नामक कन्द मोरंगमें उत्पन्न होता है ॥ १५६ ॥ महामेदा तथा मेदा ये दोनों मोरंगमें पैदा होते हैं ऐसा मुनियोंने कहा है. सफेद और गीलासा कन्द लतामेंसे होता है. और बहुत शुभ्र होता है ॥ १२७ ॥ ऐसे कन्दको महामेदा जानो, और अब मेदाके लक्षण भी कहते हैं.

शुक्लकन्दो नखच्छेद्यो मेदोधातुमिव स्रवेत् ॥ १२८ ॥
यः स मेदेति विज्ञेयो जिज्ञासातत्परैर्जनैः ।
शल्यपर्णी मणिच्छिद्रा मेदा मेदोभवाऽध्वरा ॥ १२९ ॥
महामेदा वसुच्छिद्रा त्रिदन्ती देवतामणिः ।

टीका—सफेद कन्द और जिसमें नखके छेदनेसे मेदा धातुके सदृश स्राव हो उसको मेदा कहते हैं, जाननेकी इच्छा करते जो मनुष्य हैं उनको ऐसा जानना

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चाहिये. अब इनके नाम कहते हैं–शल्यपर्णी १, मणिच्छिद्रा २, मेदा ३, मेदोभवा ४, अध्वरा ५, ये पांच नाम मेदाके हैं ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ और महामेदा १, वसुच्छिद्रा २, त्रिदन्ती ३, देवतार्मणि ४, ये चार नाम महामेदाके हैं.

अन्यच्च ।

मेदा ज्ञेया शाल्यपर्णी विज्ञामेदा भवान्धरा ॥ १३० ॥
महामेदा वसुच्छिद्रा त्रिदन्ती देवतामणिः ।

टीका—अब और ग्रंथके मतसे मेदा महामेदाके नाम लिखते हैं. मेदा १, शाल्यपर्णी २, विज्ञामेदा ३, भवान्धरा ४, ॥ १३० ॥ महामेदा ५, वसुच्छिद्रा ६, त्रिदन्ती ७, देवतार्मणि ८ ।

अथ गुणाः ।

मेदायुगं गुरु स्वादु वृष्यं स्तन्यं कफावहम् ॥ १३१ ॥
बृंहणं शीतलं पित्तरक्तवातज्वरप्रणुत् ।

टीका—अब मेदामहामेदोंके गुण कहते हैं. ये दोनों मेदा भारी, मधुर, पुष्ट, और दूधको पैदा करनेवाली हैं. तथा कफको पैदा करनेवाली हैं ॥ १३१ ॥ बृंहण, शीतल हैं, तथा पित्तरक्त, वातज्वर, इनको हरनेवाली हैं.

अथ काकोल्याः क्षीरकाकोल्याश्चोत्पत्तिः ।

जायते क्षीरकाकोली महामेदोद्भवस्थले ॥ १३२ ॥
यत्र स्यात्क्षीरकाकोली काकोली तत्र जायते ।

टीका—अब प्रथम काकोली क्षीरकाकोलीकी ऊत्पत्ति लिखते हैं. जहां महामेदा उत्पन्न होती है ॥ १३२ ॥ वहां क्षीरकाकोली भी उत्पन्न होती है. और जहांपर क्षीरकाकोली उत्पन्न होती है उसी जगहपर काकोली भी उत्पन्न होती है.

अथ लक्षणम् ।

पीवरीसदृशः कन्दः क्षीरं स्रवति गन्धवत् ॥ १३३ ॥
स प्रोक्तः क्षीरकाकोली काकोलीलिङ्गमुच्यते ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यथा स्यात् क्षीरकाकोली काकोल्यपि तथा भवेत् ॥ १३४ ॥
एषा किञ्चिद्भवेत्कृष्णा भेदोऽयमुभयोरपि ।

टीका—अब काकोली क्षीरकाकोलीके लक्षण लिखते हैं. जिसका शतावरीके सदृश कंद होता है, और उसमेंसे सुगंधयुक्त दूध निकलता है ॥ १३३ ॥ उसको क्षीरकाकोली कहते हैं. अब काकोलीका लक्षण कहते हैं. जैसी क्षीरकाकोली होती है वैसी ही काकोली भी होती है ॥१३४॥ काकोली किंचित् काली होती है इतनाही भेद जानो.

अथ नामगुणाः ।

काकोली वायसोली च वीरा कायस्थिका तथा ॥ १३५ ॥
सा शुक्ला क्षीरकाकोली वयस्था क्षीरवल्लिका ।
कथिता क्षीरिणी धारा क्षीरशुक्ला पयस्विनी ॥ १३६ ॥
काकोलीयुगलं शीतं शुक्रलं मधुरं गुरु ।
बृंहणं वातदाहास्रपित्तशोषज्वरापहम् ॥ १३७ ॥

टीका—अब काकोली क्षीरकाकोलीके नाम और गुण लिखते हैं. काकोली १, वायसोली २, वीरा ६, कायस्थिका ४, ये चार काकोलीके नाम हैं ॥१३५॥ और जो सफेद होती है वह क्षीरकाकोली है. वयस्था १, क्षीरवल्लिका २, क्षीरकाकोली ३, क्षीरिणी ४, धारा ५, क्षीरशुक्ला ६, पयस्विनी ७, ये सात नाम क्षीरकाकोलीके हैं ॥१३६॥ ये दोनों काकोली शीतल हैं, और शुक्रको बढ़ाने वाली हैं, तथा मधुर और भारी हैं, और धातुओंको बढ़ानेवाली हैं, वात, दाह, रक्त, पित्त, सूजन, ज्वर, इनको हरनेवाली हैं ॥ १३७ ॥

अन्यच्च दूसरे ग्रंथकारोंने इसके १२ बारह नाम लिखे हैं. काकोली १, मधुरा २, वीरा ३, कायस्था ४, क्षीरशक्तिका ५, ध्वांक्षोली ६, वायसोली ७, स्वादुमांसी ८, पयस्विनी ९, दूसरी क्षीरकाकोली १०, सुराह्वा ११, क्षीरिणी १२,

अथ ऋद्धिवृद्धिनामगुणाः ।

ऋद्धिर्वृद्धिश्च कन्दौ द्वौ भवतः कोशयामले ।
शीतलोमान्वितः कन्दो लताजातः सुरन्ध्रकः ॥ १३८ ॥
स एव ऋद्धिवृद्धी च भेदमप्येतयोर्ब्रुवे ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्थूलग्रन्थिसमा ऋद्धिर्वामावर्तफला च सा ॥ १३९ ॥
वृद्धिस्तु दक्षिणावर्तफला प्रोक्ता महर्षिभिः।
ऋद्धियुग्मं सिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धेरप्याह्वया इमे ॥ १४० ॥
ऋद्धिर्मत्स्या त्रिदोषघ्नी शुक्रला मधुरा गुरुः।
प्राणैश्वर्यकरी मूर्छारक्तपित्तविनाशिनी ॥ १४१ ॥
ऋद्धिर्गर्भप्रदा शीता बृंहणी मधुरा स्मृता।
वृष्या पित्तास्रशमनी क्षतकासक्षयापहा ॥ १४२ ॥
राज्ञामप्यष्टवर्गस्तु यतोऽयमतिदुर्लभः।
तस्मादस्य प्रतिनिधिंगृह्णीयात्तद्गुणं भिषक् ॥ १४३ ॥

टीका—अब ऋद्धिवृद्धिकी उत्पत्ति और नाम तथा गुण कहते हैं. ऋद्धि और वृद्धि ये दोनों कंद हैं, और यामलदेशमें पैदा होते हैं. सफेद लोमकरके युक्त कन्द छिद्रसहित लताओंमें उत्पन्न होता है ॥ १३८ ॥ उसको वैद्य लोग ऋद्धि वृद्धि कहते हैं. अब उनके भेद लिखते हैं. जैसी सेमरकी गांठ होती है, वैसी वामावर्तफलवालीको ऋद्धि कहते हैं ॥१३९॥ और महार्षियोंने दक्षिणावर्त फलवालीको वृद्धि नाम करके कहा है. दोनोंको ऋद्धियुग्म भी कहते हैं. सिद्धि, लक्ष्मी ये वृद्धिके नाम हैं ॥१४०॥ अब इनके गुण कहते हैं. ऋद्धि त्रिदोषको नाश करनेवाली है, और वीर्यको पैदा करनेवाली मधुर तथा भारी होती है, और प्राण तथा ऐश्वर्यकी करनेवाली है, और मूच्छा, रक्तपित्त, इनको हरनेवाली है॥१४१॥ और वृद्धि गर्भको धारण करनेवाली है, शीतल तथा पुष्टि करनेवाली, और मधुर है. पुरुषोंकी शक्तिको बढ़ानेवाली है. रक्तपित्तको नाश करनेवाली है. क्षत, कास, और क्षय, इनको हरनेवाली है ॥ १४२ ॥ यह अष्टवर्ग राजाओंको भी दुर्लभ है, तिस कारणसे इनकी प्रतिनिधि अर्थात् इन्हींके समान गुणवाली औषधोंका वैद्य ग्रहण करे ॥ १४३ ॥

एतस्य प्रतिनिधिमाह।

मेदा जीवककाकोली ऋद्धिवृद्धयपि चासती।
वरी विदार्यश्वगन्धा वाराही च क्रमात्क्षिपेत् ॥ १४४ ॥
मेदामहामेदास्थाने शतावरीमूलम्,
जीवकर्षभकस्थाने विदारीमूलम्,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

काकोलीक्षीरकाकोलीस्थाने अश्वगन्धामूलम्,
ऋद्धिवृद्धिस्थाने वाराहीकन्दं तत्तुल्यं क्षिपेत् ।

टीका—अब जो औषधि इस अष्टवर्गके अभावमें लेनेयोग्य हैं उनको लिखते हैं, मेदा, जीवक, काकोली, ऋद्धि, ये औषध अप्राप्त होनेसे शतावरी, बिदारीकंद, असगंध, वारहीकंद, इनको क्रमसे डाले ॥ १४४ ॥ अर्थात् मेदा महामेदाकी जगह शतावरकी जड़ लेना और जीवक ऋषभककी जगह विदारी लेना. तथा काकोली क्षीरकाकोलीकी जगह असगंध डाले, और ऋद्धिवृद्धिके अभावमें वाराहीकंदको डाले. इन चारों औषधियोंमें अष्टवर्गके ही समान गुण हैं.

अथ मधुयष्टीनामगुणाः ।

यष्टीमधु तथा यष्टी मधुकं क्लीतकं तथा ।
अन्यत् क्लीतनकं तत्तु भवेत्तोये मधूलिका ॥ १४५ ॥
यष्टी हिमा गुरुः स्वाद्वी चक्षुष्या बलवर्णकृत् ।
सुस्निग्धा शुक्रला केश्या स्वर्या पित्तानिलास्रजित् ॥ १४६ ॥
व्रणशोथविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा ।

टीका—यष्टीमधु १, यष्टी २, मधुक ३, क्लीतक ३, दूसरा क्लीतनक, जो जलमें होता है. उसको मधूलिका कहते हैं ॥ १४५ ॥ मुलेठी शीतल है, भारी है, मधुर है, और नेत्रोंको हित करनेवाली है, तथा बल और वर्णको बढ़ानेवाली है, अच्छी स्निग्ध, शुक्रको करनेवाली है. बालोंको हितकारक है, तथा स्वरको हित है, पित्त, वात तथा रक्त इनको हरनेवाली है ॥ १४६ ॥ व्रण अर्थात् घाव और सूजन, विष, वमन, तृषा, ग्लानि, और क्षय इनको भी हरनेवाली है.

अथ काम्पिल्लनामानि गुणाश्च ।

काम्पिल्लः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनोऽपि च ॥ १४७ ॥
काम्पिल्लः कफपित्तास्रकृमिगुल्मोदरव्रणान् ।
हन्ति रेची कटुष्णश्च मेहानाहविषाश्मनुत् ॥ १४८ ॥

टीका—कांपिल्ल १, कर्कश, २, चन्द्र ३, रक्तांग ४, रोचन ५, ये काम्पीलाके

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नाम हैं ॥ १४७ ॥ लौकिकमें इसे खूबकला कहते हैं. खूबकला कफ, रक्तपित्त, कृमि, बायगोला, उदररोग, तथा घाव इनको हरनेवाली है और दस्तावर, कडवी तथा गरम होती है. और प्रमेह, अफरा, तथा विष, पथरी, इनको भी हरनेवाली कही है ॥ १४८ ॥

अथ आरग्वधनामगुणाः ।

आरग्वधो राजवृक्षः शम्याकश्चतुरङ्गुलः ।
आरेवतो व्याधिघातः कृतमालः सुवर्णकः ॥ १४९ ॥
कर्णिकारो दीर्घफलः स्वर्णाङ्गः स्वर्णभूषणः ।
आरग्वधो गुरुः स्वादुः शीतलः स्रंसनो मृदुः ॥ १५० ॥
ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्तशूलनुत् ।
तत्फलं स्रंसनं रुच्यं कुष्ठपित्तकफापहम् ॥ १५१ ॥
ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरं परम् ।

टीका—आरग्वध १, राजवृक्ष २, शम्याक ३, चतुरंगुल ४, आरेवत ५, व्याधिघात ६, कृतमाल ७, सुवर्णक ८, ॥ १४९ ॥ कर्णिकार ९, दीर्घफल १०, सुवर्णांग ११, वर्णभूषण १२, ये अमलतासके नाम हैं. अमलतास भारी, मधुर, शीतल, दस्तावर और मृदु है ॥ १५० ॥ ज्वर, हृदयरोग, तथा रक्तपित्त, और वातरोग, तथा उदावर्त, और शूलको हरने वाला है. और उसका फल दस्तावर है, रुचिको पैदा करनेवाला है, और कुष्ठ, पित्त, तथा कफ इनको हरनेवाला है १५१ और ज्वरमें सदा पथ्य है, और कोठेको अत्यंत शुद्ध करता है.

अथ कटुकानामगुणाः ।

कुटी तु कटुका तिक्ता कृष्णभेदा कटुम्भरा ॥ १५२ ॥
अशोका मत्स्यशकला चक्राङ्गी शकुलादनी ।
मत्स्यपित्ता काण्डरुहा रोहिणी कटुरोहिणी ॥ १५३ ॥
कट्वी तु कटुका पाके तिक्ता रूक्षा हिमा लघुः ।
भेदनी दीपनी हृद्या कफपित्तज्वरापहा ॥ १५४ ॥
प्रमेहश्वासकासास्रदाहकुष्ठकृमिप्रणुत् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—कुटी १, कटुका २, तिक्ता ३, कृष्णभेदा ४, कटुंभरा ५, ॥ १५२ ॥ अशोका ६, मत्स्यशकला ७, चक्रांगी ८, शकुलादनी ९, मत्स्यपित्ता १०, कांडरुहा ११, रोहिणी १२, ये द्वादश कुटकीके नाम हैं ॥ १५३ ॥ कुटकी कड़वी, और पाकमें तिक्त है, रूखी है, और शीतल, तथा हलकी है, तथा भेदनी है, और दीपनी, हृद्य, पित्त, तथा ज्वर इनको हरनेवाली है ॥ १५४ ॥ और प्रमेह, श्वास, कास, तथा रक्तपित्त, और दाह, कुष्ठ, कृमि, इनको भी जीतनेवाली है.

अथ किराततिक्तनामगुणः।

किराततिक्तः कैरातः कटुतिक्तः किरातकः ॥ १५५ ॥
काण्डतिक्तो नार्यतिक्तो भूनिम्बो रामसेनकः।
किरातकोऽन्यो नैपालः सोऽर्धतिक्तो ज्वरान्तकः ॥ १५६ ॥
किरातः सारको रूक्षः शीतलस्तिक्तको लघुः।
सन्निपातज्वरश्वासकफपित्तास्रदाहनुत् ॥ १५७ ॥
कासशोथतृषाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत्।

टीका—किराततिक्त १, कैरात २, कटुतिक्त ३, किरातक ४, ॥ १५५ ॥ काण्डतिक्त ५, नार्यतिक्त ६, भूनिम्ब ७, रामसेनक ८, दूसरा चिरायता नैपाली होता है. वह कुछ कड़वा और ज्वरांतक होता है, ॥ १५६ ॥ ये चिरायतेके नाम हैं. चिरायता सारक, और रूखा, तथा शीतल, तिक्त, और लघु होता है ॥ १५७ ॥ चिरायता कफ, पित्त, दाह, इनको हरनेवाला है, और कासरोग, सूजन, तृषा, तथा कुष्ठ, ज्वर, व्रण, और कृमि, इनका भी हरनेवाला होता है.

अथ इन्द्रयवनामगुणाः।

उक्तं कुटजबीजं तु यवमिन्द्रयवं तथा ॥ १५८ ॥
कलिङ्गं चापि कालिङ्गं तथा भद्रयवा अपि।
क्वचिदिन्द्रस्य नामैव भवेत्तदभिधायकम् ॥ १५९ ॥
फलानीन्द्रयवास्तस्य तथा भद्रयवा अपि।
इन्द्रयवं त्रिदोषघ्नं संग्राहि कटु शीतलम् ॥ १६० ॥
ज्वरातीसाररक्तार्शोवमिवीसर्पकुष्ठनुत्।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दीपनं गुदकीलास्रवातास्रश्लेष्मशूलजित् ॥ १६१ ॥

टीका—कुटजबीज १, यव २, इन्द्रयव ३, कलिंग ४, कालिंग ५, भद्रयव ६, ये इन्द्रयवके नाम हैं ॥१५८॥ और श्रीधन्वन्तरिजीने और अमरजीने कहा है कि-जितने नाम इन्द्रके हैं उतने ही इन्द्रयवके भी जानो ॥ १५९ ॥ इन्द्रयव त्रि-दोषका हरनेवाला है, और संग्राही है, कटु, तथा शीतल है ॥ १६० ॥ और ज्वर, अतीसार, तथा खूनी बवासीर, वमन, विसर्प, और कुष्ठ इनका भी जा-तनेवाला है· तथा दीपन है, गुदकील, रक्त, रक्तवात, और कफरोग, शूलरोग, इन सबका नाशक होता है ॥ १६१ ॥

अथ मदन (मयनफल) नामगुणाः ।

मदनश्छर्दनः पिण्डीनटः पिण्डीतकस्तथा ।
करहाटो मरुबकः शल्यको विषपुष्पकः ॥ १६२ ॥
मदनो मधुरस्तिक्तो वीर्योष्णो लेखनो लघुः ।
वान्तिकृद् विद्रधिहरः प्रतिश्यायव्रणान्तकः ॥ १६३ ॥
रूक्षः कुष्ठकफानाहशोथगुल्मव्रणापहः ।

टीका—मदन १, छर्दन २, पिंडीनट ३, पिंडीतक ४, करहाट ५, मरुबक ६, शल्यक ७, विषपुष्पक ८, ये अष्ट मयनफलके नाम हैं ॥ १६२ ॥ मयन-फल मधुर, तिक्त, उष्ण, लेखन, और हलका भी होता है· और वमनको लाने-वाला, तथा विद्रधिका नाशक है· जुखाम, और घावोंका भी हरनेवाला है ॥१६३॥ और रूखा है, कुष्ठ, कफरोग, अफरा, गुल्मरोग, शोथरोग, तथा व्रण इनको भी हरनेवाला है·

अथ रास्नानामगुणाः ।

रास्ना युक्तरसा रस्या सुवहा रसना रसा ॥ १६४ ॥
एलापर्णी च सुरसा सुगन्धा श्रेयसी तथा ।
रास्नाऽमपाचिनी तिक्ता गुरूष्णा कफवातजित् ॥ १६५ ॥
शोथश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा ।
कासज्वरविषाशीतिवातकामयहिध्महृत् ॥ १६६ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—रास्ना १, युक्तरसा २, रस्या ३, सुवहा ४, रसना ५, रसा ६, ॥ १६४ ॥ एलापर्णी ७, सुरसा ८, सुगंधा ९, श्रेयसी १०, ये दश रास्नाके नाम हैं. रास्ना आमका पाचन करनेवाली होती है, तिक्त, भारी, उष्ण, और कफवातको हरने वाली है ॥ १६५ ॥ और शोथरोग, श्वास, वातरक्त, वातशूल, उदरके रोग, इन समस्त रोगोंको हरनेवाली है. और कास, ज्वर, विष, और अस्सीप्रकारके वातरोग, हिम इन सबको हरनेवाली है ॥ १६६ ॥

अथ नाकुलीनामगुणाः ।

नाकुली सरसा नागसुगन्धा गन्धनाकुली ।
नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी सर्पाङ्गी विषनाशिनी ॥ १६७ ॥
नाकुली तुवरा तिक्ता कटुकोष्णा विनाशयेत् ।
भोगिलूतावृश्चिकाखुविषज्वरकृमिव्रणान् ॥ १६८ ॥

टीका—रास्नाका भेद जिसको लौकिकमें नांई बोलते हैं, उसके नाम और गुण लिखते हैं. नाकुली १, सुरसा २, नागसुगंधा ३, गंधनाकुली ४, नकुलेष्टा ५, भुजंगाक्षी ६, सर्पाक्षी ७, विषनाशिनी, ॥ १६७ ॥ नाकुली कसैली होती है, तिक्त, कटु, और उष्ण होती है. और सर्पसे आदि ले विषवाले जानवरोंके जैसे-बिच्छू, मकड़ी, मूसा, इनके विषको नाश करती है. और ज्वर, कृमि, तथा व्रण, घाव, इन रोंगोंको भी हरनेवाली है ॥ १६८ ॥

अथ मांचिकानामगुणाः ।

माचिका प्रस्थिकाम्बष्ठा तथा वाम्बालिकाम्बिका ।
मयूरविदला केशिसहस्रा वालमूलिका ॥ १६९ ॥
माचिकाम्ला रसे पाके कषाया शीतला लघुः ।
पक्वातीसारपित्तास्रकफकण्ठामयापहा ॥ १७० ॥

टीका—इस माचिकाको पश्चिमदेशमें मोइया बोलते हैं; और इसका वृक्ष होता है. अब इसके नाम और गुण लिखते हैं. माचिका १, प्रस्थिका २, अम्बष्ठा ३ अम्बालिका ४, अम्बिका ५, मयूरविदला ६, केशी ७, सहस्रा ८, वालमूलिका ९, ये नव माचिका (किमाच)के नाम हैं॥ १६९॥ किमाच रसमें अम्ल, पाकमें कसेला होता है, तथा

१ पश्चिमदेशे 'मोइआ' इति लोके प्रसिद्धो वृक्षविशेषः.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शीतल और हलका होता है, और पक्वातिसार, रक्तपित्त, कफरोग, तथा कंठरोग, इनको भी हरनेवाला है ॥ १७० ॥

अथ तेजवतीनामगुणाः ।

तेजस्विनी तेजवती तेजोह्वा तेजनी तथा ।
तेजस्विनी कफश्वासकासास्यामयवातहृत् ॥ ॥ १७१ ॥
पाचन्युष्णा कटुस्तिक्ता रुचिवह्निप्रदीपिनी ।

टीका—तेजस्विनी १, तेजवती २, तेजोह्वा ३, तजनी ४, ये चार तेजवतीके नाम हैं. तेजवती कफ, श्वास, कास, मुखके रोग, वात, इनको हरनेवाली होती है॥१७१॥ और पाचन, गरम, कड़वी, तिक्त, रुचि तथा वह्निका दीपन करनेवाली कही है.

कटभी (मालकांगनी) नामगुणाः ।

ज्योतिष्मती स्यात् कटभी ज्योतिष्का कङ्गनीति च ॥१७२॥
पारावतपदी पण्या लता प्रोक्ता ककुन्दनी ।
ज्योतिष्मती कटुस्तिक्ता सरा कफसमीरजित् ॥ ॥ १७३ ॥
अत्युष्णा वामनी तीक्ष्णा वन्हिबुद्धिस्मृतिप्रदा ।

टीका—ज्योतिष्मती १, कटभी २, ज्योतिष्का ३, कंगनी ४ ॥१७२ ॥ पारावतपदी ५, पण्या ६, ये छे मालकांगनीके नाम हैं. इसकी लता ककुन्दनीनामसे प्रसिद्ध है. मालकांगनी कड़वी है, तिक्त है, सर है, कफ तथा वातको जीतनेवाली है ॥ १७३ ॥ और बहुत गरम है, वमन करानेवाली है, तीखी है, और अग्नि, बुद्धि, तथा स्मृति, इनको बढ़ानेवाली है.

अथ कुष्ठ (कूट) नामगुणाः ।

कुष्ठं रोगाह्वयं वाप्यं पारिभव्यं तथोत्पलम् ॥ १७४ ॥
कुष्ठमुष्णं कटु स्वादु शुक्रलं तिक्तकं लघु ।
हन्ति वातास्रवीसर्पकासकुष्ठमरुत्कफान् ॥ १७५ ॥

टीका—कुष्ठ १, रोगाव्हय २, वाप्य ३, पारिभव्य ४, उत्पल ५, ये पांच कूटके नाम हैं ॥ १७४ ॥ कूट गरम, कड़वा, मधुर शुक्रको बढ़ानेवाला, तिक्त

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तथा हलका होता है. और वातरक्त, कास, कुष्ठ, वात कफ, इन समस्त रोगोंको हरनेवाला है ॥ १७५ ॥

अथ पुष्करमूलनामगुणाः ।

उक्तं पुष्करमूलं तु पौष्करं पुष्करं च तत् ।
पद्मपत्रं च काश्मीरं कुष्ठभेदमिमं जगुः ॥ १७६ ॥
पौष्करं कटुकं तिक्तमुक्तं वातकफज्वरान् ।
हन्ति शोथारुचिश्वासान्विशेषात्पार्श्वशूलनुत् ॥ १७७ ॥

टीका—पुष्करमूल १, पौष्कर २, पुष्कर ३, पद्मपत्र ४, काश्मीर ५, ये पुष्करमूलके नाम हैं. यह भी कूटका ही भेद है ॥१७६॥ पुष्करमूल कड़वा है, और तिक्त है, और वात, कफ, तथा ज्वर इनको नाश करता है. तथा शोथ, अरुचि, श्वास, और विशेषकरके पार्श्वशूलको हरनेवाला है ॥ १७७ ॥

अथ हेमाह्वा (चोक) नामगुणाः ।

कटुपर्णी हैमवती हेमक्षीरी हिमावती ।
हेमाह्वा पीतदुग्धा च तन्मूलं चोक उच्यते ॥ १७८ ॥
हेमाह्वा रेचनी तिक्ता भेदिन्युत्क्लेशकारिणी ।
कृमिकण्डूविषानाहकफपित्तास्रकुष्ठनुत् ॥ १७९ ॥

टीका—कटुपर्णी १, हैमवती २, हेमक्षीरी ३, हिमावती ४, हेमाह्वा ५, पीतदुग्धा ६, ये चोकवृक्षके नाम हैं. और उसके मूलको चोक कहते हैं ॥ १७८ ॥ चोक दस्तावर है, तिक्त है, भेदन करनेवाली है, और जी मिचलानेवाली है, और कृमि, खुजली, विष, अफरा, कफरोग, मूत्रकृच्छ्र, तथा रक्तपित्त, कुष्ठ, इनको भी हरनेवाली होती है ॥ १७९ ॥

अथ शृंगी (काकड़ाशींगी)नामगुणाः ।

शृङ्गी कर्कटशृङ्गी च स्यात्कुलीरविषाणिका ।
अजशृंङ्गी च वक्रा च कर्कटाख्या च कीर्तिता ॥ १८० ॥
शृङ्गी कषाया तिक्तोष्णा कफवातक्षयज्वरान् ।
श्वासोऽर्ध्ववाततृट्कासहिक्कारुचिवमीन् हरेत् ॥ १८१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—शृंगी १, कर्कटशृंगी २, कुलीरविषाणिका ३, अजशृंगी ४, वक्रा ५, कर्कटा ६, ये काकड़ाशींगीके नाम हैं ॥ १८० ॥ यह कसेली, तिक्त, कफ, वात, क्षय, और ज्वरोंको हरनेवाली है. और श्वास, ऊर्ध्ववात, तृषा, कास, हिचकी, अरुचि, तथा वमन, इनको भी हरनेवाली कही है ॥ १८१ ॥

अथ कट्फलनामगुणाः ।

कट्फलः सोमवल्कश्च कैटर्यः कुम्भिकापि च ।
श्रीपर्णिका कुमुदिका भद्रा भद्रवतीति च ॥ १८२ ॥
कट्फलस्तुवरस्तिक्तः कटुर्वातकफज्वरान् ।
हन्ति श्वासप्रमेहार्शःकासकण्ठामयारुचीः ॥ १८३ ॥

टीका—कट्फल १, सोमवल्क २, कैटर्य ३, कुंभिका ४, श्रीपर्णिका ५, कुमुदिका ६, भद्रा ७, भद्रवती ८, ये कायफलके नाम हैं ॥ १८२ ॥ यह कसेला होता है, और तिक्त, तथा कड़वा होता है. वात, कफ, तथा ज्वरोंका हरनेवाला है. और श्वास, प्रमेह, बवासीर, कास, कंठरोग और अरुचि, इनको हरनेवाला है ॥ १८३ ॥

अथ भांर्गीनामगुणाः ।

भार्ङ्गी भृगुभवा पद्मा फञ्जी ब्राह्मणयष्टिका ।
भार्ङ्गी रूक्षा कटुस्तिक्ता रुच्योष्णा पाचनी लघुः ॥ १८४ ॥
दीपनी तुवरा गुल्मरक्तजं नाशयेद्ध्रुवम् ।
शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ॥ १८५ ॥

टीका—भांर्गी १, भृगुभवा २, पद्मा ३, फंजी ४, ब्राह्मणयष्टिका ५, ये भांर्गीके नाम हैं. यह रूखी होती है; तथा कड़वी, तिक्त, और रुचिको करनेवाली होती है; और गरम पाचन, तथा हलकी होती है ॥ १८४ ॥ और दीपन, तथा कसेली होती है, और रक्तसे उत्पन्न बायगोलाको निश्चय हरती है, और शोथ, कास, कफ, श्वास, पीनस, तथा ज्वर, वायु, इनको भी हरनेवाली है॥१८५॥ और अन्यग्रंथोंमें कासघ्नी १, भार्गपर्णिनी (?) २, परशाक ३, शुक्रमाता ४, ये चार नाम भांर्गीके विशेष लिखे हैं.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ पाषाणभेदनामगुणाः ।

पाषाणभेदकोऽश्मघ्नो गिरिभिद्भिन्नयाजनी ।
अश्मभेदो हिमस्तिक्तः कषायो बस्तिशोधनः ॥ १८६ ॥
भेदनो हन्ति दोषार्शोगुल्मकृच्छ्राश्महृद्रुजः ।
योनिरोगान्प्रमेहांश्च प्लीहशूलव्रणानि च ॥ १८७ ॥

टीका—पाषाणभेदक १, अश्मघ्न २, गिरिभित् ३, भिन्नयाजनी ४, ये पाषाणभेदके नाम हैं. यह शीतल, तिक्त, कसेला, मूत्राशयको शोधन करनेवाला है ॥ १८६ ॥ और भेदन, तथा दोष, बवासीर, गुल्म, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, हृदयकी पीडा, योनिरोग, प्रमेह, प्लीह, शूल, घाव, इन सबको हरनेवाला हैं ॥ १८७ ॥ (और ग्रंथोंमें पाषाणभेद १, पाषाण २, अश्मभेद ३, अश्मभेदक ४, शिलाभेद ५, दृषद्भेद ६, नगभिन्नक ७, ये नाम पाषाणभेदके विशेष कहे हैं.)

अथ धातकी (धावई) नामगुणाः ।

धातकी धातुपुष्पी च ताम्रपुष्पी च कुञ्जरा ।
सुभिक्षा बहुपुष्पी च वन्हिज्वाला च सा स्मृता ॥ १८८ ॥
धातकी कटुका शीता मृदुकृत्तुवरा लघुः ।
तृष्णातीसारपित्तास्रविषक्रिमिविसर्पजित् ॥ १८९ ॥

टीका—धातकी १, धातुपुष्पी २, ताम्रपुष्पी ३, कुंजरा ४, सुभिक्षा ५, बहुपुष्पी ६, वह्निज्वाला ७, ये धवके नाम हैं ॥ १८८ ॥ यह धावई कड़वी, और शीतल तथा मुलायम करनेवाली, कसेली, हलकी होती है. तृषा, अतीसार, रक्तपित्त विष, कृमि, तथा विसर्प इनको हरनेवाली है ॥ १८९ ॥

अथ मंजिष्ठानामगुणाः ।

मञ्जिष्ठा विकसा जिंङ्गी समङ्गा कालमेषिका ।
मण्डूकपर्णी भण्डीरी भण्डी योजनवल्ल्यपि ॥ १९० ॥
रसायन्यरुणा काला रक्ताङ्गी रक्तयष्टिका ।
भण्डीतकी च गण्डीरी मंजूषा वस्त्ररञ्जिनी ॥ १९१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मञ्जिष्ठा मधुरा तिक्ता कषाया स्वरवर्णकृत् ।
गुर्वी चोष्णा विषश्लेष्मशोथयोन्यक्षिकर्णरुक् ॥ १९२ ॥
रक्तातीसारकुष्ठास्रवीसर्पव्रणमेहनुत् ।

टीका—मंजिष्ठा १, विकसा २, जिंगी ३, समंगा ४, कालमेषिका ५, मंडूकपर्णी ६, भंडीरी ७, भंडी ८, योजनवल्ली ९, ॥१९०॥ रसायनी १०, अरुणा ११, काला १२, रक्तांगी १३, रक्तयष्टिका १४, भण्डीतकी १५, गंडीरी१६, मंजूषा१७, वस्त्ररंजनी १८, ये मंजीठके नाम हैं ॥ १९१ ॥ यह मधुर, तिक्त, कसेली, और स्वर तथा वर्णको करनेवाली है, तथा भारी और गरम होती है. सब प्रकारके विष, कफ, शोथ, योनिपीडा, नेत्रपीडा, कर्णपीडा, ॥ १९२ ॥ तथा रक्तातीसार, कुष्ठ, रक्तपित्त, विसर्प, घाव, और प्रमेहको हरनेवाली है.

अथ कुसुम्भनामगुणाः ।

स्यात्कुसुम्भं वन्हिशिखं वस्त्ररञ्जकमित्यपि ॥ १९३ ॥
कुसुम्भं वातलं कृच्छ्रं रक्तपित्तकफापहम् ।

टीका—कुसुंभ १, वन्हिशिख २, वस्त्ररंजक, ३, ये कुसुंभके नाम हैं॥१९३॥यह वातल होता है, और मूत्रकृच्छ्रका तथा रक्तपित्तका, और कफका भी हरनेवाला है.

अथ लाक्षा (लाह) नामगुणाः ।

लाक्षा पलंकषाऽलक्तो यावो वृक्षामयो जतु ॥ १९४ ॥
लाक्षा वर्ण्या हिमा बल्या स्निग्धा च तुवरा लघुः ।

टीका—लाक्षा १, पलंकषा २, अलक्त ३, याव ४, वृक्षामय ५, जतु ६, ये लाहके नाम हैं ॥ १९४ ॥ यह वर्णको अच्छा करनेवाली है, शीतल, बलको बढ़ानेवाली, चिकनी, कसेली, और हलकी है.

अथ ब्राह्मणीनामगुणाः ।

ब्राह्मण्यङ्गारवल्ली च स्वरशाका च हञ्जिका ॥ १९५ ॥
अनुष्णा कफपित्तास्रहिक्काकासज्वरप्रणुत् ।
व्रणोरःक्षतवीसर्पकृमिकुष्ठगदापहा ॥ १९६ ॥
अलक्तको गुणैस्तद्वद्विशेषाद्व्यङ्गनाशनः ।

टीका—ब्राह्मणी १, अंगारवल्ली २, स्वरशाका ३, हञ्जिका ४, ये ब्राह्मणीके नाम हैं ॥ १९५ ॥ यह शीतल होती है, कफ, रक्तपित्त, हिचकी, कास, ज्वर,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इनको हरनेवाली है. और घाव, उरःक्षत, विसर्प, कृमि, और कुष्ठ, इनको भी हरनेवाली है ॥ १९६ ॥ और लाहका रस गुणोंमें इसीके बराबर है, परंतु विशेष करके व्यङ्गका नाशक है.

अथ हरिद्रानामगुणाः ।

हरिद्रा काञ्चनी पीता निशाख्या वरवर्णिनी ॥ १९७ ॥
कृमिघ्ना हलदी योषित्प्रिया हृद्या विलासिनी ।
हरिद्रा कटुका तिक्ता रूक्षोष्णा कफपित्तनुत् ॥ १९८ ॥
वर्ण्या त्वग्दोषमेहास्रशोथपाण्डुव्रणापहा ।

टीका—हरिद्रा १, कांचनी २, पीता ३, निशाख्या ४, वरवर्णिनी ५, ॥ १९७ ॥ कृमिघ्ना ६, हलदी ७, योषित्प्रिया ८, हृद्या ९, विलासिनी १०, ये हलदीके नाम हैं. यह कड़वी, तिक्त, रूखी, और गरम, तथा कफपित्तकी नाशक है ॥ १९८ ॥ वर्णको अच्छा करती है, त्वचाके दोषोंको और प्रमेहको तथा रक्त, शोथ, पांडु और घावोंको हरनेवाली है.

अथ कर्पूरहरिद्रानामगुणाः ।

दार्वी मेदाम्रगन्धा च सुरभी दारुदारु च ॥ १९९ ॥
कर्पूरा पद्मपत्रा स्यात्सुरीमत् सुरतारिका ।

टीका—दार्वी १, मेदा २,आम्रगंधा २, सुरभी ३, दारुदारु ४, ॥ १९९ ॥ कर्पूरा ५, पद्मपत्रा ६, सुरीमत् ७, सुरतारिका ८, ये कर्पूरहलदीके नाम हैं.

अथ वनहलदीनामगुणाः ।

अरण्यहलदीकन्दः कुष्ठवातास्रनाशनः ॥ २०० ॥
आम्रगन्धिर्हरिद्रा या सा शीता वातला मता ।
पित्तहृन्मधुरा तिक्ता सर्वकण्डुविनाशिनी ॥ २०१ ॥

टीका—अरण्यहलदीकन्द अर्थात् बनहलदी कुष्ठ और वातरक्तको हरनेवाली है ॥ २०० ॥ और कर्पूरहलदी शीतल है, वातको पैदा करनेवाली होती है. और पित्तको हरनेवाली है, और मधुर है, तिक्त है, और खुजलीको हरनेवाली है ॥ २०१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ दारुहरिद्रानामगुणाः ।

दार्वी दारुहरिद्रा च पर्जन्या पर्जनीति च ।
कटंकटेरी पीता च भवेत्सैव पचंपचा ॥ २०२ ॥
सैव कालीयकः प्रोक्तस्तथा कालेयकोऽपि च ।
पीतद्रुश्च हरिद्रुश्च पीतदारु कपीतकम् ॥ २०३ ॥
दार्वी निशागुणा किन्तु नेत्रकर्णास्यरोगनुत् ।

टीका—दार्वी १, दारुहरिद्रा २, पर्जन्या ३, पर्जनी ४, कटंकटेरी ५, पीता ६, पचंपचा ७, ॥ २०२ ॥ कालीयक ८, कालेयक ९, पीतद्रुम १०, हरिद्रुम ११, पीतदारु १२, कपीतक १३, ये दारुहलदीके नाम हैं ॥ २०३ ॥ दारुहलदी हलदीके समान ही गुणवाली होती है, तथापि बहुत करके नेत्र, कर्ण, मुख, इनके रोगोंको हरनेवाली है.

अथ रसांजन (रसौंत) नामगुणाः ।

दार्वीक्काथसमं क्षीरं पादं पक्त्वा यथा घनम् ॥ २०४ ॥
तदा रसाञ्जनाख्यं तन्नेत्रयोः परमं हितम् ।
रसाञ्जनं तार्क्ष्यशैलं रसगर्भं च तार्क्ष्यजम् ॥ २०५ ॥
रसाञ्जनं कटुश्लेष्मविषनेत्रविकारनुत् ।
उष्णं रसायनं तिक्तं छेदनं व्रणदोषनुत् ॥ २०६ ॥

टीका—दारुहलदीके काढ़ेके समान दूधको पकावे, जब चौथा हिस्सा गाढा रहजाय ॥ २०४ ॥ तब उसको रसांजन अर्थात् रसौंत कहते हैं, यह नेत्रोंको बड़ा हितकारी होता है. रसांजन १, तार्क्ष्यशैल २, रसगर्भ ३, तार्क्ष्यज ४, ये रसौंतके नाम हैं ॥ २०५ ॥ यह कड़वा होता है, कफ, तथा विष और नेत्ररोगोंको हनेवाल ा है, और गरम, रसायन, तिक्त, छेदन, घावोंका और देषोंका हरनेवाला है ॥ २०६ ॥

अथ बाकुचीनामगुणाः ।

अवल्गुजी बाकुची स्यात् सोमराजी सुपर्णिका ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शशिलेखा कृष्णफला सोमा पूतिफलेति च ॥ २०७ ॥
सोमवल्ली कालमेषी कुष्ठघ्नी च प्रकीर्तिता ।
बाकुची मधुरा तिक्ता कटुपाका रसायनी ॥ २०८ ॥
विष्टम्भहृद्धिमा रुच्या सरा श्लेष्मास्रपित्तनुत् ।
रूक्षा हृद्या श्वासकुष्ठमेहज्वरकृमिप्रणुत् ॥ २०९ ॥
तत्फलं पित्तलं कुष्ठकफानिलहरं कटु ।
केश्यं त्वच्यं वमिश्वासकासशोथामपाण्डुनुत् ॥ २१० ॥

टीका—अवल्गुज १, बाकुची २, सोमराजी ३, सुपर्णिका ४, शशिलेखा ५, कृष्णफला ६, सोमा ७, पूतिफला ८ ॥ २०७ ॥ सोमवल्ली ९, कालमेषी १०, कुष्ठघ्नी,११ ये बाकुचीके नाम हैं. यह मधुर है, तिक्त है, पाकमें कड़वी है, रसायनी है ॥ २०८ ॥ विष्टंभको हरती है,शीतल है,रुचिको बढ़ानेवाली है, दस्तावर है, कफ तथा रक्तपित्तको नाश करनेवाली है, रूखी है, हृदयको प्रिय है, और श्वासरोग, कुष्ठरोग, प्रमेह तथा ज्वर, कृमि, इनको हरनेवाली है ॥ २०९ ॥ और इसका फल पित्तकारक है, कुष्ठ, कफ, वात, इनका नाशक है, कड़वा है, बालोंको हितकारक है, त्वचाको अच्छा करनेवाला है, वमन, श्वास, कास और सूजन, पांडुरोग इनका हरनेवाला है ॥ २१० ॥

अथ चक्रमर्दनामगुणाः ।

चक्रमर्दः प्रपुन्नाटो दद्रुघ्नो मेषलोचनः ।
पद्मटः स्यादेडगजश्चक्री पुन्नाट इत्यपि ॥ २११ ॥
चक्रमर्दो लघुः स्वादू रूक्षः पित्तानिलापहः ।
हृद्यो हिमः कफश्वासकुष्ठदद्रुकृमीन् हरेत् ॥ २१२ ॥
हन्त्युष्णं तत्फलं कुष्ठकण्डुदद्रुविषानिलान् ।
गुल्मकासकृमिश्वासनाशनं कटुकं स्मृतम् ॥ २१३ ॥

टीका—चक्रमर्द १, प्रपुन्नाट २, दद्रुघ्न ३, मेषलोचन ४, पद्माट ५, एडगज ६, चक्री ७, पुन्नाट ८, ये चकोरके नाम हैं ॥ २११ ॥ यह हलका, और मधुर, तथा रूखा होता है, और पित्तवायुका हरनेवाला है, हृदयको प्रिय है, शीतल है,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कफ, श्वास, कुष्ठ, तथा दाह, कृमि, इनको हरनेवाला है ॥ २१२ ॥ और इसका फल बहुत गरम होता है. और कुष्ठ, पांडु, दाह, विष, वात, बायगोला, कास, कृमि, श्वास, इनका नाशक है, और कड़वा कहा गया है ॥ २१३ ॥

अतिविषानामगुणाः ।

विषा त्वतिविषा विश्वा शृङ्गी प्रतिविषारुणा ।
शुक्लकन्दा चोपविषा भङ्गुरा घुणवल्लभा ॥ २१४ ॥
विषा सोष्णा कटुस्तिक्ता पाचनी दीपनी हरेत् ।
कफपित्तातिसारामविषकासवमिक्रिमीन् ॥ २१५ ॥

टीका—विषा १, अतिविषा २, विश्वा ३, शृंगी ४, प्रतिविषा ५, अरुणा ६, शुक्लकंदा ७, उपविषा ८, भंगुरा ९, घुणवल्लभा १०, ये अतीसके नाम हैं ॥२१४॥ यह थोड़ी गरम है, कड़वी है, तिक्त और पाचन है, तथा दीपन है, और कफ, पित्त, अतिसार, आम, विष, तथा कास, वमन, कृमि, इनको हरनेवाली है ॥ २१५ ॥

अथ लोध्रनामगुणाः ।

लोध्रस्तिरीटकश्चैव शावरो मालवस्तथा ।
द्वितीयः पट्टिकालोध्रः क्रमुकः स्थूलवल्कलः ॥ २१६ ॥
जीर्णपत्रो बृहत्पत्रः पट्टी लाक्षाप्रसादनः ।
लोध्रो ग्राही लघुः शीतश्चक्षुष्यः कफपित्तनुत् ॥ २१७ ॥
कषायो रक्तपित्तास्रज्वरातीसारशोथहृत् ।

टीका—लोध्र १, तिरीटक २, शावर ३, मालव ४, ये लोध्रके नाम हैं. दूसरा पट्टिका लोध्र १, क्रमिक २, स्थूलवल्कल ३, ॥ २१६ ॥ जीर्णपत्र ४, बृहत्पत्र ५, पट्टी ६, लाक्षाप्रसादन ७, ये पठानी लोधके नाम हैं. यह ग्राही, अल्प और शीतल है, नेत्रोंको हितकारक है, कफपित्तको हरनेवाला है ॥ २१७ ॥ और कसेला है, तथा रक्तपित्त, ज्वर, अतीसार, और शोथ, इनको जीतनेवाला है.

अथ लशुननामगुणाः ।

लशुनस्तु रसोनः स्यादुग्रगन्धो महौषधम् ॥ २१८ ॥
अरिष्टो म्लेच्छकन्दश्च यवनेष्टो रसोनकः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—लहसुन १, रसोन २, उग्रगन्ध ३, महौषध ४, ॥ २१८ ॥ अरिष्ट ५, म्लेच्छकन्द ६, यवनेष्ट ७, रसोनक ८, ये लहसुनके नाम हैं.

तदा ततोऽपतद्बिन्दुः स रसोनोऽभवद्भुवि ॥ २१९ ॥
पञ्चभिश्च रसैर्युक्तो रसेनाम्लेन वर्जितः ।
तस्माद्रसोन इत्युक्तो द्रव्याणां गुणवेदिभिः ॥ २२० ॥
कटुकश्चापि मूलेषु तिक्तः पत्रेषु संस्थितः ।
नाले कषाय उद्दिष्टो नालाग्रे लवणः स्मृतः ॥ २२१ ॥
बीजे तु मधुरः प्रोक्तो रसस्तद्गुणवेदिभिः ।
रसोनो बृंहणो वृष्यः स्निग्धोष्णः पाचनः सरः ॥ २२२ ॥
रसे पाके च कटुकस्तीक्ष्णो मधुरको मतः ।

टीका—अमृत पीते समय जब उससे पृथ्वीपर बूंद गिरा उससे लहसुन हुआ ॥२१९॥ पांच रसोंसे युक्त और अम्लरससे रहित होता है, इसलिये द्रव्योंके गुण जाननेवालोंने रसोन नाम कहा है ॥२२०॥ यह मूलमें कड़वा है, और पत्रमें तिक्त रहता है, और नालमें कसेला, और नालके अग्रभागमें लवण ऐसा कहते हैं ॥ २२१ ॥ और बीजमें मधुर इसप्रकार इसके रस कहे हैं. यह समस्त धातुओंको बढानेवाला है, और कामदेवको प्रबल करता है, और स्निग्ध, उष्ण, तथा पाचन, दस्तावर होता है ॥ २२२ ॥ रस और पाकमें कड़वा, तीक्ष्ण, गरम, और मधुर भी होता है

भग्नसन्धानकृत् कण्ठ्यो गुरुः पित्तास्रवृद्धिदः ॥ २२३ ॥
बलवर्णकरो मेधाहितो नेत्र्यो रसायनः ॥ २२४ ॥

टीका—टूटे हाड़का जोड़नेवाला, कंठको हित, भारी, रक्तपित्तको बढानेवाला होता है ॥२२३ ॥ बलको तथा वर्णको बढानेवाला है, कांतिको करनेवाला है, नेत्रोंका हित करनेवाला है, और रसायन होता है ॥ २२४ ॥

हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूलविबन्धगुल्मारुचिकासशोफान् ।
दुर्नामकुष्ठानलसादजन्तुसमीरणश्वासकफांश्च हन्ति ॥२२५॥
मद्यं मांसं तथाम्लं च हितं लशुनसेविनाम् ।
व्यायाममातपं रोषमतिनीरं पयो गुडम् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतान्निरन्तरम् ॥ २२६ ॥

टीका—हृदयरोग, और जीर्णज्वर, तथा कोष्ठका शूल, विबंध, और बायगोला, अरुचि, तथा कास, शोथ, और कुष्ठ, मंदाग्नि, कृमि, वातरोग, श्वास, और कफ, इनको हरनेवाला है ॥२२५॥ इस लहसन सेवन करनेवालेको मद्य अर्थात् मदिरा और मांस तथा खटाई ये हितकारक हैं और दंड पेलना, धूपमें फिरना, क्रोध करना, बहुत जल पीना, दूध पीना, गुड खाना, लहसनके सेवन करनेवाला, इनको यत्नसे त्याग दे ॥ २२६ ॥

अथ पलाण्डु (प्याज) नामगुणाः ।

पलाण्डुर्यवनेष्टश्च दुर्गन्धो मुखदूषकः ।
पलाण्डुस्तु गुणैर्ज्ञेयो रसोनसदृशो गुणैः ॥ २२७ ॥
स्वादुः पाके रसोऽनुष्णः कफकृन्नातिपित्तलः ।
हरते केवलं वातं बलवीर्यकरो गुरुः ॥ २२८ ॥

टीका—पलांडु १, यवनेष्ट २, दुर्गन्ध ३, मुखदूषक ४, ये प्याजके नाम हैं. जितने गुण लहसनमें हैं उतने ही इसमें हैं ॥ २२७ ॥ और यह पाकमें मधुर, रस शीतल, और कफको करनेवाला है, और पित्तको अधिक करनेवाला नहीं, फकत वातका हरनेवाला है, और बलको तथा वीर्यको बढ़ानेवाला है, तथा गुरु है ॥ १२८ ॥

अथ भल्लातक (भिलावां) नामगुणाः ।

भल्लातकं त्रिषु प्रोक्तमरुष्कोऽरुष्करोऽग्निकः ।
तथैवाग्निमुखी भल्ली वीरवृक्षश्च शोफकृत् ॥ २२९ ॥
भल्लातकफलं पक्कं स्वादुपाकरसं लघु ।
कषायं पाचनं स्निग्धं तीक्ष्णोष्णं छेदि भेदनम् ॥ २३० ॥
मेध्यं वह्निकरं हन्ति कफवातव्रणोदरम् ।
कुष्ठार्शोग्रहणीगुल्मशोफानाहज्वरक्रिमीन् ॥ २३१ ॥

टीका—भल्लातक तीनों लिंगोमें कहा है. अरुष्क, अरुष्कर, अग्निक, ये भिलावेंके नाम हैं. इसीप्रकार अग्निमुखी, भल्ली, वीरवृक्ष, शोफकृत्, ये भी नाम कहे हैं.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

॥ २२९ ॥ भिलावेंका पक्का फल पाकमें मधुर है, रस हलका है, कसेला, पाचन, स्निग्ध; तीखा, गरम, छेदन करनेवाला, और भेदन करनेवाला भी कहा है ॥ २३० ॥ कांतिको बढ़ानेवाला, अग्निको प्रबल करता है, कफरोग, वातरोग, घाव, और उदररोग इनको हरनेवाला है. तथा कुष्ठरोग, बवासीर, और संग्रहणी, बायगोला, शोथ, और अफरा, ज्वर, कृमि इनको भी हरनेवाला है॥ २३१॥

तन्मज्जा मधुरो वृष्यो बृंहणो वातपित्तहा ।
वृत्तमारुष्करं स्वादु पित्तघ्नं केश्यमग्निकृत् ॥ ॥ २३२ ॥
भल्लातकः कषायोष्णः शुक्रलो मधुरो लघुः ।
वातश्लेष्मोदरानाहकुष्ठार्शोग्रहणीगदान् ॥ २३३ ॥
हन्ति गुल्मज्वरश्वित्रवह्निमान्द्यकृमिव्रणान् ।

टीका—इसकी गिरी मधुर होती है, पुरुषत्वको बढ़ानेवाली, बलको बढ़ानेवाली, वातरोग तथा पित्तको हरनेवाली हैं, और गोल भिलावां मधुर, पित्तको हरनेवाला कहा है. अग्निको प्रबल करनेवाला है ॥ २३२ ॥ और भिलावां कसेला, गरम, वीर्यको बढ़ानेवाला, मधुर, तथा हलका है. वात, कफ, उदररोग, अफरा, कुष्ठ, बवासीर, संग्रहणी, इनको जीतनेवाला है ॥ २३३ ॥ और बायगोला, ज्वर, श्वेतकुष्ठ, मन्दाग्नि, तथा कृमि, और घाओंको हरता है.

भङ्गा (भांग) नामगुणाः ।

भङ्गा गञ्जा मातुलानी मादिनी विजया जया ॥ २३४ ॥
भङ्गा कफहरी तिक्ता ग्राहिणी पाचनी लघुः ।
तीक्ष्णोष्णा पित्तला मोहमदवाग्वह्निवर्धिनी ॥ २३५ ॥

टीका—भंगा १, गंजा २, मातुलानी ३, मादिनी ४, विजया ५, जया ६, ये भांगके नाम हैं ॥ २३४ ॥ यह कफको पैदा करती है. तिक्त, ग्राहिणी, पाचन तथा हलकी, तीक्ष्ण और गरम है, और पित्तको प्रबल करनेवाली, मोह, नशा, वाणी, मंदाग्नि, इनको भी प्रबल करनेवाली है ॥ २३५॥

अथ खसफल (पोस्त) नामगुणाः।

तिलभेदः खसतिलः कासश्वासहरः स्मृतः ।
स्याद्धू वा खसफलोद्भूतं वल्कलं शीतलं लघु ॥ २३६ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ग्राहि तिक्तं कषायं च वातकृच्च कफास्रहृत्।
धातूनां शोषकं रूक्षं मदकृद्वाग्विवर्धनम् ॥ २३७ ॥
मुहुर्मोहकरं रुच्यं सेवनात्पुंस्त्वनाशनम्।

टीका—तिलभेद १, खसतिल २, ये पोस्तके नाम हैं. यह कास और श्वासको हरनेवाला है. पोस्तफलका जो बक्कल है वह शीतल और हलका है ॥२३६॥ ग्राही, तिक्त, कसेला, और वातको पैदा करनेवाला, और कफरक्तका हरनेवाला, और धातुओंका शोषक, तथा रूखा, और नशा लाता है, व आवाजको बढ़ानेवाला है ॥२३७॥ और यह वारंवार मोहकारक, रुचिदायक और कामदेवको हित करता है,

अथ आफूक (अफीम) नामगुणाः।

उक्तं खसफलं क्षीरमाफूकमहिफेनकम् ॥ २३८ ॥
अफूकं शोषणं ग्राहि श्लेष्मघ्नं वातपित्तलम्।
तथा खसफलोद्भूतवल्कलप्रायमित्यपि ॥ २३९ ॥

टीका--पोस्तके फलके दूधको अफूक और अहिफेन कहते हैं ॥ २३८ ॥ अफीम देहको सुखानेवाली, ग्राही, कफको हरनेवाली है. वातपित्तको बढ़ानेवाली है. और यह गुणमें पोस्तके बक्कलसदृश गुणवाली होती है ॥ २३९ ॥

अथ खसबीज (खसखस) नामगुणाः।

उच्यन्ते खसबीजानि ते खाखसतिला अपि।
खसबीजानि बल्यानि वृष्याणि सुगुरूणि च ॥ २४० ॥
जनयन्ति कफं तानि शमयन्ति समीरणम्।

टीका--इन पोस्तके बीजोंको खाखस तिल भी कहते हैं. यह खसखस बलको बढ़ानेवाली, और पुष्ट, भारी है ॥ २४० ॥ तथा कफको पैदा करती है और वातको हरती है.

अथ सैन्धवनामगुणाः।

सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणिमन्थं च सिन्धुजम् ॥ २४१ ॥
सैन्धवं लवणं स्वादु दीपनं पाचनं लघु।
स्निग्धं रुच्यं हिमं वृष्यं सूक्ष्मं नेत्र्यं त्रिदोषहृत् ॥ २४२ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—सैंधव १, शीतशिव २, माणिमंथ ३, सिंधुज ४, ये सेंधनमकके नाम हैं ॥ २४१ ॥ यह स्वादु, दीपन, पाचन, तथा हलका, होता है. चिकना, और रुचिको बढ़ानेवाला, शीतल, कामदेवको बढ़ानेवाला, सूक्ष्म, नेत्रोंको हितकारक, और त्रिदोषको हरनेवाला है ॥ २४२ ॥

अथ शाकम्भरी (सांभरनमक) नामगुणाः।

शाकम्भरीयं कथितं गुडाख्यं रोमकं तथा।
गुडाख्यं लघु वातघ्नमत्युष्णं भेदि पित्तलम् ॥ २४३ ॥
तीक्ष्णोष्णं चापि सूक्ष्मं चाभिष्यन्दि कटुपाकि च।

टीका—शाकंभरीय १, गुडाख्य २, रोमक, ३, ये सांभरनमकके नाम हैं. यह हलका, वातनाशक, गरम, भेदी, तथा पित्तको पैदा करता है ॥ २४३ ॥ और तीखा, गरम, सूक्ष्म, अभिष्यन्दी है, तथा पाकमें कड़वा होता है.

अथ सामुद्र (पाङ्गानमक) नामगुणाः।

सामुद्रं यत्तु लवणमक्षारं वसरं च तत् ॥ २४४ ॥
सामुद्रजं सागरजं लवणोदधिसम्भवम्।
सामुद्रं मधुरं पाके सतिक्तं मधुरं गुरु ॥ २४५ ॥
नात्युष्णं दीपनं भेदि सक्षारमविदाहि च।
श्लेष्मलं वातनुत् तिक्तमरूक्षं नातिशीतलम् ॥ २४६ ॥

टीका—समुद्रलोन क्षाररहित होता है. उसको वसर कहते हैं ॥ २४४ ॥ सामुद्रज १, सागरज २, उदधिसंभव ३, ये पांगा लवणके नाम हैं. यह पाकमें मधुर, थोड़ा तिक्त, मधुर, और भारी है ॥ २४५ ॥ बहुत गरम, और दीपन है, भेदी, थोड़ा क्षार, और अविदाही होता है. और यह कफजनित वातका नाश करनेवाला, तिक्त, स्निग्ध, और शीतल होता है ॥ २४६ ॥

अथ बिडनमकनामगुणाः।

बिडं पाकं च कतकं तथा द्राविडमासुरम्।
बिडं सक्षारमूर्ध्वाधः कफवातानुलोमनम् ॥ २४७ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दीपनं लघु तीक्ष्णोष्णं रूक्षं रुच्यं व्यवायि च ॥ २४८ ॥
विबन्धानाहविष्टम्भहृद्रुग्गौरवशूलनुत् ।

टीका—बिड १, पाक २, कतक ३, द्राविड ४, आसुर ५, ये बिडनोनके नाम हैं. बिड थोड़ा क्षार, ऊर्ध्व अधः कफवातका अनुलोमन करनेवाला होता है ॥२४७॥ ऊपर कफ और नीचे वातको निकालता है, और यह दीपन, हलका, तीखा, गरम, और रूखा, रुचिको बढ़ानेवाला है ॥ २४८ ॥ और विबन्ध, अफरा, विष्टम्भ, हृदयकी पीडा तथा भारीपन, शूल, इनको हरनेवाला है.

अथ सौवर्चल (सोंचर) नामगुणाः ।

सौवर्चलं स्याद्रुचकमन्धपाकं च तन्मतम् ॥ २४९ ॥
रुचकं रोचनं भेदि दीपनं पाचनं परम् ।
सुस्नेहं वातनुन्नातिपित्तलं विशदं लघु ॥ २५० ॥
उद्गारशुद्धिदं सूक्ष्मं विबन्धानाहशूलजित् ।

टीका—सौवर्चल १, रुचक २, अन्धपाक ३, ये सोंचरनोनके नाम हैं ॥२४९॥ यह रुचिको बढ़ाता है, भेदी, दीपन, बहुत पाचक होता है. चिकना, वातका हरनेवाला और अतिपित्तका करनेवाला नहीं, निर्मल, और हलका है ॥ २५० ॥ तथा डकारको शुद्ध करनेवाला है. विबंध, अफरा, तथा शूल, इनकोभी शमन करनेवाला है.

अथ औद्भिद (कचलोन) नामगुणाः ।

औद्भिदं पांशुलवणं यज्जातं भूमिजं स्वयम् ॥ २५१ ॥
क्षारं गुरु कटु स्निग्धं शीतलं वातनाशनम् ।

टीका—औद्भिद १, पांसुलवण २, ये कचनोनके नाम हैं. जो भूमिसे आप ही उत्पन्न होता है ॥ २५१ ॥ क्षार है, भारी और कड़वा, स्निग्ध, तथा शीतल है और वातका हरनेवाला है.

अथ चणकक्षारनामगुणाः ।

चणकाम्लकमत्युष्णं दीपनं दन्तहर्षणम् ॥ २५२ ॥
लवणानुरसं रुच्यं शूलाजीर्णविबन्धनुत् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—चनेका खार बहुत गरम और दीपन होता है, दातोंको रोढ़नेवाला है ॥ २५२ ॥ और लवणके अनुसार ही रुचिको पैदा करता है, तथा शूल, और अजीर्ण, विबंध, इनका हरनेवाला है.

अथ यवक्षार(जवाखार)गुणाः ।

पाकक्षारो यवक्षारो यावशूको यवाग्रजः ॥ २५३ ॥
स्वर्जिकापि स्मृतः क्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।
कथितः स्वर्जिकाभेदो विशेषज्ञैः सुवर्चिकः ॥ २५४ ॥
यवक्षारो लघुः स्निग्धः सुसूक्ष्मो वन्हिदीपनः ।

टीका—पाकक्षार १, यवक्षार २, यावशूक ३, यवाग्रज ४, ये जवाखारके नाम हैं ॥२५३ ॥ और सज्जीको भी क्षार कहते हैं, कापोत १, सुखवर्चक, ये सज्जीका भेद सुवर्चिक वैद्योंने कहा है ॥ २५४ ॥ जवाखार हलका, स्निग्ध, बहुत सूक्ष्म, अग्निको करनेवाला है.

निहन्ति शूलवातामश्लेष्मश्वासगलामयान् ॥ २५५ ॥
पाण्ड्वर्शोग्रहणीगुल्मानाहप्लीहहृदामयान् ।
स्वर्जिकाल्पगुणा तस्माद्विशेषाद्गुल्मशूलहृत् ॥ २५६ ॥
सुवर्चिका स्वर्जिकावद्बोद्धव्या गुणतो जनैः ।

टीका—और शूलको, वातको, आमको, तथा कफको, और श्वासको, तथा गलेके रोगोंको, हरता है ॥ २५५ ॥ और पांडु, बवासीर, संग्रहणी, बायगोला, तथा अफरा, प्लीह, और हृदयरोग, इनको भी हरनेवाला है. और सज्जी इससे थोड़े गुणवाली होती है, सज्जी विशेषकरके बायगोलाको हरती है ॥ २५६ ॥ और सोरा सज्जीके समान गुणवाला कहा है.

अथ सौभाग्य(सुहागा)नामगुणाः ।

सौभाग्यं टङ्कणं क्षारो धातुद्रावकमुच्यते ॥ २५७ ॥
टङ्कणं वह्निकृद्रूक्षं कफहृद्वातपित्तकृत् ।

टीका—सौभाग्य १, टंकण २, क्षार ३, धातुद्रावक ४, ये सुहागेके नाम हैं ॥ २५७ ॥ यह अग्निको दीप्त करनेवाला है, और रूखा है, कफका हरनेवाला है, तथा वातपित्तकारक है.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ क्षारद्वयक्षारत्रयनामगुणाः।

स्वर्जिका यावशूकश्च क्षारद्वयमुदाहृतम् ॥ २५८ ॥
टङ्कणेन युतं तत्तु क्षारत्रयमुदीरितम् ।
मिलितं तूक्तगुणवद्विशेषाद्गुल्महृत्परम् ॥ २५९ ॥

टीका—सज्जीखार और जवाखार इनको क्षारद्वय बोलते हैं. और सुहागा भी मिलानेसे क्षारत्रय होता है ॥ २५८ ॥ ये मिलेहुए उक्तगुणोंको करनेवाले हैं, विशेषकरके बायगोलाको हरते हैं ॥ २५९ ॥

अथ क्षाराष्टकनामगुणाः।

पलाशवज्रिशिखरिचिञ्चार्कतिलनालजाः।
यवजः स्वर्जिका चेति क्षाराष्टकमुदाहृतम् ॥ २६० ॥
क्षारा एतेऽग्निना तुल्या गुल्मशूलहरा भृशम् ।

टीका—पलास १, थूहर २, कचेरा ३, इमली ४, आक ५, तिल ६, जव ७, सज्जी ८, इन आठों क्षारोंको क्षाराष्टक कहते हैं ॥ २६० ॥ ये क्षार अग्निके समान हैं, बायगोला, तथा शूल, इनको हरनेवाले हैं.

अथ चुक्र (चूक) नामगुणाः।

चुक्रं सहस्रवेधि स्याद्रसाम्लं शुक्रमित्यपि ।
चुक्रमत्यम्लमुष्णं च दीपनं पाचनं परम् ॥ २६१ ॥
शूलगुल्मविबन्धामवातश्लेष्महरं सरम् ।
कृमितृष्णास्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमान्द्यहृत् ॥ २६२ ॥

इति भावमिश्रविरचिते हरीतक्यादिनिघण्टे हरीतक्यादिवर्गः समाप्तः ॥ १ ॥

टीका—चुक्र १, सहस्रवेधी २, रसाम्ल ३, शुक्र ४, ये चूकके नाम हैं चूक बहुत खट्टा होता है, गरम, दीपनीय, पाचन है ॥ २६१ ॥ और शूल, बायगोला, तथा विबंध, आमवात, और कफको हरनेवाला और दस्तावर है. तथा कृमि, तृषा, मुखके स्वाद बिगड़नेको, हृदयकी पीडाको, मन्दाग्निको भी हरनेवाला है ॥२६२॥ इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे बालबोधनीटीकायां हरीतक्यादिवर्गः समाप्तः १

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्रीः ।

हरीतक्यादिनिघण्टे

कर्पूरादिवर्गः ।

कर्पूरनामगुणाः ।

पुंसि क्लीबे च कर्पूरः सिताभ्रो हिमवालुकः ।
घनसारश्चन्द्रसंज्ञो हिमनामापि स स्मृतः ॥ १ ॥
कर्पूरः शीतलो वृष्यश्चक्षुष्यो लेखनो लघुः ।
सुरभिर्मधुरस्तिक्तः कफपित्तविषापहः ॥ २ ॥

टीका—पुंलिंग और नपुंसकलिंगमें कर्पूर शब्दका पाठ है. कर्पूर १, सिताभ्र२, हिमवालुक ३, घनसार ४, चंद्रसंज्ञ ५, और हिमनामसे भी कहा है ॥ १ ॥ यह शीतल, वृष्य, नेत्रोंको हितकारक, लेखन, और हलका है. सुगंधयुक्त, मधुर, और तिक्त होता है; और कफ, पित्त, विष, इनको हरनेवाला है ॥ २ ॥

दाहतृष्णास्यवैरस्यमेदोदौर्गन्ध्यनाशनः ।
कर्पूरो द्विविधः प्रोक्तः पक्वापक्वप्रभेदतः ॥ ३ ॥
पक्वात् कर्पूरतः प्राहुरपक्वं गुणवत्तरम् ।

टीका—दाह, प्यास, मुखका स्वाद बिगड़ना, मेदका दुर्गंध, इनको हरनेवाला है; और कर्पूर दो प्रकारका होता है, कच्चा और पक्का ॥ ३ ॥ पक्के कर्पूरसे कच्चा कर्पूर अधिक गुणवाला होता है.

अथ चीनसंज्ञकर्पूरनामगुणाः ।

चीनाकसंज्ञः कर्पूरः कफक्षयकरः स्मृतः ॥ ४ ॥
कुष्ठकण्डूवमिहरस्तथा तिक्तरसश्च सः ।

टीका—चीनाक नाम चीनिया कर्पूरका है. वह कफको और क्षयको करनेवाला होता है ॥ ४ ॥ कुष्ठ और खुजली तथा वमन इनका हरनेवाला है, तथा तिक्त रसवाला होता है.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust
पं० जयनारायण कपूरिया वैद्य ६०, गांधी गली, देहली-६

अथ कस्तूरीनामगुणाः ।

मृगनाभिर्मृगमदः कथितस्तु सहस्रभित् ॥ ५ ॥
कस्तूरिका च कस्तूरी वेधमुख्या च सा स्मृता ।
काश्मीरी कपिलच्छाया कस्तूरी त्रिविधा स्मृता । ३ ॥
कामरूपोद्भवा श्रेष्ठा नैपाली मध्यमा भवेत् ।
कामरूपोद्भवा कृष्णा नैपाली नीलवर्णयुक् ॥ ७ ॥
काश्मीरदेशसंभूता कस्तूरी ह्यधमा मता ।
कस्तूरिका कटुस्तिक्ता क्षारोष्णा शुक्रला गुरुः ॥ ८ ॥
कफवातविषच्छर्दिशीतदौर्गन्ध्यशोषहृत् ।

टीका—मृगनाभि १, मृगमद २, सहस्रभित् ३, ये कस्तूरीके नाम हैं ॥ ५ ॥ और कस्तूरिका १, कस्तूरी २, वेधमुख्या ३, ये दूसरीके नाम हैं. काश्मीरी १, कपिलच्छाया २, कस्तूरी ३, ये तीसरीके नाम हैं. ऐसे तीन प्रकारकी कस्तूरी लिखी है ॥ ६ ॥ जो कस्तूरी कामरूपदेशमें उत्पन्न होती है वह श्रेष्ठ है, और जो नेपालमें होती है वह मध्यम होती है. कामरूपमें काली और नैपालमें नीली होती है ॥ ७ ॥ जो कस्तूरी काश्मीर देशमें उत्पन्न होती है वह अधम कही है. कस्तूरी कड़वी होती है, तिक्त, क्षार, गरम, शुक्रको पैदा करनेवाली ॥ ८ ॥ तथा भारी होती है, और कफ, वात, विष, वमन तथा शीत, दुर्गंधिता, शोष, इनको हरनेवाली है.

अथ लताकस्तूरिका (मुस्कदाना) नामगुणाः ।

लताकस्तूरिका तिक्ता स्वाद्वी वृष्या हिमा लघुः ॥ ९ ॥
चक्षुष्या छेदिनी श्लेष्मतृष्णाबस्त्यास्यरोगहृत् ।

टीका—लताकस्तूरिका (मुष्कदाना) तिक्त, और मधुर होती है, तथा पुष्ट, शीतल, और हलकी होती है ॥ ९ ॥ नेत्रोंको हित करनेवाली है, तथा छेदन करनेवाली है, कफ, प्यास, तथा पेडू, और मुखके रोग इनको हरनेवाली है.

अथ गन्धमार्जारवीर्य(जवादिकस्तूरी)गुणाः ।

गन्धमार्जारवीर्यं तु वीर्यकृत् कफवातहृत् ॥१० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कण्डूकुष्ठहरं नेत्र्यं सुगन्धं स्वेदगन्धनुत् ।

टीका—गंधमार्जारवीर्य १, यह जवादिकस्तूरी (वा गौरीसर) का नाम है. यह बल करनेवाला और कफवातका नाशक होता है ॥ १० ॥ तथा कंडू, और कुष्ठ इनका हरनेवाला है, और नेत्रोंको हितकारी है, सुगन्ध है, पसीनाके गन्धको नाश करनेवाला है. इस देशमें इसे बिल्लीलोटन कहते हैं.

अथ चन्दननामगुणाः ।

श्रीखण्डं चन्दनं न स्त्री भद्रश्रीस्तैलपर्णिकः ॥ ११ ॥
गन्धसारो मलयजस्तथा चन्द्रद्युतिश्च सः ।
स्वादे तिक्तं कषे पीतं छेदे रक्तं तनौ सितम् ॥ १२ ॥
ग्रन्थिकोटरसंयुक्तं चन्दनं श्रेष्ठमुच्यते ।
चन्दनं शीतलं रूक्षं तिक्तमाह्लादनं लघु ॥ १३ ॥
श्रमशोषविषश्लेष्मतृष्णापित्तास्रदाहनुत् ।

टीका—श्रीखंड १, चंदन २, भद्रश्री ३, तैलपर्णिक ४, ॥ ११ ॥ गंधसार ५, मलयज ६, चंद्रद्युति ७, ये चंदनके नाम हैं. यह स्वादमें तिक्त है, घिसनेमें पीला है और काटनेमें लाल और शरीरमें लगानेमें सफेद होता है ॥ १२ ॥ गांठ और खोड़से युक्त ऐसा चंदन श्रेष्ठ कहा है. यह शीतल, रूखा, और तिक्त है, हर्षको देनेवाला है, और हलका है ॥ १३ ॥ तथा श्रम, शोष, और विष, कफ, तृषा, रक्तपित्त, और दाह, इनको जीतनेवाला है.

अथ पीतचन्दननामगुणाः ।

(कलम्बक इति लोके.)

कालीयकं तु कालीयं पीताभं हरिचन्दनम् ॥ १४ ॥
हरिप्रियं कालसारं तथा कालानुसार्यकम् ।
कालीयकं रक्तगुणं विशेषाद्व्यङ्गनाशनत् ।

टीका—पीतचंदनको लौकिकमें कलम्बक कहते हैं. कालीयक १, कालीय २, पीताभ ३, हरिचंदन ४ ॥ १४ ॥ हरिप्रिय ५, कालसार ६, कालानुसार्यक ७, ये पीतचंदनके नाम हैं. पीतचंदनमें रक्तचंदनके बराबर गुण होते हैं, और विशेषकरके मुखकी झांईको हरता है ॥ १५ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ रक्तचन्दननामगुणाः ।

रक्तचन्दनमाख्यातं रक्ताङ्गं क्षुद्रचन्दनम् ।
तिलपर्णं रक्तसारं तत्प्रवालफलं स्मृतम् ॥ १६ ॥
रक्तं शीतं गुरु स्वादु छर्दितृष्णास्रपित्तहृत् ।
तिक्तं नेत्रहितं वृष्यं ज्वरव्रणविषापहम् ॥ १७ ॥

टीका—रक्तचंदन १, रक्तांग २, क्षुद्रचंदन ३, ऐसा कहा है· और तिलपर्ण १, रक्तसार २, प्रवालफल ३, ऐसा भी कहते हैं ॥ १६ ॥ रक्तचंदन शीतल, भारी, मधुर, और वमन, तृषा, रक्तपित्त, इनका हरनेवाला है, और तिक्त है, नेत्रोंको हितकारक है तथा वृष्य होता है, और ज्वर, घाव, विष, इनका हारक है ॥१७॥

अथ पतंगनामगुणाः ।

पतङ्गं रक्तसारं च सुरङ्गं रञ्जनं तथा ।
पट्टरञ्जकमाख्यातं पत्तूरं च कुचन्दनम् ॥ १८॥
पतङ्गं मधुरं शीतं पित्तश्लेष्मव्रणास्रनुत् ।
हरिचन्दनवद्वेद्यं विशेषाद्दाहनाशनम् ॥ १९ ॥
चन्दनानि तु सर्वाणि सदृशानि रसादिभिः ।
गन्धेन तु विशेषोऽस्ति पूर्वः श्रेष्ठतमो गुणे : ॥ २० ॥

टीका—रक्तसार १, पतंग २, सुरंग, ३, रंजन ४, पट्टरंजक ५, पत्तूर ६, कुचंदन ७, ये पतंगके नाम हैं· यह भी चंदनकी किस्मसे होता है ॥ १८ ॥ पतंग मधुर है, शीतल है; पित्त, कफ, घाव, रक्त, इनको हरनेवाला है और पीत चंदनके समान जानना. परंतु विशेष करके दाहका नाशक है ॥ १९ ॥ सर्व चंदन रसादिकोमें समान हैं, और गन्धसे विशेष है, उनमें पहिला गुणोंमें श्रेष्ठ है ॥ २० ॥

अथ अगरुनामगुणाः ।

अगरु प्रवरं लोहं राजार्हं योगजं तथा ।
वंशिकं कृमिजं वापि कृमिजग्धमनार्यकम् ॥ २१ ॥
अगरूष्णं कटु त्वच्यं तिक्तं तीक्ष्णं च पित्तलम् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लघु कर्णाक्षिरोगघ्नं शीतवातकफप्रणुत् ॥ २२ ॥
कृष्णं गुणाधिकं तत्तु लोहवद्वारि मज्जति ।
अगरुप्रभवः स्नेहः कृष्णागरुसमः स्मृतः ॥ २३ ॥

टीका—अगरु१,प्रवर२,लोह ३,राजार्ह४,योगज५,वंशिक६कृमिज७,कृमिजग्ध, ८,अनार्यक ९, ये अगरके नाम हैं ॥२१॥ यह स्वादमें कटु है,त्वचाका हितकारक, तिक्त, तीक्ष्ण, पित्तको पैदा करता है, हलका है, कर्ण तथा नेत्रोंके रोगोंका हरनेवाला है, शीत तथा वात कफ इनको नष्ट करनेवाला है ॥ २२॥ और इन दोनोंमें काला अगरु गुणमें अधिक है, और वह लोहके समान जलमें डूब जाता है, और अगरका तेल कृष्ण अगरके समान कहा गया है ॥ २३ ॥

अथ देवदारुनामगुणाः ।

देवदारु स्मृतं दारुभद्रं दार्विन्द्रदारु च ।
मस्तदारु द्रुकिलिमं कृत्रिमं सुरभूरुहः ॥ २४ ॥
देवदारु लघु स्निग्धं तिक्तोष्णं कटुपाकि च ।
विबन्धाध्मानशोथामतन्द्राहिक्काज्वरास्रजित् ॥ २५ ॥
प्रमेहपीनसश्लेष्मकासकण्डूसमीरनुत् ।

टीका—देवदारु १, दारुभद्र २,दार्वी ३, इन्द्रदारु ४, मस्तदारु५, द्रुकिलिम ६, कृत्रिम ७, सुरभूरुह ८, ये देवदारुके नाम हैं॥ २४॥ यह हलका होता है, चिकना, तथा गरम, तिक्त, और पाकमें कड़वा है, विबंध, आध्मान, और सूजन तथा तंद्रा, हिचकी, ज्वर और रक्त इनका नाशक है ॥२५॥ और प्रमेह, पीनस, कफ, तथा कास, खुजली, और वातको भी हरता है.

अथ सरलनामगुणाः ।

सरलः पीतवृक्षः स्यात्तथा सुरभिदारुकः ।
सरसो मधुरस्तिक्तो कटुपाकरसो लघुः ॥ २६ ॥
स्निग्धोष्णः कर्णकण्ठाक्षिरोगरक्षोहरः स्मृतः ।
कफानिलस्वेददाहकासमूर्च्छाव्रणापहः ॥ २७ ॥

टीका—सरल १, पीतवृक्ष २, सुरभि दारुक ३, ये दूसरे देवदारुके

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नाम हैं· यह मधुर है, तिक्त है, पाकमें कड़वा है ॥२६॥ और स्निग्ध, गरम, तथा कान, कंठ, और नेत्ररोग, और राक्षसोंका नाश करनेवाला है, और कफ, पसीना, दाह, तथा कास, मूर्च्छा, और घावोंको भी हरनेवाला है ॥ २७ ॥

अथ तगरनामगुणाः ।

कालानुसार्यं तगरं कुटिलं नहुषं नतम् ।
अपरं पिण्डतगरं दण्डहस्ती च बर्हिणम् ॥ २८ ॥
तगरद्वयमुष्णं स्यात् स्वादु स्निग्धं लघु स्मृतम् ।
विषापस्मारशूलाक्षिरोगदोषत्रयापहम् ॥ २९ ॥

टीका—कालानुसार्य १, तगर २, कुटिल ३, नहुष ४, नत ५, ये तगरके नाम हैं, और दूसरे तगरको पिंडतगर १, दंडहस्ती २, बर्हिण ३ कहते हैं ॥२८॥ ये दोनों गरम होते हैं, और मधुर, चिकने तथा हलके होते हैं, और विष, मिरगी, शूल तथा नेत्ररोग, और त्रिदोषको भी हरनेवाले हैं ॥ २९ ॥

अथ पद्मकनामगुणाः ।

पद्मकं पद्मगन्धि स्यात्तथा पद्माह्वयं स्मृतम् ।
पद्मकं तु परं तिक्तं शीतलं वातलं लघु ॥ ३० ॥
विसर्पदाहविस्फोटकुष्ठश्लेष्मास्रपित्तनुत् ।
गर्भसंस्थापनं वृष्यं वमिव्रणतृषाप्रणुत् ॥ ३१ ॥

टीका—पद्मक १, पद्मगंधि २, पद्माह्वय ३, ये पद्माकके नाम हैं· यह कसेला और तिक्त, शीतल, वातकारक है ॥ ३० ॥ विसर्प, दाह, तथा विस्फोटक, कुष्ठ, और कफ, रक्तपित्त, इनका भी हारक है, और गर्भको स्तंभन करता है, रुचिको बढ़ाता है, वमन, घाव, और तृषा इनका भी हरनेवाला है ॥ ३१ ॥

अथ गुग्गुलुनामगुणाः ।

गुग्गुलुर्देवधूपश्च जटायुः कौशिकः पुरः
कुस्तालूखलकं क्लीबे महिषाक्षः पलंकषः ॥ ३२ ॥
महिषाक्षो महानीलः कुमुदः पद्म इत्यपि ।
हिरण्यपञ्चमो ज्ञेयो गुग्गुलोः पञ्च जातयः ॥ ३३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भृङ्गाञ्जनसवर्णस्तु महिषाक्ष इति स्मृतः ।
महानीलस्तु विज्ञेयः स्वनामसमलक्षणः ॥ ३४ ॥
कुमुदः कुमुदाभः स्यात् पद्मो माणिक्यसन्निभः ।
हिरण्याक्षस्तु हेमाभः पञ्चानां लिङ्गमीरितम् ॥ ३५ ॥
महिषाक्षो महानीलो गजेन्द्राणां हितावुभौ ।
हयानां कुमुदः पद्मः स्वस्त्यारोग्यकरौ परौ ३६॥
विशेषेण मनुष्याणां कनकः परिकीर्तितः ।
कदाचिन्महिषाक्षश्च यतः कैश्चिन्नृणामपि ॥ ३७॥
गुग्गुलुर्विशदस्तिक्तो वीर्योष्णः पित्तलः सरः ।
कषायः कटुकः पाके कटूरूक्षो लघुः परः ।
भग्नसंधानकृद् वृष्यः सूक्ष्मः स्वर्यो रसायनः ।
दीपनः पिच्छिलो बल्यः कफवातव्रणापचीः ॥ ३९ ॥
मेदोमेहाश्मवातांश्च क्लेदकुष्ठाममारुतान् ।
पिडिकाग्रन्थिशोफार्शोगण्डमालाकृमीञ्जयेत् ॥ ४० ॥
माधुर्याच्छमयेद्वातं कषायत्वाच्च पित्तहा ।
तिक्तत्वात् कफजित्तेन गुग्गुलुः सर्वदोषहा ॥ ४१ ॥
स नवो बृंहणो वृष्यः पुराणस्त्वतिलेखनः ।
स्निग्धः कांचनसंकाशः पक्वजम्बूफलोपमः ॥ ४२ ॥
नूतनो गुग्गुलुः प्रोक्तः सुगन्धिर्यस्तु पिच्छिलः ।
शुष्को दुर्गन्धकश्चैव त्यक्तप्रकृतिवर्णकः ॥ ४३ ॥
पुराणः स तु विज्ञेयो गुग्गुलुर्वीर्यवर्जितः ।
अम्लं तीक्ष्णमजीर्णं च व्यवायं श्रममातपम् ॥ ४४ ॥
मद्यं रोषं त्यजेत् सम्यग्गुणार्थी पुरसेवकः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—गुग्गुलु १, देवधूप २, जटायु ३, कौशिक ४, पुर ५, कुस्तालु ६, नपुंसकलिंगमें खलक ७, ये गूगलके नाम कहे हैं. और महिषाक्ष १, पलंकष २, ये भी नाम हैं ॥ ३२ ॥ महिषाक्ष १, महानील २, कुमुद ३, पद्म ४, हिरण्य ५, ये पांच गूगलके भेद हैं ॥ ३३ ॥ जो गूगल भौंरा और अंजनके समान कालेरंगका हो उसे महिषाक्ष कहते हैं, और महानील अपने नामके बराबर लक्षणवाला होता है ॥ ३४ ॥ और कुमुद सफेद कमलके समान तथा पद्म पद्ममणिके सदृश कहा है, और हिरण्याक्षका सुवर्णकासा रंग होता है, इसप्रकार पांचोंका लक्षण कहा है ॥ ३५ ॥ महिषाक्ष और महानील ये दोनों हथियोंको हितकारक हैं; और घोड़ोको कुमुद तथा पद्म ये दोनों आरोग्य करनेवाले हैं ॥ ३६ ॥ और विशेषकरके कनक मनुष्योंको हितकारक है, कभी कभी महिषाक्ष भी मनुष्योंको हितकारक है ॥ ३७ ॥ यह गूगल विशद है, तिक्त है, वीर्यमें गरम है, पित्तको पैदा करता है, सर है, कसैला हैं, कड़वा है, और पाकमें कटु है और रूखा है, तथा बहुत हलका होता है ॥ ३८ ॥ और टूटे हाड़ोंको जोड़नेवाला है, पुष्ट है, सूक्ष्म स्वरको अच्छा करनेवाला है, और रसायन है, दीपन, और लसदार तथा बलको बढ़ानेवाला होता है, और कफ, वात, घाव, अपची, इनका नाश, करता है ॥ ३९ ॥ मेद, प्रमेह, पथरी, तथा वात, क्लेद, कुष्ठ, और आमवात, तथा पिडिका, ग्रन्थि, और सूजन, बवासीर, तथा गंडमला, और कृमि, इनको हरनेवाला है ॥ ४० ॥ और मधुर रससे वातनाशक है, कसेलेपनसे पित्तनाशक है, तिक्तपनेसे कफनाशक है, इसीसे गूगल सर्वदोषोंका जीतनेवाला होता है ॥ ४१ ॥ नया गूगल वीर्यको बढ़ानेवाला है, और पुराना बहुत लेखन होता है, पक्का गूगल चिकना सुवर्णके रंगका अथवा पक्के जामनके सदृश होता है ॥ ४२ ॥ और नया गूगल सुगन्ध चेपदार होता है. शुष्क दुर्गंधके करनेवाला तथा स्वाभाविक वर्णसे रहित ॥ ४३ ॥ पुराना गूगल है. वह वीर्यसे रहित है. खटाई, मिर्च, अजीर्ण, मैथुन, श्रम करना, धूपमें बैठना ॥ ४४ ॥ मद्य पीना, क्रोध करना, इतनी बातोंको गूगलका सेवन करनेवाला अवश्य त्याग दे.

अथ सरलनिर्यासगुग्गुलुनामगुणाः ।

श्रीवासः सरलस्रावः श्रीवेष्टो वृक्षधूपकः ॥ ४५ ॥
श्रीवासो मधुरस्तिक्तः स्निग्धोष्णस्तुवरः सरः ।
पित्तलो वातमूर्धाक्षिस्वररोगकफापहः ॥ ४६ ॥
रक्षोघ्नः स्वेददौर्गन्ध्ययूकाकण्डूव्रणप्रणुत् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—देवदारुकी जातका एक गोंद होता है, उसे गूगल कहते हैं. श्रीवास १, सरलस्राव २, श्रीवेष्ट ३, वृक्षधूपक ये इसके नाम हैं ॥ ४५ ॥ यह सरल और मधुर होता है. तिक्त, स्निग्ध, गरम, और कसेला, तथा सर है. पित्तकारक है. वातरोग, शिरोरोग, नेत्ररोग, स्वररोग, कफ, इनको हरनेवाला है ॥ ४६ ॥ और राक्षसोंका नाशक है. तथा पसीना, दुर्गन्धिता, जूंआं खुजली, घाव, इनको भी हरनेवाला है.

अथ रालनामगुणाः ।

रालस्तु शालनिर्यासस्तथा सर्जरसः स्मृतः ॥ ४७ ॥
देवधूपो यक्षधूपस्तथा सर्वरसश्च सः ।
रालो हिमो गुरुस्तिक्तः कषायो ग्राहको हरेत् ॥ ४८ ॥
दोषास्रस्वेदवीसर्पज्वरव्रणविपादिकाः ।
ग्रहभग्नाग्निदग्धांश्च शूलातीसारनाशनः ॥ ४९ ॥

टीका—राल १, शालनिर्यास २, सर्जरस ३, ॥ ४७ ॥ देवधूप ४, यक्षधूप ५, सर्वरस ६, ये रालके नाम हैं. राल शीतल, भारी, तिक्त, कसेला, और ग्राहक है ॥ ४८ ॥ और दोष, रक्त, पसीना, तथा विसर्प, ज्वर, घाव, और विपादिका इनको हरनेवाला है और शूल, अतीसार इनको भी जीतता है. ग्रह और टूटे हाड़को तथा अग्निदग्धको अच्छा करता है ॥ ४९ ॥

अथ कुन्दुरुसुगन्धद्रव्यशल्लकीनिर्यासनामगुणाः ।

कुन्दुरुस्तु मुकुन्दः स्यात् सुगन्धः कुन्द इत्यपि ।
कुन्दुरुर्मधुरस्तिक्तस्तीक्ष्णस्त्वच्यः कटुर्हरेत् ॥ ५० ॥
ज्वरस्वेदग्रहालक्ष्मीमुखरोगकफानिलान् ।

टीका—सोनादररक्तके गोंदको कुन्दरुगोंद कहते हैं. इसको गन्धा बिरोजा भी कहते हैं, कुन्दरु १, मुकुन्द २, सुगन्ध ३, कुन्द ४, ये कुंदरुगोंदके तीन नाम हैं. यह मधुर, तिक्त, तीक्ष्ण, त्वचाको हितकारी है, और कड़वा होता है ॥ ५० ॥ ज्वर, स्वेद, ग्रह, अलक्ष्मी तथा मुखरोग, कफरोग, और वातके रोगोंको भी हरनेवाला है.

अथ शिलारसनामगुणाः ।

सिह्लकस्तु तुरुष्कः स्याद्यतो यवनदेशजः ॥ ५१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कपितैलं च स ख्यातस्तथा च कपिनामकः ।
सिह्लकः कटुकः स्वादुः स्निग्धोष्णः शुक्रकान्तिकृत् ॥ ५२ ॥
वृष्यः कण्ठ्यः स्वेदकुष्ठज्वरदाहग्रहापहः ।

टीका—सिल्हक १, तुरुष्क २, यवनदेशज ३, ॥ ५१ ॥ कपितैल ४, कपिनामक ५, ये शिलारसके पांच नाम हैं. शिलारस कड़वा होता है, और मधुर, चिकना, तथा शुक्र और कांतिको बढ़ानेवाला है ॥ ५२ ॥ पुष्ट है, कंठको हितकारी है, और पसीना, कुष्ठ, ज्वर, दाह, और ग्रह इनका नाशक है.

अथ जातीफलनामगुणाः ।

जातीफलं जातिकोशं मालतीफलमित्यपि ॥ ५३ ॥
जातीफलं रसे तिक्तं तीक्ष्णोष्णं रोचनं लघु ।
कटुकं दीपनं ग्राहि स्वर्यं श्लेष्मानिलापहम् ॥ ५४ ॥
निहन्ति मुखवैरस्यं मद्यदौर्गन्ध्यकृष्णताः ।
कृमिकासवमिश्वासशोषपीनसहृद्रुजः ॥ ५५ ॥

टीका—जातीफल १, जातिकोश २, मालतीफल ३, ये जायफलके नाम हैं ॥ ५३ ॥ जायफल रसमें तिक्त, तीक्ष्ण, गरम, रुचिको करनेवाला तथा हलका है. कड़वा, दीपन, तथा ग्राही है, स्वरको अच्छा करता है, कफवातको हरनेवाला है ॥ ५४ ॥ मुखके बिगड़े स्वादको और मद्यकी दुर्गंधको और कालेपनको भी हरनेवाला है; और कृमि, कास, वमन तथा श्वास, शोष, पीनस, और हृदयकी पीडा, इनको भी जीतनेवाला है ॥ ५५ ॥

अथ जातीपत्री (जावित्री) नामगुणाः ।

जातीफलस्य त्वक् प्रोक्ता जातीपत्री भिषग्वरैः ।
जातीपत्री लघुः स्वादुः कटूष्णा रुचिवर्णकृत् ॥ ५६ ॥
कफकासवमिश्वासतृष्णाकृमिविषापहा ।

टीका—वैद्योंने जायफलकी छालको जावित्री कहा है. जावित्री हलकी, मधुर, कड़वी, गरम, रुचि तथा वर्णको करनेवाली है ॥ ५६ ॥ और कफ, कास, वमन, तथा श्वास, तृषा, कृमि, और विष इनको हरनेवाली है.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ लवङ्गनामगुणाः ।

लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञं श्रीप्रसूनकम् ॥ ५७ ॥
लवङ्गं कटुकं तिक्तं लघु नेत्रहितं हिमम् ।
दीपनं पाचनं रुच्यं कफपित्तास्रनाशकृत् ॥ ५८ ॥
तृष्णां छर्दिं तथाध्मानं शूलमाशु विनाशयेत् ।
कासं श्वासं च हिक्कां च क्षयं क्षपयति ध्रुवम् ॥ ५९ ॥

टीका—लवंग १, देवकुसुम २, श्रीसंज्ञ ३, श्रीप्रसूनक ४, ॥ ५७ ॥ ये लौंगके नाम हैं. लौंग कड़वी, तिक्त, हलकी, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, दीपन, पाचन, तथा रुचिको देनेवाली; और कफ, रक्तपित्त, इनको हरनेवाली है ॥ ५८ ॥ और प्यास, वमन, अफरा, तथा शूल, इनकी हारक है और कास, श्वास, हिचकी, तथा क्षय इनको भी शीघ्र हरती है ॥ ५९ ॥

अथ स्थूलैला (बड़ी इलायची) नामगुणाः ।

एला स्थूला च बहुला पृथ्वीका त्रिपुटापि च ।
भद्रैला बृहदेला च चन्द्रवाला च निष्कुटिः ॥ ६० ॥
स्थूलैला कटुका पाके रसे चानलकृल्लघुः ।
रूक्षोष्णा श्लेष्मपित्तास्रकण्डूश्वासतृषापहा ॥ ६१ ॥
हृल्लासविषबस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासनुत् ।

टीका—एला १, स्थूला २, बहुला ३, पृथ्वीका ४, त्रिपुटा ५, भद्रैला ६, बृहदेला ७, चंद्रवाला ८, निष्कुटी ९, ये बड़ी इलायचीके नव नाम हैं ॥ ६० ॥ यह पाक और रसमें कड़वी है, अग्निको दीप्त करती है, और हलकी, रूखी, गरम है. कफ, रक्त, पित्त, तथा खुजली, श्वास, तृषा, इनकी हारक है ॥ ६१ ॥ और हृल्लास, विष तथा पेडू, मुख और शिर इनकी पीडाको हरती है, तथा वमन और श्वास इनको भी हरती है.

अथ सूक्ष्मैला(गुजराती इलायची)नामगुणाः ।

सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्था कोरङ्गी द्राविडी त्रुटिः ॥ ६२ ॥
एला सूक्ष्मा कफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रहृत् ।
रसे तु कटुका शीता लघ्वी वातहरी मता ॥ ६३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका--सूक्ष्मा १, उपकुंचिका २, तुत्था ३, कोरंगी ४, द्राविडी ५, त्रुटि ६, ये छोटी इलायचीके नाम हैं ॥ ६२ ॥ यह कफरोग, श्वास, कास, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, इन रोगोंको हरनेवाली है; रसमें कड़वी है, शीतल है; हलकी है, वातहारक है ॥ ६३ ॥

अथ त्वक्पत्र (तज) नामगुणाः ।

त्वक्पत्रं च वराङ्गं स्याद् भृङ्गं चोचं तथोत्कटम् ।
त्वच्यं लघूष्णं कटुकं स्वादु तिक्तं च रूक्षकम् ॥ ६४ ॥
पित्तलं कफवातघ्नं कण्ड्वामारुचिनाशनम् ।
हृद्बस्तिरोगवातार्शःकृमिपीनसशुक्रहृत् ॥ ६५ ॥

टीका—त्वकपत्र १, वरांग २, भृंग ३, चोच ४, उत्कट ५, ये तजके नाम हैं. यह हलकी, गरम, कड़वी, मधुर, तिक्त, रूखी है ॥ ६४ ॥ पित्तको उत्पन्न करनेवाली है, कफवातकी हरनेवाली है; खुजली, आम, अरुचि, इनको जीतनेवाली है; हृदय, बस्ति इन रोगोंको और वातकी बवासीर, कृमि, पीनस, तथा शुक्रको हरनेवाली है ॥ ६५ ॥

अथ त्वक् (दालचीनी) नामगुणाः ।

त्वक् स्वाद्वी तु तनुत्वक् स्यात्तथा दारुसिता मता ।
उक्ता दारुसिता स्वाद्वी तिक्ता चानिलपित्तहृत् ॥ ६६ ॥
सुरभिः शुक्रला वर्ण्या मुखशोषतृषापहा ।

टीका—त्वक् १, तनुत्वक् २ दारुसिता ३, ये कलमी दारचीनीके नाम हैं. यह मधुर और तिक्त है, तथा वातपित्तको हरनेवाली है ॥ ६६ ॥ सुगन्धयुक्त है, शुक्रको ढ़ानेवाली है, रंगको अच्छा करती है, मुखशोष, और तृषा इनको जीतनेवाली है.

अथ पत्रकनामगुणाः ।

पत्रं तमालपत्रं च तथा स्यात् पत्रनामकम् ॥ ६७ ॥
पत्रकं मधुरं किञ्चित्तीक्ष्णोष्णं पिच्छिलं लघुः ।
निहन्ति कफवातार्शोहृल्लासारुचिपीनसान् ॥ ६८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—पत्र १, तमालपत्र २ पत्रनामक ३, ये तेजपत्रके नाम हैं ॥ ६७ ॥ यह मधुर है, थोड़ा तीक्ष्ण है, गरम है, और चेपदार तथा हलका होता है, और कफ, वात, बवासीर, जी मिचलाना, अरुचि, पीनस, इनको हरनेवाला है ॥ ६८ ॥

अथ नागकेशरनामगुणाः ।

नागपुष्पः स्मृतो नागः केशरो नागकेशरः ।
चाम्पेयो नागकिञ्जल्कः कथितः काञ्चनाह्वयः ॥ ६९ ॥

अयं पुष्पे तु क्लीबः ।

नागपुष्पं कषायोष्णं रूक्षं लघ्वामपाचनम् ।
ज्वरकण्डूतृषास्वेदच्छर्दिहृल्लासनाशनम् ॥ ७० ॥
दौर्गन्ध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् ।

टीका—नागकेशर १, नागपुष्प २, केशर ३, चाम्पेय ४, नागकिंजल्क ५, काञ्चनाह्वय ६, ये नागकेशरके नाम हैं ॥६९॥ यह पुष्पमें नपुंसक है. यह कसेला है, गरम है, रूखा है, हलका है, और आमका पचानेवाला है, और खुजली, तृषा, पसीना, वमन तथा जी मिचलानेको हरता है ॥ ७० ॥ और दुर्गन्धता, कुष्ठ, विसर्प, कफ, पित्त, तथा विष इनको हरनेवाला है.

अथ त्रिजातचातुर्जातकनामगुणाः ।

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगन्धि त्रिजातकम् ॥ ७१ ॥
नागकेशरसंयुक्तं चातुर्जातकमुच्यते ।
तद्द्वयं रेचनं रूक्षं तीक्ष्णोष्णं मुखगन्धहृत् ॥ ७२ ॥
लघुपित्ताग्निकृद्वर्ण्यं कफवातविषापहम् ।

टीका—दारचिनी १, इलायची २, पत्रक ३, इन तीनोंको समान भाग लेकर मिलाया हुआ त्रिजातक कहाता है ॥ ७१॥ तथा इसमें नागकेशर मिलानेसे चातुर्जातक कहाता है. ये दोनों रेचन हैं, रूखे हैं, तीक्ष्ण हैं, गरम हैं, और मुखकी दुर्गन्धताके हरनेवाले हैं ॥ ७२ ॥ और लघु हैं, पित्त तथा अग्निको करनेवाले हैं, वर्णको अच्छा करते हैं और कफ, वात, विषनाशक हैं.

अथ कुंकुमम्.

कुङ्कुमं घुसृणं रक्तं काश्मीरं पीतकं वरम् ॥ ७३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

संकोचं पिशुनं धीरं बाह्लीकं शोणिताभिधम् ।
काश्मीरदेशजे क्षेत्रे कुङ्कुमं यद्भवेद्धि तत् ॥ ७४ ॥
सूक्ष्मकेशरमारक्तं पद्मगन्धं तदुत्तमम् ।
बाह्लीकदेशसंजातं कुङ्कुमं पाण्डुरं मतम् ॥ ७५ ॥
केतकीगन्धयुक्तं तन्मध्यमं सूक्ष्मकेशरम् ।
कुङ्कुमं पारसीके यत् मधुगन्धि तदीरितम् ॥ ७६ ॥
ईषत्पाण्डुरवर्णं तदधमं स्थूलकेशरम् ।
कुङ्कुमं कटुकं स्निग्धं शिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ॥ ७७ ॥
तिक्तं वमिहरं वर्ण्यं व्यङ्गदोषत्रयापहम् ।

टीका—कुंकुम १, घुसृण २, रक्त ३, काश्मीर ४, पीतक ५ ॥ ७३ ॥ संकोच ६, पिशुन ७, धीर ८, बाह्लीक ९, शोणिताभिध १० ये केशरके दस नाम हैं ॥ ७४ ॥ जो केशर काश्मीरदेशमें उत्पन्न होता है वह सूक्ष्म रक्तवर्ण पद्मके सदृश गंधवाला उत्तम होता है. बाह्लीकदेश अर्थात् बलखदेशमें जो सफेद केशर होता है ७५ वह केवड़ेके सदृश गंधवाला सूक्ष्म होता है, मध्यम है. जो केशर पारस देशमें होता है उसको मधुगंधि कहते हैं ॥ ७६ ॥ वह कुछ सफेद वर्ण और मोटा होता है वह भी मध्यम है. यह कड़वा है, चिकना है, और शिरके रोग, और घाव, कृमि, इनको हरनेवाला है ॥ ७७ ॥ और तिक्त है, वमनका नाशक, रंगका कारक, और झांई तथा तीनों दोष इनका भी हरनेवाला है ॥ ७८ ॥

अथ गोरोचनानामगुणः ।

गोरोचना तु मङ्गल्या वन्द्या गौरी च रोचना ॥ ७८ ॥
गोरोचना हिमा तिक्ता वश्या मङ्गलकान्तिदा ।
विषाऽलक्ष्मीग्रहोन्मादगर्भस्रावक्षतास्रहृत् ॥ ७९ ॥

टीका—गोरोचना १, मंगल्या २, वन्द्या ३, गौरी ४, रोचना ५, ये गोरोचनके नाम हैं ॥ ७८ ॥ यह शीतल है, तिक्त है, वश करनेवाली है, मंगल तथा कांतिकारक है, और विष, अलक्ष्मी, ग्रह, उन्माद, गर्भस्राव, तथा क्षत, इनको दूर करनेवाली है ॥ ७९ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ नखनखीनामगुणाः ।

नखं व्याघ्रनखं व्याघ्रायुधं तच्चक्रकारकम् ।
नखं स्वल्पं नखी प्रोक्ता हनुर्हट्टविलासिनी ॥ ८० ॥
नखद्रव्यं ग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठहृत् ।
लघूष्णं शुक्रलं वर्ण्यं स्वादु व्रणविषापहम् ॥ ८१ ॥
अलक्ष्मीमुखदौर्गन्ध्यहृत्पाकरसयोः कटु ।

टीका—नख १, व्याघ्रनख २, व्याघ्रायुध ३, चक्रकारक ४, छोटे नखको नखी १, और हनु २, हट्टविलासिनी ३, भी कहते हैं ॥८०॥ नख द्रव्य ग्रहनाशक है, कफ, वात, रक्त, ज्वर, कुष्ठ, इनका हरनेवाला है, और हलका है, शुक्रको पैदा करता है, वर्णकारक है, मधुर है, घाव, विष, इनका जीतनेवाला है ॥ ८१ ॥ और अलक्ष्मी मुखकी दुर्गन्धनाशक है, और यह पाकमें और रसमें कड़वा होता है.

अथ बाल (सुगंध बाला) नामगुणाः ।

बालं ह्रीबेरबर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च ॥ ८२ ॥
बालकं शीतलं रूक्षं लघु दीपनपाचनम् ।
हृल्लासारुचिवीसर्पहृद्रोगामातिसारजित् ॥ ८३ ॥

टीका—बाल१, ह्रिबेर २, बर्हिष्ठ ३, उदीच्य ४, केश ५, अम्बुनाम६, ये सुगंधबालाके नाम हैं ॥८२॥ यह शीतल, रूखा, दीपन, हलका और पाचन है और जी मिचलानेको अरुचि, विसर्प, हृदयरोग, आमातिसार इनको हरनेवाला है ॥ ८३ ॥

अथ वीरणनामगुणाः ।

स्याद्वीरणं वीरतरुर्वीरं च बहुमूलकम् ।
वीरणं पाचनं शीतं वान्तिहृल्लघु तिक्तकम् ॥ ८४ ॥
स्तम्भनं ज्वरनुद्भ्रान्तिमदजित्कफपित्तहृत् ।
तृष्णास्रविषवीसर्पकृच्छ्रदाहव्रणापहम् ॥ ८५ ॥

टीका—जिसकी जड खश होती है, उसको वीरण कहते हैं. वीरण१, वीरतरु २, वीर ३, बहुमूलक ४, ये वीरणके पांच नाम हैं. यह पाचन, शीतल, वमनका हरनेवाला, और हलका तथा तिक्त है ॥८४॥ और स्तम्भन है; ज्वर, भ्रांति,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मद, इनका भी हरनेवाला है, कफ, पित्त, तृषा, रक्त, विष, विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, दाह, और घाव इनका हरनेवाला है ॥ ८५ ॥

अथोशीर (खश) नामगुणाः ।

वीरणस्य तु मूलं स्यादुशीरं नलदं च तत् ।
अमृणालं च सेव्यं च समगन्धिकमित्यपि ॥ ८६ ॥
उशीरं पाचनं शीतं स्तम्भनं लघु तिक्तकम् ।
मधुरं ज्वरहृद्वान्तिमदनुत् कफपित्तहृत् ॥ ८७ ॥
तृष्णास्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम् ।

टीका—नलद १, उशीर २, अमृणाल ३, सेव्य ४, सुगंधिक ५, ये खशके पांच नाम हैं ॥ ८६ ॥ यह पाचन, शीतल, स्तंभन और हलका, तिक्त, मधुर है; ज्वर, वमन, मद, इनको हरनेवाला है और कफ, पित्तका हरनेवाला है ॥ ८७ ॥ तथा तृषा, रक्त, विष, विसर्प, दाह, मूत्रकृच्छ्र, और घावोंका भी नाश करनेवाला है.

अथ जटामांसीनामगुणाः ।

जटामांसी भूतजटा जटिला च तपस्विनी ॥ ८८ ॥
मांसी तिक्ता कषाया च मेध्या कान्तिबलप्रदा ।
स्वाद्वी हिमा त्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ ८९ ॥

टीका—जटामांसी १, भूतजटा २, जटिला ३, तपस्विनी ४, ये जटामांसीके नाम हैं ॥ ८८ ॥ यह तिक्त, कसेली, पवित्र, कान्ति और बलको बढ़ानेवाली है. मधुर और शीतल है. त्रिदोष, रक्त, दाह, विसर्प, और कुष्ठ इनको जीतनेवाली है ॥ ८९ ॥

शैलेय (भूरछरीला) नामगुणाः ।

शैलेयं तु शिलापुष्पं वृद्धं कालानुसार्यकम् ।
शैलेयं शीतलं हृद्यं कफपित्तहरं लघु ॥ ९० ॥
कण्डूकुष्ठाश्मरीदाहविषहृद्धृदरक्तहृत् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—शैलेय १, शिलापुष्प २, वृद्ध ३, कालानुसार्यक ४, ये भूरछरीलेके नाम हैं. यह शीतल, हृदयका प्रिय करनेवाला, कफपित्तका हरनेवाला है ॥ ९० ॥ और खुजली, कुष्ठ, पथरी, दाह तथा विष, इनका हरनेवाला है; और गुदाके रक्तका हारक है. इसको लौकिकमें बालछड़ बोलते हैं.

अथ मुस्ता (नागरमोथा) नामगुणाः ।

मुस्तकं न स्त्रियां मुस्तं त्रिषु वारिदनामकम् ॥ ९१ ॥
कुरुविन्दश्चसंख्यातोऽपरः क्रोडकसेरुकः ।
भद्रमुस्तं च गुन्द्रा च तथा नागरमुस्तकः ॥ ९२ ॥
मुस्तं कटु हिमं ग्राहि तिक्तं दीपनपाचनम् ।
कषायं कफपित्तास्रतृड्ज्वरारुचिजन्तुहृत् ॥ ९३ ॥
अनूपदेशे यज्जातं मुस्तकं तत् प्रशस्यते ।
तत्रापि मुनिभिः प्रोक्तं वरं नागरमुस्तकम् ॥ ९४ ॥

टीका—मुस्तक १, मुस्त २, वारिद ३, ॥ ९१ ॥ कुरुविंद ४, क्रोडकसेरुक ५, भद्रमुस्त ६, गुन्द्रा ७, नागरमुस्तक ८, ये नागरमोथाके नाम हैं ॥ ९२ ॥ यह कड़वा और शीतल है, दस्तोंको रोकनेवाला है, तिक्त और दीपन है, पाचन है, कसेला है, कफ, रक्त, पित्त, तृषा, ज्वर, अरुचि, और क्रमि इनका हरनेवाला है ॥ ९३ ॥ और अनूप देशका उत्पन्न नागरमोथा उत्तम कहा है और इसमें भी मुनियोंने नागरमोथा श्रेष्ठ कहा है ॥ ९४ ॥

अथ कर्चूरनामगुणाः ।

कर्चूरो वेधमुख्यश्च द्राविडः कल्पकः शटी ।
कर्चूरो दीपनो रुच्यः कटुकस्तिक्त एव च ॥ ९५ ॥
सुगन्धिः कटुपाकः स्यात् कुष्ठार्शोव्रणकासनुत् ।
उष्णो लघुर्हरेच्छ्वासं गुल्मवातकफक्रिमीन् ॥

टीका—कचूर १, वेधमुख्य २, द्राविड ३, कल्पक ४, शटी ५, ये कचूरके नाम हैं; यह दीपन है, रुचिरकारक, कड़वा, और तिक्त है ॥ ९५ ॥ सुगंधियुक्त और पाकमें कटु होता है, तथा कुष्ठ, बवासीर, घाव, और कास; इनका भी हारक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

है. और गरम, हलका, तथा श्वास, बायगोला, वात, कफ, और कृमि, इनको भी हरनेवाला है ॥ ९६ ॥

अथ मुरा (एकागी) नामगुणाः ।

मुरा गन्धकटी दैत्या सुरभिः शालपर्णिका ।
मुरा तिक्ता हिमा स्वाद्वी लघ्वी पित्तानिलापहा ॥ ९७ ॥
ज्वरासृग्भूतरक्षोघ्नी कुष्ठकासविनाशिनी ।

टीका—मुरा १, गन्धकटी २, दैत्या ३, सुरभि ४, शालपर्णिका ५, ये एकागीके नाम हैं. यह तिक्त है, और शीतल, मधुर, हलकी, तथा पित्तवातको नाश करनेवाली है ॥ ९७ ॥ और ज्वर, रक्त, भूत, राक्षस, तथा कुष्ठ, कास, इनकी नाश करनेवाली है. यह लोकमें मरोड़फली नामसे विख्यात है.

अथ गन्धपलाशीनामगुणाः ।

शटी पलाशी षड्ग्रन्था सुव्रता गन्धमूलिका ॥ ९८ ॥
गन्धारिका गन्धवधूर्वधूः पृथुपलाशिका ।
भवेद्गन्धपलाशी तु कषाया ग्राहिणी लघुः ॥ ९९ ॥
तिक्ता तीक्ष्णा च कटुका उष्णास्यमलनाशिनी ।
शोथकासव्रणश्वासशूलहिध्मग्रहापहा ॥ १०० ॥

टीका—यह सुगन्धद्रव्य काश्मीरदेशमें प्रसिद्ध है. और यह कचूरके किस्मसे होती है. शटी १, पलाशी २, षड्ग्रंथा ३, सुव्रता ४, गंधमूलिका ५ ॥९८॥ गन्धारिका ६, गन्धवधू ७, पृथुपलाशिका ८, ये गन्धपलाशीके नाम हैं; यह कसैली होती है, और दस्तको रोकती है, और हलकी है ॥ ९९ ॥ और तीखी, कड़वी, उष्ण होती है; मुखके मलको हरनेवाली है; सूजन, कास, घाव, श्वास, शूल, हिध्म, ग्रह, इनकी हारक है ॥ १०० ॥

अथ प्रियङ्गुगन्धप्रियङ्गुनामगुणाः ।

प्रियङ्गुः फलिनी कान्ता लता च महिलाह्वया ।
गुन्द्रा गुन्द्रफला श्यामा विष्वक्सेनाङ्गनाप्रिया ॥ १०१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रियङ्गुः शीतला तिक्ता तुवरानिलपित्तहृत् ।
रक्तातियोगदौर्गन्ध्यस्वेददाहज्वरापहा ॥ १०२ ॥
गुल्मतृड्विषमोहघ्नी तद्वद्गन्धप्रियङ्गुका ।
तत्फलं मधुरं रूक्षं कषायं शीतलं गुरु ॥ १०३ ॥
विबन्धाध्मानबलकृत् संग्राहि कफपित्तजित् ।

टीका—प्रियंगु १, फलिनी २, कान्ता ३, लता ४, महिलाह्वया, ५ गुन्द्रा ६, गुन्द्रफला, ७ श्यामा ८, विष्वक्सेना ९, अंगनाप्रिया १०, ये प्रियंगुके नाम हैं ॥ १०१ ॥ यह शीतल, तिक्त, कसेला, वातपित्तका हरनेवाला और रक्तका अतियोग, दुर्गंधता, पसीना, दाह, ज्वर; इनका हरनेवाला है ॥ १०२ ॥ तथा बायगोला, तृषा, विष, मोह, इनका भी हारक है, और इसीके समान गन्धप्रियंगु भी है. उसका फल मधुर, रूखा, कसेला, और शीतल होता है, और भारी होता है ॥ १०३ ॥ विबंध, अफरा, और बल इनको करनेवाला है, तथा मलका अवरोध करनेवाला है, कफपित्तका हरनेवाला है.

अथ रेणुका (मरिचसदृशा) नामगुणाः ।

रेणुका राजपुत्री च नन्दिनी कपिला द्विजा ॥ १०४ ॥
भस्मगन्धा पाण्डुपुत्री स्मृता कौन्ती हरेणुका ।
रेणुका कटुका पाके तिक्ता चोष्णा कटुर्लघुः ॥ १०५ ॥
पित्तला दीपनी मेध्या पाचनी गर्भपातिनी ।
बलासवातकृच्चैव तृट्कण्डूविषदाहनुत् ॥ १०६ ॥

टीका—यह मिरचके सदृश सुगंधद्रव्य होता है. रेणुका १, राजपुत्री २, नन्दिनी ३, कपिला ४, द्विजा, ॥ १०४ ॥ भस्मगंधा ५, पाण्डुपुत्री ६, कौन्ती ७, हरेणुका ८, ये रेणुकाके नाम हैं. यह पाकमें कड़वी, तिक्त, गरम, कटु हलकी, ॥ १०५ ॥ और पित्तको करनेवाली, दीपन, बुद्धिको बढानेवाली, पाचन, गर्भको गिरानेवाली है; कफवातकारक तथा तृषा, खुजली, विष, दाह, इनकी हारक है ॥ १०६ ॥

अथ ग्रन्थिपर्ण (गठिवन) नामगुणाः ।

ग्रन्थिपर्णं ग्रन्थिकं च काकपुच्छं च गुच्छकम् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नीलपुष्पं सुगन्धं च कथितं तैलपर्णकम् ॥ १०७ ॥
ग्रन्थिपर्णं तिक्ततीक्ष्णं कटूष्णं दीपनं लघु ।
कफवातविषश्वासकण्डूदौर्गन्ध्यनाशनम् ॥ १०८ ॥

टीका--ग्रन्थिपर्ण १, ग्रन्थिक २, काकपुच्छ ३, गुच्छक ४, नीलपुष्प ५, सुगन्ध ६, तैलपर्णक ७, ये भटोराके नाम हैं ॥ १०७ ॥ यह तिक्त, तीक्ष्ण, कटु, और गरम, दीपन, लघु है. और कफ, वात, विष, श्वास, कण्डू, तथा दुर्गन्धि, इनका हरनेवाला है ॥ १०८ ॥

अथ ग्रन्थिपर्णस्यैव भेद ईषत्सुगन्धः स्थौणेयं (थुनेर) इति लोके प्रसिद्धं तन्नामगुणाः ।

स्थौणेयकं बर्हिषं च शुकबर्हं च कुक्कुरम् ।
शीर्षरोम शुकं चापि शुकपुष्पं शुकच्छदम् ॥ १०९ ॥
स्थौणेयकं कटु स्वादु तिक्तं स्निग्धं त्रिदोषनुत् ।
मेधाशुक्रकरं रुच्यं रक्षोघ्नं ज्वरजन्तुजित् ॥ ११० ॥
हन्ति कुष्ठास्रतृड्दाहदौर्गन्ध्यतिलकालकान् ।

टीका--भटोराहीका भेद कुछ सुगंधवाला स्थौणेय अथार्त् थुनेर नामसे प्रसिद्ध है. स्थौणेयक १, बर्हिष २, शुकबर्ह ३, कुक्कुर ४, शीर्षरोम ५, शुक ६, शुकपुष्प ७, शुकच्छद ८, ये नाम हैं ॥ १०९ ॥ यह कड़वा, मधुर, तिक्त, स्निग्ध, त्रिदोषहारक और बुद्धि, शुक्र इनका पैदा करनेवाला है. रुचिकारक, राक्षसोंका नाशक, और ज्वर, तथा कृमि, इनको भी जीतनेवाला है ॥ ११० ॥ और कुष्ठ-रक्त, तृषा, दाह, दुर्गंधता, तथा तिलकालक, इनका भी हरनेवाला है. इस देशमें इसको कुकरोंदा कहते हैं.

अथ ग्रन्थिपर्णस्यैव भेदः (भटेउर) इति नैपालदेशे भवति तन्नामगुणाः ।

निशाचरो धनहरो कितवो गणहालकः ॥ १११ ॥
रोचको मधुरस्तिक्तः कटुपाके कटुर्लघुः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तीक्ष्णो हृद्यो हिमो हन्ति कुष्ठकण्डूकफानिलान् ॥ ११२ ॥
रक्षोऽश्रीस्वेदमेदोस्रज्वरगन्धविषव्रणान् ।

टीका--कुकरौंदेकी किस्मसे भटेहुर एक द्रव्य नेपालदेशमें उत्पन्न होता है उसके नाम ये हैं. निशाचर १, धनहर २, कितव ३, गणहालक ४, ये भटेउरके नाम हैं ॥ ११ ॥ यह रुचिका करनेवाला होता है, मधुर, और तिक्त, तथा पाकमें कड़वा, हलका है, और तीक्ष्ण है, हृदयको प्रिय है, और शीतल होता है. तथा कुष्ठ, कण्डू, कफ, और वात, इनको हरनेवाला है ॥ ११२ ॥ और राक्षस, अलक्ष्मी, पसीना, मेद, रक्तज्वर, गंध, विष, व्रण, इनका भी हरनेवाला है.

अथ तालीसपत्रनामगुणाः ।

तालीसमुक्तं पत्राढ्यं धात्रीपत्रं च तत्स्मृतम् ॥ ११३
तालीसं लघुतीक्ष्णोष्णं श्वासकासकफानिलान् ।
निहन्त्यरुचिगुल्मादिवह्निमान्द्यक्षयामयान् ॥ ११४ ॥

टीका--तालीस १, पत्राढ्य २, धात्रीपत्र ३, ये नाम हैं ॥ ११३ ॥ यह हलका, तीखा गरम है. श्वास, कास, वात, इनको हरनेवाला है. अरुचि, गुल्म, अग्निमांद्य, और क्षयरोग, इनको भी जीतनेवाला है ११४ ॥

अथ कङ्कोलनामगुणाः ।

कङ्कोलं कोलकं प्रोक्तं तथा कोशफलं स्मृतम् ।
कङ्कोलं लघु तीक्ष्णोष्णं तिक्तं हृद्यं रुचिप्रदम् ॥ ११५ ॥
आस्यदौर्गन्ध्यहृद्रोगकफवातामयान्ध्यहृत् ।

टीका--कंकोल, कोलक, कोशफल, ये नाम हैं. कंकोल हलका और तीखा, गरम, तथा तिक्त, हृदयको प्रिय, और रुचिको देनेवाला है ॥ ११५ ॥ मुखकी दुर्गंधता तथा हृदयरोग, कफ, वात, और आध्मान इनको हरनेवाला है. इसको सीतलचीनी भी कहते हैं.

अथ गन्धकोकिलानामगुणाः ।

स्निग्धोष्णा कफहृत्तिक्ता सुगन्धा गन्धकोकिला ॥ ११६ ॥
गन्धकोकिलया तुल्या विज्ञेया गन्धमालती ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—गन्धकोकिला गन्धमालतीको भी कहते हैं. यह चमेलीकी तरह सुगंधयुक्त होती है ॥ ११६ ॥ और स्निग्ध, गरम, कफको दूर करनेवाली तथा तिक्त, सुगन्ध, इसप्रकार गंधकोकिला होती है और इसीके सदृश गंधमालती भी जानना.

अथ लामज्जकमुशीरवत्पीतच्छवि तृणविशेषः ।

लामज्जकं सुनालं स्यादमृणालं लयं लघु ॥ ११७ ॥
इष्टकापथकं सेव्यं नलदं चावदातकम् ।
लामज्जकं हिमं तिक्तं लघु दोषामयास्रजित् ॥ ११८ ॥
त्वगामयस्वेदकृच्छ्रदाहपित्तास्ररोगनुत् ।

टीका—लामज्जकनामकी खशके सदृश पीली घास होती है. लामज्जक १, सुनाल २, अमृणाल ३, लय ४, लघु ५, ये लामज्जकके नाम हैं ॥ ११७ ॥ और इष्टकापथक, सेव्य, नलद, अवदातक, ये भी इसीके नाम हैं. यह शीतल, तिक्त, हलकी होती है, त्रिदोषकी हरनेवाली है ॥ ११८ ॥ और त्वचाके रोग, पसीना, मूत्रकृच्छ्र, तथा दाह, और रक्तपित्त, इनकी भी हरनेवाली है.

अथ एलवालुकं कंकोलसदृशं कुष्ठगन्धि तद्गुणाः ।

एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ॥ ११९ ॥
एलवालुकमेलालु कपित्थं पत्रमीरितम् ।
एल्वालु कटुकं पाके कषायं शीतलं लघु ॥ १२० ॥
हन्ति कण्डूव्रणच्छर्दितृट्कासारुचिहृद्रुजः ।
बलासविषपित्तास्रकुष्ठमूत्रगदक्रिमीन् ॥ १२१ ॥

टीका—एलवालुकनामक शीतलचीनीके सदृश कूटके गन्धयुक्त होता है. इसको बालुककड़ी भी कहते हैं. एलावालुक १, ऐलेय २, सुगन्धि ३, हरिवालुक ४, ॥ ११९ ॥ एलवालुक ५, एलालु ६, कपित्थ ७, पत्र ८, ये एलुवाके नाम हैं. यह कड़वा और पाकमें कसेला होता है. शीतल, हलका होता है ॥ १२० ॥ और खुजली, घाव, वमन, तृषा, कास और अरुचि इनका हरनेवाला है; और पीडा, कफ, विष, पित्त, रक्त, कुष्ठ, मूत्ररोग, तथा कृमि इनका हरनेवाला है ॥ १२१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ कुटन्नट(जलमोथा)नामगुणाः ।

(गुडतजी इति च इयं तु वितुन्नकनाम्नो वृक्षस्य त्वक् मुस्ताकृतिः)

कुटन्नटं दासपुरं वालेयं परिपेलवम् ।
प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्तीमुस्तकानि च ॥ १२२ ॥
मुस्तावत्पेलवं पुष्टं शुक्राभं स्याद्वितुन्नकम् ।
वितुन्नकं हिमं तिक्तं कषायं कटु कान्तिदम् ॥ १२३ ॥
कफपित्तास्रवीसर्पकुष्ठकण्डूविषप्रणुत्

टीका—कुटन्नट, दासपुर, वालेय, परिपेलव, प्लव, गोपुर, गोनर्द, कैवर्तीमुस्तक ॥ १२२ ॥ मोथाके सदृश पेलव, पुष्ट, शुक्राभ, वितुन्नक, ये जलमोथाके नाम हैं. यह शीतल, तिक्त, कसेला, तथा कड़वा है और कान्तिको देनेवाला है ॥ १२३ ॥ और कफ, रक्त, विसर्प, कुष्ठ, खुजली तथा विष, इनका भी नाशक है.

अथ स्पृक्कासुगन्धद्रव्यनामगुणाः ।

स्पृक्कासृक् ब्राह्मणी देवी मरुन्माला लतालघुः ॥ १२४ ॥
समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षालङ्कोपिकेत्यपि ।
स्पृक्का स्वाद्वी हिमा वृष्या तिक्ता निखिलदोषनुत् ॥ १५५ ॥
कुष्ठकण्डूविषस्वेददाहास्रज्वररक्तहृत् ।

टीका—स्पृक्का (असपरक) नामका एक सुगंधद्रव्य शाकविशेष है. इसको पिंडितशाक तकहे हैं. स्पृक्का, असृक्, ब्राह्मणी देवी, मरुन्माला, लता, लघु, ॥१२४॥ समुद्रान्ता वधू, कोटिवर्षा, लंकापिका, ये स्पृक्काके नाम हैं. यह मधुर, शीतल, धातुओंको बढ़ानेवाला है, तिक्त है, संपूर्ण दोषोंका हरनेवाला है ॥ १२५ ॥ और कुष्ठ, खुजली, विष, पसीना, दाह, रक्तज्वर तथा रक्त, इनका भी हरनेवाला है.

अथ पर्पटी(पद्मावती)नामगुणाः ।

(पद्मावती इति उत्तर देशे सुगन्धि द्रव्यम् ।)

पर्पटी रञ्जना कृष्णा जतुका जननी जनी ।
जतुकृष्णाग्निसंस्पर्शा जतुकृच्चक्रवर्तिनी ।
पर्पटी तुवरा तिक्ता शिशिरा वर्णकृल्लघुः ॥ १२७ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषव्रणहरी कण्डूकफपित्तास्रकुष्ठनुत् ।

टीका—पर्पटी जो है सो पद्मावतीनामसे उत्तरदेशमें प्रसिद्ध है, और मालवेमें इसको चकवत कहते हैं. पर्पटी, रंजना, कृष्णा, जतुका, जननी, जनी ॥ १२६ ॥ जतुकृष्णा, अग्निसंस्पर्शा, जतुकृत्, चक्रवर्तिनी, ये नाम हैं. पापड़ी कसेली है, तिक्त और शीतल है, रंगको अच्छा करनेवाली, और हलकी है ॥१२७॥ और विष तथा घावोंकी हरनेवाली तथा खुजली, कफ, रक्तपित्त, कुष्ठ, इनको भी जीतनेवाली है.

अथ नलिका (यवारी) नामगुणाः ।

(उत्तरापथे प्रसिद्धा सुगन्धा बलाकृतिर्यवारी
इति च क्वचित् प्रसिद्धा)

नलिका विद्रुमलता कपोतचरणा नटी ॥ १२८ ॥
धमन्यञ्जनकेशी च निर्मध्या सुषिरा नली ।
नलिका शीतला लघ्वी चक्षुष्या कफपित्तहृत् ॥ १२९ ॥
कृच्छ्राश्मवाततृष्णास्रकुष्ठकण्डूज्वरापहा ।

टीका—(यह नलिकानामसे उत्तरदेशमें प्रसिद्ध है. सुगंधित और बरियारीके सदृश है और कहीं यवारी नामसे प्रसिद्ध है.) नलिका, विद्रुमलता, कपोतचरणा, नटी॥१२८॥ धमनी, अंजनकेशी, निर्मध्या, सुषिरा, नली, ये नलीके नाम हैं. यह शीतल, हलकी, नेत्रको हितकारक, कफपित्तहारक ॥ १२९ ॥ तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, वात, तृषा, रक्त, कुष्ठ, खुजली, ज्वर, इनकी हरनेवाली है.

अथ प्रपौण्डरीक (पुण्डेरी) नामगुणाः ।

प्रपौण्डरीकं पौण्डर्यं चक्षुष्यं पौण्डरीयकम् ॥१३० ॥
पौण्डर्यं मधुरं तिक्तं कषायं शुक्रलं हिमम् ।
चक्षुष्यं मधुरं पाके वर्ण्यं पित्तकफप्रणुत् ॥ १६१ ॥

इति भावमिश्रविरचिते हरीतक्यादिनिघण्टे कर्पूरादि-
वर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

टीका—प्रपौंडरीक यह सुगंधद्रव्य है और पुंडेरीनामसे प्रसिद्ध है. प्रपौंडरीक१, पौंडर्य २, चक्षुष्य ३, पौंडरीयक ४, ये पुंडेरीके नाम हैं ॥ १३० ॥ यह मधुर, तिक्त, कसेली, शुक्रको पैदा करनेवाली और शीतल है. नेत्रोंको हितकारक; पाकमें मधुर, वर्णको श्रेष्ठ करनेवाली तथा पित्त कफकी नाशक है ॥ १३१ ॥

इति हरीतक्यादिनिघण्टे बालबोधिनीटीकायां कर्पूरादिवर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्रीः ।

हरीतक्यादिनिघण्टे

गुडूच्यादिवर्गः ।

अथ गुडूच्या उत्पत्तिर्नामानि गुणाश्च ।

अथ लङ्केश्वरो मानी रावणो राक्षसाधिपः ।
रामपत्नीं बलात्सीतां जहार मदनातुरः ॥ १ ॥
ततस्तं बलवान् रामो रिपुं जायापहारिणम् ।
वृतो वानरसैन्येन जघान रणमूर्धनि ॥ २ ॥
हते तस्मिन् सुराराती रावणे बलगर्विते ।
देवराजः सहस्राक्षः परितुष्टोऽति राघवे ॥ ३ ॥
तत्र ये वानराः केचिद्राक्षसैर्निहता रणे ।
तानिन्द्रो जीवयामास संसिच्यामृतवृष्टिभिः ॥ ४ ॥
ततो येषु प्रदेशेषु कपिगात्रात् परिच्युताः ।
पीयूषबिन्दवः पेतुस्तेभ्यो जाता गुडूचिका ॥ ५ ॥

टीका—अथ गुडूची अर्थात् गिलायेकी उत्पत्ति लिखते हैं. अभिमानी राक्षसोंका राजा लंकेश्वर रावण कामातुर होके श्रीरामचंद्रकी पत्नी सीताको बलकरके हर ले गया ॥ १ ॥ फिर बलवान् श्रीरामचंद्रने अपनी पत्नीके चुरानेवाले शत्रूको वानरोंकी सेना संग ले रणमें मारा ॥ २ ॥ बलकरके गर्वित देवताओंके शत्रु रावणके मरनेसे देवताओंका राजा इन्द्र श्रीरामचंद्रपर बहुत प्रसन्न हुआ ॥३॥ उस रणमें राक्षसोंके हाथसे मारेगये जो वानर उनको इन्द्रने अमृतकी वर्षाकर सींच जिला दिया ॥४॥ जिस देशमें वानरोंके शरीरोंसे अमृतकी बूंद गिरी उससे गुडूची अर्थात् गिलोय पैदा हुई ॥ ५ ॥

गुडूची मधुपर्णी स्यादमृतामृतवल्लरी ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छिन्ना छिन्नरुहा छिन्नोद्भवा वत्सादनीति च ॥ ६ ॥
जीवन्ती तन्त्रिका सोमा सोमवल्ली च कुण्डली ।
चक्रलक्षणिका धीरा विशल्या च रसायनी ॥ ७ ॥
चन्द्रहासी वयस्था च मण्डली देवनिर्मिता ।
गुडूची कटुका तिक्ता स्वादुपाका रसायनी ॥ ८ ॥
संग्राहिणी कषायोष्णा लघ्वी बल्याग्निदीपनी ।
दोषत्रयामतृड्दाहमेहकासांश्च पाण्डुताम् ॥ ९ ॥
कामलाकुष्ठवातास्रज्वरक्रिमिवमीन् हरेत् ।
प्रमेहश्वासकासार्शःकृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् ॥ १० ॥

टीका--अब गिलोयके नाम लिखते हैं. गुडूची १, मधुपर्णी २, अमृता ३ अमृतवल्लरी ४, छिन्ना ५, छिन्नरुहा ६, छिन्नोद्भवा ७, मत्स्यादनी ८ ॥ ६ ॥ जीवंती ९, तन्त्रिका १०, सोमा ११, सोमवल्ली १२, कुंडली १३, चक्रलक्षणिका १४, धीरा १५, विशल्या १६, रसायनी १७ ॥ ७ ॥ चन्द्रहासी १८, वयस्था १९, मण्डली २०, देवनिर्मिता २१, ये गिलोयके नाम हैं. यह कड़वी, तिक्त, पाकमें मधुर, रसायनी है ॥ ८ ॥ संग्राहिणी, तथा कसेली, गरम, और हलकी होती है। बलको करनेवाली, अग्निको दीपन करनेवाली, और त्रिदोष, आम, तृषा, दाह, प्रमेह, कास, पाण्डु ॥ ९ ॥ कामला, कुष्ठ, वात, रक्त, ज्वर, कृमि, वमन, इनको हरनेवाली है. और प्रमेह, श्वास, कास, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग, वातरोग, इनको भी हरनेवाली है ॥ १० ॥

अथ ताम्बूली (पान) नामगुणाः ।

ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागिनी नागवल्लरी ।
ताम्बूलं विशदं रुच्यं तीक्ष्णोष्णं तुवरं सरम् ॥ ११ ॥
वश्यं तिक्तं कटु क्षारं रक्तपित्तकरं लघु ।
बल्यं श्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यमलवातश्रमापहम् ॥ १२ ॥

टीका--ताम्बूलवल्ली १, ताम्बूली २, नागिनी ३, नागवल्लरी ४, ये पानके नाम हैं. ताम्बूल विशद, रुचिको करनेवाला, तीक्ष्ण, और गरम, कसेला और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सर ऐसा है ॥ ११ ॥ वशीकरण है, तिक्त, कटु, क्षार, तथा रक्तपित्तका करनेवाला और हलका, बलको बढ़ानेवाला तथा कफ और मुखकी दुर्गंधिता, मल, वात और श्रम, इनका हरनेवाला है ॥ १२ ॥

अथ बिल्व (बेल) नामगुणाः ।

बिल्वः शाण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलावपि ।
श्रीफलस्तुवरस्तिक्तो ग्राही रूक्षोऽग्निपित्तकृत् ॥ १३ ॥
वातश्लेष्महरो बल्यो लघुरुष्णश्च पाचनः ।

टीका—बिल्व १, शांडिल्य २, शैलूष ३, मालूर ४, श्रीफल ५, ये बेलके नाम हैं. यह कसेला और तिक्त, ग्राही, और रूखा है. अग्नि तथा पित्तको बढ़ानेवाला है ॥ १३ ॥ वातकफोंका हरनेवाला, बलका करनेवाला तथा हलका आर गरम तथा पाचन है.

अथ गम्भारी (कुंभेर) नामगुणाः ।

गम्भारी भद्रपर्णी च श्रीपर्णी मधुपर्णिका ॥ १४ ॥
काश्मीरी काश्मरी हीरा काश्मर्या पीतरोहिणी ।
कृष्णदन्ता मधुरसा महाकुसुमिकापि च ॥ १५ ॥
काश्मरी तुवरा तिक्ता वीर्योष्णा मधुरा गुरुः ।
दीपनी पाचनी मेध्या भेदिनी भ्रमशोषजित् ॥ १७ ॥
दोषतृष्णामशूलार्शोविषदाहज्वरापहा ।
तत्फलं बृंहणं वृष्यं गुरु केश्यं रसायनम् ॥ १७ ॥
वातपित्ततृषारक्तक्षयमूत्रविबन्धनुत् ।
स्वादु पाके हिमं स्निग्धं तुवराम्लविशुद्धिकृत् ॥ १८ ॥
हन्याद्दाहतृषावातरक्तपित्तक्षतक्षयान् ।

टीका—गंभारी १, भद्रपर्णी २, श्रीपर्णी ३, मधुपर्णिका ४, ॥१४॥ काश्मीरी ५, काश्मरी ६, हीरा ७, काश्मर्या ८, पीतरोहिणी ९; कृष्णदन्ता १०, मधुरसा ११, महाकुसुमिका १२, ये कंभारी अर्थात् कुंभेरके नाम हैं॥१५॥ यह कसेली, तिक्त, वीर्यमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गरम, मधुर, और भारी है. दीपन और पाचन, कांतिको बढ़ानेवाली, भेदन करनेवाली, भ्रम और शोषको जीतनेवाली है ॥ १६ ॥ दोष, तृषा, आमशूल, बवासीर, विष, दाह,और ज्वर,इनको हरनेवाली है. इसका फल पुष्ट है, वीर्यको उत्पन्न करनेवाला, रसायन है ॥ १७ ॥ और वात, पित्त, तृषा, रक्तक्षय, मूत्रका बंद होना, इनको हरनेवाला है, और पाकमें मधुर, शीतल, चिकना तथा कसेला, और खट्टा होता है. शुद्धिको करनेवाला है ॥ १८ ॥ और दाह, तृषा, वात, रक्त, पित्त, क्षत, तथा क्षयको भी हरनेवाला जानना.

अथ पाटली(पाण्डरी,कण्ठपाण्डरी) नामगुणाः ।

पाटलिः पाटला मोघा मधुदूती फलेरुहा॥ १९ ॥
कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी कालस्थाल्यलिवल्लभा ।
ताम्रपुष्पी च कथिता परा स्यात्पाटला सिता ॥ २० ॥
मुष्कको मोक्षको घण्टापाटलिः काष्ठपाटला ।
(कालस्थालीत्यत्र काचस्थालीत्येके)

टीका--पाटलि १, पाटला २, मोघा ३, मधुदूती ४, फलेरुहा ५ ॥ १९ ॥ कृष्णवृंता ६, कुबेराक्षी ७, कालस्थाली ८, अलिवल्लभा ९, ताम्रपुष्पी १०, ये पाटलाके नाम कहे. और दूसरी पाटला सिता १ ॥ २० ॥ मुष्कक २, मोक्षक ३, घण्टापाटलि ४, काष्ठपाटला ६, ये काष्ठपाटलाके नाम हैं.

(कालस्थाली यहांपर कोई काचस्थाली भी कहते हैं.)

पाटला तुवरा तिक्ता चोष्णा दोषत्रयापहा ॥ २१ ॥
अरुचिश्वासशोथास्रच्छर्दिहिक्कातृषाहरा ।
पुष्पं कषायं मधुरं हिमं हृद्यं कफास्रनुत् ॥ २२ ॥
पित्तातीसारहृत्कण्ठ्यं फलं हिक्कास्रपित्तहृत् ।

टीका--यह कसेली,तिक्त,शीतल,तीनों दोषोंके नाश करनेवाली॥२१॥अरुचि, श्वास,शोथ,रक्त,वमन होना,तृषा,इनकी हरनेवाली है.और इसका पुष्प कसेला और मधुर तथा शीतल, हृदयको हितकारी, कफ तथा रक्तका नाशक है. पित्तातीसारको हरनेवाला है ॥२२॥ कंठको अच्छा करनेवाला है और इसका फल,हुचकी तथा रक्तपित्त, और कफका नाशक है.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथाग्निमन्थ (अगेंथु, गनियारी) नामगुणाः।

अग्निमन्थो जयः स स्याच्छ्रीपर्णी गणिकारिका ॥ २३ ॥
जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ।
अग्निमन्थः श्वयथुनुद्वीर्योष्णः कफवातहृत् ॥ २५ ॥
पाण्डुनुत् कटुकस्तिक्तस्तुवरो मधुरोऽग्निदः ।

टीका--अगेथूको गनियारी भी कहते हैं. अग्निमन्थ, जय, श्रीपर्णी, गणिकारका ॥ २३ ॥ जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी, वैजयन्तिका, ये अरनीके नाम हैं. यह शोथकी नाशक, वीर्यमें गरम कफवातको दूर करनेवाली ॥ २४ ॥ पाण्डुरोगकी नाशक, और कड़वी, तिक्त, कसैली, मधुर, अग्निको करनेवाली है. इसको अरणी भी कहते हैं.

अथ श्योनाक (सोनापाठा) नामगुणाः ।

श्योनाकः शोषणश्च स्यान्नटकट्वङ्गटुण्टुकाः ॥ २५ ॥
मण्डूकपर्णपत्रोर्णशुकनासकुटन्नटाः ।
दीर्घवृन्तोऽरलुश्चापि पृथुशिम्बः कटम्भरः ॥ २६ ॥
श्योनाको दीपनः पाके कटुकस्तुवरो हिमः ।
ग्राही तिक्तोऽनिलश्लेष्मपित्तकासप्रणाशनः ॥ २७ ॥
टुण्टुकस्य फलं बालं रूक्षं वातकफापहम् ।
हृद्यं कषायं मधुरं रोचनं लघु दीपनम् ॥ २८ ॥
गुल्मार्शःकृमिहृत्प्रौढं गुरु वातप्रकोपनम् ।

टीका--श्योनाक, शोषण, नट, कट्वङ्ग, टुंटुक ॥ २५ ॥ मंडूकपर्ण, पत्रोर्ण, शुकनास, कुटन्नट, दीर्घवृन्त, अरलु, पृथुशिम्ब, कटम्भर, ये सोनापा ठाके हैं ॥ २६ ॥ यह दीपन, पाकमें कटु और कसेला तथा शीतल है. दस्तोंको बंद करनेवाला, तिक्त, और वात, पित्त, कफ, इनका हरनेवाला है ॥ २७ ॥ और इसका कच्चा फल रूखा है, वातकफोंका हरनेवाला, हृदयका हितकारी, कसेला, मधुर, रुचिको करनेवाला, हलका, और दीपन है ॥ २८ ॥ बायगोला, बवासीर,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और कृमि,इनका भी हरनेवाला है. और इसका पका फल भारी है, वातको कुपित करनेवाला है. इसको श्योनाक कहते हैं.

अथ बृहत्पञ्चमूललक्षणगुणाः ।

श्रीफलः सर्वतोभद्रा पाटला गणिकारिका ॥ २९ ॥
श्योनाकः पञ्चभिश्चैतैः पञ्चमूलं महन्मतम् ।
पञ्चमूलं महत्तिक्तं कषायं कफवातनुत् ॥ ३० ॥
मधुरं श्वासकासघ्नमुष्णं लघ्वग्निदीपनम् ।

टीका--श्रीफल १,सर्वतोभद्रा (कुंभेर)२, पाटला ३, गणिकारिका ४ ॥२९॥ सोनापाठा ५, इन पांचोंसे बृहत्पंचमूल होता है. यह तिक्त, कसेला, और कफ, वातका हरनेवाला है ॥ ३० ॥ और मधुर है. श्वास कासका नाशक, गरम, हलका, अग्निका दीपन करनेवाला है.

अथ शालिपर्णी(सरिवन)नामगुणाः ।

शालिपर्णी स्थिरा सौम्या त्रिपर्णी पीवरी गुहा ॥ ३१ ॥
विदारिगन्धा दीर्घाङ्गी दीर्घपात्रांशुमत्यापि ।
शालिपर्णी गुरुश्छर्दिज्वरश्वासातिसारजित् ॥ ३१ ॥
शोषदोषत्रयहरी बृंहण्युक्ता रसायनी ।
तिक्ता विषहरी स्वादुः क्षतकासकृमिप्रणुत् ॥ ३३ ॥

टीका--शालिपर्णी, स्थिरा, सौम्या, त्रिपर्णी, पीवरी, गुहा ॥ ३१ ॥ विदारिगंधा, दीर्घाङ्गी, दर्घिपत्रा, अंशुमती, ये सरवनके नाम हैं. यह भारी है और वमन, ज्वर, श्वास, तथा अतीसारको हरनेवाला है ॥ ३२ ॥ शोष, त्रिदोष, इनका हरनेवाला है, और धातुओंका पुष्ट करनेवाला और रसायन, तिक्त और विषका नाशक, मधुर, क्षत, कास, और कृमि, इनका हरनेवाला है. इसका नाम शालिपर्णी प्रसिद्ध है ॥ ३३ ॥

अथ पृश्निपर्णी (पिठवन)नामगुणाः ।

पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्यहिपर्ण्यपि ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशी धावनी गुहा ॥ ३४ ॥
पृश्निपर्णी त्रिदोषघ्नी वृष्योष्णा मधुरा सरा ।
हन्ति दाहज्वरश्वासरक्तातीसारतृड्वमीन् ॥ ३५ ॥

टीका--पृश्निपर्णी, पृक्थपर्णी, चित्रपर्णी, अहिपर्णी, क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशी, धावनी, गुहा ये पिठवनके नाम हैं ॥ ३४ ॥ यह त्रिदोषकी नाशक और धातुको पुष्ट करनेवाली, गरम, मधुर, और सर है; और दाह, ज्वर, श्वास, तथा रक्तातीसार, तृषा और वमन, इनको हरनेवाली है. इसको लौकिकमें पृष्ठपर्णी ऐसा भी कहते हैं ॥ ३५ ॥

अथ वार्ताकी(बड़ीकटेरी)नामगुणाः।

वार्ताकी क्षुद्रभण्टाकी महती बृहती कुली ।
हिङ्गुली राष्ट्रिका सिंही महोष्ट्री दुष्प्रधर्षिणी ॥ ३६ ॥
बृहती ग्राहिणी हृद्या पाचनी कफवातहृत् ।
कटुतिक्तास्यवैरस्यमलारोचकनाशिनी ॥ ३७ ॥
उष्णकुष्ठज्वरश्वासशूलकासाग्निमान्द्यजित् ।

टीका--वार्ताकी, क्षुद्रभण्टाकी, महती, बृहती, कुली, हिंगुली, राष्ट्रिका, सिंही, महोष्ट्री, दुष्प्रधर्षिणी ॥३६॥ ये बड़ी कटेलीके नाम हैं. यह काबिज, हृदयको हितकारी है, पाचन है, कफवातकी हरनेवाली है, और कड़वी, तिक्त, मुखके बिगड़े स्वाद, मल, अरुचि, इनको हरनेवाली है ॥ ३७ ॥ और गरम है; कुष्ठ, ज्वर, श्वास, शूल, कास, अग्निमांद्य, इनको भी हरनेवाली है.

अथ कण्टकारी(भटकटैया)नामगुणाः।

कण्टकारी तु दुःस्पर्शा क्षुद्रा व्याघ्री निदिग्धिका ॥ ३८ ॥
कण्टालिका कण्टकिनी धावनी बृहती तथा ।

टीका--कंटकारी, दुःस्पर्शा, क्षुद्रा, व्याघ्री, निदिग्धिका ॥३८॥ कण्टालिका, कंटकिनी, धावनी, बृहती ये छोटी कटेलीके नाम हैं.

उभे च बृहत्यौ । यत आह सुश्रुतः ।
क्षुद्रा या क्षुद्रभद्राख्या बृहतीति निगद्यते ॥ ३९ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्वेता क्षुद्रा चन्द्रहासा लक्ष्मणा क्षेत्रदूतिका ।
गर्भदा चन्द्रभा चन्द्री चन्द्रपुष्पा प्रियङ्करी ॥ ४० ॥
कण्टकारी सरा तिक्ता कटुका दीपनी लघुः ।
रूक्षोष्णा पाचनी कासश्वासज्वरकफानिलान् ॥ ४१ ॥
निहन्ति पीनसश्वासपार्श्वपीडाहृदामयान् ।

टीका—दोनों कटेली जैसे सुश्रुतने कहा है. छोटी कटेली, और बड़ी कटेली, इनको बृहती कहते हैं ॥ ३९ ॥ और सफेद कटेलीको चन्द्रहासा, लक्ष्मणा, क्षेत्रदूतिका, गर्भदा, चंद्रप्रभा, चन्द्री, चंद्रपुष्पा, प्रियङ्करी, ऐसा कहते हैं ॥ ४० ॥ कटेली सर, तिक्त, कड़वी, और दीपन, तथा हलकी, रूखी, गरम, पाचन है. कास, श्वास, ज्वर, कफ, वात, इनको जीतनेवाली है ॥ ४१ ॥ पसलीकी पीडा, हृदयरोग, इनको भी हरनेवाली है.

अथ बृहती (कटेली) फलगुणाः ।

तयोः फलं कटु रसे पाके च कटुकं भवेत् ॥ ४२ ॥
शुक्रस्य रेचनं भेदि तिक्तं पित्ताग्निकृल्लघु ।
हन्यात्कफमरुत्कण्डूकासभेदकृमिज्वरान् ॥ ४३ ॥
तद्वत्प्रोक्ता सिता क्षुद्रा विशेषाद्गर्भकारिणी ।

टीका—कटेलीका फल रसमें और पाकमें भी कड़वा है ॥ ४२ ॥ शुक्रका रेचक, भेदन करनेवाला, तिक्त, पित्त और अग्निको करनेवाला, हलका, और कफ, वायु, खुजली, कास, मेद, कृमि, तथा ज्वर, इनका हरनेवाला है ॥ ४३ ॥ इसीप्रकार श्वेतकटेलीके भी गुण हैं, और विशेषकरके गर्भको करनेवाली होती है.

अथ गोक्षुर (गोखरू) नामगुणाः ।

गोक्षुरः क्षुरकोऽपि स्यात् त्रिकण्टः स्वादुकण्टकः ॥ ४४ ॥
गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि ।
फलंकषा श्वदंष्ट्रा च तथा स्यादिक्षुगन्धिका ॥ ४५ ॥
गोक्षुरः शीतलः स्वादुर्बलकृद्वस्तिशोधनः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मधुरो दीपनो वृष्यः पुष्टिदश्वाश्मरीहरः ॥ ४६ ॥
प्रमेहश्वासकासार्शःकृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् ।

टीका—गोक्षुर, क्षुरक, त्रिकंट, स्वादुकंटक ॥ ४४ ॥ गोकंटक, गोक्षुरक, वनशृंगाट, पलंकष, श्वदंष्ट्रा, इक्षुगंधिका, ये गोखरूके नाम हैं ॥४५ ॥ यह शीतल, मधुर, बलको बढ़ानेवाला, मूत्राशयको शोधनेवाला, मधुर, दीपन, शुक्रको बढाने-वाला, पुष्टिकारक, पथरीका हरनेवाला है ॥ ४६ ॥ प्रमेह, श्वास, कास बवासीर-मूत्रकच्छ्र, हृदयरोग, और वातका हारक है.

अथ लघुपञ्चमूललक्षणं गुणाश्च ।

शालिपर्णी पृष्ठपर्णी वार्ताकी कण्टकारिका ॥ ४७ ॥
गोक्षुरः पञ्चभिश्चैतैः कनिष्ठं पञ्चमूलकम् ।
पञ्चमूलं लघु स्वादु बल्यं पित्तानिलापहम् ॥ ४८ ॥
नात्युष्णं बृंहणं ग्राहि ज्वराश्वसाश्मरीप्रणुत् ।

टीका—शालिपर्णी, पृष्ठपर्णी दोनों कटेली ॥ ४७ ॥ और गोखरू, इन पांचोंको मिलानेसे लघुपंचमूल होता है. यह हलका, मधुर, बलको बढ़ानेवाला, पित्त वातका हरनेवाला है ॥ ४८ ॥ और बहुत गरम नहीं है. धातुको बढ़ानेवाला है. काबिज है. और ज्वर, श्वास, तथा पथरी, इनका हरनेवाला है.

अथ दशमूलस्य लक्षणं गुणाश्च ।

उभाभ्यां पञ्चमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम् ॥ ४९ ॥
दशमूलं त्रिदोषघ्नं श्वासकासशिरोरुजः ।
तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडाऽरुचीर्हरेत् ॥ ५० ॥

टीका—दोनों पंचमूलोंको मिलानेसे दशमूल होता है ॥ ४९ ॥ यह त्रिदोष हरनेवाला; और श्वास, कास, शिरकी पीडा, तन्द्रा, शोथ, ज्वर, अफरा, पसलीकी पीडा और अरुचि इनका हरनेवाला है ॥ ५० ॥

अथ जीवन्तीनामगुणाः ।

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मङ्गल्यनामधेया च शाकश्रेष्ठ पयस्विनी ॥ ५१ ॥
जीवन्ती शीतला स्वादुः स्निग्धा दोषत्रयापहा ।
रसयनी बलकरी चक्षुष्या ग्राहिणी लघुः ॥ ५२ ॥

टीका—जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, मधुस्रवा, मंगल्यनामधेया, शाकश्रेष्ठा, पयस्विनी, ये जीवन्तीके नाम हैं ॥५१॥ यह शीतल, मधुर, चिकनी, त्रिदोषको हरनेवाली, रसायनी, बलको करनेवाली, नेत्रोंका हित करनेवाली, काबिज है, हलकी है ॥ ५२ ॥

अथ मुद्गपर्णी (बनमूंग) नामगुणाः ।

मुद्गपर्णी काकपर्णी सूर्यपर्ण्यल्पिका सहा ।
काकमुद्गा च सा प्रोक्ता तथा मार्जारगन्धिका ॥ ५३ ॥
मुद्गपर्णी हिमा रूक्षा तिक्ता स्वादुश्च शुक्रला
चक्षुष्या क्षतशोथघ्नी ग्राहिणी ज्वरदाहनुत् ॥ ५४ ॥
दोषत्रयहरी लघ्वी ग्रहण्यर्शोऽतिसारजित् ।

टीका—मुद्गपर्णी १, काकपर्णी २, सूर्यपर्णी ३, अल्पिका ४, सहा ५, काकमुद्गा ६, मार्जारगंधिका ७, ये बनमूंगके नाम हैं ॥ ५३ ॥ यह शीतल, रूखी, तिक्त, मधुर, शुक्रको उत्पन्न करनेवाली, नत्रोंको हितकारक, क्षत, शोथ, इनकी नाशकारक है. काबिज है. ज्वर और दाहकी हरनेवाली है ॥ ५४ ॥ तीनों दोषोंको हरनेवाली, हलकी, और ग्रहणी, बवासीर, अतीसार, इनको जीतनेवाली है.

अथ माषपर्णीनामगुणाः ।

माषपर्णी सूर्यपर्णी काम्बोजी हयपुच्छिका ॥ ५५ ॥
पाण्डुलोमशपर्णी च कृष्णवृन्ता महासहा ।
माषपर्णी हिमा तिक्ता रूक्षा शुक्रबलास्रकृत् ॥ ५६ ॥
मधुरा ग्राहिणी शोथवातपित्तज्वरास्रजित् ।

टीका—माषपर्णी १, सूर्यपर्णी २, काम्बोजी ३, हयपुच्छिका ४ ॥ ५५ ॥ पाण्डुलोमशपर्णी ५, कृष्णवृन्ता ६, महासहा ७, ये वनमाषपर्णीके नाम हैं. यह

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शीतल, तिक्त, रूखी है. शुक्र, बल और रक्तको करनेवाली ॥ ५६ ॥ मधुर, काबिज, और शोथ, वात, पित्तज्वर तथा रक्त, इनको जीतनेवाली है.

अथ जीवनीयगणस्य लक्षणं गुणाश्च ।

अष्टवर्गः सयष्टीको जीवन्ती मुद्गपर्णिका ॥ ५७ ॥
माषपर्णीगणोऽयं तु जीवनीयगणः स्मृतः ।
जीवनो मधुरश्चापि नाम्ना स परिकीर्तितः ॥ ५८ ॥
जीवनीयगणः प्रोक्तः शुक्रकृत् बृंहणो हिमः ।
गुरुर्गर्भप्रदः स्तन्यकफहृद् पित्तरक्तहृद् ॥ ५९ ॥
तृष्णां शोषं ज्वरं दाहं रक्तपित्तं व्यपोहति ।

टीका—मुलहटीके साथ अष्टवर्ग और जीवन्ती, बनमूंग ॥ ५७ ॥ बनउड़द इसे जीवनीयगण कहते हैं. यह जीवन, और मधुर नामसे भी कहा गया है ॥५८॥ यह शुक्रको पैदा करनेवाला, धातुको बढ़ानेवाला, और शीतल, भारी, गर्भको देनेवाला, दूध और कफको करनेवाला, पित्तरक्तका हरनेवाला है ॥ ५९ ॥ तृषा, शोष, ज्वर, दाह, रक्तपित्त, इनका नाशक है.

अथ शुक्लरक्तैरण्डनामगुणाः ।

शुक्ल एरण्ड आमण्डुश्चित्रो गन्धर्वहस्तकः ॥ ६० ॥
पञ्चाङ्गुलो वर्धमानो दीर्घदण्डोऽप्यदण्डकः ।
वातारिस्तरुणश्चापि रुबूकश्च निगद्यते ॥ ६१ ॥
रक्तोऽपरो रुबूकः स्यादुरुबूको रुबूस्तथा ।
व्याघ्रपुच्छश्च वातारिश्चञ्चुरुत्तानपत्रकः ॥ ६२ ॥
एरण्डयुग्मं मधुरमुष्णं गुरु विनाशयेत् ।
शूलशोथकटीबस्तिशिरःपीडोदरज्वरान् ॥ ६३ ॥
बध्मश्वासकफानाहकासकुष्ठाममारुतान् ।
एरण्डपत्रं वातघ्नं कफकृत्कृमिनाशनम् ॥ ६४ ॥
मूत्रकृच्छ्रहरं चापि पित्तरक्तप्रकोपनम् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेद विद्यापीठ महाविद्यालय दिल्ली

वातार्यग्रदलं गुल्मबस्तिशूलहरं परम् ॥ ६५ ॥
कफवातकृमीन्हन्ति वृद्धिं सप्तविधामपि ।
एरण्डफलमत्युष्णं गुल्मशूलानिलापहम् ॥ ६६ ॥
यकृत्प्लीहोदरार्शोघ्नं कटुकं दीपनं परम् ।
तद्वन्मज्जा च विड्भेदी वातश्लेष्मोदरापहा ॥ ६७ ॥

टीका—शुक्ल एरण्ड, आमण्डु, चित्र, गंधर्वहस्तक ॥ ६० ॥ पंचांगुलं, वंधेमान, दीर्घदण्ड, अदण्डक, वातारि, तरुण, रुबूक, ये शुक्ल एरंडके नाम हैं ॥ ६१ ॥ दूसरा रक्त एरंड, रुबूक, उरुबूक, व्याघ्रपुच्छ, वातारि, चंचु, उत्तानपत्रक, ये लाल एरंडके नाम हैं ॥ ६२ ॥ ये दोनों एरंड मधुर, और भारी हैं. तथा शूल, शोथ तथा कटि, पेडू, शिर, इनकी पीडा; उदररोग, ज्वर ॥ ६३ ॥ बद, श्वास, कफ, अफरा, कास, कुष्ठ, आमवात, इनको हरनेवाला है. अंडीका पत्ता वातनाशक, कफवमिको हरनेवाला है ॥ ६४ ॥ और मूत्रकृच्छ्रका हरनेवाला है, तथा पित्तरक्तका प्रकोप करनेवाला है. अंडीका अग्रदल बायगोला, पेडूका शूल, इनका नाशक है ॥ ६५ ॥ कफ, वात, कृमि, और सातप्रकारकी अंडवृद्धि इनका नाशक है. अंडीका फल बहुत गरम होता है और बायगोला, शूल, वात, इनका हरनेवाला है ॥ ६६ ॥ यकृत्, प्लीह, उदर, बवासीर, इनका नाशक है. कटु व अत्यन्त दीपन है. इसीप्रकार इसकी गिरी मलको भेदन करनेवाली और वात, कफ, तथा उदररोगकी नाशक होती है ॥ ६७ ॥

अथ शुक्लार्क-रक्तार्क-(आक मदार) नामगुणाः ।

अलर्को गुणरूपः स्यान्मन्दारो वसुकोऽपि च ।
श्वेतपुष्पः सदापुष्पः सबालार्कः प्रतीपसः ॥ ६८ ॥
रक्तोऽपरोऽर्कनामा स्यादर्कपर्णो विकीरणः ।
रक्तपुष्पः शुक्लफलस्तथा स्फोटः प्रकीर्तितः ॥ ६९ ॥
अर्कद्वयं सरं वातकुष्ठकण्डूविषव्रणान् ।
निहन्ति प्लीहगुल्मार्शःश्लेष्मोदरशकृत्कृमीन् ॥ ७० ॥
अलर्ककुसुमं वृष्यं लघु दीपनपाचनम् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अरोचकप्रसेकार्शःकासश्वासनिवारणम् ॥ ७१ ॥
रक्तार्कपुष्पं मधुरं सतिक्तं कुष्ठकृमिघ्नं कफनाशनं च।
अर्शो विषं हन्ति च रक्तपित्तं संग्राहि गुल्मे श्वयथौ हितं तत् ७२
क्षीरमर्कस्य तिक्तोष्णं स्निग्धं सलवणं लघु।
कुष्ठगुल्मोदरहरं श्रेष्ठमेतद्विरेचनम् ॥ ७३ ॥

टीका—अलर्क, गुणरूप, मंदार, वसुक, श्वेतपुष्प, सदापुष्प, सबालार्क प्रतीपस, ये सफेद आकके नाम हैं ॥ ६८ ॥ दूसरा लाल आक; इसके सूर्यकेसे नाम हैं. और अर्कपर्ण, विकीरण, रक्तपुष्प, शुक्लफल, तथा स्फोट, ये लाल आकके नाम हैं ॥ ६९ ॥ दोनों आक सर हैं. वात, कुष्ठ, कण्डू, घाव, विष, इनको हरनेवाले हैं और प्लीह, बायगोला, बवासीर, कफ, उदरमल, कृमि इनके भी हरनेवाले हैं ॥ ७० ॥ और आकका फूल, धातुका बढ़ानेवाला और हलका, दीपन, पाचन है; और अरुचि, स्वेद, बवासीर, कास, श्वास, इनका दूर करने, वाला है ॥ ७१ ॥ लाल आकका फूल मधुर और तिक्त होता है. और कुष्ठ-कृमि, इनका हरनेवाला है; और कफका भी हरनेवाला है. बवासीर, विष, इनका नाशक है, और रक्तपित्तका नाशक है, और काबिज, तथा बायगोला, सूजनको भी हित है ॥७२॥ और आकका दूध तिक्त, गरम, चिकना, लवणके सहित होता है. हलका है. तथा कुष्ठ, गुल्म, उदर, इनका नाशक है और यह श्रेष्ठ रेचन है ॥ ७३ ॥

अथ सेहुण्डनामगुणाः।

सेहुण्डः सिंहतुण्डः स्याद्वज्री वज्रद्रुमोऽपि च।
सुधा समन्तदुग्धा च स्नुक् स्त्रियां स्यात् स्नुही गुडा ॥ ७५ ॥
सेहुण्डो रेचनस्तीक्ष्णो दीपनः कटुको गुरुः।
शूलमष्ठीलिकाध्मानकफगुल्मोदरानिलान् ॥ ७४ ॥
उन्मादमोहकुष्ठार्शःशोथमेदोऽश्मपाण्डुताः।
व्रणशोथज्वरप्लीहविषदूषीविषं हरेत् ॥ ७६ ॥
उष्णवीर्यं स्नुहीक्षीरं स्निग्धं च कटुकं लघु।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुल्मिनां कुष्ठिनां चापि तथैवोदररोगिणाम् ॥ ७७ ॥
हितमेतद्विरेकार्थे ये चान्ये दीर्घरोगिणः ।

टीका—सेहुंड, सिंहतुण्ड, वज्री, वज्रद्रुम, सुधा, समंतदुग्धा, स्नुक्, स्नुही, गुडा, ये थूअरके नाम हैं ॥ ७४ ॥ यह रेचन, तीक्ष्ण, दीपन, कटु, और भारी है. शूल, अष्ठीलिका, आध्मान, कफ, बायगोला, उदरवात ॥७५॥ उन्माद, मोह, कुष्ठ, बवासीर, सूजन, मेद, पथरी, पांडु, घाव,सूजन, ज्वर, प्लीहा विष, दूषीविष, इनको हरनेवाला होता है ॥ ७६ ॥ थूअरका दूध गरम, स्निग्ध, कटु, और लघु होता है; और गुल्म, कुष्ठ, उदर, इन रोगोंवालेको ॥ ७६ ॥ यह विरेचन देना हित है तथा और दीर्घरोगियोंके वास्ते भी हितकारी कहा है.

(अथ सेहुण्डभेदः शातलाअनेनैव नाम्ना प्रसिद्ध)

शातला सप्तला सारा विमला विदुला च सा ॥ ७८ ॥
तथा निगदिता भूरिफेना चर्मकषेत्यपि ।
शातला कटुका पाके वातला शीतला लघुः ॥ ७९ ॥
तिक्ता शोथकफानाहपित्तोदावर्तरक्तजित् ।

टीका—थोहरका भेद दूसरा शातलानामसे प्रसिद्ध है. शातला, सप्तला, सारा, विमला, विदुला ॥ ७८ ॥ भूरिफेना, चर्मकषा, ये शातलाके नाम हैं. यह पाकमें कटु होता है और वायुको करनेवाला, शीतल, हलका, और तिक्त है ॥ ७९ ॥ तथा सूजन, कफ, अफरा, पित्त, उदावर्त, रक्त, इनको हरनेवाला है.

अथ शक्रपुष्पी (कलिहारी) नामगुणाः ।

कलिहारी तु हलिनी लाङ्गली शक्रपुष्प्यपि ॥ ८० ॥
विशल्याग्निशिखानन्ता वह्निवक्त्रा च गर्भनुत् ।
कलिहारी सरा कुष्ठशोफार्शोव्रणशूलजित् ॥ ८१ ॥
सक्षारा श्लेष्मजित्तिक्ता कटुका तुवरापि च ।
तीक्ष्णोष्णा क्रिमिहृल्लघ्वी पित्तला गर्भपातिनी ॥ ८२ ॥

टीकाः—कलिहारी, हलिनी, लांगली, शक्रपुष्पी ॥ ८० ॥ विशल्या, अग्निशिखा, अनन्ता, वह्निवक्त्रा, गर्भनुत्, ये कलिहारीके नाम हैं. यह सर है; कुष्ठ-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शोफ, बवासीर, घाव और शूल, इनको जीतनेवाली है ॥ ८१ ॥ और कुछ क्षारवाली होती है और कफको जीतनेवाली होती है. तिक्त, कड़वी और कसेली, तीक्ष्ण, गरम, कृमियोंको नाश करती है. हलकी, पित्तको, उत्पन्न करनेवाली और गर्भको गिरानेवाली है ॥ ८२ ॥

अथ करवीर (श्वेतरक्तकनेर) नामगुणाः ।

करवीरः श्वेतपुष्पः शतकुम्भोऽश्वमारकः ।
द्वितीयो रक्तपुष्पश्च चण्डातो लगुडस्तथा ॥ ८३ ॥
करवीरद्वयं तिक्तं कषायं कटुकं च तत् ।
व्रणलाघवकृन्नेत्रकोपकुष्ठव्रणापहम् ॥ ८४ ॥
वीर्योष्णं कृमिकण्डूघ्नं भक्षितं विषवन्मतम् ।

टीका—सफेद फूलके कनेरको शतकुम्भ और अश्वमारक कहते हैं. लाल कनेरको चंडात और लगुड कहते हैं ॥ ८३ ॥ दोनों कनेर तिक्त, कसेले, और कड़वे, घावोंको भरनेवाले और नेत्र, कुष्ठ, व्रण, इनको शमन करने वाले हैं ॥ ८४ ॥ तथा वीर्यमें गरम हैं, कृमि और खुजली इनको हरनेवाले हैं और खानेमें विषके समान हैं.

अथ धत्तूरनामगुणाः ।

धत्तूरधूर्तधुत्तूरा उन्मत्तः कनकाह्वयः ॥ ८५ ॥
देवता कितवस्तूरी महामोही शिवप्रियः ।
मातुलो मदनश्चास्य फले मातुलपुत्रकः ॥ ८६ ॥
धत्तूरो मदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत् ।
कषायो मधुरस्तिक्तो यूकालिक्षाविनाशकः ॥ ८७ ॥
उष्णो गुरुर्व्रणश्लेष्मकण्डूकृमिविषापहः ।

टीका—धत्तूर, धूर्त, धुत्तूर, उन्मत्त, स्वर्णके नामोंवाला ॥ ८५ ॥ देवता, कितव, तूरी, महामोही, शिवप्रिय, मातुल, मदन, ये धतूरेके नाम हैं. इसके फलको मातुलपुत्र कहते हैं ॥८६॥ यह मदकारी, रंग, अग्नि, वात, इनको करनेवाला है; ज्वर कुष्ठका हरनेवाला है; और कसेला, मधुर, तिक्त, जूवांलीख इनका हरने-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वाला होता है ॥ ८७ ॥ गरम, भारी, घाव, खुजली, कफ, कृमि, विष इनका भी हरनेवाला है.

अथ वासक (अरूसा) नामगुणाः ।

वासको वासिका वासा भिषङ्माता च सिंहिका ॥ ८८ ॥
सिंहास्यो वाजिदन्ता स्यादाटरूषोऽटरूषकः ।
आटरूषो वृषस्ताम्रः सिंहपर्णश्च स स्मृतः ॥ ८९ ॥
वासको वातकृत्स्वर्यः कफपित्तास्रनाशनः ।
तिक्तस्तुवरको हृद्यो लघुः शीतस्तृडार्तिहृत् ॥ ९० ॥
श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः ।

टीका—वासक १, वासिका २, वासा ३, भिषङ्माता ४, सिंहिका ५ ॥८८॥ सिंहास्य ६, वाजिदन्ता ७,आटरूषक८, अटरूष ९, ये बासेके नाम हैं. और वृष १, ताम्र२, सिंहपर्ण ३, ये भी नाम हैं ॥८९॥ यह वातकारक,स्वरको श्रेष्ठ करनेवाला,कफ, रक्तपित्तका हरनेवाला, तिक्त, कसेला और हृदयको अच्छा करनेवाला, हलका, शीत, तृषा, पीडा, इनका नाशक है ॥ ९० ॥ श्वास, कास, ज्वर, वमन, प्रमेह, कुष्ठ, क्षय इनका भी हरनेवाला है.

अथ पर्पट (पित्तपापडा) नामगुणाः ।

पर्पटो वरतिक्तश्च स्मृतः पर्पटकश्च सः ॥ ९१ ॥
कथितः पांशुपर्यायस्तथा कवचनामकः ।
पर्पटो हन्ति पित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान् ॥ ९२ ॥
संग्राही शीतलस्तिक्तो दाहनुद्वातलो लघुः ।

टीका—पर्पट १, वरतिक्त २, पर्पटक ३ ॥ ९१ ॥ पांशुपर्याय ४, और कवचनामक ५, ये पित्तपापड़के नाम हैं. यह पित्त, भ्रम, तृषा, कफ, ज्वर, इनको हरता है ॥९२॥ और काबिज, शीतल, तिक्त, दाहका नाश करनेवाला, वातकारक है.

अथ निम्ब (नीम) नामगुणाः ।

निम्बः स्यात् पिचुमर्दश्च पिचुमन्दश्च तिक्तकः ॥ ९३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अरिष्टः पारिभद्रश्च हिङ्गुनिर्यास इत्यपि ।
निम्बः शीतो लघुर्ग्राही कटुपाकोऽग्निवातनुत् ॥ ९४ ॥
अहृद्यः श्रमतृट्कासज्वरारुचिकृमिप्रणुत् ।
व्रणपित्तकफच्छर्दिकुष्ठहृल्लासमेहनुत् ॥ ९५ ॥
निम्बपत्रं स्मृतं नेत्र्यं कृमिपित्तविषप्रणुत् ।
वातलं कटुपाकं च सर्वारोचककुष्ठनुत् ॥ ९६ ॥
निम्बफलं रसे तिक्तं पाके तु कटु भेदनम् ।
स्निग्धं लघूष्णं कुष्ठघ्नं गुल्मार्शःकृमिमेहनुत् ॥ ९७ ॥

टीका—निम्ब १, पिचुमर्द २, पिचुमन्द ३, तिक्तक ४ ॥ ९३ ॥ अरिष्ट ५, पारिभद्र ६, हिंगुनिर्यास ७, ये नीमके नाम हैं. यह शीतल और हलका, काबिज, पाकमें कटु, अग्निवायुको हरनेवाला है ॥ ९४ ॥ हृदयको अप्रिय, श्रम, तृषा, कास ज्वर, अरुचि, कृमि, इनका हरनेवाला है. व्रण, पित्त, कफ, छर्दि, कुष्ठ, हृल्लास, प्रमेह, इनका हरनेवाला है ॥ ९५ ॥ और नीमका पत्र नेत्रोंका हितकारी है; कृमि पित्त, और विष इनका नाशक है. वायुकारक है. पाकमें कटु है. सर्व अरुचि, कुष्ठ इनका हरनेवाला है ॥ ९६ ॥ और नीमका फल रसमें तिक्त और पाकमें तिक्त, तथा कटु, और भेदन होता है; और चिकना, हलका, गरम, तथा कुष्ठका नाशक है. बायगोला, बवासीर, कृमि, प्रमेह, इनका हरनेवाला है ॥ ९७ ॥

अथ महानिम्ब (बकायन) नामगुणाः ।

महानिम्बः स्मृतोद्रेको रम्यको विषमुष्टिकः ।
केशमुष्टिर्निम्बकश्च कार्मुको जीव इत्यपि ॥ ९८ ॥
महानिम्बो हिमो रूक्षस्तिक्तो ग्राही कषायकः ।
कफपित्तभ्रमच्छार्दिकुष्ठहृल्लासरक्तजित् ॥ ९९ ॥
प्रमेहश्वासगुल्मार्शोमूषिकाविषनाशनः ।

टीका—महानिम्ब १, उद्रेक २, रम्यक ३, विषमुष्टिक ४, केशमुष्टि ५, निम्बक ६, कार्मुक ७, जीव ८, ये बकायनके नाम हैं ॥ ९८ ॥ यह शीतल और रूखा, तिक्त, काबिज, कसेला, कफ, पित्त, भ्रम, वमन, कुष्ठ, हृल्लास, रक्त, इ.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नको जीतता है ॥ ९९ ॥ और प्रमेह, श्वास, बायगोला, बावासीर, मूसेका विष, इनका नाशक है.

अथ पारिभद्र(जलनीम)नामगुणाः ।

पारिभद्रो निम्बतरुर्मन्दारः पारिजातकः ॥ १०० ॥
पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोथमेदःकृमिप्रणुत् ।
तत्पत्रं पित्तरोगघ्नं कर्णव्याधिविनाशनम् ॥ १०१ ॥

टीका—पारिभद्र १, निम्वतरु २, मंदार ३, पारिजातक ४, ये जलनीमके नाम हैं ॥ १०० ॥ यह वात, कफ, सूजन, मेद, कृमि, इनका हरनेवाला है. और इसका पत्र पित्तरोगका नाशक और कर्णरोगका भी हरनेवाला है ॥ १०१ ॥

अथ काञ्चनार(काचनार)नामगुणाः ।

काञ्चनारः काञ्चनको गण्डारिः शोणपुष्पकः ।

(अथ कञ्चनारभेदः ।)

कोविदारश्चमरिकः कुद्दालो युगपत्रकः ॥ १०२ ॥
कुण्डली ताम्रपुष्पश्चाश्मन्तकः स्वल्पकेसरी ।
काञ्चनारो हिमो ग्राही तुवरः श्लेष्मपित्तनुत् ॥ १०३ ॥
कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगण्डमालाव्रणापहः ।
कोविदारोऽपि तद्वत्स्यात्तयोः पुष्पं लघु स्मृतम् ॥ १०४ ॥
रूक्षं संग्राहि पित्तास्रप्रदरक्षयकासनुत् ।

टीका—काञ्चनार १, काञ्चनक २, गंडारि ३, शोणपुष्पक ४, ये कचनारके नाम हैं. अब दूसरे कचनारके नाम लिखते हैं. कोविदार १, चामरिक २, कुद्दाल ३, युगपत्रक ४, ॥ १०२ ॥ कुण्डली ५, ताम्रपुष्प ६, अश्मन्तक ७, स्वल्पकेसरी ८ ये दूसरे कचनार के नाम हैं. यह शीतल, काबिज, कसेला, कफ पित्तका हारक है ॥ १०३ ॥ कृमि, कुष्ठ गुदभ्रंश, गंडमाला, घाव, इनका हरनेवाला है और दूसरा कचनार भी इसीके समान गुणवाला होता है. इनका फूल हलका है ॥ १४० ॥ रूखा, काबिज, रक्तपित्त, प्रदर, क्षय, कास, इनका भी हरनेवाला है.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ शोभाञ्जन(सहँजन)नामगुणाः।

शोभाञ्जनः शिग्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमोचकाः॥ १०५ ॥
तद्बीजं श्वेतमरिचं मधुशिग्रुः सलोहितः।
शिग्रुः कटुः कटुः पाके तीक्ष्णोष्णो मधुरो लघुः॥ १०६ ॥
दीपनो रोचनो रूक्षः क्षारस्तिक्तो विदाहकृत्।
संग्राही शुक्रलो हृद्यः पित्तरक्तप्रकोपनः॥ १०७॥
चक्षुष्यः कफवातघ्नो विद्रधिश्वयथुक्रिमीन्।
मेदोऽपचीविषप्लीहगुल्मगण्डव्रणान्हरेत्॥ १०८॥
श्वेतः प्रोक्तगुणो ज्ञेयो विशेषाद्दाहकृद्भवेत्।
प्लीहानं विद्रधिं हन्ति व्रणघ्नः पित्तरक्तहृत्॥ १०९ ॥
मधुशिग्रुः प्रोक्तगुणो विशेषाद्दीपनः सरः।
शिग्रुवल्कलपत्राणां स्वरसः परमार्तिहृत्॥ ११० ॥
चक्षुष्यं शिग्रुजं बीजं तीक्ष्णोष्णं विषनाशनम्।
अवृष्यं कफवातघ्नं तन्नस्येन शिरोर्तिनुत्॥ १११ ॥

टीका—काला, सफेद, लाल तीनों प्रकारके सहँजनेके नाम तथा गुण लिखते हैं. शोभांजन १, शिग्रु २, तीक्ष्ण ३, गंधक ४, अक्षीव ५, मोचक ६ ॥ १०५ ॥ इसका बीज सफेद मिरचसदृश होता है. और मधुर सहँजन थोड़ा लाल होता है. सहँजन कड़वा पाकमें कटु, तीक्ष्ण, गरम, मधुर, हलका, ॥ १०६ ॥ दीपन, रोचन, रूखा, क्षार, तिक्त होता है. विदाहको करनेवाला है; और काबिज, शुक्रको करता है. हृदयको अच्छा करनेवाला, पित्तरक्तका कोप करनेवाला ॥ १०७ ॥ नेत्रोंका हितकारी, कफवातका नाश करनेवाला, विद्रधि, सूजन, कृमि, इनको हरता है. मेद, अरुचि, विष, प्लीह, बायगोला, गण्डमाला, व्रण, इनको हरनेवाला है ॥ १०८ ॥ और सफेद सहजँन कहे हुए गुणोंके समान जानलेना. विशेष करके दाहकारक है. प्लीह विद्रधिको हरनेवाला, व्रणका हरनेवाला और पित्तरक्तको हरता है ॥ १०९ और सहँजनेका बीज भी कहेहुए गुणोंवाला है; परंतु विशेष करके दीपन है. सहँजनेकी छाल और पत्र इनका स्वरस अत्यंत पीडाको हरने-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वाला है ॥ ११० ॥ और नेत्रोंका हितकारी है. और इसका बीज तीखा, गरम, विषका हरनेवाला, धातुको क्षीण करनेवाला और कफ वातका हारक है; और यह नास लेनेसे शिरकी पीडाको हरता है ॥ १११ ॥

अथापराजितानामगुणाः ।

आस्फोता गिरिकर्णी स्याद्विष्णुक्रान्तापराजिता ।
अपराजिते कटू मेध्ये शीते कण्ठ्ये सुदृष्टिदे ॥ ११२ ॥
कुष्ठमूत्रत्रिदोषामशोथव्रणविषापहे ।
कषाये कटुके पाके तिक्ते च स्मृतिबुद्धिदे ॥ ११३ ॥

टीका—अब सफेदफूल औद नीले फूलवाली विष्णुक्रांताके नाम और गुण लिखते हैं. आस्फोता १, गिरिकर्णी २, विष्णुक्रान्ता ३, अपराजिता ४, ये विष्णुक्रांताके नाम हैं. यह कड़वी, बुद्धिको उत्पन्न करनेवाली, शीतल है; और कंठको अच्छा करनेवाली है ॥ ११२ ॥ दृष्टिको अच्छी है. कुष्ठ, मूत्र, दोष, आम, सूजन, घाव, विष, इनके हरनेवाली, कसेली, कड़वी, पाकमें तिक्त और स्मृति, बुद्धि इनको देनेवाली है ॥ ११३ ॥

अथ सिन्दुवार(सँभालू)नामगुणाः ।

सिन्दुवारः श्वेतपुष्पः सिन्दुकः सिन्दुवारकः ।
नीलपुष्पी तु निर्गुण्डी शेफाली सुवहा च सा ॥ ११४ ॥
सिन्दुकः स्मृतिदस्तिक्तः कषायः कटुको लघुः ।
केश्यो नेत्रहितो हन्ति शूलशोथाममारुतान् ॥ ११५ ॥
कृमिकुष्ठारुचिश्लेष्मज्वरान्नीलापि तद्विधा ।
सिन्दुवारदलं जन्तुवातश्लेष्महरं लघु ॥ ११६ ॥

टीका—संभालूको सिन्दुवार भी कहते हैं. सिन्दुवार १, श्वेतपुष्प २, सिन्दुक ३, सिन्दुवारक ४, नीलपुष्पी ५, निर्गुंडी ६, शेफाली ७, सुवहा ये मेउड़ीके नाम हैं ॥ ११४ ॥ यह स्मृतिको देनेवाली, तिक्त, कसेली, कड़वी, हलकी है. केशोंको अच्छे करती है नेत्रोंकी हितकारी है और शूल, शोथ, आमवात, इनको हरनेवाली है ॥ ११५ ॥ कृमि, कुष्ठ, अरुचि, कफ, ज्वर, इनकी नाशक है. यह

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नीली भी इसी प्रकारकी है. मेउड़ीका पत्र कृमि, वात, कफ, इनका हरनेवाला तथा हलका है ॥ ११६ ॥

अथ कुटज(कुरैया)नामगुणाः ।

कुटजः कूटजः कोटी वत्सको गिरिमल्लिका ।
कालिङ्गः शक्रशाखी च मल्लिकापुष्प इत्यपि ॥ ११७ ॥
इन्द्रो यवफलः प्रोक्तो वृक्षकः पाण्डुरद्रुमः ।
कुटजः कटुको रूक्षो दीपनस्तुवरो हिमः ॥ ११८ ॥
अर्शोऽतिसारपित्तास्रकफतृष्णामकुष्ठनुत् ।

टीका-कुटज १, कूटज २, कोटी ३, वत्सक ४, गिरिमल्लिका ५, कालिंग ६, शक्रशाखी ७, मल्लिकापुष्प ८, ये कुरैयाके नाम हैं ॥ ११७ ॥ और इंद्र यवफल, वृक्षक, पांडुरद्रुम, ये भी नाम हैं. यह कड़वा, रूखा, दीपन, कसेला और ठंडा है ॥ ११८ ॥ ववासीर, अतीसार, रक्तपित्त, तृषा, आम, इनका हरनेवाला है.

अथ करञ्जद्वयनामगुणाः ।

करञ्जो नक्तमालश्च तथासौ चिरबिल्वकः ॥ ११९ ॥
घृतपूर्णकरञ्जोऽन्यः प्रकीर्यः पूतिकोऽपि च ।
स चोक्तः पूतिकरजः सोमवल्कश्च स स्मृतः ॥ १२० ॥
करञ्जः कटुकस्तीक्ष्णो वीर्योष्णो योनिदोषहृत् ।
कुष्ठोदावर्तगुल्मार्शोव्रणक्रिमिकफापहः ॥ १२१ ॥
तत्पत्रं कफवातार्शःक्रिमिशोथहरं परम् ।
भेदनं कटुकं पाके वीर्योष्णं पित्तलं लघु ॥ १२२ ॥
तत्फलं कफवातघ्नं मेहार्शःक्रिमिकुष्ठजित् ।
घृतपूर्णकरञ्जोऽपि करञ्जसदृशो गुणैः ॥ १२३ ॥

टीका-करंज १, नक्तमाल २, चिरबिल्वक ३, ये करंजके नाम हैं ॥ ११९ ॥ और दूसरेको घृतपूर्णकरंज १, प्रकीर्य, २ पूतिक, ३ कहते हैं. यह पूतिकरंज कहागया है, और ईसीको सोमवल्क भी कहते हैं ॥ १२० ॥ यह कडवा, तीखा, गरम, वीर्यमें गरम, योनि-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दोषोंका हरनेवाला और कुष्ठ, उदावर्त, गुल्म, बवासीर, व्रण, कृमि, कफ, इनका हरनेवाला है ॥ १२१॥ और इसका पत्र कफ, वात, बवासीर, कृमि, सूजन, इनका हरनेवाला है. भेदन, कड़वा, पाकमें और वीर्यमें गरम, पित्तको करनेवाला, हलका है ॥ १२२ ॥ और इसका फल कफवातका हरनेवाला; प्रमेह, बवासीर, कृमि, कुष्ठ, इनको जीतनेवाला है. घृतपूर्णनाम दूसरा करंज भी इसके सदृश है ॥ १२३ ॥

अथोदकीर्य(आरारी)नामगुणाः ।

उदकीर्यस्तृतीयोऽन्यः षड्ग्रन्था हस्तिवारुणी ।
मर्कटी वायसी चापि करञ्जी करभञ्जिका ॥ १२४ ॥
करञ्जी स्तम्भनी तिक्ता तुवरा कटुपाकिनी ।
वीर्योष्णा वमिपित्तार्शःकृमिकुष्ठप्रमेहजित् ॥ १२५ ॥

टीका—उदकीर्य और तीसरा करंजवा, षड्ग्रन्था, हस्तिवारुणी, मर्कटी, वायसी, करंजी, करभंजिका, ये डारकरंजके नाम हैं ॥ १२४ ॥ यह स्तम्भन करनेवाला, तिक्त, और कसेला, कटुपाकवाला, वीर्यमें गरम, और वमन, पित्तकी बवासीर, कृमि, कुष्ठ, प्रमेह, इनको जीतनेवाला है ॥ १२५ ॥

अथ गुञ्जाद्वयनामगुणाः ।

श्वेता रक्तोच्चटा प्रोक्ता कृष्णला चापि सा स्मृता ।
रक्ता सा काकचिञ्ची स्याद् काकानन्ता च रक्तिका ॥ १२६ ॥
काकादनी काकपीलुः सा स्मृता काकवल्लरी ।
गुञ्जाद्वयं तु केश्यं स्याद्वातपित्तज्वरापहम् ॥ १२७ ॥
मुखशोषभ्रमश्वासतृष्णामदविनाशनम् ।
नेत्रामयहरं वृष्यं बल्यं कण्डूं व्रणं हरेत् ॥ १२८ ॥
कृमीन्द्रलुप्तकुष्ठानि रक्ता च धवलापि च ।

टीका—अब सफेद और लालचिरमिठीके नाम तथा गुण कहते हैं. सफेद, और लालको उच्चटा और कृष्णला भी कहते हैं. और लालचिरमिठीको-काकचिञ्ची १, काकानन्ता २, रक्तिका ३ ॥ १२६ ॥ काकादनी ४, काकपीलु ५, काकवल्लरी ६,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ये लालचिरमिठींके नाम हैं. ये दोनों चिरमिठी केशोंकी हितकारक हैं और वात, पित्तज्वरकी हारक हैं ॥ १२७ ॥ और मुखशोष, भ्रम, श्वास, तृषा, मद, इनकी भी हरनेवाली हैं. और नेत्ररोगोंको दूर करनेवाली, पुष्ट, बलको करनेवाली, और कण्डू, व्रण, इनको भी जीतनेवाली हैं ॥ १२८ ॥ और कृमि, इन्द्रलुप्त, कुष्ठ इनका भी नाश करनेवाली है.

अथ कपिकच्छु(किमाच)नामगुणाः ।

कपिकच्छुरात्मगुप्ता वृष्या प्रोक्ता च मर्कटी ॥ १२९ ॥
अजरा कण्डुरा व्यङ्गा दुःस्पर्शा प्रावृषायणी ।
लाङ्गली शूकशिम्बी च सैव प्रोक्ता महर्षिभिः ॥ १३० ॥
कपिच्छुर्भृशं वृष्या मधुरा बृंहणी गुरुः ।
तिक्ता वातहरी बल्या कफपित्तास्रनाशिनी ॥ १३१ ॥
तद्बीजं वातशमनं स्मृतं वाजीकरं परम् ।

टीका—कपिकच्छु १, आत्मगुप्ता २, वृष्या, ३, मर्कटी ४, ॥ १२९ ॥ अजरा ५, कण्डुरा ६, व्यंगा ७, दुःस्पर्शा ८, प्रावृषायणी ९, लांगली, १०, शूकशिम्बी ११ ये किमाचके नाम हैं. सो महर्षियोंने कहे हैं ॥ १३० ॥ यह अत्यन्त धातुको बढ़ानेवाली, मधुर, पुष्ट, भारी, ती ती वायकी नाशक, बलको करनेवाली तथा कफ, रक्तपित्त, इनको हरनेवाली है ॥ १३१ ॥ इसका बीज वातनाशक है और अत्यन्त वाजीकरण, कहागया है.

अथ रोहिणीनामगुणाः ।

मांसरोहिण्यतिरुहा वृत्ता चर्मकरी कषा ॥ १३२ ॥
प्रहारवल्ली विकसा वीरवत्यपि कथ्यते ।
स्यान्मांसरोहिणी वृष्या सरा दोषत्रयापहा ॥ १३३ ॥

टीका—मांसरोहिणी १, अतिरुहा २, वृत्ता ३, चर्मकरी ४, कषा ५, ॥ १३२ ॥ प्रहारवल्ली ६, विकसा ७, वीरवती, ये रोहिणीके नाम हैं. यह पुष्ट, सर, त्रिदोषकी नाशक है ॥ १३३ ॥

अथ चिल्हकनामगुणाः ।

चिल्हको वातनिर्हारः श्लेष्मघ्नो धातुपुष्टिकृत् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आग्नेयो विषवद्यस्य फलं मत्स्यनिषूदनम् ॥ १३४ ॥

टीका--चिल्हक, वातनिर्हार, श्लेष्मघ्न ये चीलूके नाम हैं. यह श्लेष्मका नाशक, धातुका पुष्ट करनेवाला और गरम है. इसका फल विषके समान है और मछरीका नाशक है ॥ १३४ ॥

अथ टङ्कारीनामगुणाः ।

टङ्कारी वातजित्तिक्ता श्लेष्मघ्नी दीपनी लघुः ।
शोथोदरव्यथाहन्त्री हिता पीठविसर्पिणाम् ॥ १३५ ॥

टीका--टंकारी वातको जीतनेवाली है, तिक्त है, और कफकी नाशक है, दीपन है, हलकी है, शोथ, उदरव्यथा इनका नाश करनेवाली है. और पीठ, विसर्परोग, इनको हित है ॥ १३५ ॥

अथ वेतसनामगुणाः ।

वेतसो नम्रकः प्रोक्तो वानीरो वञ्जुलस्तथा ।
अभ्रपुष्पश्च विदुलो रथशीतश्च कीर्तितः ॥ १३६ ॥
वेतसः शीतलो दाहशोथार्शोयोनिरुक्प्रणुत् ।
हन्ति वीसर्पकृच्छ्रास्रपित्ताश्मरिकफानिलान् ॥ १३७ ॥

टीका--वेतस १, नम्रक २, वानीर ३, वञ्जुल ४, अभ्रपुष्प ५, विदुल ६ रथशीत ७, ये बेतके नाम हैं ॥ १३६ ॥ यह शीतल है. दाह, शोथ, बवासीर, योनिपीडा, इनको हरनेवाला है, और विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, पथरी, कफ वायु, इनका नाश करनेवाला है ॥ १३७ ॥

अथ जलवेतसनामगुणाः ।

निकुञ्चकः परिव्याधो नादेयो जलवेतसः ।
जलजो वेतसः शीतः कुष्ठहृद्वातकोपनः ॥ १३८ ॥

टीका--निकुंचक १, परिव्याध २, नादेय ३, जलवेतस ४, ये जलवेतसके नाम हैं. यह शीतल है, कुष्ठका नाशक है, वातका प्रकोप करनेवाला है ॥ १३८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ हिज्जल (समुद्रफल) नामगुणाः ।

इज्जलो हिज्जलश्चापि निचुलश्चाम्बुजस्तथा ।
जलवेतसवद्वेद्यो हिज्जलोऽयं विषापहः ॥ १३९ ॥

टीका--इज्जलको लोकमें समुद्रफल कहते हैं. इज्जल १, हिज्जल २. निचुल ३, अम्बुज ४, ये समुद्रफलके नाम हैं. जलवेतसके समान इसको जानों. यह विषहारक है ॥ १३९ ॥

अथ अङ्कोट (हिंगोट) नामगुणाः ।

अङ्कोटो दर्घकीलः स्यादङ्कोलश्च निकोचकः ।
अङ्कोटकः कटुस्तीक्ष्णः स्निग्धोष्णस्तुवरो लघुः ॥ १४० ॥
रेचनः कृमिशूलामशोफग्रहविषापहः ।
विसर्पकफपित्तास्रमूषकाहिविषापहः ॥ १४१ ॥
तत्फलं शीतलं स्वादु श्लेष्मघ्नं बृंहणं गुरु ।
बल्यं विरेचनं वातपित्तदाहक्षयास्रजित् ॥ १४२ ॥

टीका—अंकोट १, दीर्घकाल २, अंकोल ३, निकोचक ४, ये हिंगोटके नाम हैं. यह कड़वा, तीक्ष्ण, चिकना, गरम, कसेला, और हलका है ॥ १४० ॥ रेचन है. कृमि, शूल, आम, सूजन, ग्रह, विष, इनका हरनेवाला है. विसर्प, कफ, रक्तपित्त, मूसा, सर्प, इनके विषका हरनेवाला है ॥ १४१ ॥ और उसका फल शीतल और मधुर है, कफवातहारक, धातुको बढ़ानेवाला, भारी, बलको करनेवाला, रेचक, वात, पित्त, दाह, क्षय, रक्त, इनका जीतनेवाला है ॥ १४२ ॥

अथ (बरिआरी, सहदेवी, काकहिया, गुलशकरी, इति) बलाचतुष्टयम् ।

बला वाट्यालिका वाट्या सैव वाट्यालकाऽपि च ।
महाबला पीतपुष्पा सहदेवी च सा स्मृता ॥ १४३ ॥
ततोऽन्यातिबला ऋष्यप्रोक्ता कङ्कतिका च सा ।
गाङ्गेरुकी नागबला ह्येषा ह्रस्वा गवेधुका ॥ १४४ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बलाचतुष्टयं शीतं मधुरं बलकान्तिकृत् ।
स्निग्धं ग्राहि समीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ॥ १४५ ॥
बलामूलत्वचश्चूर्णं पीतं सक्षीरशर्करम् ।
मूत्रातिसारं हरति दृष्टमेतन्न संशयः ॥ १४६ ॥
हरेन्महाबला कृच्छ्रं भवेद्वातानुलोमनी ।
हन्यादतिबला मेहं पयसा सितया समम् ॥ १४७ ॥

टीका--बरियारी, सहदेयी, ककहिया, गुलशकरी ये बलाचतुष्टय हैं. बला १, वाट्यालिका २, ये बरियारीके नाम हैं. और महाबला १, पीतपुष्पा २, सहदेवी ३, ये सहदेवीके नाम हैं ॥ १४४ ॥ और इनसे दूसरी कङ्कतिका, अतिबला, ये ककयीके नाम ऋषियोंने कहे हैं. और गांगेरुकी १, नागवला २, ह्रस्वा ३, गवेधुका ४, ये गुलशकरीके नाम हैं ॥ १४५ ॥ ये चारों शीतल, मधुर, बल और कान्तिको करनेवाली, चिकनी, और काबिज हैं. वात, रक्त, पित्त, रक्तक्षत, इनकी हारक हैं ॥ १४६ ॥ बरियारीकी छालके चूर्णको दूध और शक्करके साथ पीनेसे मूत्रातीसार हरता है, इसमें संशय नहीं. और महाबला मूत्रकृच्छ्रको हरती है, और वातको अनुलोमन करती है. और गुलशकरी दूध, और चीनीके साथ पीनेसे प्रमेहको हरती है ॥ १४७ ॥

अथ लक्ष्मणानामगुणाः ।

पुत्रकाकाररक्ताल्पबिन्दुभिर्लाञ्छिता सदा ।
लक्ष्मणा पुत्रजननी बस्तगन्धाकृतिर्भवेत् ॥ १४८ ॥
कथिता पुत्रदावश्यं लक्ष्मणा मुनिपुङ्गवैः ।

टीका--पुत्रकाकार रक्तके अल्प बिन्दुओंसे लांछित होती है. लक्ष्मण पुत्रजननी, बस्तगन्धाकृति ॥ १४८ ॥ पुत्रदा, ये लक्ष्मणाके नाम हैं. मुनिश्रेष्ठोंने लक्ष्मणाको अवश्य पुत्रके देनेवाली कहा है.

अथ स्वर्णवल्लीनामगुणाः ।

स्वर्णवल्ली रक्तफला काकायुः काकवल्लरी ॥ १४९ ॥
स्वर्णवल्ली शिरःपीडां त्रिदोषान्हन्ति दुग्धदा ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका--स्वर्णवल्ली १, रक्तफला २, काकायु ३, काकवल्लरी ४ ये स्वर्णवल्लीके नाम ॥ १४९ ॥ स्वर्णवल्ली माथेकी पीडाको और त्रिदोषको हरनेवाली है और दुग्धको करनेवाली है.

अथ कार्पास(कपास)नामगुणाः ।

कार्पासी तुण्डकेरी च समुन्द्रान्ता च कथ्यते ॥ १५० ॥
कार्पासकी लघुः कोष्णा मधुरा वातनाशिनी ।
तत्पलाशं समीरघ्नं रक्तकृन्मूत्रवर्धनम् ॥ १५१ ॥
तत्कर्णपीडिकातोदपूयास्रावविनाशनम् ।
तद्बीजं स्तन्यदं वृष्यं स्निग्धं कफकरं गुरु ॥ १५२ ॥

टीका—कार्पासी १, तुण्डकेरी २, समुद्रान्ता ३, ये कपासके नाम हैं ॥१५०॥ यह हलकी है, थोड़ी गरम है, मधुर है, और वातनाशक है. और इसका पत्ता वातका हरनेवाला, रक्तका करनेवाला, और मूत्रकी वृद्धि करनेवाला है ॥ १५१ ॥ और कर्णपीडा, नाद, पूयका स्राव, इनका भी हरनेवाला है. और इसका बीज दूधको बढ़ानेवाला, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, कफकारी और भारी है ॥ १५२ ॥

अथ वंशनामगुणाः।

वंशस्त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ।
शतपर्वा शतफलो वेणुमस्करतेजनाः ॥ १५३ ॥
वंशः सरो हिमः स्वादुः कषायो बस्तिशोधनः ।
छेदनः कफपित्तघ्नः कुष्ठास्रव्रणशोथजित् ॥ १५४ ॥
तत्करीरः कटुः पाके रसे रूक्षो गुरुः सरः ।
कषायः कफकृत्स्वादुर्विदाही वातपित्तलः ॥ १५५ ॥
तद्यवास्तु सरा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ।
वातपित्तकरा उष्णा बद्धमूत्राः कफापहाः ॥ १५६ ॥

टीका--वंश १, त्वक्सार २, कर्मार ३, तृणध्वज ४, शतपर्वा ५, शतफल ६, वेणु ७, मस्कर ८, तेजन ९, ये बांसके नाम हैं ॥ १५३ ॥ यह वायुका अनुलोमन करनेवाला है, शीतल है, मधुर है, कसेला है, मूत्राशयको शोधता है, छेदन, कफ पित्तका हारक, कुष्ठ, रक्त, व्रण, सजन, इनको जीतनेवाला है ॥१५४॥ इसका

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अङ्कुर पाकमें और रसमें भी कड़वा हैं. रूखा, और भारी है, दस्तावर है, कसेला है, कफकारक है, मधुर है, विदाही है, वातपित्तकारक है ॥ १५५ ॥ जौ वायुको अनुलोमन करनेवाले, रूखे, कसेले, कटुपाकवाले, वातपित्तको करनेवाले, उष्ण, मूत्रको रोकनेवाले, कफके हरनेवाले हैं ॥ १५६ ॥

अथ नलनामगुणाः ।

नलः पोटगलः शून्यमध्यश्च धमनस्तथा ।
नलस्तु मधुरस्तिक्तः कषायः कफरक्तजित् ॥ १५७ ॥
उष्णो हृद्बस्तियोन्यर्तिदाहपित्तविसर्पहृत् ।

टीका—नल १, पोटगल २, शून्यमध्य ३, धमन ४, ये नलके नाम हैं. यह मधुर, तिक्त, कसेला, कफ रक्तको जीतनेवाला है ॥ १५७ ॥ गरम, हृदय, मूत्राशय, योनि, इनकी पीडा, दाह, पित्त, विसर्प, इसका हरनेवाला है.

अथ भद्रमुञ्ज (रामशर, शरपत) नामगुणाः।

भद्रमुञ्जः शरो बाणस्तेजनश्चक्षुवेष्टनः ॥ १५८ ॥

टीका—भद्रमुञ्ज १, शर, २. बाण ३, तेजन ४, चक्षुवेष्टन ५, ये सरपतके नाम हैं ॥ १५८ ॥

अथ मुञ्जनामगुणाः ।

मुञ्जो मुञ्जातको बाणः स्थूलदर्भः सुमेखलः ।
मुञ्जद्वयं तु मधुरं तुवरं शिशिरं तथा ॥ १५९ ॥
दाहतृष्णाविसर्पास्रमूत्रकृच्छ्राक्षिरोगजित् ।
दोषत्रयहरं वृष्यं मेखलासूपयुज्यते ॥ १६० ॥

टीका—मुंज १, मुंजातक २, बाण, ३, स्थूलदर्भ ४, सुमेखल ५, ये मूंजके, नाम हैं. दोनों मूंज मधुर, कसेले, और शीतल हैं ॥ १५९ ॥ और दाह, तृषा- विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, नेत्ररोग इनको जीतनेवाले तथा तीनी दोषोंको हरनेवाले हैं, धातुको पुष्ट करनेवाले हैं और मेखलामें मूंजका उपयोग किया जाता है ॥१६०॥

अथ काशनामगुणाः ।

काशः काशेक्षुरुद्दिष्टः सः स्यादिक्षुरसस्तथा ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इक्ष्वालिकेक्षुगन्धा च तथा पोटगलः स्मृतः ॥ १६१ ॥
काशः स्यान्मधुरस्तिक्तः स्वादुपाकी हिमः शरः ।
मूत्रकृच्छ्राश्मदाहास्रक्षयपित्तजरोगजित् ॥ १६२ ॥

टीका--कास १, कासेक्षु, २, इक्षुरस ३, इक्ष्वालिका ४, इक्षुगन्धा ५, पोटगल ६, ये कासके नाम हैं ॥१६१॥ यह मधुर, तिक्त, पाकमें मधुर, शीतल, दस्तावर, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, रक्तक्षय, और पित्तके रोगोंको जीतनेवाला है॥१६२॥

अथ गुन्द्र (गन्धपटेर) नामगुणाः ।

गुन्द्रः पटेरको रच्छः शृङ्गवेराभमूलकः ।
गुन्द्रः कषायो मधुरः शिशिरः पित्तरक्तजित् ॥ १६३ ॥
स्तन्यः शुक्ररजोमूत्रशोधनो मूत्रकृच्छ्रहृत् ॥

टीका—गन्धपटेर, १, रच्छ २, शृंगवेराभ ३, मूलक ४, ये गंधपटेरके नाम हैं. यह कसेला, मधुर, शीतल, पित्तरक्तको जीतनेवाला है ॥ १६३ ॥ दूधको उत्पन्न करता है. शुक्र, रज, मूत्र, इनका शोषक है और मूत्रकृच्छ्रका नाशक है.

अथैरका (मोथा) नामगुणाः ।

एरका गुन्द्रमूला च शिविर्गुन्द्रा शरीति च ॥ १६४ ॥
एरका शिशिरा वृष्या चक्षुष्या वातकोपिनी ।
मूत्रकृच्छ्रश्मरीदाहपित्तशोणितनाशिनी ॥ १६५ ॥

टीका—एरका १, गुंद्रमूला २,शिरा ३, गुन्द्रा ४, शरी ५, ये मोथीके नाम हैं १६४॥यह शीतल,धातुको पुष्ट करनेवाली,नेत्रोंका हित करनेवाली वातका प्रकोप करनेवाली, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, रक्तपित्त, इनको हरनेवाली है ॥ १६५ ॥

अथ कुशनामगुणाः

कुशो दर्भस्तथा बर्हिः सूच्यग्रो यज्ञभूषणः ।
ततोऽन्यो दीर्घपत्रः स्यात्क्षुरपत्रस्तथैव च ॥ १६६ ॥
दर्भद्वयं त्रिदोषघ्नं मधुरं तुवरं हिमम् ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णाबस्तिरुक्प्रदरास्रजित् ॥ १६७ ॥

टीका—कुश १, दर्भ २, बर्हि ३, सूच्यग्र ४, यज्ञभूषण, ये कुशके नाम हैं. अब डाभके नाम कहते हैं. इसको दूसरे प्रकारका कुश कहते हैं. दीर्घपत्र १,क्षुरपत्र २,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ये डाभके नाम हैं ॥ १६६ ॥ दोनों प्रकारके कुश त्रिदोषनाशक हैं, मधुर हैं. कसेले हैं, और शीतल हैं. मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, पेडूका दर्द, प्रदर, रक्त इनको हरनेवाले हैं ॥ १६७ ॥

अथ कत्तृण (रोहिससोधिया) नामगुणाः ।

कत्तृणं रोहिषं देवजग्धं सौगन्धिकं तथा ।
भूतीकं व्यामपौरं च श्यामकं धूमगन्धिकम् ॥ १६८ ॥
रौहिषं तुवरं तिक्तं कटुपाकं व्यपोहति ।
हृत्कण्ठव्याधिपित्तास्रशूलकासकफज्वरान् ॥ १६९ ॥

टीका--रोहिसको सोधिया इसप्रकार लोकमें कहते हैं. कत्तृण १, रोहिष २, देवजग्ध ३, सौगन्धिक ४, भूतीक ५, व्याम ६, पौर ७, श्यामक ८, धूमगन्धिक ९, यें पींरी खसके नाम हैं ॥ १६८ ॥ यह कसेली, चिरपरी, कड़वी, और हृदय, कंठ, इनके रोग, रक्तपित्त, शूल, कास, कफ, ज्वर, इनको हरनेवाली है ॥ १६९ ॥

अथ भूतृणनामगुणाः ।

गुह्यबीजं तु भूतीकं सुगन्धं जम्बुकप्रियम् ।
भूतृणं तु भवेच्छत्रा मालातृणकमित्यपि ॥ १७० ॥
भूतृणं कटुकं तिक्तं तीक्ष्णोष्णं रेचनं लघु ।
विदाहि दीपनं रूक्षमनेत्र्यं मुखशोधनम् ॥ १७१ ॥
वृष्यं च बहुविट्कं च पित्तरक्तप्रदूषणम् ।

टीका--गुह्यबीज १, भूतीक २, सुगन्ध ३, जम्बुकप्रिय ४, ये भूतृणके नाम हैं. यह भी एक घास है. और सुगंधयुत होती है. भूतृण, छत्रा मालातृणक ये भी इसीके नाम हैं ॥१७०॥ यह चरपरा है, और कड़वा, तीक्ष्ण, गरम, रेचन, हलका विदाही, दीपन, सूक्ष्म, नेत्रोंका अहितकारी, और मुखका शोधन है ॥१७१॥ नपुंसकताको हरनेवाला है, बहुत मलको उपजानेवाला और पित्तरक्तको बिगाड़नेवाला है.

अथ नीलदूर्वानामगुणाः ।

नीलदूर्वा रुहानन्ता भार्गवी शतपर्विका ॥ १७२ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शष्पा सहस्रवीर्या च शतवल्ली च कीर्तिता ।
नीलदूर्वा हिमा तिक्ता मधुरा तुवरा हरा ॥ १७३ ॥
कफपितास्रवीसर्पतृष्णादाहत्वगामयान् ।

टीका--नीलदूर्वा १, रुहा २, अनन्ता ३, भार्गवी ४, शतपर्विका ५, ये नीलदूर्वाके नाम हैं ॥१७२॥ शष्पा, सहस्रवीर्या, शतवल्ली ये काली दूबके नाम हैं. कालीदूब शीतल है, कड़वी है, मधुर है, कसेली है ॥१७३॥ और कफ, रक्तपित्त, विसर्प, तृषा, दाह, त्वचाके रोग, इनको हरनेवाली है.

अथ श्वेतदूर्वानामगुणाः।

दूर्वा शुक्ला तु गोलोमी शतवीर्या च कथ्यते ॥ १७४ ॥
श्वेता दूर्वा कषाया स्यात् स्वाद्वी व्रण्या च जीवनी ।
तिक्ता हिमा विसर्पास्रतृट्पित्तकफदाहहृत् ॥ १७५ ॥

टीका--श्वेतदूर्वा १, गोलोमी २,शतवीर्या ३,ये सफेद दूबके नाम हैं ॥१७४॥ यह कसेली है, घावोंको अच्छा करनेवाली है, जीवन है, कड़वी, शीतल, कसेली है. विसर्प, रक्त, तृषा, पित्त, कफ, दाह, इनको हरनेवाली है ॥ १७५ ॥

अथ गण्डदूर्वानामगुणाः।

गण्डदूर्वा तु गण्डाली मत्स्याक्षी शकुलाक्षकः ।
गण्डदूर्वा हिमा लोहद्राविणी ग्राहिणी लघुः ॥ १७६ ॥
तिक्ता कषाया मधुरा वातकृत्कटुपाकिनी ।
दाहतृष्णाबलासास्रकुष्ठपित्तज्वरापहा ॥ १७७ ॥

टीका--गण्डदूर्वा १, गंडाली २, मत्स्याक्षी ३, शकुलाक्षक ४, ये गांड़रके नाम हैं. यह शीतल हैं,लोहेको गलानेवाली है, कब्ज करनेवाली है ॥१७६॥ और कड़वी, कसेली, मधुर, तथा वातल है, पाकमें चरपरी है, दाह, तृषा, कफ, रक्त, कुष्ठ, पित्तज्वर, इनकी हारक है ॥ १७७ ॥

अथ विदारीकन्दनामगुणाः।

वाराहीकन्द स्वान्यैश्वर्मकारालुको मतः ।
अनूपसंभवे देशे वाराह इव लोमवान्॥ १७८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विदारी स्वादुकन्दा च सा तु क्रोष्ट्री सिता स्मृता।
इक्षुगन्धा क्षीरवल्ली क्षीरशुक्ला पयस्विनी ॥ १९ ॥
वाराहवदना गृष्टिर्बदरेत्यपि कथ्यते।
विदारी मधुरा स्निग्धा बृंहणी स्तन्यशुक्रदा ॥ १८० ॥
शीता स्वर्या मूत्रला च जीवनी बलवर्णदा।
गुरुः पित्तास्रपवनदाहान्हन्ति रसायनी ॥ १८१ ॥

टीका—इस वाराहीकंदकोही कोई आचार्य चर्मकारालुक कहते हैं और यह अनूपदेशमें वराहके समान रोमवाला होता है॥ १७८॥ विदारी १, स्वादुकन्दा २, क्रोष्ट्री ३, सिता ४, इक्षुगन्धा ५, क्षीरवल्ली ६, क्षीरशुक्ला ७, पयस्विनी ८, ॥ १७९ ॥ वाराहवदना ९, गृष्टि १० बदरा, ये विदारीकंदके नाम हैं. यह मधुर होता है, स्निग्ध है, पुष्ट है, दुग्ध और शुक्रको करनेवाला है ॥ १८०॥ शीत, स्वरको अच्छा करनेवाला है, मूत्रको उत्पन्न करनेवाला है, जीवन है, बलवर्णको देनेवाला है, भारी है, और रक्तपित्त, वात, दाह, इनका हरनेवाला है, और रसायन है ॥ १८१ ॥

अथ मुसलीकन्दनामगुणाः।

तालमूली तु विद्वद्भिर्मुसली परिकीर्तिता।
मूली तु मधुरा वृष्या वीर्योष्णा बृंहणी गुरुः ॥ १ ॥
तिक्ता रसायनी हन्ति गुदजान्यनिलं तथा।

टीका—तालमूलीको विद्वानोंने मूशली कहा है. यह मूशली मधुर है, पुरुषत्वको करनेवाली है, वीर्यमें गरम है और पुष्ट तथा भारी होती है, और कड़वी, रसायन है, तथा बवासीर, वात इनको हरनेवाली है ॥ १८२ ॥

अथ शतावरीमहाशतावरीनामगुणाः।

शतावरी बहुसुता भीरुरिन्दीवरी वरी ॥ १८३ ॥
नारायणी शतपदी शतवीर्या च पीवरी
महाशतावरी चान्या शतमूल्यर्धकण्टिका ॥ १८४ ॥
सहस्रवीर्या हेतुश्च ऋष्या प्रोक्ता महोदरी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शतावरी गुरुः शीता तिक्ता स्वाद्वी रसायनी ॥ १८५ ॥
मेधाग्निपुष्टिदा स्निग्धा नेत्र्या गुल्मातिसारजित्।
शुक्रस्तन्यकरी बल्या वातपित्तास्रशोथजित् ॥ १८६ ॥
महाशतावरी मेध्या हृद्या वृष्या रसायनी।
शीतवीर्या निहन्त्यर्शोग्रहणीनयनामयान् ॥ १८७ ॥

टीका—शतावरी १, बहुसुता २, भीरु ३, इन्दीवरी ४, वरी ५, ॥ १८३ ॥ नारायणी ६, शतपदी ७, शतवीर्या ८, पीवरी ९, ये शतावरके नाम हैं. शतमूली १, अर्धकण्टिका २, ॥ १८४ ॥ सहस्रवर्यिा ३, हेतु ४, ऋष्या ५, महोदरी ६, ये महाशतावर अर्थात् बड़ी शतावरके नाम हैं. यह भारी, शीतल, कड़वी, मधुर, रसायन ॥ १८५ ॥ और कान्ति, अग्नि, और पुष्टता, इनको देनेवाली है; स्निग्ध है; और नेत्रोंको हितकारक है; और बायगोला व अतीसारको जीतनेवाली है, शुक्रको तथा दुग्धको करनेवाली है, बलको हितकारी है; वात, पित्त, रक्त, सूजन, इनको भी जीतनेवाली है ॥ १८६ ॥ और बड़ी शतारी कान्तिको करनेवाली है, दिलको ताकत देती है; पुरुषत्वको बढ़ाती है; रसायनी है; और बवासीर संग्रहणी, नेत्ररोग, इनका नाश करनेवाली है ॥ १८७ ॥

अथाश्वगन्धा(असगंध)नामगुणाः।

गन्धान्ता वाजिनामादिरश्वगन्धा हयाह्वया।
वराहकर्णी वरदा तथोक्ता कुष्ठगन्धिनी ॥ १८८ ॥
अश्वगन्धानिलश्लेष्मश्वित्रशोथक्षयापहा।
बल्या रसायनी तिक्ता कषायोष्णातिशुक्रला ॥ १८९ ॥

टीका—गन्धान्त और घोडेकेनामआदिवाला १, अश्वगंधा २, हयाह्वया ३, वराहकर्णी ४, वरदा ५, कुष्ठगन्धिनी ६, ये असगंधके नाम हैं ॥१८८॥ यह वात, कफ, श्वित्र, सूजन, क्षय इनकी हरनेवाली, बलको देनेवाली, रसायन है, चरपरी, कसेली, और खानेसे शुक्रको उत्पन्न करती है ॥ १८९ ॥

अथ पाठानामगुणाः।

पाठाम्बष्ठाम्बष्ठकी च प्राचीना पापचेलिका।
एकाष्ठीला रसा प्रोक्ता पाठिका वरतिक्तका ॥ १९० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पाठोष्णा कटुका तीक्ष्णा वातश्लेष्महरी लघुः ।
हन्ति शूलज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः ॥ १९१ ॥
दाहकण्डूविषश्वासकृमिगुल्मगरव्रणान् ।

टीका—पाठा, अम्बष्ठा, प्राचीना, पापचेलिका, एकाष्ठीला, रसा, पाठिका, वरतिक्तका ॥ १९० ॥ ये पाठाके नाम हैं. पाठा उष्ण, कड़वी, तीक्ष्ण, वात कफको हरनेवाली, हलकी, होती है; और शूल, ज्वर, वमन, कुष्ठ, अतीसार, हृदयकी पीडा ॥ १९१ ॥ दाह, खुजली, विष, श्वास, कृमि, वायगोला, व्रण, इनकों हरती है.

अथ श्वेतनिशोता नामगुणाः।

श्वेता त्रिवृत्ता भण्डी स्यात्रिवृता त्रिपुटापि च ॥ १९२ ॥
सर्वानुभूतिः सरला निशोता रेचनीति च ।
श्वेता त्रिवृद्रेचनी स्यात्स्वादुरुष्णा समीरहृत् ॥ १९३ ॥
रूक्षा पित्तज्वरश्लेष्मपित्तशोथोदरापहा ।

टीका—श्वेता त्रिवृता, भण्डी, त्रिपुटा ॥ १९२ ॥ सर्वानुभूति, सरला, निशोता, रेचनी, ये सुफेद निशोतके नाम हैं. सुफेद निशोत दस्तावर होती है, मधुर, उष्ण, वातकी नाशक ॥ १९३ ॥ रूक्ष, पित्त, ज्वर, श्लेष्म, शोथ, उदर, इनको हरती है.

अथ श्यामनिशोतानामगुणाः।

त्रिवृच्छ्यामार्धचन्द्रा च पालिन्दी च सुषेणिका ॥ १९४ ॥
मसूरविदला कोलकैषिका कालमेषिका ।
श्यामा त्रिवृत् ततो हीनगुणा तीव्रविरेचनी ॥ १९५ ॥
मूर्च्छादाहमदभ्रान्तिकण्ठोत्कर्षणकारिणी ।

टीका—त्रिवृत्, श्यामा, अर्धचंद्रा, पालिन्दी, सुषेणिका ॥ १९४ ॥ मसूरविदला, कोलकैषिका, कालमेषिका, ये काली निशोतके नाम हैं. काली निशोत उससे हीनगुणवाली और अधिक दस्तावर होती है ॥ १९५ ॥ तथा मूर्च्छा, दाह, मद, भ्रान्ति, कंठका उत्कर्षण करनेवाली होती है.

LX 15N10
Vaidyaraj ... Bhatji ... Library ... Delhi-26
Call No. ...
Acc No. 000721

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ दन्तीद्वय (लघुदन्ती बृहद्दन्ती) नामगुणाः।

लघुदन्ती विशल्या च स्यादुदुम्बरपर्ण्यपि ॥ १९६ ॥
तथैरण्डफला शीघ्रा श्येनघण्टा घुणप्रिया।
वाराहाङ्गी च कथिता निकुम्भश्च मकूलकः ॥१९७॥

टीका—लघुदन्ती, विशल्या, उदुम्बरपर्णी, ॥ १९६ ॥ एरण्डफला, शीघ्रा, श्येनघंटा, घुणप्रिया, वाराहांगी, निकुम्भ, मकूलक, ये छोटी दन्तीके नाम हैं ॥१९७॥

बृहद्दन्ती (एरण्डपत्राविटपा.)

द्रवन्ती सा वरी चित्रा प्रत्यक्पर्ण्याखुपर्ण्यपि।
चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी प्रत्यक्श्रेण्याखुकर्ण्यपि ॥ १९८ ॥
दन्तीद्वयं सरं पाके रसे च कटु दीपनम्।
गुदाङ्कुराश्मशूलार्शःकण्डूकुष्ठविदाहनुत् ॥ १९९ ॥
तीक्ष्णोष्णं हन्ति पित्तास्रकफशोथोदरक्रिमीन्।

टीका—जिसका फल जमालगोटा है, वह बड़ी दन्ती है; उसके पत्ते एरंडके पत्तोंके समान होते हैं. द्रवंती, वरी, चित्रा, प्रत्यक्पर्णी, आखुपर्णी, चित्रोपचित्रा, न्यग्राधा, प्रत्यक्श्रेणी, आखुकर्णी, ये बड़ी दंतीके नाम हैं ॥ १९८ ॥ दोनों दन्ती दस्तावर, पाक और रसमें कड़वी, दीपन, बवासीर, पथरी, शूल, खाज, कुष्ठ, विदाह इनको हरती हैं ॥ १९९ ॥ तीखी, और उष्ण हैं; तथा रक्त, पित्त, कफ, शोथ, उदररोग, कृमि, इनको हरती हैं.

अथ लघुदन्तीफलम्.

क्षुद्रदन्तीफलं तु स्यान्मधुरं रसपाकयोः ॥ २०० ॥
शीतलं सृष्टविण्मूत्रं गरशोथकफापहम्।

टीका—छोटी दन्तीका फल रस और पाकमें मधुर होता है ॥ २०० ॥ शीतल होता है; तथा मिलेहुए मलमूत्रको निकालनेवाला, विषके शोथको तथा कफको हरता है.

अथ जयपाल (जमालगोटा) नामगुणाः।

जयपालो दन्तिबीजं विशेषात्तिन्तिडीफलम् ॥ २०१ ॥
जयपालो गुरुः स्निग्धो रेची पित्तकफापहः।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका— जयपाल, दन्तिबीज, तिन्तिडीफल ये जमालगोटेके नाम ॥२०१॥ जमालगोटा भारी, चिकना, रेचन, पित्तकफको हरता है.

अथेन्द्रवारुणीद्वयनामगुणाः ।

ऐन्द्रीन्द्रवारुणी चित्रा गवाक्षी च गवादिनी ॥ २०२ ॥
वारुणी च पराप्युक्ता सा विशाला महाफला ।
श्वेतपुष्पा मृगाक्षी च मृगैर्वारुमृगादनी ॥ २०३ ॥
गवादिनीद्वयं तिक्तं पाके कटु सरं लघु ।
वीर्योष्णं कामलापित्तकफप्लीहोदरापहम् ॥ २०४ ॥
श्वासकासापहं कुष्ठगुल्मग्रन्थिव्रणप्रणुत् ।
प्रमेहमूढगर्भामगण्डामयविषापहम् ॥ २०५ ॥

टीका—ऐन्द्री, इन्द्रवारुणी, चित्रा, गवाक्षी, गवादिनी ॥ २०२ ॥ वारुणी ये इन्द्रायनके नाम हैं. दूसरी इन्द्रायनके नाम–विशाला, महाफला, श्वेतपुष्पा, मृगाक्षी, मृगैर्वारु, मृगादनी. ये बड़ी इन्द्रायनके नाम हैं ॥ २०३ ॥ दोनों इन्द्रायन तिक्त, पाकमें कड़वी, दस्तावर, हलकी, वीर्यमें उष्ण हैं. तथा कामला, पित्त, कफ, प्लीहा, उदररोग, इनको हरती हैं ॥ २०४ ॥ और श्वास, कासकी नाशक तथा कुष्ठ बायगोला, गांठ, व्रण, इनको भी हरती हैं, और प्रमेह, मूढगर्भ, आम, गंडरोग, गण्डमाला, विष, इनको हरती है ॥ २०५ ॥

अथ नीलीनामगुणाः ।

नीली तु नीलिनी तूली कालदोला च नीलिका ।
रञ्जनी श्रीफली तुत्था ग्रामीणा मधुपर्णिका ॥ २०६ ॥
क्लीतका कालकेशी च नीलपुष्पा च सा स्मृता ।
नीलिनी रेचनी तिक्ता केश्या मोहभ्रमापहा ॥ २०७ ॥
उष्णा हन्त्युदरप्लीहवातरक्तकफानिलान् ।
आमवातमुदावर्तं मन्दं च विषमुद्धतम् ॥ २०८ ॥

टीका—नीली, नीलिनी, तूली, कालदोला, नीलिका, रंजनी, श्रीफली, तुत्था, ग्रामीणा, मधुपर्णिका ॥ २०६ ॥ क्लीतका, कालकेशी, नीलपुष्पा, ये नी-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लाके नाम हैं. नीला रेचन, केशोंको हित, मोह, भ्रमको हरती है ॥ २०७ ॥ उष्ण, तथा उदररोग, प्लीह, वातरक्त, कफवात, आमवात, उदावर्त, मन्दाग्नि, इनको हरती है और विष निकालनेवाली है ॥ २०८ ॥

अथ शरपुङ्ख(सरफोका)नामगुणाः ।

शरपुङ्खः प्लीहशत्रुर्नीलीवृक्षाकृतिश्च सः ।
शरपुङ्खो यकृत्प्लीहगुल्मव्रणविषापहः ॥ २०९ ॥
तिक्तः कषायः कासास्रश्वासज्वरहरो लघुः ।

टीका—शरपुंख, प्लीहशत्रु, ये सरफोंकाके नाम हैं. यह नीलवृक्षके आकार होती है. सरफोंका तिल्ली, प्लीह, बायगोला, व्रण, विष, इनको हरता है, और तिक्त, कसेला, ॥ २०९ ॥ श्वास, ज्वर, इनको हरता है; और हलका है.

अथ यास(जवासा)दुरालभा(धमासा)नामगुणाः ।

यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ॥ २१० ॥
दुरालभा दुरालम्भा समुद्रान्ता च रोदिनी ।
गान्धारी कच्छुरानन्ता कषाया हरविग्रहा ॥ २११ ॥
यासः स्वादुः सरतिक्तस्तुवरः शीतलो लघुः ।
कफमेदोमदभ्रान्तिपित्तासृक्कुष्ठकासजित् ॥ २१२ ॥
तृष्णाविसर्पवातास्रवमिज्वरहरः स्मृतः ।
यवासस्य गुणैस्तुल्या बुधैरुक्ता दुरालभा ॥ २१३ ॥

टीका—यास, यवास, दुःस्पर्श, धन्वयास, कुनाशक, ये जवासेके नाम हैं॥२१०॥ दुरालभा, दुरालंभा, समुद्रान्ता, रोदिनी, गान्धारी, कच्छुरा, अनन्ता, कषाया, हरविग्रहा, ये धमासेके नाम हैं ॥ २११ ॥ जवासा मधुर, दस्तावर, तिक्त, कसेला, शीतल, हलका है और कफ, मेद, मद, भ्रान्ति, रक्तपित्त, कुष्ठ, कास, इनको हरनेवाला है ॥२१२॥ और तृषा, विसर्प, वात, रक्त, वमन इनको हरता है. पंडितोंने जवासेके गुणके समान दुरालभा(धमासे)के भी गुण कहे हैं ॥ २१३ ॥

अथ मुण्डीद्वयनामगुणाः ।

मुण्डी भिक्षुरपि प्रोक्ता श्रावणी च तपोधना ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्रवणाह्वा मुण्डतिका तथा श्रवणशीर्षका ॥ २१४ ॥
महाश्रवणकान्या तु सा स्मृता भूकदम्बिका ।
कदम्बपुष्पिका च स्यादव्यथातितपस्विनी ॥ २१५ ॥
मुण्डतिका कटुः पाके वीर्योष्णा मधुरा लघुः ।
मेध्या गण्डापचीकृच्छ्रकृमियोन्यर्तिपाण्डुनुत् ॥ २१६ ॥
श्लीपदारुच्यपस्मारप्लीहमेदोगुदार्तिहृत् ।
महामुण्डी च तत्तुल्या गुणैरुक्ता महर्षिभिः ॥ २१७ ॥

टीका—मुण्डी, भिक्षु, श्रावणी, तपोधना, श्रावणाह्वा, मुंडतिका, श्रवणशीर्षका, ये छोटी मुण्डीके नाम हैं ॥ २१४ ॥ महाश्रावणिका, भूकदम्बिका, कदम्बपुष्पिका, अव्यथा, अतितपस्विनी ये बड़ी मुण्डीके नाम हैं ॥ २१५ ॥ मुण्डी पाकमें कड़वी, वीर्यमें उष्ण, मधुर, हलकी होती है; कान्तिको देनेवाली है ॥ २१६ ॥ और श्लीपद, अरुचि, मिरगी, प्लीह, मेद, गुदाकी पीडा, इनको हरनेवाली है. बड़ी मुंडी गुणोंमें उसीके समान महर्षियोंने कही है ॥ २१७ ॥

अथ अपामार्ग(चिरचिरा)नामगुणाः ।

अपामार्गस्तु शिखरी ह्यधःशल्यो मयूरकः ।
मर्कटी दुर्ग्रहा चापि किणिही खरमञ्जरी ॥ २१८ ॥
अपामार्गः सरस्तीक्ष्णो दीपनस्तिक्तकः कटुः ।
पाचनो रोचनश्छर्दिकफमेदोऽनिलापहः ॥ २१९ ॥
निहन्ति हृद्रुजाध्मानार्शःकण्डूशूलोदरापचीः ।

टीका—अपामार्ग, शिखरी, अधःशल्य, मयूरक, मर्कटी, दुर्ग्रहा, किणिही, खरमंजरी, ये चिचेंड़ेके नाम हैं ॥ २१८ ॥ चिचेंड़ा दस्तावर, तीक्ष्ण, उष्ण, दीपन, तिक्त, कटु, पाचन, रोचन, कफ, मेद, वमन, वात, इनको हरता है ॥ २१९ ॥ हृदयकी पीडा, आध्मान, बवासीर, खुजली, शूल, उदररोग, अपची, इनको हरता है.

अथ रक्तापामार्ग(चिरचिरा)नामगुणाः ।

रक्तोऽन्यो वशिरो वृत्तफलो धामार्गवोऽपि च ॥ २२० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रत्यक्पर्णी केशपर्णी कथिता कपिपिप्पली ।
अपामार्गोऽरुणो वातविष्टम्भी कफकृद् हिमः ।
रूक्षः पूर्वगुणैन्यूनः कथितो गुणवेदिभिः ।
अपामार्गफलं स्वादु रसे पाके च दुर्जरम् ॥ २२२ ॥
विष्टम्भि वातलं रूक्षं रक्तपितप्रसादनम् ।

टीका—दूसरा लाल चिरचिरा है. वशिर, वृत्तफल, अपामार्ग ॥ २२० ॥ प्रत्यक्पर्णी, केशपर्णी, कपिपिप्पली, ये लाल चिरचरेके नाम हैं. लाल चिरचिरा वातको विष्टंभ करनेवाला, कफको करनेवाला, शीतल ॥ २२१ ॥ रूक्ष, और पहलेके गुणोंसे हीन गुणके जाननेवालोंने कहा है. चिरचरेका फल रसमें मधुर, और पाकमें भी मधुर, विदग्ध ॥ २२२ ॥ विष्टंभको करनेवाला, वातको करनेवाला, रूखा, रक्तपित्तको अच्छा करनेवाला होता है.

अथ कोकिलाक्ष(तालमखाना)नामगुणाः ।

कोकिलाक्षस्तु काकेक्षुरिक्षुरः क्षुरकः क्षुरः ॥ २२३ ॥
इक्षुः काण्डेक्षुरप्युक्त इक्षुगन्धेक्षुवालिका ।
क्षुरकः शीतलो वृष्यः स्वाद्वम्लः पित्तलस्तथा ॥ २२४ ॥
तिक्तो वातामशोथाश्मतृष्णादृष्ट्यनिलास्रजित् ।

टीका—कोकिलाक्ष, काकेक्षु, इक्षुर, क्षुरक, क्षुर ॥ २२३ ॥ इक्षु, काण्डेक्षु, इक्षुगन्धा, इक्षुवालिका, ये ताल मखानेके नाम हैं. तालमखाना शीतल, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, मधुर, अम्लपित्तको उत्पन्न करनेवाला ॥ २२४ ॥ तिक्त, आमवात, पथरी, शोथ, तृषा, दृष्टिरोग, वातरक्त, इनको हरनेवाला है.

अथ ग्रन्थि(हड़संघारी)नामगुणाः ।

ग्रन्थिमानस्थिसंहारी वज्राङ्गी चास्थिशृङ्खला ।
अस्थिसंहारकः प्रोक्तो वातश्लेष्महरोऽस्थियुक् ॥ २२५ ॥
उष्णः सरः कृमिघ्नश्च दुर्नामघ्नोऽक्षिरोगजित् ।
रूक्षः स्वादुर्लघुर्वृष्यः पाचनः पित्तलः स्मृतः ॥ २२६ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

काण्डत्वग्विरहितमस्थि शृङ्खलाया माषार्द्रं द्विदलमकचुकं तदर्धम् ।
सम्पिष्टं तदनु ततस्तिलस्य तैले सम्पक्कं वटकमतीव वातहारि २२७

टीका—अस्थिमान्, अस्थिसंहार, वज्रांगी, अस्थिशृंखला, अस्थिसंहारक, ये हड़जोड़के नाम हैं हड़जोड़ा वातकफको हरता है, और हड्डियोंको जोड़नेवाला ॥ २२५ ॥ उष्ण, दस्तावर, कृमिको हरता है, बवासीरको हरता है, नेत्ररोगको हरनेवाला, रूखा, मधुर, हलका, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, पाचन, पित्तको करनेवाला कहा गया है ॥२२६॥ त्वचासे रहित हड़जोड़ेनकी लकड़ी, उससे आधी गीली छिलकेरहित उडदकी दाल इनको पीसके तिलके तेलमें पकाया हुआ बड़ा वातको हरता है ॥ २२७ ॥

अथ कुमारी(घीकुवार)नामगुणाः ।

कुमारी गृहकन्या च कन्या घृतकुमारिका ।
कुमारी भेदिनी शीता तिक्ता नेत्र्या रसायनी ॥ २२८ ॥
मधुरा बृंहणी बल्या वृष्या वातविषप्रणुत् ।
गुल्मप्लीहयकृद्वृद्धिकफज्वरहरी हरेत् ॥ २२९ ॥
ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटपित्तरक्तत्वगामयान् ।

टीका—कुमारी, गृहकन्या, कन्या, घृतकुमारिका ये घीकुवारके नाम हैं. घीकुवार भेदन, शीत, तिक्त, नेत्रको हित, रसायन ॥ २२८ ॥ मधुर, पुष्ट, बलको बढ़ानेवाली, शुक्रको उत्पन्न करनेवाली, वात, विषको हरती है. गुल्म, वायगोला, प्लीह, तिल्ली, अंडवृद्धि, कफज्वर, इनको हरती है ॥ २२९ ॥ और ग्रन्थि, अग्निदग्ध, विस्फोट, पित्तरक्त, त्वचाके रोग, इनको हरती है.

अथ श्वेतपुनर्नवानामगुणाः ।

पुनर्नवा श्वेतमूला शोथघ्नी दीर्घपत्रिका ॥ २३० ॥
कटुः कषायानुरसा पाण्डुघ्नी दीपनी सरा ।
शोफानिलगरश्लेष्महरी ब्रध्नोदरप्रणुत् ॥ २३१ ॥

टीका—पुनर्नवा, श्वेतमूला, शोथघ्नी, दीर्घपत्रिका, ये सफेद गदहपूरनाके

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नाम हैं ॥ २३० ॥ सफेद पुनर्नवा कसेला, पाण्डुरोगको हरता है, दीपन और वात, विष, कफ, इनको हरता है. तथा उदरोगको हरता है॥ २३१ ॥

अथ रक्तपुष्पपुनर्नवानामगुणाः।

पुनर्नवाऽपरा रक्ता रक्तपुष्पा शिलाटिका।
शोथघ्नः क्षुद्रवर्षाभूर्वृषकेतुः कपिल्लकः ॥ २३२ ॥
पुनर्नवाऽरुणा तिक्ता कटुपाका हिमा लघुः।
वातला ग्राहिणी श्लेष्मपित्तरक्तविनाशिनी ॥ २३३ ॥

टीका--पुनर्नवा दूसरी लाल है. रक्तपुष्पा, शिलाटिका, शोथघ्न, क्षुद्र, वर्षाभू, वृषकेतु, कपिल्लक, ये लाल पुनर्नवाके नाम हैं ॥ लाल पुनर्नवा तिक्त, पाकमें कटु, शीतल, हलका, वातको उत्पन्न करनेवाला, अग्नि, कफ, पित्त, रक्त, इनको हरता है ॥ २३३ ॥

अथ गन्धप्रसारिणीनामगुणाः।

प्रसारिणी राजबला भद्रपर्णी प्रतापनी।
सरणी सारणी भद्रा बला चापि कटम्भरा ॥ २३४ ॥
प्रसारिणी गुरुर्वृष्या बलसन्धानकृत्सरा।
वीर्योष्णा वातहृत् तिक्ता वातरक्तकफापहा ॥ २३५ ॥

टीका--प्रसरिणी, राजबला, भद्रपर्णी, प्रतापनी, सरणी, सारणी, भद्रा, बला, कटम्भरा, ये गन्धप्रसारणीके नाम हैं ॥ २३४ ॥ गन्धप्रसारिणी भारी, शुक्रको उत्पन्न करनेवाली, बलको देनेवाली, हड्डियोंको जोड़नेवाली, दस्तावर, वीर्यमें उष्ण, वातको हरती है, तिक्त है, वातरक्त, कफ, इनको हरनेवाली है ॥ २३५ ॥

अथ कलघण्टिका(कारिसांव)नामगुणाः।

इन्द्रजम्बूकवत्पत्रा सुगन्धा कलघण्टिका।
कृष्णा तु शारिवा श्यामा गोपी गोपवधूश्च सा ॥ २३६ ॥

टीका--इसके बड़ी जामनके पत्तोंके समान पत्ते होतेहैं, और सुगन्धित भी होती है. कलघंटिका, सुगन्धा, इन्द्रजम्बूक पत्तोंके समान पत्तोंवाली, कृष्णा, सारिवा, श्यामा, गोपी, गोपवधू, ये काले सारिवाके नाम हैं. इसको पूर्वसांउ भी कहते हैं २३६

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शारिवा (गौरिआ साउं) नामगुणाः ।

(इयमपि जम्बूवत्पत्रा दुग्धगर्भा व्रततिर्भवति)

धवला शारिवा गोपी गोपकन्या कृशोदरी ।
स्फोटा श्यामा गोपवल्ली लताऽस्फोता च चन्दना ॥२३७॥

(क) गोपी गोपस्य स्त्री । पुंयोगादिङीष् ।

गोपा गां पातीति गोपा गोपकन्या । श्यामापदेन कृष्णा श्वेतापि सारिवा कथ्यते । शाश्वतेन सारिवापदस्य प्रयुक्तत्वात् ।

तद्यथा–सारिवायां निशि श्यामायामौ च हरिताऽसितौ ।

सारिवायुगलं स्वादु स्निग्धं शुक्रकरं गुरु ॥ २३८ ॥
अग्निमान्द्यारुचिश्वासकासामविषनाशनम् ।
दोषत्रयामप्रदरज्वरातीसारनाशनम् ॥ २३९ ॥

टीका—इसके भी जामनकेसे पत्ते होते हैं, भीतर दूध होता है, और लतावाली होती है. धवला, सारिवा, गोपी, गोपकन्या, कृशोदरी, स्फोटा, श्यामा, गोपवल्ली, लता, आस्फोता, चन्दना ॥२३७॥ ये श्वेतसारिवाके नाम हैं. (क) (गोपी) गोपकी स्त्री. पुंयोगसे ङीष् प्रत्यय हुआ है.(गोपा) गायका जो रक्षण करती है वह गोपाहै (गोपकन्या) श्यामापदसे काली और सफेद सारिवा कही है. क्योंकि शाश्वत कोषमें शाश्वतने श्यामाके पर्यायमें शारिवा पदका प्रयोग किया है. वह जैसे–सारिवामें और रात्रीमें श्यामा है अर्थात् सारिवाको और रात्रिको श्यामा कहते हैं और हरित, और कालेको श्याम कहते हैं. दोनों सारिवा मधुर, चिकनी, शुक्रको उत्पन्न करनेवाली, भारी हैं ॥ २३८ ॥ और अग्निमान्द्य, अरुचि, श्वास, कास, आम, विष इनको हरती है, तथा त्रिदोष, रक्तप्रदर, ज्वरातिसार, इनका नाश करनेवाली है ॥ २३९ ॥

अथ भृङ्गराजनामगुणाः ।

भृङ्गराजो भृङ्गरजो मार्कवो भृङ्ग एव च ।
अङ्गारकः केशराजो भृङ्गारः केशरञ्जनः ॥ २४० ॥
भृङ्गारः कटुकस्तीक्ष्णो रूक्षोष्णः कफवातनुत् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

केश्यस्त्वच्यः कृमिश्वासकासशोथामपाण्डुनुत् ॥ २४१ ॥
दन्त्यो रसायनो बल्यः कुष्ठनेत्रशिरोऽर्तिनुत् ।

टीका—भृंगराज, भृंगरज, माकर्व, भृंग, अंगारक, केशराज, भृंगार, केशरंजन, ये भँगरेके नाम हैं ॥२४२॥ भँगरा कड़वा, तीखा, रूखा, गरम, कफवातको हरता है, और केशको हित, त्वचाको अच्छा करनेवाला, और कृमि, श्वास, कास, शोथ, तथा पाण्डुरोगको हरता है ॥२४१॥ और दांतोंको अच्छा करनेवाला, रसायन, बलको देनेवाला, कुष्ठ, मेदरोग, शिरकी पीडा, इनको हरनेवाला है.

अथ शतपुष्पी (हुली) नामगुणाः ।

शणपुष्पी कटुस्तिक्ता वामनी कफपित्तजित् ॥ २४२ ॥
शणपुष्पी स्मृता घण्टा शणपुष्पसमाकृतिः ।

टीका—इसको हुली भी कहते हैं. इसके फूल सनके फूलके समान होते हैं. शणपुष्पी, घण्टा, शणपुष्णसमाकृति, ये हुलीके नाम हैं ॥ २४२ ॥ हुली कड़वी, तिक्त, वमनको करनेवाली, कफपित्तको हरनेवाली है.

अथ त्रायमाणानामगुणाः ।

बलभद्रा त्रायमाणा त्रायन्ती गिरिसानुजा ॥ २४३ ॥
त्रायन्ती तुवरा तिक्ता सरा पित्तकफापहा ।
ज्वरहृद्रोगगुल्मार्शोभ्रमशूलविषप्रणुत् ॥ २४४ ॥

टीका—बलभद्रा, त्रायमाणा, त्रायंती, गिरिसानुजा, ये त्रायमाणके नाम हैं ॥ २४३ ॥ त्रायमाणा कसेली, तिक्त, दस्तावर, पित्तकफको हरती है, और ज्वर, हृद्रोग, बायगोला, बसावीर, भ्रम, शूल, विष, इनको हरती है ॥२४४॥

अथ मूर्वा (चूर्णहार) नामगुणाः।

मूर्वा मधुरसा देवी मोरटा तेजनी स्रवा ।
मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ॥ २४५ ॥
मूर्वा सरा गुरुः स्वादुस्तिक्ता पित्तास्रमेहनुत् ।
त्रिदोषतृष्णाहृद्रोगकण्डूकुष्ठज्वरापहा ॥ २४५ ॥

टीका—मूर्वा, मधुरसा, देवी, मोरटा, तेजनी, स्रवा, मधुलिका, मधुश्रेणी, गोकर्णी, पीलुपर्णी, ये मुरहरीके नाम हैं ॥ २४६ ॥ मुरहरीको, मल, वातको

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नीचे करनेवाली, भारी, मधुर, तिक्त, रक्तपित्त, प्रमेह, इनको हरती है, और त्रिदोष, तृषा, हृद्रोग, खुजली, कुष्ठ, ज्वर, इनको भी हरती है ॥२४६ ॥

अथ काकमाची(केवैया)नामगुणाः ।

काकमाची ध्वांक्षमाची काकाह्वा चैव वायसी ।
काकमाची त्रिदोषघ्नी स्निग्धोष्णा स्वरशुक्रदा ॥ २४७ ॥
तिक्ता रसायनी शोथकुष्ठार्शोज्वरमेहजित् ।
कटुर्नेत्रहिता हिक्काच्छर्दिहृद्रोगनाशिनी ॥ २४८ ॥

टीका—काकमाची, ध्वांक्षमाची, काकाह्वा, वायसी, ये केवैयाके नाम हैं, केवैया त्रिदोषहारक, चिकनी, उष्ण, स्वर, शुक्रको करनेवाली, ॥ २४७ ॥ तिक्त, रसायन, शोथ, कुष्ठ, बवासीर, ज्वर, प्रमेह इनको हरनेवाली है. कडवी, नेत्रको हित है. हुचकी, वमन, हृदयरोग इनको हरनेवाली है ॥ २४८ ॥

अथ काकनासा(कौआढोढी)नामगुणाः ।

काकनासा तु काकाङ्गी काकतुण्डफला च सा ।
काकनासा कषायोष्णा कटुका रसपाकयोः ॥ २४९ ॥
कफघ्नी वामनी तिक्ता शोथार्शःश्वित्रकुष्ठहृत् ।

टीका—काकनासा,, काकाङ्गी, काकतुंडफला, ये कौवाढोढीके नाम हैं. कौवाढोढी कसेली, रसपाकमें कड़वी होती है ॥ २४९ ॥ और कफको हरती है, वमन करनेवाली, तिक्त, सूजन, बवासीर, श्वित्र, कुष्ठ, इनको हरती है.

अथ काकजंघ(मसी)नामगुणाः ।

काकजंघा नदीकान्ता काकतिक्ता सुलोमशा ॥ २५० ॥
पारावतपदी दासी काका चापि प्रकीर्तिता ।
काकजंघा हिमा तिक्ता कषाया कफपित्तजित् ॥ २५१ ॥
निहन्ति ज्वरपित्तास्रज्वरकण्डूविषक्रिमीन् ।

टीका—काकजंघाको लोकमें मसी वा चकसोनी कहते हैं. काकजंघा, नदीकांता, काकतिक्ता, सुलोमशा ॥ २५० ॥ पारावतपदी, दासी, काका, ये मसी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(चकसोनी)के नाम हैं. काकजंघा तिक्त, शीतल, कसेली, कफपित्तको हरती है ॥ २५१ ॥ और ज्वर, पित्त, रक्त, कृमि, कण्डू विष, इनको हरती है.

अथ नागपुष्पीनामगुणाः ।

नागपुष्पी श्वेतपुष्पा नागिनी रामदूतिका ॥ २५२ ॥
नागिनी रोचनी तिक्ता तीक्ष्णोष्णा कफपित्तनुत् ।
विनिहन्ति विषं शूलं योनिदोषवमिक्रिमीन् ॥ २५३ ॥

टीका—नागपुष्पी, श्वेतपुष्पा, नागिनी, रामदूतिका, ये नागिनीके नाम हैं ॥ २५२ ॥ नागिनी रुचिको करनेवाली, तिक्त, तीखी, उष्ण, कफ पित्तको हरती है. और विष, शूल, योनिदोष, वमन, कृमि इनको हरती है ॥ २५३ ॥

अथ मेषशृङ्गी(मेढासींगी)नामगुणाः।

मेषशृङ्गी विषाणी स्यान्मेषवल्ल्यजशृङ्गिका ।
मेषशृङ्गी रसे तिक्ता वातला श्वासकासहृत् ॥२५४ ॥
रूक्षा पाके कटुस्तिक्ता व्रणश्लेष्माक्षिशूलनुत् ।
मेषशृङ्गीफलं तिक्तं कुष्ठमेहकफप्रणुत् ॥ २५५ ॥
दीपनं स्रंसनं कासकृमिव्रणविषापहम् ।

टीका—मेषशृंगी, विषाणी, मेषवल्ली, अजशृंगिका, ये मेंढ़ासींगीके नाम हैं- मेढ़ासींगी रसमें तिक्त, वातको उत्पन्न करनेवाली, श्वास, कासको हरती है॥२५४॥ और रूखी, पाकमें कटु, तिक्त, व्रण, कफ, नेत्रशूल, इनको हरनेवाली है. मेढ़ा-सींगीका फल तिक्त है, कुष्ठ, प्रमेह, कफ, इनको हरता है ॥ २५५ ॥ दीपन, दस्तावर, कास, कृमि, व्रण विष, इनको हरता है.

अथ हंसपादी(हंसराज)नामगुणाः ।

हंसपादी हंसपदी कीटमाता त्रिपादिका ॥ २५६ ॥
हंसपादी गुरुः शीता हन्ति रक्तविषव्रणान् ।
विसर्पदाहातीसारलूताभूताग्निरोहिणीः ॥ २५७ ॥

टीका—हंसपादी, हंसपदी, कीटमाता, त्रिपादिका, ये हंसपदी (हंसराज)के नाम हैं ॥२५६॥ हंसपदी भारी, शीत, रक्त, विष, व्रणको हरती है, और विसर्प, दाह, अतीसार, लूता, भूत, अग्निरोहिणी, इनको भी हरती है ॥ ५७ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ सोमलतानामगुणाः ।

सोमवल्ली सोमलता सोमक्षीरी द्विजप्रिया ।
सोमवल्ली त्रिदोषघ्नी कटुस्तिक्ता रसायनी ॥ २५८ ॥

टीका--सोमवल्ली, सोमलता, सोमक्षीरी, द्विजप्रिया, ये सोमलताके नाम हैं. सोमलता त्रिदोष हरती है, कड़वी, तिक्त, रसायनी है ॥ २५८ ॥

अथाकाशवल्लीनामगुणाः ।

आकाशवल्ली तु बुधैः कथितामरवल्लरी ।
खवल्ली ग्राहिणी तिक्ता पिच्छिलाक्ष्यामयापहा ॥ २५९ ॥
तुवराग्निकरी हृद्या पित्तश्लेष्मामनाशिनी ।

टीका—आकाशवल्लीको पंडित अमरबेल कहते हैं. आकाशवल्ली काबिज, तिक्त, चेपदार, नेत्ररोग को हरती है ॥ २५९ ॥ कसेली, अग्निको करनेवाली, हृद्य, पित्त, कफ, इनको निसरोगको

इनको देनेवा पातालगरुडीमनागुणाः ।

रती है.

र्णा, र्कपुष्पी हामूलः पातालगरुडाह्वयः ॥ २६० ॥
छि खी, गरम, वा वृष्यः कफघ्नः पवनापहः ।

टीका-- मधुर, और महामूल, पातालगरुड, ये पातालगरुडीके नाम हैं ॥ २६० ॥ पातालगरुडीपुष्पा वृ क्रको उत्पन्न करनेवाली, कफ हरती है, वायुको हरती है.

र्कपुष्पी, व्र अथ वन्दानामगुणाः ।

॥ अर्कपु
वन्द ादनी वृक्षभक्ष्या वृक्षरुहापि च ॥ २६१ ॥
वन्द स्याद्धिमस्तिक्तः कषायो मधुरो रसे ।
माङ्गल्यःकफवातास्रस्क्षोव्रणविषापहः ॥ २६२ ॥

टीका—वृक्षादनी, वन्दा, वृक्षभक्षा, वृक्षरुहा ॥ २६१ ॥ ये वन्दाकके नाम हैं. बन्दाक शीतल, तिक्त, कसेला, रसमें मधुर है, और मंगलकारक, कफ, वात रक्त, राक्षस, व्रण, विष, इनको हरता है ॥ २६२ ॥

अथ वटपत्रीनामगुणाः ।

वटपत्री तु कथिता मोहिनी रेचनी बुधैः ।
वटपत्री कषायोष्णा योनिमूत्रगदापहा ॥ २६३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—वटपत्री, मोहिनी, रेचनी, ये वटपत्रीके नाम पंडितोंने कहे हैं. वटपत्री कसेली, गरम है, और योनिरोग, इनको हरती है ॥ २६३ ॥

अथ हिङ्गुपत्रीनामगुणाः ।

हिङ्गुपत्री तु कबरी पृथ्वीका पृथुका पृथुः ।
हिङ्गुपत्री भवेद्रुच्या तीक्ष्णोष्णा पाचनी कटुः ॥ २६४ ॥
हृद्वस्तिरुग्विबन्धार्शःश्लेष्मगुल्मानिलापहा ।

टीका—हिंगुपत्री, कबरी, पृथ्वीका, पृथुका, पृथु, ये हिंगुपुत्रीके नाम हैं. हिंगुपत्री रुचिको करनेवाली, तीखी, उष्ण, पाचन, कड़वी है॥२६४॥और हृदय, पेडूकी पीडा, बिबन्ध, बवासीर, कफ, बायगोला, वात इनको हरती है.

अथ वंशपत्री(डीकामाली)नामगुणाः ।

वंशपत्री वेणुपत्री पिण्डा हिङ्गुशिवाटिका ॥ [illegible] ॥
हिङ्गुपत्री गुणा विज्ञैर्वंशपत्री च कीर्तित[illegible] ॥२५४

टीका—वंशपत्री, वेणुपत्री, पिण्डा, हिंगुशिवाटिका, [illegible]लनुत । [illegible]ाली) के नाम हैं ॥ २६५ ॥ वंशपत्री(डीकामाली)हिंगुपत्रीके स[illegible]॥ २५५ ॥ [illegible] है.

अथ मत्स्याक्षीनामगु[illegible]।

मत्स्याक्षी बाह्लिका मत्स्यगन्धा मत्स्या[illegible] ये मेंढासींगी [illegible] ॥ २६६॥
मत्स्याक्षी ग्राहिणी शीता कुष्ठपित्तकफास्र[illegible] कासको ह[illegible]
[illegible] हरनेवा[illegible]
लघुस्तिक्ता कषया च स्वाद्वी कटुविपाकि[illegible]है ॥ २[illegible] १६७ ॥

टीका—मत्स्याक्षी इसको मछेली और मछरिया ऐसा कहते है [illegible]६ ॥मत्स्याक्षी, बाह्लिका, मत्स्यगन्धा, मत्स्यादिनी, ये मत्स्याक्षीके नाम हैं. [illegible]ाक्षी काबिज, शीतल है,और पित्त, कुष्ठ, कफ, रक्त, इनको हरनेवाली है, और [illegible]लकी, तिक्त, कसेली,मधुर, पाकमें कटु होती है ॥ २६७ ॥

अथ सर्पाक्षी(सरहटी,गाण्डनी)नामगुणाः ।

सर्पाक्षी स्यात्तु गण्डाली तथा नाडीकपालकः ।
सर्पाक्षी कटुका तिक्ता सोष्णा कृमिविकृन्तनी ॥ २६८ ॥
वृश्चिकोन्दुरसर्पाणां विषघ्नी व्रणरोपणी ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—सर्पाक्षीको सरहटी, गंडिनी ऐसा भी कहते हैं. सार्पाक्षी, गंडाली, तथा नाडीकपालक, ये सर्पाक्षीके नाम हैं. सर्पाक्षी कड़वी, तिक्त, कुछ गरम होती है, और कृमिको हरती है ॥ २६८ ॥ और विच्छू, चूहा, सांप, इनके विषको हरती है, और घावको भरनेवाली है.

अथ शंखपुष्पी नामगुणाः ।

शङ्खपुष्पी तु शंखाह्वा माङ्गल्यकुसुमापि च ॥ २६९ ॥
शंखपुष्पी सरा मेध्या वृष्या मानसरोगहृत् ।
रसायनी कषायोष्णा स्मृतिकान्तिबलाग्निदा ॥ २७० ॥
दोषापस्मारभूतादिकुष्ठकृमिविषप्रणुत् ।

टीका—शंखपुष्पी, शंखाह्वा, मांगल्यकुसुमा, ये शंखपुष्पीके नाम हैं ॥ २६९॥ शंखपुष्पी मल, वातको अनुलोम करनेवाली, कान्तिको बढानेवाली, शुक्रको उत्पन्न करनेवाली, मानसरोगको हरती है. और रसायन, कसेली, गरम, स्मृति, कान्ति, बल, अग्नि इनको देनेवाली ॥ २७० ॥ और मृगी, भूत, कुष्ठ, कृमि, विष, इनको हरती है.

...र्णा, ...पुष्पी (अंधाहूली) नामगुणाः ।

...र, रूखी, गरम, वात... पयस्या जलकामुका ॥ २७१ ॥
... मधुर, और कटु, ...
अर्कपुष्पा ... हरनेवा...मेहपित्तविकारजित् ।

टीका—अर्कपुष्पी, क्रूरकर्मा, पयस्या, जलकामुका, ये अर्कपुष्पी (अंधाहूली) नाम हैं ॥२७१॥ अर्कपुष्पीके कृमि, कफ, प्रमेह, पित्तरोग, इनको हरती है.

अथ लज्जालुनामगुणाः ।

लाज्जालुः स्यात् शमीपत्रा समङ्गा जलकारिका ॥२७२॥
रक्तपादी नमस्कारी नाम्ना खदिरकेत्यपि ।
लज्जालुः शीतला तिक्ता कषाया कफपित्तजित् ॥ २७३ ॥
रक्तपित्तमतीसारं योनिरोगान् विनाशयेत् ।

टीका—लज्जालु, शमीपत्री, समंगा, जलकारिका, रक्तपादी, नमस्कारी, खदिरका ये लजालुके नाम हैं ॥२७२॥ लजालु शीतल, तिक्त, कसेली होती है और कफ, पित्तको हरनेवाली, तथा रक्त पित्त, अतीसार, योनिरोग, इनको हरती है ॥ २७३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथालम्बुषानामगुणाः।

अलम्बुषा खरत्वक् च तथा मेदोगला स्मृता।
अलम्बुषा लघुः स्वादुः कृमिपित्तकफापहा ॥ २७४ ॥

टीका—अलम्बुषा, खरत्वक्, मेदोगला, ये हाऊबेरके नाम हैं. हाऊबेर हलका, मधुर, कृमि, पित्त, कफ इनको हरता है ॥ २७५ ॥

अथ दुग्धिकानामगुणाः।

दुग्धिका स्वादुपर्णी स्यात्क्षीरा विक्षीरिणी तथा।
दुग्धिकोष्णा गुरू रूक्षा वातला गर्भकारिणी ॥२७५॥
स्वादुक्षीरा कटुस्तिक्ता सृष्टमूत्रमलापहा।
स्वादुर्विष्टम्भिनी वृष्या कफकुष्ठकृमिप्रणुत् ॥२७३॥

टीका—दुग्धिका, स्वादुपर्णी, क्षीरा, विक्षीरणी, ये दुग्धीके नाम हैं. दुग्धी गरम, भारी, रूखी, वातको करनेवाली और गर्भको करनेवाली ॥ २७५ ॥ और दुग्धवाली, कड़वी, तिक्त, मूत्रको करनेवाली, मल हरती है. मधुर, विष्टम्भको करनेवाली, शुक्रको उत्पन्न करनेवाली, और कफ, कुष्ठ, कृमि, इनको हरती है॥२७६॥

अथ भूम्यामलक (आंवरा [illegible] ।

भूम्यामलकिका प्रोक्ता शिवा ता[illegible]
बहुपत्रा बहुफला बहुवीर्या जट[illegible] ॥२७७॥
भूधात्री वातकृत्तिक्ता कषाया मधुरा हिमा।
पिपासाकासपित्तास्रकफकण्डूक्षतापहा ॥२७८॥

टीका—भूम्यामलकिका, शिवा, तामलकी, बहुपत्रा, बहुफला, बहुवीर्या, जटा, ये भुईआंवलेके नाम हैं ॥२७७॥ भुईआंवला वातको करनेवाला, तिक्त, कसेला, मधुर, शीतल है. और प्यास, कास, रक्तपित्त, कफ, खुजली, क्षत इनको हरता है ॥२७८॥

अथ ब्राह्मी मण्डूकपर्ण्योर्नामगुणाः।

ब्राह्मी कपोतवङ्का च शिवमल्ली सरस्वती।
मण्डूकपर्णी माण्डूकी त्वाष्ट्री दिव्या महौषधी ॥२७९॥
ब्राह्मी हिमा सरा तिक्ता लघुर्मेध्या च शीतला।
कषाया मधुरा स्वादुपाकायुष्या रसायनी॥ २८० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्वर्या स्मृतिप्रदा कुष्ठपांडुमेहास्रकासजित् ।
विषशोथज्वरहरी तद्वन्मण्डूकपर्णिनी ॥ २८१ ॥

टीका—ब्राह्मी, कपोतवंका, सोमवल्ली, सरस्वती, ये ब्रह्मीके नाम हैं मण्डूकपर्णी, मण्डूकी, त्वाष्ट्री, दिव्या, महौषधी ये मण्डूकपर्णीके नाम हैं ॥२७९॥ ब्राह्मी शीतल, सर, तिक्त, हलकी, बुद्धिको बढ़ानेवाली है; शीतल, कसेली, मधुर, पाकमें मधुर, आयुको देनेवाली, रसायनी है ॥२८०॥ और स्वरको अच्छा करनेवाली, स्मृतिको देनेवाली तथा कुष्ठ, पाण्डुरोग, प्रमेह रक्त, कास, इनको हरनेवाली है. और विष, शोथ, ज्वर, इनको हरती है. मण्डूकपर्णी भी गुणसे ब्रह्मीके समान है ॥२८१॥

अथ द्रोणपुष्पी (गूमा) नामगुणाः ।

द्रोणा च द्रोणपुष्पी च फलेपुष्पा च कीर्तिता ।
द्रोणपुष्पी गुरुः स्वाद्वी रूक्षोष्णा वातपित्तकृत् ॥ २८२ ॥
सतीक्ष्णलवणा स्वादुपाका कट्वी च भेदिनी ।
कफामकामलाशोथतमकश्वासजन्तुजित् ॥ २८३ ॥

टीका—द्रोणा, द्रोणपुष्पी, फलेपुष्पा, ये गोमाके नाम कहे गये हैं. गोमा भारी, मधुर, रूखी, गरम, वातपित्तको करनेवाली है ॥ २८२ ॥ तीखी, नमकयुक्त, पाकमें मधुर, और कटु, तथा भेदन है. और कफ, आम, कामला, शोथ, तमक, श्वास, कृमि, इनको हरनेवाली है ॥ २८३ ॥

अथ सुवर्चला (हुरहुर) द्वय नामगुणाः ।

सुवर्चला सूर्यभक्ता वरदा वदरापि च ।
सूर्यावर्ता रविप्रीताऽपरा ब्रह्मसुवर्चला ॥ २८४ ॥
सुवर्चला हिमा रूक्षा स्वादुपाका सरा गुरुः ।
अपित्तला कटुः क्षारा विष्टम्भकफवातजित् ॥ २८५ ॥
अन्या तिक्ता कषायोष्णा सरा रूक्षा लघुः कटुः ।
निहन्ति कफपित्तास्रश्वासकासारुचिज्वरान् ॥ २८६ ॥
विस्फोटकुष्ठमेहास्रयोनिरुक्कृमिपाण्डुताः ।

टीका—सुवर्चला, सूर्यभक्ता, वरदा, सूर्यावर्ता, रविप्रीता, और दूसरी ब्रह्मसुवर्चला

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ये हुरहुर और दूसरे हुरहुरके नाम हैं ॥ २८४ ॥ हुरहुर शीतल, रूखी, पाकमें मधुर, सर, भारी, पित्तको करनेवाली, कड़वी, क्षार है. और विष्टंभ, कफवातको हरनेवाली है ॥२८५॥ और दूसरी तिक्त, कसेली, गरम, सर, रूखी, हलकी, कड़वी है; और कफ, रक्त, पित्त, श्वास, कास, अरुचि, ज्वर, इनको हरती है २९६ तथा विस्फोट, कुष्ठ, प्रमेह, रक्त, योनिपीडा, क्रमि, पाण्डुता, इनको भी हरती है.

अथ वन्ध्याकर्कोटकी (बांझककोड़ी) नामगुणाः ।

वन्ध्याकर्कोटकी देवी कन्या योगीश्वरीति च ॥ २८७ ॥
नागारिर्नक्रदमनी विषकण्टकिनी तथा ।
वन्ध्याकर्कोटकी लघ्वी कफनुद्व्रणशोधिनी ॥ २८८ ॥
सर्पदर्पहरी तीक्ष्णा विसर्पविषहारिणी ।

अथ मार्कण्डिका भुइखखसा नामगुणाः ।

मार्कण्डिका भूमिवल्ली मार्कण्डी मृदुरेचनी ॥ २८९ ॥
मार्कण्डिका कुष्ठहरी ऊर्ध्वाधःकायशोधिनी ।
विषदुर्गन्धकासघ्नी गुल्मोदरविनाशिनी ॥ २९० ॥
वल्ली भूमिप्रसरणशीला ।

टीका—वन्ध्याकर्कोटकी, देवी, कन्या, योगीश्वरी ॥२८७॥ नागारि, नक्रदमनी, विषकंटकिनी ये बांजखकसाके नाम हैं. बांजखकसा हलका, कफ हरता, व्रणशोधन ॥ २८८ ॥ सर्पके दर्पको दूर करनेवाला, तीखा, विसर्प, विष, हरता है. यह लता भूमिपर फैलनेवाली होती है. मार्कंडिका, भूमिवल्ली, मार्कंडी, मृदुरेचनी ये खकसाके नाम हैं ॥ २८९ ॥ खकसा कुष्ठ हरता, ऊपर और नीचेसे शरीरको शोधन करनेवाला है और विष, दुर्गंध, कास, इनको हरता और बायगोला, उदररोग, इनको भी हरता है ॥ २९० ॥

अथ देवदाली (सोनैया) नामगुणाः ।

(इयमपि खखसावत्फला व्रततिः)

देवदाली तु वेणी स्यात्कर्कटी च गरागरी ।
देवताण्डी वृत्तकोशस्तथा जीमूत इत्यपि ॥ २९१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पीतापरा खरस्पर्शा विषघ्नी गरनाशिनी ।
देवदाली रसे तिक्ता कफार्शःशोफपाण्डुताः ॥ २९२ ॥
नाशयेद्वामनी तिक्ता क्षयहिक्काकृमिज्वरान् ।
दवेदालीफलं तिक्तं कृमिश्लेष्मविनाशनम् ॥ २९३ ॥
स्रंसनंगुल्मशूलघ्नमर्शोघ्नं वातजित्परम् ।

टीका––देवदाली जिसको सोनियाभी कहते हैं. यह खा कसके समान फल और लतावाली है. देवदाली, वेणी, कर्कटी, गरागरी, देवताण्डी, वृत्तकोशा, तथा जीमूत, ये सोनियाके नाम हैं ॥ २९१ ॥ और दूसरी पीली खरस्पर्शा, विषघ्नी, गरनाशिनी, ये पीली सोनियाके नाम हैं. सोनिया रसमें तिक्त, कफ, बवासीर, पांडुरोग, इनको हरती है ॥ २९२ ॥ और कै लानेवाली, तिक्त है. तथा क्षय, हिचकी, कृमि, ज्वर, इनको हरती हैं. सोनियाका फल तिक्त, कृमि, कफको हरता है ॥ २९३॥ और दस्तावर, बायगोला, शूल, इनको हरता है, बवासीरको हरता है, वातपित्तको हरनेवाला है.

अथ जलपिप्पली (पनिसगा) नामगुणाः ।

जलपिप्पल्यभिहिता शारदी शकुलादनी ॥ २९४ ॥
मत्स्यादनी मत्स्यगन्धा लाङ्गलीत्यपि कीर्तिता ।
जलपिप्पलिका हृद्या चक्षुष्या शुक्रला लघुः ॥ २९५ ॥
संग्राहिणी हिमा रूक्षा रक्तदाहव्रणापहा ।
कटुपाकरसा रुच्या कषाया वन्हिवर्धिनी ॥ २९६ ॥

टीका––जलपिप्पली इसको पनिसगा ऐसा लोकमें कहते हैं. जलपिप्पली, शारदी, शकुलादनी ॥ २९४ ॥ मत्स्यादनी, मत्स्यगन्धा, लांगली, ये जलपिप्पलीके नाम हैं. जलपिप्पली हृद्य, नेत्रकोहित, शुक्रको उत्पन्न करनेवाली,हलकी, काबिज, रूखी, दाह, व्रणको हरती है ॥२९५॥ और पाक रसमें कटु, रुचिको करनेवाली, कसेली, अग्निको बढ़ानेवाली है ॥ २९६ ॥

अथ गोजिह्वा(गोभी) नामगुणाः ।

गोजिव्हा गोजिका गोभी दार्विका खरपर्णिनी ।
गोजिह्वा वातला शीता ग्राहिणी कफपित्तनुत ॥ २९७ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हृद्या प्रमेहकासास्त्रव्रणज्वरहरो लघुः।
कोमला तुवरा तिक्ता स्वादुपाकरसा॥ स्मृता २९८॥

टीका—गोजिह्वा, गोजिका, गोभी; दार्विका, खरपर्णिनी, ये गोभी गावजुबांके नाम हैं. गोभी वातको करनेवाली, शीतल, काबिज, कफपित्तको हरती है॥ २९७॥ और हृद्य, प्रमेह, कास, रक्तव्रण, ज्वर, इनको हरती है. और हलकी होती है, तथा कोमल, कसेली, तिक्त, पाक और रसमें मधुर कही गई है॥२९८॥

अथ नागदमनीनामगुणाः।

विज्ञेया नागदमनी बला मोटा विषापहा।
नागपुष्पी नागपत्रा महायोगेश्वरीति च॥ २९९॥
बला मोटा कटुस्तिक्ता लघुः पित्तकफापहा।
मूत्रकृच्छ्रव्रणान् रक्षो नाशयेज्जालगर्दभम्॥ ३००॥
सर्वग्रहप्रशमनी निःशेषविषनाशिनी।
जयं सर्वत्र कुरुते धनदा सुमतिप्रदा॥ ३०१॥

टीका—नागदमनी, बला, मोटा, विषापहा, नागपुष्पी, नागपत्रा, महायोगेश्वरी ये नागदमन(नागदौन)के नाम हैं॥२९९॥नागदमन कड़वी, तीखी, हलकी, पित्तकफको हरती है, और मूत्रकृच्छ्र, घाव, राक्षस, इनको हरती है. और, जालगर्दभ नाम फुंसीको हरती है॥ ३००॥ और संपूर्ण ग्रहोंको हरती है तथा अशेष विषको हरती है और सर्वत्र जयको करती है, तथा धनको देनेवाली है, तथा अच्छी मतको देनेवाली है॥ ३०१॥

अथ वीरतरु (बरबेल) नामगुणाः।

वेलन्तरो जगति वीरतरुः प्रसिद्धः
श्वेतासितारुणविलोहितनीलपुष्पः।
स्याज्जातितुल्यकुसुमः शमिसूक्ष्मपत्रः
स्यात्कण्टकीविजलदेशज एष वृक्षः॥ ३०२॥
वेलन्तरो रसे पाके तिक्तस्तृष्णाकफापहः।
मूत्राघाताश्मजिद्ग्राही योनिमूत्रानिलार्तिजित्॥ ३०३॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका--वेलन्तर जगमें वीरितरु नामसे प्रसिद्ध है. वह सुफेद, काला, अरुण, लाल, नील ऐसे फूलवाला होता है. चमेलीईके सदृश फूल होते हैं. और शमीवृक्षक समान सूक्ष्म पत्ते होते हैं, तथा कांटोंके सहित निर्जलदेशमें यह होता है ॥३०२॥ बरबेल रस और पाकमें तिक्त होता है, और तृषा, कफको हरता है. मूत्राघात, पथरी, इनको हरनेवाला, काबिज, तथा योनिरोग, मूत्रवातकी पीडा इनको हरनेवाला है ॥ ३०० ॥

अथ छिक्कनीनामगुणाः ।

छिक्कनी क्षवकृत्तीक्ष्णा छिक्किका घ्राणदुःखदा ।
छिक्कनी कटुका रुच्या तीक्ष्णोष्णा वह्निपित्तकृत् ॥३०४॥
वातरक्तहरी कुष्ठकृमिवातकफापहा ।

टीका—छिक्कनी, क्षवकृत्, तीक्ष्णा, छिक्किका, घ्राणदुःखदा, ये छिक्कनीके नाम हैं. छिक्कनी कड़वी, रुचिको करनेवाली, तीखी, और गरम, अग्निको और पित्तको करनेवाली है ॥ ३०४ ॥ और वातरक्तको हरती तथा कुष्ठ, कृमि, वात और कफको हरती है.

अथ कुकुन्दरनामगुणाः ।

कुकुन्दरस्ताम्रचूडः सूक्ष्मपत्रो मृदुच्छदः ॥ ३०५ ॥
कुकुन्दरः कटुस्तिक्तो ज्वररक्तकफापहः ।
तन्मूलमार्द्रं निःक्षिप्तं वदने मुखशोषहृत् ॥ ३०६ ॥

टीका--कुकुन्दर, ताम्रचूड, सूक्ष्मपत्र, मृदुच्छद, ये कुकरोंदाके नाम हैं ॥३०५॥ कुकरोंदा कड़वा, तिक्त, ज्वर, रक्त, कफ, इनको हरता है. उसकी जड गीली और मुखमें डालनेसे मुखशोषको हरती है ॥ ३०६ ॥

अथ सुदर्शननामगुणाः ।

सुदर्शना सोमवल्ली चक्राह्वा मधुपर्णिका ।
सुदर्शना स्वादुरुष्णा कफशोषास्रवातजित् ॥ ३०७ ॥

टीका--सुदर्शना, सोमवल्ली, चक्राह्वा, मधुपर्णिका, ये सुदर्शनके नाम हैं. सुदर्शन मधुर, उष्ण, कफ, शोथ, रक्त, वातको हरनेवाला है ॥ ३०७ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथाखुकर्णी(मूसाकर्णी)नामगुणाः ।

आखुकर्णी त्वाखुकर्णपर्णिका भूदरीभवा ।
आखुकर्णी कटुस्तिक्ता कषाया शीतला लघुः ॥ ३०८ ॥
विपाके कटुका मूत्रकफामयकृमिप्रणुत् ।

टीका—आखुकर्णी, आखुकर्णपर्णिका, भूदरीभवा, ये मूसाकर्णीके नाम हैं. मूसाकर्णी कड़वी, तिक्त, कसेली, शीतल, हलकी, होती है ॥ ३०८ ॥ और पाकमें कड़वी तथा मूत्र, कफरोग, कृमि, इनको हरती है.

अथ मयूरशिखानामगुणाः ।

मयूराह्वशिखा प्रोक्ता सहस्राहिर्मधुच्छदा ।
नीलकण्ठशिखा लघ्वी पित्तश्लेष्मातिसारजित् ॥ ३०९ ॥
इति हरीतक्यादिनिघण्टे गुडूच्यादिवर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

टीका—मयूराह्वशिखा, सहस्रा, अहि, मधुच्छदा, नीलकंठशिखा, ये मोरशिखाके नाम हैं. मोरशिखा हलकी, पित्त और अतीसारको हरनेवाली है ॥ ३०९ ॥

इति हरीतक्यादिनिघण्टे गुडूच्यादिवर्गः समाप्तः ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्रीः ।

हरीतक्यादिनिघण्टे

पुष्पादिवर्गः ।

तत्रादौ कमलस्य नामानि गुणाश्च ।

वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ।
सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ॥ १ ॥
पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ।
बिसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च ॥ २ ॥
कमलं शीतलं वर्ण्यं मधुरं कफपित्तजित् ।
तृष्णादाहास्रविस्फोटविषवीसर्पनाशनम् ॥ ३ ॥
विशेषतः सितं पद्मं पुण्डरीकमिति स्मृतम् ।
रक्तं कोकनदं ज्ञेयं नीलमिन्दीवरं स्मृतम् ॥ ४ ॥
धवलं कमलं शीतं मधुरं कफपित्तजित् ।
तस्मादल्पगुणं किञ्चिदन्यद्रक्तोत्पलादिकम् ॥ ५ ॥

टीका--उसमें पहले कमलके नाम और गुण कहते हैं. पु. न. पद्म, नलिन, अरविंद, महोत्पल, सहस्रपत्र, कमल, शतपत्र, कुशेशय ॥ १ ॥ पंकेरुह, तामरस, सारस, सरसीरुह, बिसप्रसून, राजीव, पुष्कर, अम्भोरुह ये कमलके नाम हैं ॥२॥ कमल शीत, व्रणको अच्छा करनेवाला, मधुर, कफपित्तको हरनेवाला और तृषा, दाह, रक्त, विस्फोट, विष, विसर्प इनको हरता है ॥ ३ ॥ विशेषकरके श्वेतपद्मको पुण्डरीक ऐसा कहा है. लालको कोकनद जानना चाहिये. और नीलेको इन्दीवर ऐसा कहा है ॥ ४ ॥ श्वेतकमल शीतल, मधुर, कफको हरनेवाला है. उससे कुछ अल्प गुणवाले दूसरे लाल कमलादिक हैं ॥ ५ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ पद्मिनीनामगुणाः।

मूलनालदलोत्फुल्ला फलैः समुदिता पुनः।
पद्मिनी प्रोच्यते प्राज्ञैर्बिसिन्यादि च सा स्मृता ॥ ६ ॥
(क) आदिशब्दान्नलिनी कमलिनीत्यादि ॥
पद्मिनी शीतला गुर्वी मधुरा लवणा च सा।
पित्तासृक्कफनुद्रूक्षा वातविष्टम्भकारिणी ॥ ७ ॥

टीका—मूल, नाल, पत्र, पुष्प, फल, इनकरके युक्तको पद्मिनी ऐसा प्राज्ञ कहते हैं· और वह बिसिनीआदि कही गई है ॥ ६ ॥ (क) आदिशब्दसे नलिनी कमलिनी इत्यादिक जानना· पद्मिनी शीतल, भारी, मधुर, लवण रसोंकरके युक्त होती है और यह रक्तपित्त, कफ, इनको हरनेवाली तथा वातका विष्टम्भ करनेवाली है ॥ ७ ॥

अथ नवपत्रादिनामगुणाः।

संवर्तिका नवदलं बीजकोशस्तु कर्णिका।
किञ्जल्कः केसरः प्रोक्तो मकरन्दो रसः स्मृतः ॥ ८ ॥
पद्मनालं मृणालं स्यात्तथा बिसमिति स्मृतम्।
संवर्तिका हिमा तिक्ता कषाया दाहतृड्प्रणुत् ॥ ९ ॥
मूत्रकृच्छ्रगुदव्याधिरक्तपित्तविनाशिनी।
पद्मस्य कर्णिका तिक्ता कषाया मधुरा हिमा ॥ १० ॥
मुखवैशद्यकृल्लघ्वी तृष्णास्रकफपित्तनुत्।
किञ्जल्कः शीतलो वृष्यः कषायो ग्राहकोऽपि सः ॥ ११ ॥
कफपित्ततृषादाहरक्तार्शोविषशोथजित्।
मृणालं शीतलं वृष्यं पित्तदाहास्रजिद्गुरु ॥ १२ ॥
दुर्जरं स्वादुपाकं च स्तन्यानिलकफप्रदम्।
संग्राहि मधुरं रूक्षं शालूकमपि तद्गुणम् ॥ १३ ॥

टीका—कमलके नये पत्तोंको संवर्तिका कहते हैं· और बीजके कोशको क-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

र्णिका कहते हैं. और परागको किंजल्क, केसर कहते हैं; तथा रसको मकरंद ऐसा कहते हैं ॥८॥ और उसके नालको मृणाल, पद्मनाल, बिस ऐसा कहा है. नवीन पत्ता शीतल कसेला दाह, तृषाको हरता है ॥ ९ ॥ और मूत्रकृच्छ्र, गुदरोग, रक्तपित्त, इनको हरता है. और उसके बीजका कोश तिक्त, कसेला, शीतल है ॥ १० ॥ और मुखको स्वच्छ करनेवाला, हलका तथा तृषा,रक्त, कफ, पित्त, इनको हरता है. कमलकी केसर शीतल, शुक्रको उत्पन्न करनेवाली, कसेली, काबिज होती है ॥ ११ ॥ कफ, पित्त, तृषा, दाह, रक्तकी बवासीर, विष, सूजन, इनको हरनेवाली है. कमलका नाल शीतल, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, और पित्त, दाह, रक्त, इनको हरनेवाला, तथा भारी है ॥१२॥ दुर्जर, पाकमें मधुर, दुग्ध, वात, कफ, इनको उत्पन्न करनेवाला है तथा काबिज, मधुर, रूखा होता है और शालूक अर्थात् कमलकी जड़ भी गुणमें उसीके समान होती है ॥ १३ ॥

अथ स्थलकमलनामगुणाः ।

पद्मचारिण्यतिचरा व्यथा पद्मा च शारदा ।
पद्मानुष्णा कटुस्तिक्ता कषाया कफवातजित् ॥ १४ ॥
मूत्रकृच्छ्राश्मशूलघ्नी श्वासकासविषापहा ।

टीका—पद्मचारिणी, अतिचरा, अव्यथा, पद्मा, शारदा, ये स्थलकमलके नाम हैं. स्थलकमल शीतल, कड़वा, तिक्त, कसेला, कफ, वातको हरनेवाला है ॥१४॥ और मूत्रकृच्छ्र, पथरी, शूल, इनको तथा, श्वास, कास, विष इनको भी हरता है.

अथ कुमुदनामगुणाः ।

श्वेतं कुवलयं प्रोक्तं कुमुदं कैरवं तथा ॥ १५ ॥
कुमुदं पिच्छिलं स्निग्धं मधुरं हृद्यशीतलम् ।

टीका—श्वेतकमलको कुमुद तथा कैरव कहते हैं ॥ १५ ॥ श्वेतकमल चिकना, चेपदार, मधुर, हृद्य, शीतल, होता है.

अथ कुमुदिनीनामगुणाः ।

कुमुद्वती कैरविका तथा कुमुदिनीति च ॥ १६ ॥
सा तु मूलादिसर्वाङ्गे रक्ता समुदिता बुधैः ।
पद्मिन्या ये गुणाः प्रोक्ताः कुमुदिन्याश्च ते स्मृताः ॥ १७ ॥

टीका—कुमुद्वती, कैरविका, कुमुदिनी, ये कुमुदिनीके नाम हैं ॥१६॥ वह मूल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आदि सब अंगोंसे खिली हुई होती है, ऐसा पंडितोंने कहा है. जो पद्मिनीके गुण कहे गये हैं, वही कुमुदिनीके भी कहे हैं ॥ १७ ॥

अथ जलकुम्भी (काई) शैवल (सेवार) नामगुणाः ।

वारिपर्णी कुम्भिका स्याच्छैवालं शैवलं च तत् ।
वारिपर्णी हिमा तिक्ता लघ्वी स्वाद्वी सरा कटुः ॥ १८ ॥
दोषत्रयहरी रूक्षा शोणितज्वरशोषकृत् ।
शैवालं तुवरं तिक्तं मधुरं शीतलं लघु ॥ १९ ॥
स्निग्धं दाहतृषापित्तरक्तज्वरहरं परम् ।

टीका—वारिपणी, कुम्भिका, ये जलकुंभी (काई) के नाम हैं. शैवाल, शेवल, ये सेवारेके नाम हैं. जलकुम्भी शीतल, तिक्त, हलकी, मधुर, सर, कटु होती है ॥ १८ ॥ और त्रिदोषको हरनेवाली, रूखी, रक्त, ज्वर, इनको करनेवाली है. सिवार कसेला, तिक्त, मधुर, हलका ॥ १९ ॥ चिकना और दाह, तृषा, पित्त, रक्त, ज्वर, इनको दूर करनेवाला है.

अथ शपत्री(सेवती गुलाब)नामगुणाः।

शतपत्री तरुण्युक्ता कर्णिका चारुकेशरा ॥ २० ॥
महाकुमारी गन्धाढ्या लाक्षा कृष्णातिमञ्जुला ।
शतपत्री हिमा हृद्या ग्राहिणी शुक्रला लघुः ॥ २१ ॥
दोषत्रयास्रजिद्वर्ण्या तिक्ता कट्वी च पाचनी ।

टीका—शतपत्री, तरुणी, कर्णिका, चारुकेशरा ॥ २० ॥ महाकुमारी, गन्धाढ्या, लाक्षा, कृष्णा, अतिमञ्जुला, ये सेवतीके नाम हैं. (गुलाब भी इसी जातिका है.) सेवती शीतल, हृदयको प्रिय, काबिज, शुक्रको उत्पन्न करनेवाली, हलकी ॥ २१ ॥ और त्रिदोष, रक्त, इनको हरनेवाली और वर्णको अच्छा करनेवाली, तिक्त, कड़वी, पाचन है.

अथ वासन्ती (नेवारि)नामगुणाः ।

नैपाली कथिता तज्ज्ञैः सप्तला नवमालिका ॥ २२ ॥
वासन्ती शीतला लघ्वी तिक्ता दोषत्रयास्रजित् ।

टीका—नैपाली, सप्तला, नवमालिका, ये नेवारिके नाम हैं ॥ २२ ॥ नेवारि शीतल, हलकी, तिक्त, त्रिदोषको हरनेवाली है.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ वार्षिकी (बेला)नामगुणाः ।

श्लीपदी षट्पदा नन्दा वार्षिकी मुक्तबन्धना ॥ २३ ॥
वार्षिकी शीतला लघ्वी तिक्ता दोषत्रयापहा ।
कर्णाक्षिमुखरोगे स्यात्तैलं तद्गुणकं स्मृतम् ॥ २४ ॥

टीका--श्लीपदी, षट्पदा, नंदा, वार्षिकी, मुक्तबन्धना, ये बरसाती बेल (बेलाके) नाम हैं ॥ २३ ॥ बर्साती बेल शीतल, तिक्त, हलकी, त्रिदोषको हरती है, और कान, आंख, मुख, इनके रोगोंको हरती है. इसका तेल गुणमें इसीके समान कहा गया है ॥ २४ ॥

अथ जाती(चमेली)द्वयनामगुणाः ।

जातिर्जाती च सुमना मालती राजपुत्रिका ।
चेतिका हृद्यगन्धा च सा पीता स्वर्णजातिका ॥ २५ ॥
जातीयुगं तिक्तमुष्णं तुवरं लघु दोषजित् ।
शिरोक्षिमुखदन्तार्तिविषकुष्ठानिलास्रजित् ॥ २६ ॥

टीका--जाति, जाती, सुमना, मालिनी, राजपुत्रिका, ये चमेलीके नाम हैं. और चेतिका हृद्यगन्धा, स्वर्णजातिका, ये पीली चमेलीके नाम हैं ॥ २५ ॥ दोनों चमेली तिक्त, उष्ण, कसेली, हलकी, दोषकी हरनेवाली हैं; और शिर, नेत्र, मुख, दांत इनकी पीडा, और विष, कुष्ठ, वातरक्त, इनको हरनेवाली हैं ॥ २६ ॥

अथ यूथिकाद्वय (जुही, सुवर्णजुही) नामगुणाः ।

यूथिका गणिकाम्बष्ठा सा पीता हेमपुष्पिका ।
यूथीयुगं हिमं तिक्तं कटुपाकरसं लघु ॥ २७ ॥
मधुरं तुवरं हृद्यं पित्तघ्नं कफवातलम् ।
व्रणास्रमुखदन्ताक्षिशिरोरोगविषापहम् ॥ २८ ॥

टीका–यूथिका, गणिका, अम्बष्ठा, ये जुहीके नाम हैं. और हेमपुष्पिका, यह पीली जुहीका नाम है. दोनों जुही शीतल, पाकमें कड़वी तथा हलकी होती हैं ॥ २७ ॥ और मधुर, कसेली, हृद्य, पित्तको हरती, कफवातको करनेवाली हैं; और घाव, रक्त, मुख, दंत, नेत्र, शिर, इनके रोग तथा विष इनको हरती हैं॥२८॥

अथ चम्प(क)(चंपा)नामगुणाः ।

चाम्पेयश्चम्पकः प्रोक्तो हेमपुष्पश्च स स्मृतः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एतस्य कलिका गन्धफलिनी कथिता बुधैः ॥ २९ ॥
चम्पकः कटुकस्तिक्तः कषायो मधुरो हिमः ।
विषकृमिहरः कृच्छ्रकफवातास्रपित्तजित् ॥ ३० ॥

टीका—चाम्पेय, चम्पक, हेमपुष्प, ये चम्पेके नाम कहे हैं. इसकी फलीको गन्धफली ऐसा पंडितोंने कहा हैं ॥ २९ ॥ चम्पा कड़वा, तिक्त, कसेला, मधुर, शीतल है और विष कृमि इनको हरता, तथा मूत्रकृच्छ्र, कफ, वात, रक्तपित्त, इनको हरनेवाला है ॥ ३० ॥

अथ बकुल(मौलसरी)नामगुणाः ।

बकुलो मधुगन्धश्च सिंहकेसरकस्तथा ।
बकुलस्तुवरोऽनुष्णः कटुपाकरसो गुरुः ॥ ३१ ॥
कफपित्तविषश्वित्रकृमिदन्तगुदापहः ।

टीका—बकुल, मधुगन्ध, सिंहकेसरक, ये मौलसरीके नाम हैं. मौलसरी कसेली, शीतल, पाकरसमें कटु, हलकी, भारी है ॥ ३१ ॥ कफ, पित्त, विष, श्वित्र कृमि, दन्तरोग, इनको हरती है.

अथ बुक(बड़ी मौलसरी)नामगुणाः ।

शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो बुको वसुः ॥ ३२ ॥
बुकोऽनुष्णः कटुस्तिक्तः कफपित्तविषापहः ।
योनिशूलतृषादाहकुष्ठशोथास्रनाशनः ॥ ३३ ॥

टीका--शिवमल्ली, पाशुपत, एकाष्ठील, बुक, वसु, ये बड़ी मौलसरीके नाम हैं. ॥ ३२ ॥ बड़ी मौलसरी शीतल, कड़वी, तिक्त है और कफ, पित्त, विषको हरती है, योनिशूल, तृषा, दाह, कुष्ठ, रक्त, शोथ, इनको हरती है ॥ ३३ ॥

अथ कदम्बनामगुणाः ।

कदम्बः प्रियको नीपो वृत्तपुष्पो हरिप्रियः ।
कदम्बो मधुरः शीतः कषायो लवणो गुरुः ॥ ३४ ॥
सरो विष्टम्भकृद्रूक्षः कफस्तन्यानिलप्रदः ।

टीका--कदम्ब, प्रियक, नीप, वृत्तपुष्प, हरिप्रिय, ये कदंबके नाम हैं. कदम

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मधुर, शीतल, कसेला, नमकीन, भारी ॥ ३४ ॥ सर, विष्टम्भ करनेवाला, रूखा है, और कफ, दुग्ध, वात, इनको करनेवाला है.

अथ कुब्जकनामगुणाः ।

कुब्जको भद्रतरणिर्बृहत्पुष्पोऽतिकेसरः ॥ ३५ ॥
महासहा कण्टकाढ्या नीलालिकुलसङ्कुला ।
कुब्जकः सुरभिः स्वादुः कषायानुरसः सरः ॥ ३६ ॥
त्रिदोषशमनो वृष्यः शीतहर्ता च स स्मृतः

टीका—कुब्जक, भद्रतरणि, बृहत्पुष्प, अतिकेसर ॥३५॥ महासहा, कण्टकाढ्या, नीलालिकुलसंकुला, ये कूजाके नाम हैं. यह फूल सेवतीकी किस्मसे होता है. कूजा सुगन्ध- युक्त, मधुर, पीछेसे कसेला, सर ॥ ३६ ॥ त्रिदोषशमन, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला तथा शीत कहागया है.

अथ मल्लिकानामगुणाः ।

मल्लिका मदयन्ती च शीतभीरुश्च भूपदी ॥ ३७ ॥
मल्लिकोशा लघुर्वृष्या तिक्ता च कटुका हरेत् ।
वातपित्तास्यदृग्व्याधिकुष्ठारुचिविषव्रणान् ॥ ३८ ॥

टीका—मल्लिका, मदयन्ती, शीतभीरु, भूपदी ॥ ३७ ॥ ये मालतीके नाम हैं. मालती गरम, हलकी, शुक्रको उत्पन्न करनेवाली, तिक्त तथा कड़वी होती है; और वात, पित्त, मुख, दृष्टि, कुष्ठरोग, अरुचि, विष, व्रण, इनको हरती है ॥ ३८ ॥

अथ माधवीनामगुणाः ।

माधवी स्यात्तु वासन्ती पुण्ड्रको मण्डकोऽपि च ।
अतिमुक्तो विमुक्तश्च कामुको भ्रमरोत्सवः ॥ ३९ ॥
माधवी मधुरा शीता लघ्वी दोषत्रयापहा ।

टीका—माधवी, वासन्ती, पुण्ड्रक, मण्डक, अतिमुक्त, विमुक्त, कामुक, भ्रमरोत्सव ॥३९॥ ये मोतियाके नाम हैं. मोतिया शीतल, मधुर, हलका दोषत्रयको हरता है.

अथ केतक (केवड़ा) सुवर्णकेतकीनामगुणाः ।

केतकः सूचिकापुष्पो जम्बुकः क्रकचच्छदः ॥ ४० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सुवर्णकेतकी त्वन्या लघुपुष्पा सुगन्धिनी ।
केतकः कटुकः स्वादुर्लघुस्तिक्तः कफापहः ॥ ४१ ॥
उष्णा तिक्तरसा ज्ञेया चक्षुष्या हेमकेतकी ।

टीका—केतक, सूचिकापुष्प, जम्बुक, क्रकचच्छद, ये केवड़ेके नाम हैं ॥ ४०॥ और दूसरा सुनहरी केवड़ा छोटे फूलवाला, सुगन्धयुक्त होता है. केवड़ा मधुर. हलका, तिक्त, कफको हरता है. और सुनहरी केवड़ा ॥ ४१ ॥ उष्ण, रसमें तिक्त, नेत्रको हित होता है.

अथ किङ्किरातनामगुणाः ।

किङ्किरातो हेमगौरः पीतकः पीतभद्रकः ॥ ४२ ॥
किङ्किरातो हिमस्तिक्तः कषायश्च हरेदसौ ।
कफपित्तपिपासास्रदाहशोथवमिक्रमीन् ॥ ४३ ॥

टीका—किंकिरात, हेमगौर, पीतक, पीतभद्रक, ये किंकिरातके नाम हैं॥४२॥ किंकिरात शीतल, तिक्त, कसेला है; और कफ, पित्त, तृषा, रक्त, दाह, शोथ, वमन, कृमि इनको हरता है ॥ ४३ ॥

अथ कर्णिकारनामगुणाः ।

कर्णिकारः परिव्याधः पादपोत्पल इत्यपि ।
कर्णिकारः कटुस्तिक्तस्तुवरः शोधनो लघुः ॥ ४४ ॥
रञ्जनः सुखदः शोथश्लेष्मास्रव्रणकुष्ठजित् ।

टीका—कर्णिकार, परिव्याध, पादपोत्पल, ये कर्णिकारके नाम हैं. कर्णिकार, कड़वा, तिक्त, कसेला, शोधन, हलका ॥ ४४ ॥ रञ्जन, सुख देनेवाला, शोथ, कफ, रक्त, व्रण, कुष्ठ, इनको हरनेवाला है.

अथाशोकनामगुणाः ।

अशोको हेमपुष्पश्च वञ्जुलस्ताम्रपल्लवः ॥ ४५ ॥
अङ्केली पिण्डपुष्पश्च गन्धपुष्पो नटस्तथा ।
अशोकः शीतलस्तिक्तो ग्राही वर्ण्यः कषायकः ॥ ४६ ॥
दोषापचीतृषादाहक्रमिशोथविषास्रजित् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका--अशोक, हेमपुष्प, वंजुल, ताम्रपल्लव ॥ ४५ ॥ अंकेली, पिंडपुष्प, गंधपुष्प, नट, ये अशोकके नाम हैं. अशोक शीतल, तिक्त, काबिज, वर्णको अच्छा करनेवाला और कसेला है ॥ ४६ ॥ दोष, अपची, तृषा, दाह, कृमि, शोथ, विष, रक्त, इनको हरनेवाला है.

अथ बाणपुष्पनामगुणाः ।

अम्लातोऽम्लाटनः प्रोक्तस्तथाम्लातक इत्यपि ॥ ४७॥
कुरण्टको वर्णपुष्पः स एवोक्तो महासहः ।
अम्लाटनः कषायोष्णः स्निग्धः स्वादुश्च तिक्तकः ॥ ४८॥

टीका--अम्लात, अम्लाटन, तथा अम्लातक, कुरंटक, वर्णपुष्प, महासह ये बाण पुष्पके नाम हैं ॥४७॥ बाणपुष्प कसेला, गरम, चिकना, मधुर, तिक्त होता है. ॥ ४८ ॥

अथ सैरेयक (कटसरैया) नामगुणाः ।

सैरेयकः श्वेतपुष्पः सैरेयः कटसारिका ।
सहाचरः सहचरः स च भिन्द्यपि कथ्यते ॥ ४९ ॥
कुरण्टकोऽत्र पीते स्याद्रक्ते कुरबकः स्मृतः ।
नीले बाणा द्वयोरुक्तो दासी आर्त्तगलश्च सः ॥ ५० ॥
सैरेयः कुष्ठवातास्रकफकण्डूविषापहः ।
तिक्तोष्णो मधुरोऽनम्लः सुस्निग्धः केशरञ्जनः ॥५१ ॥

टीका—सैरेयक, श्वेतपुष्प, सैरेय, कटसारिका, सहाचर, सहचर, भिन्दी, ये कटसरैयाके नाम हैं ॥ ४९॥ पीले फूलवाली कटसरैयाको कुरंटक, और लाल-फूलवालीको कुरबक कहते हैं और नीले फूलवालीको बाणा, दासी और आर्त्तगल कहते हैं ॥५०॥ कटसरैया कुष्ठ, वातरक्त, कफ, खुजली, विष, इनको हरती है और तिक्त, गरम, मधुर, अम्लरसरहित, चिकनी, केशका रञ्जन करनेवाली होती है ५१

अथ कुन्दनामगुणाः ।

कुन्दं तु कथितं माध्यं सदापुष्पं च तत्स्मृतम् ।
कुन्दं शीतं लघु श्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तहृत् ॥ ५२ ॥

टीका—कुन्द, माध्य, सदापुष्प, ये कुन्दके नाम हैं. कुन्द शीतल, हलका, कफ, शिरकी पीडा, विष, पित्त, इनको हरता है ॥ ५२ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ मुचुकुन्दतिलकनामगुणाः ।

मुचुकुन्दः क्षत्रवृक्षश्चित्रकः प्रतिविष्णुकः ।
मुचुकुन्दः शिरःपीडापित्तास्रविषनाशनः ॥ ५३ ॥

टीका—मुचुकुन्द, क्षत्रवृक्ष, चित्रक, प्रतिविष्णुक, ये मुचकुंदके नाम हैं. मुचकुंद शिरकी पीड़ा, रक्तपित्त, विष, इनको हरता है ॥ ५३ ॥

अथ तिलकनामगुणाः ।

तिलकः क्षुरकः श्रीमान्पुरुषश्छिन्नपुष्पकः ।
तिलकः कटुकः पाके रसे चोष्णो रसायनः ॥ ५४ ॥
कफकुष्ठकृमीन्बस्तिमुखदन्तगदान्हरेत् ॥

टीका—तिलक, इसका फूल तिलके समान होता है और इसीनामसे प्रसिद्ध है. तिलक, क्षुरक, श्रीमान्, पुरुष, छिन्नपुष्पक, ये तिलकके नाम हैं. तिलक, पाकरसमें कड़वा, उष्ण, रसायन है ॥ ५४ ॥ तथा कफ, कुष्ठ, कृमि ,बस्ति, मुख, दंत, इन रोगोंको हरता है.

अथ बन्धूकनामगुणाः ।

बन्धूको बन्धुजीवश्च रक्तो माध्याह्निकोऽपि च ॥ ५५ ॥
बन्धूकः कफकृद् ग्राही वातपित्तहरो लघुः ।

टीका—बन्धूक, बन्धुजीव, रक्त, माध्याह्निक, ये दुपहरियाके नाम हैं. दुपहरिया कफको करनेवाला,काबिज, वातपित्तको हरता है और हलका होता है ॥५५॥

अथ जपात्रिसंध्ययोर्नामगुणाः।

ऊर्ध्वपुष्पं जपा चाथ त्रिसन्ध्या सारुणा सिता ॥५६॥
जपा संग्राहिणी केश्या त्रिसन्ध्या कफवातजित् ।

टीका—ऊर्ध्वपुष्प, जपा, ये जपापुष्पके नाम हैं. और लालीलिये हुए सफेद फूलवालीको त्रिसध्या कहते हैं. जवापुष्प काबिज, बालोंको अच्छा करनेवाला और त्रिसंध्या कफको हरनेवाली है ॥ ५६ ॥

अथ सिन्दूरीनामगुणाः।

सिन्दूरी रक्तबीजा च रक्तपुष्पा सुकोमला ॥ ५७ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सिन्दूरी विषपित्तास्रतृष्णावान्तिहरी हिमा ।

टीका—सिंदूरी, रक्तबीजा, रक्तपुष्पा, सुकोमला, ये सिंदुरियाके नाम हैं ॥ ५७ ॥ सिन्दूरी विष, रक्त, पित्त, तृषा, वमन, इनको हरती है. शीतल है.

अथागस्त्यनामगुणाः ।

अथागस्त्यो वङ्गसेनो मुनिपुष्पो मुनिद्रुमः ॥ ५८ ॥
अगस्तिः पित्तकफजिच्चातुर्थिकहरो हिमः ।
रूक्षो वातकरस्तिक्तः प्रतिश्यायनिवारणः ॥ ५९ ॥

टीका—अगस्त्य, वंगसेन, मुनिपुष्प, मुनिद्रुम, ये अगस्त्यके नाम हैं ॥ ५८ ॥ अगस्त्य पित्त, कफको हरनेवाला, चातुर्थिक ज्वरको हरनेवाला, शीतल, रूखा, वातको करनेवाला, तिक्त और प्रतिश्यायको हरनेवाला है ॥ ५९ ॥

अथ तुलसी शुक्ला कृष्णा च । अनयोर्नामगुणाः ।

तुलसी सुरसा ग्राम्या सुलभा बहुमञ्जरी ।
अपेतराक्षसी गौरी शूलघ्नी देवदुन्दुभिः ॥ ६० ॥
तुलसी कटुका तिक्ता हृद्योष्णा दाहपित्तकृत् ।
दीपनी कुष्ठकृच्छ्रास्रपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥ ६१ ॥
शुक्ला कृष्णा च तुलसी गुणैस्तुल्या प्रकीर्तिता ।

टीका—काली और श्वेत-तुलसी, सुरसा, ग्राम्या, सुलभा, बहुमञ्जरी, अपेतराक्षसी, गौरी, शूलघ्नी, देवदुन्दुभी ये तुलसीके नाम हैं ॥ ६० ॥ तुलसी कड़वी, तिक्त, हृद्य, उष्ण, दाह पित्तको करनेवाली और दीपन है, तथा कुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, रक्त, पसलीकी पीडा, कफ, वात, इनको हरनेवाली है ॥ ६१ ॥ काली और श्वेत तुलसी गुणमें समान कही गई है.

अथ मारुत(मारुआ)नामगुणाः ।

मारुतोऽसौ मरुबको मरुन्मरुरपि स्मृतः ॥ ६२ ॥
फणी फणिज्जकश्चापि प्रस्थपुष्पः समीरणः ।
मरुदग्निप्रदो हृद्यस्तीक्ष्णोष्णः पित्तलो लघुः ॥ ६३ ॥
वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठकृमिप्रणुत् ।
कटुपाकरसो रुच्यस्तिक्तो रूक्षः सुगन्धिकः ॥ ६४ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—मारुत, मरुबक, मरुत, मरु ॥ ६२ ॥ फणी, फणिज्झक, प्रस्थपुष्प, समीरण, ये मरुआके नाम हैं. मरुआ अग्निको करनेवाला, हृद्य, तीक्ष्ण, उष्ण, पित्तको करनेवाला, हलका है ॥ ६३ ॥ और बिच्छू आदिकोंके विष, कफ, वात, कुष्ठ, कृमि, इनको हरता है. और पाक रसमें कड़वा, रुचिको करनेवाला, तिक्त, रूखा, और, सुगन्धित होता है ॥ ६४ ॥

अथ दमनक(दवना)नामगुणाः ।

उक्तो दमनको दान्तो मुनिपुत्रस्तपोधनः ।
गन्धोत्कटो ब्रह्मजटो विनीतः कलपत्रकः ॥ ६५ ॥
दमनस्तुवरस्तिक्तो हृद्यो वृष्यः सुगन्धिकः ।
ग्रहणाद्विषकुष्ठास्रक्लेदकण्डूत्रिदोषजित् ॥ ६६ ॥

टीका—दमनक, दान्त, मुनिपुत्र, तपोधन. गन्धोत्कट, ब्रह्मजट, विनीत, कलपत्रक, ये दवनाके नाम हैं ॥ ६५ ॥ दवना कसेला, तिक्त, हृद्य, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, सुगन्धित है, और पीनस, विष कुष्ठ, रक्त, क्लेद, खुजली, त्रिदोष, इनको हरनेवाला है ॥ ६६ ॥

अथ वर्वरीनामगुणाः ।

वर्वरी तुवरी तुङ्गी खरपुष्पाजगन्धिका ।
पर्णाशस्तत्र कृष्णस्तु कठिल्लककुठेरकौ ॥ ६७ ॥
तत्र शुक्लेऽर्जकः प्रोक्तो वटपत्रस्ततोऽपरः ।
वर्वरीत्रितयं रूक्षं शीतं कटु विदाहि च ॥ ६८ ॥
तीक्ष्णं रुचिकरं हृद्यं दीपनं लघुपाकि च ।
पित्तलं कफवातास्रकण्डूकृमिविषापहम् ॥ ६९ ॥
इति हरीतिक्यादिनिघण्टे पुष्पादिवर्गः समाप्तः ।

टीका—वर्वरी, तुवरी, तुंगी, खरपुष्पा, अजगन्धिका, पर्णाश, ये वर्वरी (बबई, वनतुलसीके) नाम हैं. काली बबईका नाम कठिल्लक और कुठेरक है ॥ ६७ ॥ सुफेद बबईका नाम अर्जक, कहा है. और इससे अन्य जातिकी बबईका नाम वटपत्र कहा गया है; तीनों वर्वरी रूखी, शीतल, कड़वी, और विदाहको करनेवाली हैं ॥ ६८ ॥ तथा तीखी, रुचिको करनेवाली, हृद्य, दीपन, और पाकमें हलकी होती हैं और पित्तको करनेवाली, कफ, वातरक्त, खुजली, कृमि, विष, इनको हरती है ॥ ६९ ॥

इति हरीतक्यादिनिघण्टे बालबोधिनीटीकायां पुष्पादिवर्गः समाप्तः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्रीः।

हरीतक्यादिनिघण्टे

वटादिवर्गः।

तत्रादौ वटस्य नामानि गुणाश्च।

वटो रक्तफलः शृङ्गी न्यग्रोधः स्कन्धजो ध्रुवः।
क्षीरी वैश्रवणो वासो बहुपादो वनस्पतिः॥ १॥
वटः शीतो गुरुर्ग्राही कफपित्तव्रणापहः।
वर्ण्यो विसर्पदाहघ्नः कषायो योनिदोषहृत्॥ २॥

टीका—वट, रक्तफल, शृङ्गी, न्यग्रोध, स्कंधज, ध्रुव, क्षीरी, वैश्रवण, वास, बहुपाद, वनस्पति, ये बड़के नाम हैं॥ १॥ बड़ शीतल, भारी, काबिज, कफ, पित्त, व्रणको हरता है और वर्णको अच्छा करनेवाला तथा विसर्प और दाहको हरता, कसेला और योनिदोषको हरता है॥ २॥

अथ पिप्पलनामगुणाः।

बोधिद्रुः पिप्पलोऽश्वत्थश्चलपत्रो गजाशनः।
पिप्पलो दुर्जरः शीतः पित्तश्लेष्मव्रणास्रजित्॥ ३॥
गुरुस्तुवरको रूक्षो वर्ण्यो योनिविशोधनः।

टीका—बोधिद्रु, पीपल, अश्वत्थ, चलपत्र, गजाशन, ये पीपलके नाम हैं-पीपल दुर्ज्जर, शीतल, पित्त, कफ, व्रण, रक्तको हरनेवाला है॥ ३॥ और भारी, कसेला, रूखा, वर्णको अच्छा करनेवाला, योनिका शोधक है.

अथ पारीष(पारस पीपल)नामगुणाः।

पारीषोऽन्यः पलाशश्च कपिरुतः कमण्डलः॥ ४॥
गर्दभाण्डः कन्दरालः कपीतनसुपार्श्वकः।
पारीषो दुर्जरः स्निग्धः कृमिशुक्रकफप्रदः॥ ५॥
फलेऽम्लो मधुरो मूले कषायः स्वादुमज्जकः।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका--अन्य पारीष(पारस पीपल)होता है. यह भी पीपलहै,इसे लोकमें गजदण्ड सहोरा भी कहते हैं. पारीष, पलाश, कपिरुत, कमण्डल ॥४॥ गर्दभाण्ड, कंदराल कपीतन, सुपार्श्वक, ये पारसपीपलके नाम हैं. यह दुर्जर, चिकना, कृमि, शुक्र, कफ इनका करनेवाला है ॥ ५ ॥ फलमें खट्टा, मूलमें मधुर, गिरी कसेली और मधुर हौती है.

अथ नन्दिवृक्ष(बेलिया पीपल)नामगुणाः।

नन्दिवृक्षोऽश्वत्थभेदः प्ररोही गजपादपः ॥ ६ ॥
स्थालीवृक्षः क्षयतरुः क्षीरी च स्याद्वनस्पतिः ।
नन्दिवृक्षो लघुः स्वादुस्तिक्तस्तुवर उष्णकः ॥ ७ ॥
कटुपाकरसो ग्राही विषपित्तकफास्रजित् ।

टीका--नन्दिवृक्ष, अश्वत्थभेद, प्ररोही, गजपादप, स्थालीवृक्ष, क्षयतरु, क्षीरी, वनस्पति, ये बेरियापीपरके नाम हैं. बेरियापीपर हलका, मधुर, तिक्त, कसेला, गरम है ॥ ७ ॥ और पाकरसमें कटु, काबिज, विष, पित्त, कफ, रक्तको रहता है.

अथ उदुम्बरनामगुणाः।

उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः ॥ ८ ॥
उदुम्बरो हिमो रूक्षो गुरुः पित्तकफास्रजित् ।
मधुरस्तुवरो वर्ण्यो व्रणशोधनरोपणः ॥ ९ ॥

टीका--उदुम्बर. जंतुफल, यज्ञांग, हेमदुग्धक, ये गूलरके नाम हैं ॥ ८ ॥ गूला शीतल, रूखा, भारी, पित्त, कफ, रक्तको हरनेवाला है. और मधुर, कसेला, वर्णके अच्छा करनवाला, व्रणका शोधन रोपण है ॥ ९ ॥

अथ काकोदुम्बरिका(कठूमर)नामगुणाः।

काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलयूर्जघनेफला ।
मलयूः स्तम्भकृत्तिक्ता शीतला तुवरा जयेत् ॥ १० ॥
कफपित्तव्रणश्वित्रकुष्ठपाण्ड्वर्शकामलाः ।

टीका--काकोदुम्बरिका, फल्गु, मलयू, जघनेफला, ये कठिया गूलरके नाम हैं. कठियागूलर स्तंभन करनेवाला, तिक्त, शीतल, कसेला है ॥ १० ॥ और कफ, पित्त, व्रण, श्वित्र, कुष्ठ, पांडुरोग, बवासीर, कामला इनको हरता है.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ प्लक्ष (पाकरि) नामगुणाः ।

प्लक्षो जटी पर्कटी च स्त्रियामपि च स स्मृतः ॥ ११ ॥
प्लक्षः कषायः शिशिरो व्रणयोनिगदापहः ।
दाहपित्तकफास्रघ्नः शोथहा रक्तपित्तहृत् ॥ १२ ॥

टीका—प्लक्ष, जटी, पर्कटी, ये पाकरके नाम हैं ॥ ११ ॥ पाकर कसेला शीत व्रण, योनिरोग, इनको हरता है. और दाह, पित्त, कफ, रक्त, इनको हरता, शोथ, नाशक, रक्तपित्त हरनेवाला है ॥ १२ ॥

अथ शिरीष(सिरसा)नामगुणाः ।

शिरीषो भण्डिलो भण्डी भण्डीरश्च कपीतनः ।
शुकपुष्पः शुकतरुर्मृदुपुष्पः शुकप्रियः ॥ १३ ॥
शिरीषो मधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्च तुवरो लघुः ।
दोषशोथविसर्पघ्नः कासव्रणविषापहः ॥ १४ ॥

टीका—शिरीष, भण्डिल, भण्डी, भण्डीर, कपीतन, शुकपुष्प, शुकतरु, मृदुपुष्प-शुकप्रिय, ये शिरीषके नाम हैं ॥१३॥ शिरस मधुर, शीतल, तिक्त, कसेला, हलका होता है; और दोष, शोथ, विसर्प, कास, व्रण और विषको हरता है ॥ १४ ॥

अथ क्षीरवृक्षपञ्चवल्कलयोर्लक्षणं गुणाश्च ।

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थपारीषप्लक्षपादपाः ।
पञ्चैते क्षीरिणो वृक्षास्त्वेषां त्वक्पञ्चवल्कलम् ॥ १५ ॥
(केचित्तु पारीषस्थाने शिरीषं परे वेतसं वदन्तीति शेषः ।)
क्षीरवृक्षा हिमा वर्ण्या योनिरोगव्रणापहाः ।
रूक्षा कषाया मेदोघ्ना विसर्पामयनाशनाः ॥ १६ ॥
शोथपित्तकफास्रघ्नाः स्तन्या भग्नास्थियोजकाः ।
त्वक्पञ्चकं हिमं त्तिक्तं व्रणशोथविसर्पजित् ॥ १७ ॥
तेषां पत्रं हिमं ग्राहि कफवातास्रनुल्लघु ।
विष्टम्भाध्मानजित्तिक्तं कषायं लघु लेखनम् ॥ १८ ॥

टीका—क्षीरवृक्ष और पंचवल्कलोंका लक्षण और गुण कहते हैं. बड़, गूलर, पीपल,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पारीष,पक्ष ये पांच क्षीरवृक्ष है. इनकी छाल पंचवल्कल हैं।।१५।।कोई पारसपीपलके स्थानमें शिरीष और कोई वेतसको कहते हैं, यह शेष है. क्षरिवृक्ष शीतल, वर्णको अच्छा करनेवाले, योनिरोग, व्रण, इनको हरते हैं. सूखे कसेले, मेदको हरनेवाले, और विसर्परोगको हरते हैं ॥ १६ ॥ तथा शोथ, पित्त, कफ, रक्त, इनको हरते हैं और दूधको करनेवाले हैं; टूटे हाड़को जोड़नेवाले हैं. और पांचोंकी छाल शीतल, काबिज, व्रण, शोथ, विसर्प, इनको हरनेवाली है ॥ १७ ॥ इनके पत्ते-शीतल, कफ, वात, रक्तको हरते हैं, हलके हैं और विष्टम्भ, आध्मान, इनको हरनेवाले, तिक्त, कसेले, हलके, लेखन हैं ॥ १८ ॥

अथ शालनामगुणाः।

शालस्तु सर्जकार्श्याश्वकर्णिकाशस्यसंवराः।
अश्वकर्णः कषायः स्याद्व्रणस्वेदकफक्रिमीन्।
व्रध्मविद्रधिबाधिर्ययोनिकर्णगदान्हरेत् ॥ १९ ॥

टीका--शाल, सर्जकार्श्य, अश्वकर्णिका, शस्यसंवर, ये सालके नाम हैं साल कसेला होता है और व्रण, स्वेद, कफ, कृमि, बद, विद्रधि, बहरापन, योनिरोग, कर्णरोग इनको हरता है ॥ १९ ॥

अथ सर्जकनामगुणाः।

सर्जकोन्योऽजकर्णः स्याच्छालो मरिचपत्रिकः।
अजकर्णः कटुस्तिक्तः कषायोष्णो व्यपोहति।
कफपामाश्रुतिगदान्मेहकुष्ठविषव्रणान् ॥ २० ॥

टीका--सर्जक, अजकर्ण, शाल, मरिचपत्रक ये दूसरे शालके नाम हैं. दूसरा शाल कडुवा, तिक्त, कसेला, उष्ण होता है और कफ, खुजली, कर्णरोग, प्रमेह, कुष्ठ, विष, व्रण, इनको हरता है ॥ २० ॥

अथ शल्लकी (शालई) नामगुणाः।

शल्लकी गजभक्ष्या च सुवहा सुरभी रसा।
महेरुणा कुन्दुरुकी वल्लकी च बहुस्रवा ॥ २१ ॥
शल्लकी तुवरा शीता पित्तश्लेष्मातिसारजित्।
रक्तपित्तव्रणहरी पुष्टिकृत्समुदीरिता ॥ २२ ॥

टीका—शल्लकी, गजभक्ष्या, सुवहा, सुरभी, रसा, महेरुणा, कुन्दुरुकी, वल्लकी, बहुस्रवा ये सलईके नाम हैं ॥ २१ ॥ सलई कसेली, शीतल, पित्त, कफ,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अतिसारको हरनेवाली, रक्त, पित्त, व्रण, इनको हरनेवाली, पुष्टिको करनेवाली कही गई है ॥ २२ ॥

अथ शिंशिपा (शीसम) नामगुणाः ।

शिंशिपा पिच्छिला श्यामा कृष्णसारा च सा गुरुः ।
कपिला सैव मुनिभिर्भस्मगर्भेति कीर्तिता ॥ २३ ॥
शिंशिपा कटुका तिक्ता कषाया शोषहारिणी ।
उष्णवीर्या हरेन्मेदः कुष्ठश्वित्रवमिक्रिमीन् ॥ २४ ॥
बस्तिरुग्व्रणदाहास्रबलासान् गर्भपातिनी ।

टीका—कपिलवर्ण शीशमके नाम गुण कहते हैं. शिंशिपा, पिच्छिला, श्यामा, कृष्णसारा, ये शीशमके नाम हैं. यह भारी होता है. कपिला शीशमको भस्मगर्भा ऐसा मुनियोंनें कहा है ॥ २३ ॥ शीशम कड़वा, तिक्त, कसेला, शोषको हरता हैं, उष्णवीर्य होता है, और मेद, कुष्ठ, श्वित्र, वमन, कृमि, इनको हरता है ॥ २४ ॥ और पेड़की पीडा, व्रण, दाह, रक्त, कफ, इनको भी हरता है, और गर्भको गिराने वाला है.

अथ ककुभ (कौह) नामगुणाः ।

ककुभोऽर्जुननामाख्यो नदीसर्जश्च कीर्तितः ॥ २५ ॥
इन्द्रद्रुर्वीरवृक्षश्च वीरश्च धवलः स्मृतः ।
ककुभः शीतलो हृद्यः क्षतक्षयविषास्रजित् ॥ २६ ॥
मेदोमेहव्रणान्हन्ति तुवरः कफपित्तहृत् ।

टीका—ककुभ, अर्जुननामाख्य, नदीसर्ज ॥ २५ ॥ इन्द्रद्रु, वीरवृक्ष, वीर, धवल, ये अर्जुनवृक्षके नाम हैं. अर्जुन शीतल, हृद्य, क्षत, क्षय, विष, रक्त, इनको हरनेवाला है ॥ २६ ॥ और मेद, प्रमेह, व्रण, इनको हरता है और कसेला है तथा कफ पित्तको हरता है.

अथ बीजक (विजयसार) नामगुणाः ।

बीजकः पीतसारश्च पीतशालक इत्यपि ॥ २७ ॥
बन्धूकपुष्पः प्रियकः सर्जकश्चासनः स्मृतः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बीजकः कुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहगुदक्रुमीन् ॥ २८ ॥
हन्ति श्लेष्मास्रपित्तं च त्वच्यः केश्यो रसायनः ।

टीका—अब विजयसारके नाम गुण कहते हैं. बीजक, पीतसार, पीतशालक ॥ २७ ॥ बन्धूकपुष्प, प्रियक, सर्जक, असन, ये विजयसारके नाम हैं. विजयसार कुष्ठ, विसर्प, श्वित्र, प्रमेह, गुद, क्रुमि, इनको हरता है ॥ २८ ॥ और कफ, रक्तपित्तको भी हरता है तथा त्वचाको हित, केशोंको हित, तथा रसायन है.

अथ खदिरनामगुणाः ।

खदिरो रक्तसारश्च गायत्री दन्तधावनः ॥ २९ ॥
कण्टकी वालपत्रश्च बहुशल्यश्च यज्ञियः ।
खदिरः शीतलो दन्त्यः कण्डूकासारुचिप्रणुत् ॥ ३० ॥
तिक्तः कषायो मेदोघ्नः क्रुमिमेहज्वरव्रणान् ।
श्वित्रशोथामपित्तास्रपाण्डुकुष्ठकफान्हरेत् ॥ ३१ ॥

टीका—खदिर, रक्तसार, गायत्री, दन्तधावन, ॥ २९ ॥ कण्टकी, वालपत्र, बहुशल्य, यज्ञिय, ये खैरके नाम हैं. खैर शीतल, दन्तको अच्छा करनेवाला, कण्डू, कास, अरुचि, इनको हरता है ॥ ३० ॥ तिक्त, कसेला, मेदका हारक, क्रुमि, प्रमेह, ज्वर, व्रण, शोथ, आम, रक्तपित्त, पांडुरोग, कुष्ठ, कफ, इनको हरता है ३१

अथ श्वेतखदिरनामगुणाः ।

खदिरः श्वेतसारोऽन्यः कदरः सोमवल्कलः ।
कदरो विशदो वर्ण्यो मुखरोगकफास्रजित् ॥ ३२ ॥

टीका—सुफेद कत्था जिसको पपड़ीखैर कहते हैं. उसके नाम गुण कहते हैं. खदिर, श्वेतसार, कदर, सोमवल्कल, ये पपड़ीखैरके नाम हैं. पपड़ी खैर विशद, वर्णको अच्छा करनेवाला, मुखरोग, कफ, रक्त, इनको जीतनेवाला है ॥ ३२ ॥

अथारिमेदनामगुणाः ।

इरिमेदो विट्खदिरः कालस्कन्धोऽरिमेदकः ।
इरिमेदः कषायोष्णो मुखदन्तगदास्रजित् ॥ ३३ ॥
हन्ति कण्डूविषश्लेष्मक्रुमिकुष्ठविषव्रणान् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—इरिमेद, विट्खदिर, कालस्कन्ध, अरिमेदक, ये दुर्गंध खैरके नाम है. दुगन्धखदिर, कसेला, गरम, मुखदन्तके रोग, रक्त, इनको हरनेवाला है ॥ ३३ ॥ और खुजली, विष, कफ, कृमि, कुष्ठ, विष, व्रण, इनको हरता है.

अथ रोहितकनामगुणाः ।

रोहीतको रोहितको रोहि दाडिमष्पुकः ॥ ३४ ॥
रोहीतकः प्लीहघाती रुच्यो रक्तप्रसाधनः ।

टीका—रोहितक इसमें अनारकेसे फूल होते हैं. रोहितक, रोहीतक, रोही, दाडिमपुष्पक, ये रोहीके नाम हैं ॥ ३४ ॥ रोही प्लीहको हरनेवाली, रुचिको करनेवाली, रक्तको स्वच्छ करनेवाली है.

अथ बब्बूलकनामगुणाः ।

बब्बूलः किङ्किरातः स्यात्किङ्किणश्च सपीतकः ॥ ३५ ॥
स एव कथितस्तज्ज्ञैराभाषपदमोदिनी ।
बब्बूलः कफनुद् ग्राही कुष्ठकृमिविषापहः ॥ ३६ ॥

टीका—बब्बूल, किंकिरात, किंकिण, सपीतक, ये बब्बूलके नाम हैं ॥ ३५ ॥ उसीको उसके जाननेवालोंने आभाषपदमोदिनी ऐसा कहा है. कोकर कफहरता, काबिज, कुष्ठ, कृमि, इनको हरता है ॥ ३६ ॥

अथारिष्टकनामगुणाः ।

अरिष्टकस्तु माङ्गल्यः कृष्णवर्णोऽर्थसाधनः ।
रक्तबीजः पीतफेनः फेनिलो गर्भपातनः ॥ ३७ ॥
अरिष्टस्तु त्रिदोषघ्नो ग्रहभिद्गर्भपातनः ॥

टीका—अरिष्टक, मांगल्य, कृष्णवर्ण, अर्थसाधन, रक्तबीज, पीतफेन, फेनिल, गर्भपात, ये रीठेके नाम हैं ॥ ३७ ॥ रीठा त्रिदोषका हरनेवाला, ग्रहोंका नाशक और गर्भ गिरानेवाला है ॥

अथ पुत्रीजीवनामगुणाः ।

पुत्रीजीवो गर्भकरो यष्टीपुष्पोऽर्थसाधकः ।
पुत्रीजीवो गुरुर्वृष्यो गर्भदः श्लेष्मवातहृत् ॥ ३८ ॥
सृष्टमूत्रमलो रूक्षो हिमः स्वादुः कटुः पटुः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—पुत्रीजीव, गर्भकर, यष्टीपुष्प, अर्थसाधक, ये पुत्रजीवके नाम हैं. पुत्रीजीव भारी, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला ॥ ३८ ॥ रूखा, शीतल, मधुर, नमकीन, कड़वी होती है. गर्भको करनेवाली, कफको हरती है ॥ ३९ ॥

अथेङ्गुदनामगुणाः ।

इङ्गुदोऽङ्गारवृक्षश्च तिक्तकस्तापसद्रुमः ॥ ३९ ॥
इङ्गुदः कुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषक्रिमीन् ।
हन्त्युष्णश्वित्रशूलघ्नस्तिक्तकः कटुपाकवान् ॥ ४० ॥

टीका—इगुद, अंगारवृक्ष, तिक्तक, तापसद्रुम, ये हिंगोठेके नाम हैं. हिंगोठ कुष्ठ, भूतादिग्रह, व्रण, विष, कृमि, इनको हरता है और उष्ण है तथा श्वित्र, शूलको रता, तिक्त, कटुपाकवाल है ॥ ४० ॥

अथ जिङ्गिनीनामगुणाः ।

जिङ्गिनी झिङ्गिनी झिङ्गी सुनिर्यासा प्रमोदिनी ।
जिङ्गिनी मधुरा सोष्णा कषाया व्रणशोधिनी ॥ ४१ ॥
कटुका व्रणहृद्रोगवातातीसारहृत्पटुः ।

टीका—जिंगिनी, झिंगिनी, झिंगी, सुनिर्यासा, प्रमोदनी, ये जिंगनीके नाम हैं. जिंगनी मधुर, कुछ गरम, कसेली, व्रणशोधक है ॥४१॥ और कड़वी है, तथा व्रण, हृदयरोग, वातातिसार, इनको हरती तथा नमकीन होती है.

अथ तमालनामगुणाः ।

तमालः शालवद्वेद्यो दाहविस्फोटहृत्पुनः ॥ ४२ ॥

टीका—तमालको सालके सदृश जानना चहिये. और दाह, विस्फोटको हरता है ॥ ४२ ॥

अथ तूणीनामगुणाः ।

तूणी तुन्नक आपीनस्तुणिकः कच्छकस्तथा ।
कुठेरकः कान्तलको नन्दिवृक्षश्च नन्दकः ॥ ४३ ॥
तूणी रक्तः कटुः पाके कषायो मधुरो लघुः ।
तिक्तो ग्राही हिमो वृष्यो व्रणकुष्ठास्रपित्तजित् ॥ ४४ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—तूणी, तुन्नक, आपीन, तुणिक, कच्छक, कुठेरक, कान्तलक, नन्दिवृक्ष, नन्दक, ये तुनके नाम हैं ॥ ४३ ॥ तूनी पाकमें कड़वा, कसेला, मधुर, हलका होता है. और तिक्त, काबिज, शीतल, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, व्रण, कुष्ठ, रक्त, इनको हरनेवाला है ॥ ४४ ॥

अथ भूर्जपत्रनामगुणाः ।

भूर्जपत्रः स्मृतो भूजश्चर्मी बहुलवल्कलः ।
भूर्जो भूतग्रहश्लेष्मकर्णरुक्पित्तरक्तजित् ॥ ४५ ॥
कषायो राक्षसघ्नश्च मेदोविषहरः परः ।

टीका—भूर्जपत्र, भूर्जचर्मी, बहुवल्कल, ये भोजपत्रके नाम हैं. भोजपत्र भूत, ग्रह, कफ, कर्णपीडा, पित्तरक्त, इनको हरनेवाला है ॥ ४५ ॥ और कसेला, राक्षसको, तथा मेद, विषको हरता है.

अथ पलाशनामगुणाः ।

पलाशः किंशुकः पर्णो यज्ञियो रक्तपुष्पकः ॥ ४६ ॥
क्षारश्रेष्ठो वातहरो ब्रह्मवृक्षः समिद्वरः ।
पलाशो दीपनो वृष्यः सरोष्णो व्रणगुल्मजित् ॥ ४७ ॥
कषायः कटुकस्तिक्तः स्निग्धो गुदरोगजित् ।
भग्नसन्धानकृद्दोषग्रहण्यर्शःकृमीन्हरेत् ॥ ४८ ॥
तत्पुष्पं स्वादु पाके तु कटु तिक्तं कषायकम् ।
वातलं कफपित्तास्रकृच्छ्रजिद्ग्राहि शीतलम् ॥ ४९ ॥
तृड्दाहशमकं वात्तरक्तकुष्ठहरं परम् ।
फलं लघूष्णं मेहार्शःकृमिवातकफापहम् ॥ ५० ॥
विपाके कटुकं रूक्षं कुष्ठगुल्मोदरप्रणुत् ।

टीका—पलाश, किंशुक, पर्ण, यज्ञिय, रक्तपुष्प, ॥ ४६ ॥ क्षारश्रेष्ठ, वातहर, ब्रह्मवृक्ष, समिद्वर, ये पलाशके नाम हैं. पलाश दीपन, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, सर, उष्ण, और व्रण, बायगोला, इनको हरनेवाला है ॥ ४७ ॥ तथा कसेला,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कड़वा, तिक्त, चिकना, गुदाके रोगोंको हरनेवाला है. टूटेहुए हाड़को जोड़नेवाला, और संग्रहणी, बवासीर, कृमि, इनको हरता है ॥ ४८ ॥ इसका पुष्प पाकमें मधुर, कड़वा, तिक्त, कसेला होता है; तथा वातको करनेवाला, कफ, रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, इनको हरनेवाला, काबिज, शीतल होता है ॥ ४९ ॥ और तृषा, दाहका शमन करनेवाला, अत्यन्त वातरक्त, और कुष्ठ इनको हरता है. इसका फल हलका, उष्ण होता है, और प्रमेह, बवासीर, कृमि, वात, कफ, इनको हरता है. विपाकमें कटु, रूखा होता है. तथा कुष्ठ, बायगोला, उदररोग, इनको हरता है.

अथ शाल्मलीनामगुणाः ।

शाल्मलिस्तु भवेन्मोचा पिच्छिला पूरणीति च ॥ ५१ ॥
रक्तपुष्पा स्थिरायुश्च कण्टकाढ्या च तूलिनी ।
शाल्मली शीतला स्वाद्वी रसे पाके रसायनी ॥ ५२ ॥
श्लेष्मला पित्तवातास्रहारिणी रक्तपित्तजित् ।

टीका—शाल्मली, मोचा, पिच्छिला, पूरणी ॥ ५१ ॥ रक्तपुष्पा, स्थिरायु, कण्डकाढ्या, तूलिनी, ये सेमलके नाम हैं. सेमल शीतल, रसमें और पाकमें मधुर, रसायनी ॥ ५२ ॥ कफको करनेवाली, पित्त, वातरक्तको हरती, रक्तपित्तको हरनेवाली है.

अथ मोचरसनामगुणाः ।

निर्यासः शाल्मलेः पिच्छा शाल्मलीवेष्टकोऽपि च ॥ ५६ ॥
मोचास्रावो मोचरसो मोचनिर्यास इत्यपि ।
मोचारसो हिमो ग्राही स्निग्धो वृष्यः कषायकः ॥ ५४ ॥
प्रवाहिकातिसारामकफपित्तास्रदाहनुत् ।

टीका—मोचरस यह सेमलका गोंद है. पिच्छा, शाल्मलीवेष्टक ॥ ५३ ॥ मोचास्राव, मोचरस, मोचनिर्यास ये मोचरसके नाम हैं. मोचरस शीतल, काबिज, चिकना, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, कसेला, होता है ॥ ५४ ॥ और प्रवाहिका, अतिसार, आम, कफ, रक्तपित्त, इनको हरनेवाला है.

अथ कूटशाल्मलीनामगुणाः ।

कुत्सितः शाल्मलिः प्रोक्तो रोचनः कूटशाल्मलिः ॥ ५५ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कूटशाल्मलिकस्तिक्तः कटुकः कफवातनुत् ।
भेद्युष्णः प्लीहजठरयकृद्गुल्मविषापहः ।
भूतानाहविबन्धास्रमेदःशूलकफापहः ।

टीका--कुत्सितशाल्मली, रोचन, कूटशाल्मली, ये कूटशाल्मलीके नाम हैं ॥ ५५ ॥ कूटसेमल तिक्त, कटु, कफवातको हरता है. भेदन करनेवाला तथा उष्ण, होता है; और प्लीह, उदररोग, यकृत्, बायगोला, विष, इनको हरता है. और भूत, अफारा, विबन्ध, रक्त ॥ ५६ ॥ मेद, शूल, कफ, इनको हरता है.

अथ धवनामगुणाः ।

धवो धटो नन्दितरुः स्थिरो गौरो धुरन्धरः ॥ ५७ ॥
धवः शीतप्रमेहार्शःपाण्डुतिक्तकफापहः ।
मधुरस्तुवरस्तस्य फलं च मधुरं मनाक् ॥ ५८ ॥

टीका—धव, घट, नन्दितरु, स्थिर, गौर, धुरंधर, ये धवके नाम हैं ॥ ५७ ॥ धव शीतल, प्रमेह, बवासीर, पाण्डु, पित्त, कफ, इनको हरता है. मधुर, कसेला, होता है ॥ ५८ ॥

अथ धन्वङ्ग (धामिन)नामगुणाः ।

धन्वङ्गस्तु धनुर्वृक्षो गोत्रवृक्षः सुतेजनः ।
धन्वङ्गः कफपित्तास्रकासहृत्तुवरो लघुः ॥ ५९ ॥
बृंहणो बलकृद्रूक्षः सन्धिकृद्व्रणरोपणः ।

टीका--धन्वंग, धनुर्वृक्ष, गोत्रवृक्ष, सुतेजन, ये धामिनके नाम हैं. धामिन कफ, रक्त, पित्त, कास, इनको हरनेवाला, हलका होता है ॥ ५९ ॥ और पुष्ट, बलको करनेवाला, रूखा, संधिको करनेवाला, घावको भरनेवाला है.

अथ करीरनामगुणाः ।

करीरः क्रकरीपत्रो ग्रन्थिलो मरुभूरुहः ॥ ६० ॥
करीरः कटुकस्तिक्तः स्वेद्युष्णो भेदनः स्मृतः ।
दुर्नामकफवातामगरशोथव्रणप्रणुत् ॥ ६१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—करीर, क्रकरीपत्र, ग्रन्थिल, मरुभूरुह, ये करीरके नाम हैं ॥ ६० ॥ करीर, कड़ुवा, तिक्त, पसीना लानेवाला, उष्ण, भेदन, कहागया है. और बवासीर, कफ, वात, आम, विष, शोथ, व्रण, इनको हरता है ॥ ६१ ॥

अथ शाखोट (सहोरा) नामगुणाः ।

शाखोटः पीतकलको भूतावासः स्वरच्छदः ।
शाखोटो रक्तपित्तार्शोवातश्लेष्मातिसारजित् ॥ ६२ ॥

टीका—शाखोट, पीतकलक, भूतावास, स्वरच्छद, ये सहोराके नाम हैं. सहोरा रक्तपित्त, बवासीर, वात कफ अतीसार इनको हरनेवाला ॥ ६२ ॥

अथ वरुणनामगुणाः ।

वरुणो वरणः सेतुस्तिक्तशाकोऽग्निदीपनः ।
कषायो मधुरस्तिक्तः कटुको रूक्षको लघुः ॥ ६३ ॥

टीका—वरुण, वरण, सेतु, तिक्तशाक. ये वरुणके नाम हैं. वरुण अग्निदीपन कसेला, मधुर, तिक्त, कड़वा, रूखा, हलका होता है ॥ ६३ ॥

अथ कटभीनामगुणाः ।

कटभी स्वादुपुष्पी च मधुरेणुः कटुम्भरा ।
कटभी तु प्रमेहार्शोनाडीव्रणविषकृमीन् ॥ ६४ ॥
हन्त्युष्णा कफकुष्ठघ्नी कटु रूक्षा च कीर्तिता ।
तत्फलं तुवरं ज्ञेयं विशेषात्कफशुक्रहृत् ॥६५॥

टीका—कटभी, स्वादुपुष्पी, मधुरेणु, कटुंभर, ये कटभीके नाम हैं. यह मालकंगनीकी किस्मसे है. कटभी प्रमेह, बवासीर, नाडीव्रण, विष, कृमि, इनको हरती है ॥ ६४ और उष्ण होती है. तथा कफ, कुष्ठको हरती, कड़वी, रूखी, कहीगई है. इसका फल कसेला जानना चाहिये. विशेषकरके कफशुक्रको हरता है ॥ ६५ ॥

अथ मोक्षवृक्षनामगुणाः ।

मोक्षस्तु मोक्षकोऽपि स्याद्गोलीढो गोलिहस्तथा ।
क्षारश्रेष्ठः क्षारवृक्षो द्विविधः श्वेतकृष्णकः ॥६६ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मोक्षकः कटुकस्तिक्तो ग्राह्युष्णः कफवातहृत् ।
विषमेदोगुल्मकण्डूबस्तिरुक्कृमिशुक्रनुत् ॥६७॥

टीका—यह लोधकी किस्मसे होता है. इसके पत्ते पलाशकेसे होते हैं. मोक्षक, गोलीढ, गोलिह, क्षारश्रेष्ठ, क्षारवृक्ष, ये घंटापाटलके नाम हैं. यह दोप्रकारका होता है काला और सफेद ॥ ६६ ॥ घंटापाटल कड़वा, तिक्त, काबिज, उष्ण, कफवातको हरता है. और विष, मेद, बायगोला, खुजली, बस्तिकी पीडा और कृमि तथा शुक्रको हरता है ॥ ६७ ॥

अथ शिरीषिकानामगुणाः ।

शिरीषिका टिण्टिणिका दुर्बलाम्बुशिरीषिका ।
त्रिदोषविषकुष्ठार्शोहरी वारिशिरीषिका ॥६८॥

टीका—इसको टिंटणी भी कहते हैं. शिरीषिका, टिंटिणिका, दुर्बला, अंबुशिरीषिका, ये जलशिरीषके नाम हैं. जलशिरीष त्रिदोष,विष, कुष्ठ, बवासीर, इनको हरनेवाली है ॥ ६८ ॥

अथ शमीनामगुणाः ।

शमी सक्तुफला तुङ्गा केशहन्त्री फला शिवा ।
मङ्गल्या च तथा लक्ष्मीः शमीरः साल्पिका स्मृता ॥ ६९ ॥
शमी तिक्ता कटुः शीता कषाया रेचनी लघुः ।
कफकासभ्रमश्वासकुष्ठार्शःकृमिजित्स्मृता ॥ ७० ॥

टीका—शमी, सक्तुफला, तुंगा, केशहन्त्री, फला, शिवा, मंगल्या, लक्ष्मी, शमीर, साल्पिका, ये शमीके नाम हैं ॥ ६९ ॥ शमी कड़वी, तिक्त, शीतल, कसेली, दस्तावर, हलकी होती है; और कफ, कास, भ्रम, श्वास, कुष्ठ, बवासीर कृमि इनको हरनेवाली कही गई है ॥ ७० ॥

अथ सप्तपर्णीनामगुणाः ।

सप्तपर्णो विशालत्वक् शारदो विषमच्छदः ।
सप्तपर्णो व्रणश्लेष्मवातकुष्ठास्रजन्तुजित् ॥ ७१ ॥
दीपनः श्वासगुल्मघ्नः स्निग्धोष्णस्तुवरः सरः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—सप्तपर्ण, विशालत्वक्, शारद, विषमच्छद, ये छितवनके नाम हैं. छितवन व्रण, कफ, वात, कुष्ठ, रक्त, जन्तु, इनको हरता है ॥ ७१ ॥ और दीपन, श्वास और बायगोला इनको हरता, चिकना, उष्ण, कसेला, सर है. इसको तिरिछ भी कहते हैं.

अथ तिनिशनामगुणाः।

तिनिशः स्यन्दनो नेमी रथद्रुर्वंजुलस्तथा ॥ ७२ ॥
तिनिशः श्लेष्मपित्तास्रमेदःकुष्ठप्रमेहजित्।
तुवरः श्वित्रदाहघ्नो व्रणपाण्डुकृमिप्रणुत्॥ ७३ ॥

टीका—तिनिश, स्यंदन, नेमी, रथद्रु, वंजुल, ये तिनिशके नाम हैं ॥ ७२ ॥ तिनिश कफ, रक्त, पित्त, मेद, कुष्ठ, प्रमेह इनको हरनेवाला है. और कसेला, श्वित्र, दाहको हरता है. व्रण, पांडु, कृमि, इनको भी हरता है ॥ ७३ ॥

अथ भूमीसह(भुइंसह)नामगुणाः।

भूमीसहो द्वारदारुर्नरिदारुः स्वरच्छदः।
भूमीसहस्तु शिशिरो रक्तपित्तप्रसादनः ॥ ७४ ॥
इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे वटादिवर्गः।

टीका—भूमीसह, द्वारदारु, नरिदारु स्वरच्छद, ये भुइसाहके नाम हैं. भुइसहा शीतल, रक्तपित्तको अच्छा करनेवाला है ॥ ७४ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे वटादिवर्गः समाप्तः ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्रीः ।

हरीतक्यादिनिघण्टे

आम्रादिफलवर्गः ।

तत्रादावाम्रस्य नामानि गुणाश्च ।

आम्रः प्रोक्तो रसालश्च सहकारोऽतिसौरभः ।
कामाङ्गो मधुदूतश्च माकन्दः पिकवल्लभः ॥ १ ॥
आम्रपुष्पमतीसारकफपित्तप्रमेहनुत् ।
असृग्दुष्टिहरं शीतं रुचिकृद्ग्राहि वातलम् ॥ २ ॥

टीका—तहां पहले आमके नाम और गुणोंको कहते हैं. आम्र, रसाल, सहकार, अतिसौरभ, कामांग, मधुदूत, माकंद, पिकवल्लभ, ये आम्रके नाम हैं ॥ १ ॥ आम्रका पुष्प अतिसार, कफ, पित्त, प्रमेह, इनको हरता है और दुष्टरक्तको हरता, शीतल, रुचि करनेवाला है. काविज, वातको करनेवाला है ॥ २ ॥

अथ बालाम्र (कच्चीअमिया) गुणाः ।

आम्रं बालं कषायाम्लं रुच्यं मारुतपित्तकृत् ।
तरुणं तु तदत्यम्लं रूक्षं दोषत्रयास्रकृत् ॥ ३ ॥

टीका—कैरी (कच्ची अमिया) कसेली, खट्टी, रुचिको करनेवाली, वातपित्तको करनेवाली है. और कच्चा आम अत्यन्त खट्टा, रूखा, होता है तथा तीनों दोष और रक्तको करनेवाला है ॥ ३ ॥

अथ शुष्कामाम्रफल(अमचुर)गुणाः ।

आम्रमामं त्वचाहीनमातपेऽतिविशोषितम् ।
अम्लं स्वादु कषायं स्याद्भेदनं कफवातजित् ॥ ४ ॥

टीका—बेछाल किया धूपमें सुखाया कच्चा आम (अमचूट) खट्टा, मधुर, कसेला होता है; और भेदन, कफवातको हरनेवाला है ॥ ४ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ पक्काम्रगुणाः ।

पक्कं तु मधुरं वृष्यं स्निग्धं बलसुखप्रदम् ।
गुरु वातहरं हृद्यं वर्ण्यं शीतमपित्तलम् ॥ ५ ॥
कषायानुरसं वह्निश्लेष्मशुक्रविवर्धनम् ।
तदेव वृक्षसंपक्कं गुरु वातहरं परम् ॥ ६ ॥
मधुराम्लं रसं किञ्चिद्भवेत्पित्तप्रकोपनम् ।
आम्रं कृत्रिमपक्कं च तद्भवेत्पित्तनाशनम् ॥ ७ ॥
रसस्याम्लस्य हीनस्तु माधुर्याच्च विशेषतः ।
उषितं तत्परं रुच्यं बल्यं वीर्यकरं लघु ॥ ८ ॥
शीतलं शीघ्रपाकि स्याद्वातपित्तहरं सरम् ।

टीका—पकाहुआ आम मधुर,शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, चिकना, बल, सुखको देनेवाला है; और भारी, वातहर्ता, हृद्य, वर्णको अच्छा करनेवाला, शीतल, पित्तको करनेवाला ॥ ५ ॥ पीछेसे कसेला, अग्नि, कफ, शुक्र, इनको बढ़ानेवाला है. और वही वृक्षपर पकाहुआ भारी, परमवातहर्ता है ॥ ६ ॥ और मधुर, कुछ खट्टा, पित्तको करनेवाला है. अम्लरससे हीन और अधिक मधुरतासे पालका पकाहुआ आम पित्तको हरता है ॥ ७ ॥ और रक्खा हुआ वह [आम] परम रुचिको करनेवाला, बलको देनेवाला, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला,हलका होता है ॥ ८ ॥ और शीतल, शीघ्रपाक वाला, वातपित्तको हरता तथा सर होता है.

आम्ररसगुणाः ।

तद्रसो गालितो बल्यो गुरुर्वातहरः सरः ॥ ९ ॥
अहृद्यस्तर्पणोऽतीव बृंहणः कफवर्धनः ।

टीका—आमका निचोड़ा हुआ रस बलको देनेवाला, भारी, वात हरता तथा सर होता है ॥ ९ ॥ और हृद्य, तर्पण और पुष्टिको करनेवाला, कफको बढ़ाने वाला है.

आम्रखण्डगुणाः ।

तस्य खण्डं गुरु परं रोचनं चिरपाकि च ॥ १० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मधुरं बृंहणं बल्यं शीतलं वातनाशनम् ।
वातपित्तहरं रुच्यं बृंहणं बलवर्धनम् ।
वृष्यं वर्णकरं स्वादु दुग्धाम्रं गुरु शीतलम् ॥ ११ ॥

टीका—और उस (आम) का खंड भारी, अत्यन्त रुचिको करनेवाला, बहुत कालमें पाक होनेवाला है॥१०॥और मधुर, पुष्ट, बलको करनेवाला, शीतल, वातको हरता है. दूध और आमवात, पित्तको हरनेवाला, रुचिको करनेवाला, पुष्ट, बलको बढ़ानेवाला ॥ ११ ॥ शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, वर्णको करनेवाला, मधुर, भारी, शीतल होता है.

आम्रातियोगे गुणाः ।

मन्दानलत्वं विषमज्वरं च रक्तामयं बद्धगुदोदरं च ।
आम्रातियोगो नयनामयं वा करोति तस्मादति तानि नाद्यात् १२॥
एतदम्लाम्रविषयं मधुराम्लपरं नतु ।
मधुरस्य परं नेत्रहितत्वाद्या गुणा यतः ॥ १३ ॥
शुण्ठ्याम्भसोऽनुपानं स्यादाम्राणामतिभक्षणे ।
जीरकं वा प्रयोक्तव्यं सहसौवर्चलेन च ॥ १४ ॥

टीका—बहुत आमका सेवन मंदाग्नि, विषमज्वर, रक्तके रोग, बद्धगुदोदर और नेत्ररोग, इनको करता है, इसवास्ते बहुत न सेवन करै ॥ १२ ॥ यह खट्टे आमके विषयमें कहा है,न कि मधुर आमके विषयमें. मधुर परम नेत्रको हित होता है. क्योंकि उसके नेत्रहित आदि गुण हैं ॥ १३ ॥ आम्रके अतिभक्षणमें पीछेसे सोंठ और पानी पीवे अथवा जीरा और सोंचलनमक मिलाके पीवे ॥ १४ ॥

आम्रावर्तगुणाः ।

पक्कस्य सहकारस्य पटे विस्तारितो रसः ।
घर्मशुष्को मुहुर्दत्त आम्रावर्त इति स्मृतः ॥ १५ ॥
आम्रवर्त्तस्तृषाछर्दिवातपित्तहरः सरः ।
रुच्यः सूर्यांशुभिः पाकाल्लघुश्च स हि कीर्तितः ॥ १६ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका--पकेहुए आमके रसको कपड़ेपर फैलाकर धूपमें सुखायेहुए और फिरसे पुट दिये हुएको आम्रावर्त ऐसा कहते हैं. और अमावट ऐसा लोकमें कहते हैं ॥ १५ ॥ अमावट तृषा, वमन, वात, पित्त, इनको हरता; सर, रुचिको करनेवाला है; और सूर्यकी किरणोंके द्वारा पाक होनेसे वह हलका कहागया है ॥ १६ ॥

आम्रबीजनामगुणाः ।

आम्रबीजं कषायं स्याच्छर्द्यतीसारनाशनम् ।
ईषदम्लं च मधुरं तथा हृदयदाहनुत् ॥ १७ ॥

टीका—आमकी गुठली कसेली और वमन अतीसारको हरती, कुछ खट्टी, मधुर तथा हृद्य, दाहको हरती है ॥ १७ ॥

आम्रपल्लवनामगुणाः ।

आम्रस्य पल्लवं रुच्यं कफपित्तविनाशनम् ।

टीका--आमके पत्ते रुचिको करने वाले और कफ, पित्तको हरनेवाले हैं.

आथाम्रातकनामगुणाः ।

आम्रातकः पीतनश्च मर्कटाम्रः कपीतनः ॥ १८ ॥
आम्रातमम्लवातघ्नं गुरूष्णं रुचिकृत्सरम् ।
पक्कं तु तुवरं स्वादु रसे पाके हिमं स्मृतम् ॥ १९ ॥
तर्पणं श्लेष्मलं स्निग्धं वृष्यं विष्टम्भि बृंहणम् ।
गुरु बल्यं मरुत्पित्तक्षतदाहक्षयास्रजित् ॥ २० ॥

टीका—आम्रातक, पीतन, मर्कटाम्र, कपीतन, ये अम्बाड़ेके नाम हैं. अम्बाड़ा खट्टा, वातहरता, भारी, गरम, रुचिको करनेवाला, सर है ॥ १८ ॥ पक्का कसेला, पाकरसमें मधुर और शीतल कहा है. तर्पण, कफको करनेवाला, चिकना, शुक्र उत्पन्न करनेवाला, विष्टंभी, पुष्ट है ॥ १९ ॥ तथा भारी, बलको हित है. और वात, पित्त, क्षत, दाह, क्षय, रक्त. इनको जीतनेवाला है ॥ २० ॥

अथ राजाम्रनामगुणाः ।

राजाम्रष्टङ्क आम्रातः कामाह्वो राजपुत्रकः ।
राजाम्रं तुवरं स्वादु विशदं शीतलं गुरु ॥ २१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ग्राहि रूक्षं विबन्धाध्मवातकृत्कफपित्तनुत् ।

टीका—राजाम्र, टङ्क, आम्रात, कामाह्व, राजपुत्रक, ये राजाम्र (कलमी, मालदह, हापुस वगैरेह) के नाम हैं. यह कसेला, मधुर, विशद, शीतल, भारी ॥२१॥ काबिज, रूखा है. और विबन्ध, आध्मान, वात इनको करनेवाला और कफपित्तको हरता है.

अथ कोशाम्रनामगुणाः ।

कोशाम्र उक्तः क्षुद्राम्रः कृमिवृक्षः सुकोशकः ॥ २२ ॥
कोशाम्रः कुष्ठशोथास्रपित्तव्रणकफापहः ।
तत्फलं ग्राहि वातघ्नमम्लोऽम्लं गुरु पित्तलम् ।
पक्वं तु दीपनं रुच्यं लघूष्णं कफवातनुत् ॥ २३ ॥

टीका—कोशाम्र इसको कोशम्भ भी कहते हैं. कोशाम्र, क्षुद्राम्र, कृमिवृक्ष सुकौशिक, ये कोशाम्रके नाम हैं. कोशम्भ रक्तपित्त, कुष्ठ, सूजन, व्रण, कफ इनको हरनेवाला है ॥ २२ ॥ उसका फल काबिज, वातहरता, खट्टा और पाकमेंभी खट्टा होता है. भारी, पित्तको करनेवाला है; तथा पकाहुआ दीपन, रुचिको करनेवाला, हलका, उष्ण, कफवातको हरता है ॥ २३ ॥

अथ पनस (कटहल) नामगुणाः ।

पनसः कण्टकिफलः पणशोऽतिबृहत्फलः ।
पणशं शीतलं पक्वं स्निग्धं पित्तानिलापहम् ॥ २४ ॥
तर्पणं बृंहणं स्वादु मांसलं श्लेष्मलं भृशम् ।
बल्यं शुक्रप्रदं हन्ति रक्तपित्तक्षतव्रणान् ॥ २५ ॥
आमं तदेव विष्टम्भि वातलं तुवरं गुरु ।
दाहकृन्मधुरं बल्यं कफमेदोविवर्धनम् ॥ २६ ॥
पनसोद्भूतबीजानि वृष्याणि मधुराणि च ।
गुरूणि बद्धविट्कानि सृष्टमूत्राणि संवदेत् ॥ २७ ॥
मज्जा पनसजो वृष्यो वातपित्तकफापहः ।
विशेषात्पनसो वर्ज्यो गुल्मिभिर्मन्दवह्निभिः ॥ २८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—पनस, कंटकिफल, पणश, अतिबृहत्फल, ये कटहलके नाम हैं. पका-हुआ कटहल, शीतल और चिकना, पित्तवातको हरता है ॥ २४ ॥ तृप्तिको करने-वाला, पुष्ट, मधुर, मांसको करनेवाला और अत्यन्त कफको करनेवाला है. तथा ब-लको करनेवाला और शुक्रको करनेवाला है. रक्तपित्त, क्षत, व्रण, इनको हरता है ॥ २५ ॥ वही कच्चा विष्टम्भ करनेवाला, वातल, कसेला, भारी है; और दाहको करनेवाला, मधुर, बलको हित, कफमेदको बढ़ानेवाला है ॥ २६ ॥ कटहलके बीज शुक्रको उत्पन्न करनेवाले, मधुर हैं; और भारी, मलको रोकनेवाले तथा मूत्रको कर-नेवाले हैं ॥ २७ ॥ कटहलकी गिरी शुक्रको करनेवाली, वातपित्तकफको हरती है; विशेषकरके बायगोलावाले और मन्दाग्निवाले कटहलको न सेवन करें ॥ २८ ॥

अथ क्षुद्रपनस (बड़हल)नामगुणाः ।

लकुचः क्षुद्रपनसो लिकुचो डहुरित्यपि ।
आमं लकुचमुष्णं च गुरु विष्टम्भकृत्तथा ॥ २९ ॥
मधुरं च तथाम्लं च दोषत्रितयरक्तकृत् ।
शुक्राग्निनाशनं वापि नेत्रयोरहितं स्मृतम् ॥ ३० ॥
सुपक्वं तत्तु मधुरमम्लं चानिलपित्तहृत् ।
कफवह्निकरं रुच्यं वृष्यं विष्टम्भकं च तत् ॥ ३१ ॥

टीका—लकुच, क्षुद्रपनस, लिकुच, डहु, इतने नाम बड़हल क हैं. कच्चा बड़हल गरम, भारी, विष्टम्भको करनेवाला है ॥२९॥ और मधुर तथा खट्टा, तीनों दोषोंको और रक्तको करनेवाला है और शुक्र तथा अग्निको हरता और नेत्रोंको अहित कहा है॥ ३०॥ और अच्छेप्रकार पका हुआ खट्टा और मीठा होता है; तथा वातपित्तको हरनेवाला है; और कफ अग्निको करनेवाला, रुचिको हित, शुक्रको करनेवाला और विष्टम्भक है ॥ ३१ ॥

अथ कदलीनामगुणाः ।

कदली वारणा मोचाम्बुसारांशुमतीफला ।
मोचाफलं स्वादु शीतं विष्टम्भि कफनुद्गुरु ॥ ३२ ॥
स्निग्धं पित्तास्रतृड्दाहक्षतक्षयसमीरजित् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पक्कं स्वादु हिमं पाके स्वादु वृष्यं च बृंहणम् ।
क्षुत्तृष्णानेत्रगदहृन्मेदोघ्नं रुचिमांसकृत् ॥ ३३ ॥

माणिक्यमर्त्यामृतचम्पकाद्या भेदाः कदल्या बहवोऽपि सन्ति ।
उक्ता गुणास्तेष्वधिका भवन्ति निर्दोषता स्याल्लघुता च तेषाम् ॥३४

टीका—कदली, वारणा, मोचा, अम्बुसारा, अंशुमतीफला, ये केलेके नाम हैं. केला मधुर, शीतल, विष्टंभ करनेवाला, कफहर्ता, भारी है ॥ ३२ ॥ और चिकना, पित्त, रक्त, तृषा दाहको हरता, और क्षत, क्षय, वात, इनको हरनेवाला है. पका हुआ शीतल, मधुर, और पाकमें मधुर, शुक्रको करनेवाला और पुष्ट है. क्षुधा, तृषा, नेत्ररोग इनको हरता, प्रमेहको हरता, तथा रुचि और मांसको करनेवाला है ॥ ३३ ॥ माणिक्य, मर्त्य, अमृत, चंपक आदि केलेके बहुत भेद हैं. उनमें ये कहेहुए गुणमें अधिक हैं; और उनमें निर्दोषता तथा लघुता है ॥ ३४ ॥

अथ चिर्भटनामगुणाः ।

चिर्भटं धेनुदुग्धं च तथा गोरक्षकर्कटी ।
चिर्भटं मधुरं रूक्षं गुरु पित्तकफापहम् ॥ ३५ ॥
अनुष्णं ग्राहि विष्टम्भि पक्कं तूष्णं च पित्तलम् ।

टीका—चिर्भट, धेनुदुग्ध, गोरक्षकर्कटी, ये भुकुर फूट, कचरिया, ककड़ीके नाम- हैं. भुकुर मधुर, रूक्ष, पित्त कफको हरता, तथा भारी है ॥ ३५ ॥ और उष्ण, का- बिज, विष्टम्भी है; और पकाहुआ उष्ण तथा पित्तको करनेवाला है.

अथ नारिकेलनामगुणाः ।

नारिकेरो दृढफलो लाङ्गली कूर्चशीर्षकः ॥ ३६ ॥
तुङ्गस्कन्धफलश्चैव तृणराजः सदाफलः ॥ ३७ ॥
नारिकेरफलं शीतं दुर्जरं बस्तिशोधनम् ।
विष्टम्भि बृंहणं बल्यं वातपित्तास्रदाहनुत् ॥ ३८ ॥
विशेषतः कोमलनारिकेरं निहन्ति पित्तज्वरपित्तदोषान् ।
तदेव जीर्णं गुरु पित्तकारि विदाहि विष्टम्भि मतं भिषग्भिः ॥३९॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तस्याम्भः शीतलं हृद्यं दीपनं शुक्रलं लघु ।
पिपासापित्तजित्स्वादु बस्तिशुद्धिकरं परम् ॥ ४० ॥
नारिकेरस्य तालस्य खर्जूरस्य शिरांसि तु ।
कषायस्निग्धमधुरबृंहणानि गुरूणि च ॥ ४१ ॥

टीका—नारिकेर, दृढफल, लांगली, कुर्चशीर्षक, ॥ ३६ ॥ तुङ्ग, स्कन्धफल, तृणराज, सदाफल, ये नारियलके नाम हैं ॥ ३७॥ नारियल शीतल, दुर्जर, बस्तिशोधन, विष्टंभी, पुष्ट,बलको हित और वात, पित्त, रक्त, दाह, इनको हरता है ॥ ३८ ॥ विशेषकरके कोमल नारिकेल पित्तज्वर और पित्तके दोषोंको हरता है ॥ ३९ ॥ वही जीर्ण भारी, पित्त, कास, विदाही, विष्टम्भी, ऐसा वैद्योंने माना है. उसका जल शीतल, हृद्य, दीपन, शुक्रको करनेवाला,हलका है और तृष्णा, पित्त इनको जीतनेवाला, मधुर तथा बस्तिको शुद्ध करनेवाला है ॥ ४० ॥ नारियल ताड, खजूर, इनकी शिरा कसेली चिकनी पुष्ट भारी होती है. ॥ ४१ ॥

अथ कालिन्द(तरबूज)नामगुणाः ।

कालिन्दं कृष्णबीजं स्यात्कालिङ्गं च सुवर्तुलम् ।
कालिन्दं ग्राहि दृक्पित्तशुक्रहृच्छीतलं गुरु ।
पक्वं तु सोष्णं सक्षारं पित्तलं कफवातजित् ॥ ४२ ॥

टीका—कालिन्द, कृष्णबीज, कालिंग, सुवर्तुल ये तरबूजके नाम हैं. तरबूज काबिज, दृष्टि, पित्त, शुक्र, इनको हरनेवाला, शीतल और भारी होता है. पका हुआ कुछ गरम और क्षारके सहित होता है और पित्तको करनेवाला तथा कफ वातको हरता है ॥ ४२ ॥

अथ खर्बूजनामगुणाः ।

दशाङ्गुलं तु खर्बूजं कथ्यते तद्गुणा अथ ।
खर्बूजं मूत्रलं बल्यं कोष्ठशुद्धिकरं गुरु ॥ ४३ ॥
स्निग्धं स्वादुतरं शीतं वृष्यं पित्तानिलापहम् ।
तेषु यच्चाम्लमधुरं सक्षारं च रसाद्भवेत् ।
रक्तपित्तकरं तत्तु मूत्रकृच्छ्रकरं परम् ॥ ४४ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—दशांगुल, खरबूज, ये खरबूजके नाम हैं. अब उसके गुण कहते हैं—खरबूज मूत्रको करनेवाला, बलको करनेवाला, कोष्ठकी शुद्धि करनेवाला, और भारी होता है ॥ ४३ ॥ और चिकना, बहुत मधुर, शीतल, शुक्रको करनेवाला, पित्तवातको हरता है. उनमें जो खट्टा, और मधुर, क्षारके सहित रससे होता है वह रक्तपित्तको करनेवाला और मूत्रकृच्छ्रको करनेवाला है ॥ ४४ ॥

अथ त्रपुसनामगुणाः ।

त्रपुसं कण्टकिफलं सुधावासः सुशीतलम् ॥ ४५ ॥
त्रपुसं लघु नीलं च नवं तृट्क्लमदाहजित् ।
स्वादु पित्तापहं शीतं रक्तपित्तहरं परम् ॥ ४६ ॥
तत्पक्वमम्लमुष्णं स्यात्पित्तलं कफवातनुत् ।
तद्बीजं मूत्रलं शीतं रूक्षं पित्तास्रकृच्छ्रजित् ॥ ४७ ॥

टीका—त्रपुस, कंटकिफल, सुधावास, सुशीतल, ये बालमखीरेके नाम हैं. खीरा हरा और नया खीरा हलका होता है. वह तृषा, क्लम, दाह इनको हरनेवाला है॥४५॥ और मधुर, पित्तहर्ता, शीतल, और रक्तपित्तको हरता है. व पकाहुआ खट्टा, उष्ण और पित्तको करनेवाला, कफवातको हरता है ॥ ४६ ॥ उसका बीज मूत्रको करनेवाला, शीतल, रूखा, रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्र, इनको हरनेवाला है ॥ ४७ ॥

अथ पूगफल (सुपारी) नामगुणाः ।

घोण्टाथ पूगी पूगश्च गुवाकः क्रमुकोऽस्य तु ।
फलं पूगीफलं प्रोक्तमुद्वेगं च तदीरितम् ॥ ४८ ॥
पूगं गुरु हिमं रूक्षं कषायं कफपित्तजित् ।
मोहनं दीपनं रुच्यमास्यवैरस्यनाशनम् ॥ ४९ ॥
आर्द्रं तद्गुर्वभिष्यन्दि वह्निदृष्टिहरं स्मृतम् ।
स्विन्नं दोषत्रयच्छेदि दृढमध्यं तदुत्तमम् ॥ ५० ॥

टीका—घोण्टा, पूगी, पूग, गुवाक, क्रमुकफल, पूगीफल, उद्वेग, ये सुपारीके नाम हैं॥४८॥ सुपारी भारी, शीतल, रूखी कसेली, कफपित्तको हरनेवाली है. रस और मोहन, दीपन भारी, रुचिको करनेवाली, मुखकी विरसताको हरती है॥४९॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गीली सुपारी भारी, अभिष्यंदी होती है और अग्निको व दृष्टिको हरती है, चिकनी तीनो दोषोंको हरनेवाली है. बीचमें जो दृढ होती है वह उत्तम है ॥५०॥

अथ तालनामगुणाः ।

तालस्तु लेखपत्रः स्यात्तृणराजो महोन्नतः ।
पक्कं तालफलं पित्तरक्तश्लेष्मविवर्धनम् ॥ ५१ ॥
दुर्जरं बहुमूत्रं च तन्द्राभिष्यन्दि शुक्रदम् ।
तालमज्जा तु तरुणः किञ्चिन्मदकरो लघुः ॥ ५२ ॥
श्लेष्मलो वातपित्तघ्नः सस्नेहो मधुरः सरः ।
तालजं तरुणं तोयमतीव मदकृन्मतम् ॥ ५३ ॥
अम्लीभूतं तदा तु स्यात्पित्तकृद्वातदोषहृत् ।

टीका––ताल, लेखपत्र, तृणराज, महोन्नत, ये ताड़के नाम हैं. पकाहुआ ताड़फल रक्त, पित्त, कफ, इनको बढ़ानेवाला ॥ ५१ ॥ दुर्जर, बहुत मूत्रको करनेवाला, तन्द्रा और अभिष्यन्द करनेवाला और शुक्रको देनेवाला है. पकेहुए तालकी गिरी कुछ नशा लानेवाली और हलकी होती है ॥ ५२ ॥ और कफको करनेवाली, वातपित्तको हरती, कुछ चिकनी, मधुर और सर होती है. ताजी ताडी बहुत नशाके करनेवाली होती है ॥ ५३ ॥ और जब खट्टी होती है तब पित्तको करनेवाली तथा वातदोषको हरती है.

अथ बिल्वनामगुणाः ।

बिल्वः शण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलावपि ॥ ५४ ॥
बालं बिल्वफलं बिल्वकर्कटी बिल्वपेशिका ।
ग्राहिणी कफवातामशूलघ्नी बिल्वपेषिका ॥ ५५ ॥

टीका—बिल्व, शाण्डिल्य, शैलूष, मालूर, श्रीफल, ये बेलफलके नाम हैं ॥५४॥ और कच्चे बेलफलको बिल्वकर्कटी और बिल्वपेशिका कहते हैं. कच्चा बेल काबिज, कफ, वात, अंगशूल, इनको हरता है ॥ ५५ ॥

अन्यच्च--

बालं बिल्वफलं ग्राहि दीपनं पाचनं कटु ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कषायोष्णं लघु स्निग्धं तिक्तं वातकफापहम् ॥ ५६ ॥
पक्वं गुरु त्रिदोषं स्याद्दुर्जरं पूतिमारुतम् ।
विदाहि विष्टम्भकरं मधुरं वह्निमान्द्यकृत् ॥२७ ॥
फलेषु परिपक्वं यद्गुणवत्तदुदाहृतम् ।
बिल्वादन्यत्र विज्ञेयमामं तद्धि गुणाधिकम् ॥ ५८ ॥
द्राक्षाबिल्वशिवादीनां फलं शुष्कं गुणाधिकम् ।

टीका—कच्चा बेलफल काबिज, दीपन, पाचन, कटु, कसेला, उष्ण, हलका, चिकना, तिक्त, वातकफको हरता है ॥ ५६ ॥ और पकाहुआ भारी, त्रिदोषको करनेवाला होता है, और सड़ा हुआ दुर्गंधि, और वातको करता है, तथा विदाहको करनेवाला, विष्टम्भी, मधुर, अग्निमांद्यको करनेवाला है ॥ ५७ ॥ फलोंमें जो पका हुआ होता है वह गुणयुक्त होता है, परन्तु बेलसे अतिरक्तोंको जानना चाहिये. यह कच्चा गुणमें अधिक होता है ॥ ५८ ॥ दाख, बेल, आमले इत्यादिकोंके फल सूखेहुए गुणमें अधिक होते हैं.

अथ कपित्थ (कैथ) नामगुणाः ।

कपित्थस्तु दधित्थः स्यात्तथा पुष्पफलः स्मृतः ॥ ५९ ॥
कपिप्रियो दधिफलस्तथा दन्तशठोऽपि च ।
कपित्थमामं संग्राहि कषायं लघु लेखनम् ॥ ६० ॥
पक्वं गुरु तृषाहिक्काशमनं वातपित्तजित् ।
स्यादम्लं तुवरं कण्ठशोधनं ग्राहि दुर्जरम् ॥ ६१ ॥

टीका--कपित्थ, दधित्थ, पुष्पफल, ये कैथके नाम हैं ॥ ५९ ॥ और कपिप्रिय, दधिफल, तथा दन्तशठ, ये भी कैथके नाम हैं. कच्चा कैथ काबिज, कसेला, हलका, रेचन, होता है ॥ ६० ॥ और पकाहुआ भारी होता है; और तृषा, हिचकी इनका शमन करनेवाला, तथा वातपित्तको हरता है ॥ ६१ ॥

अथ नारङ्गनामगुणाः ।

नारङ्गो नागरङ्गः स्यात्त्वक्सुगन्धः सुखप्रियः ।
नारङ्गं मधुराम्लं स्याद्रोचनं वातनाशनम् ॥ ६२ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अपरं त्वम्लमत्युष्णं दुर्जरं वातहृत्सरम्।

टीका—नारंग, नागरंग, त्वक्सुगंध, सुखप्रिय, ये नारंगीके नाम हैं. यह मीठी है, खट्टी है, रोचक है और वातको नाश करती है ॥ ६२ ॥ और दूसरे प्रकारकी नारंगी खट्टी है. अतिगरम वा दुर्जर है. वातको नाश करती है.

अथ तिन्दुकनामगुणाः।

तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च सितकारकः॥ ६३ ॥
स्यादामं तिन्दुकं ग्राहि वातलं शीतलं लघु।
पक्वं पित्तप्रमेहास्रश्लेष्मलं मधुरं गुरु॥ ६४ ॥

टीका—तिन्दुक, स्फूर्जक, कालस्कन्ध, सितकारक, ये तेंदूके नाम हैं ॥६३॥ इसका कच्चा फल कब्ज करता है, वातको पैदा करता है और शीतल होता है, हलका है. पकाहुआ फल पित्त, प्रमेह, रक्तदोष, पथरी इनको नाश करता है. मीठा है और भारी है. यह तेंदूवृक्ष दीर्घपत्तोंवाला जलके देशमें होता है ॥ ६४ ॥

अथ कुपीलुः तिन्दुकभेदः।

(अस्य फलं कुचिलाइति लोके मधुरतेंदु इति च।)

तिन्दुको यस्तु कथितो जलदो दीर्घपत्रकः।
कुपीलुः कुलकः कालस्तिन्दुकः काकपीलुकः॥ ६५ ॥
काकेन्दुर्विषतिन्दुश्च तथा मर्कटतिन्दुकः।
कुपीलु शीतलं तिक्तं वातलं मदकृल्लघु॥ ६६ ॥
परं व्यथाहरं ग्राहि कफपित्तास्रनाशनम्।

टीका—यह कुपीलु वृक्षविशेष है. इसका फल कुचला होता है. कुपीलु, कुलक, काकतिन्दुक, कालपीलुक ॥ ६५ ॥ काकेन्दु, विषतिन्दु, मर्कटतिन्दुक ये इसको नाम हैं. यह शीतल होता है, कडुआ है, वातवाला है, मद करता है, हलका है, अत्यन्त पीडाको नाश करदेता है ॥ ६६ ॥ कब्ज करता है; और कफ, पित्त, रक्त इनको नाश करता है॥

अथ फलेन्द्रानामगुणाः।

फलेन्द्रा कथिता नन्दो राजजम्बूर्महाफला॥ ६७ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तथा सुरभिपत्रा च महाजम्बूरपि स्मृता ।
राजजम्बूफलं स्वादु विष्टम्भि गुरु रोचनम् ॥ ६८ ॥

टीका--फलेंद्रा, नन्द, राजजंबू, महाफला, ॥६७॥ सुरभिपत्रा, महाजंबू, ये बड़ी जामुन (फरेंद)के नाम हैं और यह स्वादिष्ठ है, विष्टंभकारक है, भारी होता है, रोचन होता है ॥ ३८ ॥

अथ जम्बूनामगुणाः ।

क्षुद्रा जम्बूः सूक्ष्मपत्रा नादेयी जलजम्बुका ।
जम्बू संग्राहिणी रूक्षा कफपित्तास्रदाहनुत् ॥ ६९ ॥

टीका—क्षुद्रजम्बू, सूक्ष्मपत्रा, नादेयी, जलजम्बुका, ये छोटी जामुनके नाम हैं और यह जामुन कब्ज करती है; रूखी होती है; और कफ, पित्त, रक्त, दाह, इनको नाश करती है ॥ ६९ ॥

अथ बदरीनामगुणाः ।

पुंसि स्त्रियां च कर्कन्धूर्बदरी कोलमित्यपि ।
फेनिलं कुवलं घोण्टा सौवीरं बदरं महत् ॥ ७० ॥
अजाप्रिया कुहा कोली विषमोभयकण्टका ।
पच्यमानं सुमधुरं सौवीरं बदरं महत् ॥ ७१ ॥
सौवीरं बदरं शीतं भेदनं गुरु शुक्रलम् ।
बृंहणं पित्तदाहास्रक्षयतृष्णानिवारणम् ॥ ७२ ॥
सौवीराल्लघु संपक्वं मधुरं कोलमुच्यते ।
कोलं तु बदरं ग्राहि रुच्यमुष्णं च वातहृत् ॥ ७३ ॥
कफपित्तकरं चापि गुरु सारकमीरितम् ।
कर्कन्धूः क्षुद्रबदरं कथितं पूर्वसूरिभिः ॥ ७४ ॥
अम्लं स्यात् क्षुद्रबदरं कषायं मधुरं मनाक् ।
स्निग्धं गुरु च तिक्तं च वातपित्तपहं स्मृतम् ॥ ७५ ॥
शुष्कं भेद्यग्निकृत्सर्वं लघु तृष्णाक्लमास्रजित् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—कर्कन्धू, बदरी, कोल, फेनिल, कुवल, घोंटा, सौवीर ॥ ७० ॥ अजप्रिया, कुहा, कोली, विषमा उभयकंटका, ये बेरके नाम हैं. इनमेंसे कर्कन्धू, बदरी, कोल, अजप्रिया, कुहा, कोली, विषमा, उभयकण्टका ये छोटे बेरके नाम हैं. और फेनिल, कुवल, घोण्टा, सौवीर, ये बड़े बेरके नाम हैं. पकेहुए और बहुत मीठे बड़े बेरको सौवीर कहते हैं ॥ ७१ ॥ बड़ा बेर शीतल, भेदन, भारी, वीर्य बढ़ानेवाला, पुष्टिकारक, पित्त, दाह, रक्तविकार, क्षय, तथा तृषाको नष्ट करनेवाला है ॥ ७२ ॥ सौवीरसे छोटे पकेहुए मीठे बेरको कोल कहते हैं. कोल बेर काबिज, रुचिको करनेवाला, गरम, वातको करनेवाला है ॥७३॥ और कफ, पित्तको करनेवाला, भारी, सारक कहा है. पहिले विद्वानोंने बहुत छोटे बेरको कर्कन्धू कहा है. लोकमें इसको झड़िया बेर कहते हैं ॥ ७४ ॥ झड़िया बेर खट्टा, कसेला और थोड़ा मीठा होता है. और चिकना, भारी, तिक्त, वातपित्तको हरता कहा है ॥ ७५ ॥ तथा सब प्रकारका सूखा बेर भेदनकरनेवाला और अग्निको करनेवाला है; तथा तृषा, थकावट,रक्त, इनको हरनेवाला है.

अथ प्राचीनामलकनामगुणाः ।

प्राचीनामलकं लोके प्राचीनामलकं स्मृतम् ॥ ७६ ॥
प्राचीनामलकं दोषत्रयजिद् ज्वरघाति च ।

टीका—प्राचीनामलकको लोकमें पानीयामलक कहते हैं ॥ ७६ ॥ प्राचीनामलक त्रिदोषको हरनेवाला और ज्वर हरता है.

अथ लवलीनामगुणाः ।

सुगन्धमूला लवली पाण्डुः कोमलवल्कला ॥ ७७ ॥
लवलीफलमश्मार्शःकफपित्तहरं गुरु ।
विशदं रोचनं रूक्षं स्वाद्वम्लं तुवरं रसे ॥ ७८ ॥

टीका—सुगन्धमूला, लवली, पांडुकोमलवल्कला, ये हरफारेवड़ीके नाम हैं ॥ ७७ ॥ हरफारेवड़ीका फल पथरी और बवासीर, कफ, पित्त, इनको हरता, भारी, विशद, रोचन, रूखा, मधुर, खट्टा, और कसैला, रसमें होता है ॥ ७८ ॥

अथ करमर्द (करोंदा) नामगुणाः ।

करमर्दः सुषेणः स्यात्कृष्णपाकफलस्तथा ।
तस्माल्लघुफला या तु सा ज्ञेया करमर्दिका ॥ ७९ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

करमर्दद्वयं त्वाममम्लं गुरु तृषाहरम् ।
उष्णं रुचिकरं प्रोक्तं रक्तपित्तकफप्रदम् ॥ ८० ॥
तत्पक्कं मधुरं रुच्यं लघु पित्तसमीरजित् ।

टीका—करमर्द, सुषेण, कृष्णपाकल, ये करोंदाके नाम हैं. और छोटेको करमर्दिका कहते हैं ॥७९॥ दोनों करोंदे खट्टे, भारी, तृषा हरते हैं और उष्ण, रुचिको करनेवाले तथा रक्तपित्तकफको देनेवाले कहे हैं ॥ ८० ॥ और पकाहुआ मधुर, रुचिको करनेवाला, हलका और वात पित्तको हरनेवाला है.

अथ प्रियाल (चिरौंजी) नामगुणाः ।

प्रियालस्तु खरस्कन्धश्चारो बहुलवल्कलः ॥ ८१ ॥
राजादनस्तापसेष्टः सन्नकद्रुर्धनुष्पटः ।
चारः पित्तकफास्रघ्नस्तत्फलं मधुरं गुरु ॥ ८२ ॥
स्निग्धं सरं मरुत्पित्तदाहज्वरतृषापहम् ।
प्रियालमज्जा मधुरो वृष्यः पित्तानिलापहः ॥ ८३ ॥
हृद्योऽतिदुर्जरः स्निग्धो विष्टम्भी चामवर्धनः ।

टीका—प्रियाल, खरस्कंध, चार, बहुलवल्कल ॥ ८१ ॥ राजादन, तापसेष्ट, सन्नकद्रु, ये चिरोंजीके नाम हैं. चिरोंजी पित्त, कफ, रक्त, इनको हरती है; और उसका फल मधुर, भारी ॥ ८२ ॥ चिकना तथा सर होता है, और पित्त, वात, दाह, ज्वर, तृषा, इनको हरता है. चिरोंजीकी गिरी मधुर, शुक्रको करनेवाली, पित्तवातको हरती है॥ ८३ ॥हृद्य, अतिदुर्जर, स्निग्ध, विष्टंभी, आमको बढ़ानेवाली है.

अथ राजादननामगुणाः ।

राजादनः फलाध्यक्षो राजन्या क्षीरिकापि च ॥ ८४ ॥
क्षीरिकायाः फलं वृष्यं बल्यं स्निग्धं हिमं गुरु।
तृष्णामूर्च्छामदभ्रान्तिक्षयदोषत्रयास्रजित् ॥ ८५ ॥

टीका—राजादन, फलाध्यक्ष, राजन्या, ये खिरनीके नाम हैं ॥ ८४ ॥ खिरनीका फल शुक्रको करनेवाला, बलको देनेवाला, चिकना, शीतल, भारी होता है और मूर्च्छा, मद, भ्रांति, क्षय, त्रिदोष, रक्त, इनको हरनेवाला है ॥८५॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ विकङ्कतनामगुणाः ।

विकङ्कतः स्रुवावृक्षो ग्रन्थिलः स्वादुकण्टकः ।
स एव यज्ञवृक्षश्च कण्टकी व्याघ्रप दपि ॥ ८६ ॥
विकङ्कतफलं पक्कं मधुरं सर्वदोषजित् ।

टीका—विकङ्कत, स्रुवावृक्ष, ग्रन्थिल, स्वादुकंटक, यज्ञवृक्ष, कंटकी, व्याघ्रपाद्, ये कंटाईके नाम हैं ॥ ८६ ॥ कंटाईका पका फल मधुर और सब दोषोंको हरनेवाला है.

अथ पद्मबीजनामगुणाः ।

पद्मबीजं तु पद्माक्षं गालोड्यं पद्मकर्कटी ॥ ८७ ॥
पद्मबीजं हिमं स्वादु कषायं तिक्तकं गुरु ।
विष्टम्भि वृष्यं रूक्षं च गर्भसंस्थापकं परम् ॥ ८८ ॥
कफवातकरं बल्यं ग्राहि पित्तास्रदाहनुत् ।

टीका—पद्मबीज, पद्माक्ष, गालोड्य, पद्मकर्कटी, ये कमलकट्टाके नाम हैं॥८७॥ कमलगट्टा शीतल, मधुर, कसेला, तिक्त, भारी, विष्टंभी, शुक्रको करनेवाला, रूखा, गर्भको स्थापन करनेवाला है ॥ ८८ ॥ और कफवातको करनेवाला, बलको हित, काबिज, रक्त, पित्त और दाह, इनको हरता है.

अथ माषान्ननामगुणाः ।

माषान्नं पद्मबीजाभं पानीयफलमित्यपि ॥ ८९ ॥
माषान्नं पद्मबीजस्य गुणैस्तुल्यं विनिर्दिशेत् ।

टीका—माषान्न, पद्मबीजाभ, पानीयफल, ये मखानेंके नाम हैं ॥ ८९ ॥ गुणोंमें इसको कमलगट्टेके समान जानना चाहिये.

अथ शृङ्गाटकनामगुणाः ।

शृङ्गाटकं जलफलं त्रिकोणफलमित्यपि ॥ ९० ॥
शृङ्गाटकं हिमं स्वादु गुरु वृष्यं कषायकम् ।
ग्राहि शुक्रानिलश्लेष्मप्रदं पित्तास्रदाहनुत् ॥ ९१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—शृंगाटक, जलफल, त्रिकोणफल, ये सिंघाड़ेके नाम हैं ॥ ९० ॥ सिंघाड़ा शीतल, मधुर, भारी, शुक्रको करनेवाला, कसेला, काबिज, और शुक्र, वात, कफ, इनको देनेवाला, तथा पित्तरक्त, दाह, इनको हरता है ॥ ९१ ॥

अथ कुमुदबीजनामगुणाः।

उक्तं कुमुदबीजं तु बुधैः कैरविणीफलम्।
भवेत्कुमुद्वतीबीजं स्वादु रूक्षं हिमं गुरु ॥ ९२ ॥

टीका—कुमुदके बीज (बेरी)को कैरिविणीफल ऐसा पंडितोंने कहा है. कुमुद्वती-का बीज मधुर, रूखा, शीतल होता है ॥ ९२ ॥

अथ मधुकनामगुणाः।

मधुको गुडपुष्पः स्यान्मधुपुष्पो मधुस्रवः।
वानप्रस्थो मधुष्ठीलो जलजेऽत्र मधूलकः ॥ ९३ ॥
मधूकपुष्पं मधुरं शीतलं गुरु बृंहणम्।
बलशुक्रकरं प्रोक्तं वातपित्तविनाशनम् ॥ ९४ ॥
फलं शीतं गुरु स्वादु शुक्रलं वातपित्तनुत्।
अहृद्यं हन्ति तृष्णास्रदाहश्वासक्षतक्षयान् ॥ ९५ ॥

टीका—मधुक, गुडपुष्प, मधुपुष्प, मधुस्रव, वानप्रस्थ, मधुष्ठील, जलज, मधूलक, ॥ ९३ ॥ यह महुवेके नाम हैं. महुवा मधुर, शीतल, भारी, पुष्ट, बल शुक्रको करनेवाला और वातपित्तको हरनेवाला कहा है ॥ ९४ ॥ उसका फल शीतल, भारी, मधुर, शुक्रको करनेवाला, वातपित्तको हरता, और अहृद्य होता है. तथा तृषा, रक्त, दाह, श्वास, क्षतक्षय, इनको हरता है ॥ ९५ ॥

अथ परूषकनामगुणाः।

परूषकं तु परुषमल्पास्थि च परापरम्।
परूषकं कषायाम्लमामं पित्तकरं लघु ॥ ९६ ॥
तत्पक्कं मधुरं पाके शीतं विष्टम्भि बृंहणम्।
हृद्यं तु पित्तदाहास्रज्वरक्षयसमीरहृत् ॥ ९७ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—परूषक, परुष, अल्पास्थि, परापर, ये फालसेके नाम हैं. फालसा कसेला, खट्टा, पित्तको करनेवाला, हलका, होता है ॥ ९६ ॥ पकाहुआ फालसा पाकमें मधुर, विष्टम्भी, पुष्ट, होता है; और हृद्य, पित्त, दाह,रक्त, ज्वर, क्षय, वात, इनको हरता है ॥ ९७ ॥

अथ तूतनामगुणाः ।

तूतः स्थूलश्च पूगश्च क्रमुको ब्रह्मदारु च ।
तूतं पक्कं गुरु स्वादु हिमं पित्तानिलापहम् ॥ ९८ ॥
तदेवामं गुरु सरमम्लोष्णं रक्तपित्तकृत् ।

टीका--तूत, स्थूल, पूग, क्रमुक, ब्रह्मदारु, ये तूतके नाम हैं.पकाहुआ तूत भारी, मधुर, शीतल, पित्तको हरता है ॥ ९८ ॥ वही कच्चा भारी, सर, खट्टा, रक्तपित्तको करनेवाला है.

अथ दाडिम(अनार)नामगुणाः ।

दाडिमः करको दन्तबीजो लोहितपुष्पकः ॥ ९९ ॥
तत्फलं त्रिविधं स्वादु स्वाद्वम्लं केवलाम्लकम् ।
तत्र स्वादु त्रिदोषघ्नं तृड्दाहज्वरनाशनम् ॥ १०० ॥
हृत्कण्ठमुखगन्धघ्नं तर्पणं शुक्रलं लघु ।
कषायानुरसं ग्राहि स्निग्धं मेधाबलापहम् ॥ १०१ ॥
स्वाद्वम्लं दीपनं रुच्यं किंचित्पित्तकरं लघु ।
अम्लं तु पित्तजनकमम्लं वातकफापहम् ॥ १०२ ॥

टीका—दाडिम, करक, दन्तबीज, लोहितपुष्पक, ये अनारके नाम हैं ॥ ९९ ॥ उसका फल तीन प्रकारका होता है—मधुर, मधुरयुक्त खट्टा और केवल खट्टा. उनमें मधुर अनार त्रिदोष हरता और तृषा, दाह, ज्वर, इनको हरता है ॥ १०० ॥ हृदय, कण्ठ, मुखगंध, इनको हरता, तर्पण, शुक्रको करनेवाला, हलका, होता है. पीछेसे कसेला, काबिज,चिकना, होता है; और मेधा, बल, इनको हरता है॥१०१॥ और खट्टा मीठा अनार दीपन, रुचिको करनेवाला, हलका, होता है. केवल खट्टा अनार पित्तको करनेवाला और वातकफको हरता है ॥ १०२ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ बहुवारनामगुणाः ।

बहुवारस्तु शीतः स्यादुद्दालो बहुवारकः ।
शेलुः श्लेष्मातकश्चापि पिच्छलो भूतवृक्षकः ॥ १०३ ॥
बहुवारो विषस्फोटव्रणवीसर्पकुष्ठनुत् ।
मधुरस्तुवरस्तिक्तः केश्यश्च कफपित्तहृत् ॥ १०४ ॥
फलमामं तु विष्टम्भि रूक्षं पित्तकफास्रजित् ।
तत्पक्वं मधुरं स्निग्धं श्लेष्मलं शीतलं गुरु ॥ १०५ ॥

टीका—बहुवार, शीत, उद्दाल, बहुवारक, शेलु, श्लेष्मातक, पिच्छिल, भूतवृक्षक, ये बहुवार लिसोडि के नाम हैं १०३॥ बहुवार विष,विस्फोट,व्रण,वीसर्प, कुष्ठ, इनको हरता है. और मधुर, कसेला, तिक्त, केशको हित, कफ पित्तको हरता है ॥ १०४ ॥ कच्चा फल रूखा,विष्टंभ करनेवाला, पित्त, कफरक्तको हरनेवाला है.

अथ कतकनामगुणाः ।

पयःप्रसादि कतकं कतकं तत्फलं च तत् ।
कतकस्य फलं नेत्र्यं जलनिर्मलताकरम् ॥ १०६ ॥
वातश्लेष्महरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ।

टीका—पयःप्रसादि, कतक, और उसका फल भी कतक है. ये निर्मलीके नाम हैं. निर्मलीका फल नेत्रको हित और जलकी निर्मलता करनेवाला है ॥ १०६ ॥ और वात कफको हरनेवाला, शीतल, मधुर, कसेला, भारी है.

अथ द्राक्षानामगुणाः ।

द्राक्षा स्वादुफला प्रोक्ता तथा मधुरसापि च ॥ १०७ ॥
मृद्वीका हारहूरा च गोस्तनी चापि कीर्तिता ।
द्राक्षा पक्का सरा शीता चक्षुष्या बृंहणी गुरुः ॥ १०८ ॥
स्वादुपाकरसा स्वर्या तुवरा सृष्टमूत्रविट् ।
कोष्ठमारुतकृद् वृष्या कफपुष्टिरुचिप्रदा ॥ १०९ ॥
हन्ति तृष्णाज्वरश्वासवातपित्तास्रकामलाः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कृच्छ्रास्रपित्तसंमोहदाहशोषमदात्ययान् ॥ ११० ॥
आमा स्वल्पगुणा गुर्वी सैवाम्ला रक्तपित्तकृत् ।
वृष्या स्याद्गोस्तनी द्राक्षा गुर्वी च कफपित्तनुत् ॥ १११ ॥

गोस्तनी (मुनक्का) इति लोके.

अबीजान्या स्वल्पसेधा गोस्तनीसदृशी गुणैः ।
द्राक्षा पर्वतजा लघ्वी साम्ला श्लेष्माम्लपित्तकृत् ॥ १२ ॥

टीका—द्राक्षा, स्वादुफला, मधुरसा ॥ १०७ ॥ मृद्वीका, हारहूरा, गोस्तनी, ये दाख (अंगूर) के नाम हैं. पकीहुई दाख सर, शीतल, नेत्रको हित करनेवाली, पुष्ट, भारी होती है ॥ १०८ ॥ और पाकरसमें मधुर, स्वरको अच्छा करनेवाली, कसेली, मलमूत्रकों करनेवाली है. और कोष्ठ वातको करनेवाली, शुक्रको उत्पन्न करनेवाली, तथा कफ, पुष्टि, रुचि, इनको देनेवाली है ॥ १०९ ॥ और तृषा, ज्वर, श्वास, वात, रक्त, कामला इनको हरती है. और मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, शोष, मदात्यय, इनको भी हरती है ॥ ११० ॥ और कच्ची दाख उससे अल्पगुणवाली; भारी, होती है; और खट्टी, दाख रक्तपित्तको हरनेवाली है. गोस्तनी दाख, [मुनक्का] शुक्रको उत्पन्नकरनेवाली, भारी और कफपित्तको हरती है ॥ १११ ॥ दूसरी बीजसेरहित बहुत छोटी दाख—जिसे किसमिस कहते हैं. यह मुनक्काके समान गुणमें होती है पहाड़ीदाख हलकी होती है और कुछ खट्टी होती है. तथा कफ अम्लपित्तको करनेवाली है ॥ ११२ ॥

अथ करमर्दिकानामगुणाः ।

द्राक्षा पर्वतजा यादृक् तादृशी करमार्दिका ।

टीका—जिसप्रकारकी पहाड़ी दाख होती है वैसी ही करोंदीभी होती है.

अथ खर्जूरिकात्रयनामगुणाः ।

भूमिखर्जूरिका स्वाद्वी दुरारोहा मृदुच्छदा ।
तथा स्कन्धफला काककर्कटी स्वादुमस्तका ॥ ११३ ॥
पिण्डखर्जूरिका त्वन्या सा देशे पश्चिमे भवेत् ।
खर्जूरी गोस्तनाकारा परद्वीपादिहागता ॥ ११४ ॥
जायते पश्चिमे देशे सा छोहारेति कीर्त्यते ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खर्जूरीत्रितयं शीतं मधुरं रसपाकयोः ।
स्निग्धं रुचिकरं हृद्यं क्षतक्षयहरं गुरु ॥ ११५ ॥
तर्पणं रक्तपित्तघ्नं पुष्टिविष्टम्भशुक्रदम् ।
कोष्ठमारुतहृद्बल्यं वान्तिवातकफापहम् ।
ज्वरातिसारक्षुत्तृष्णाकासश्वासनिवारकम् ॥ ११६ ॥
मदमूर्च्छामरुत्पित्तमद्योद्भूतगदान्तकृत् ।
महतीभ्यां गुणैरल्पा स्वल्पखर्जूरिका स्मृता ॥ ११७ ॥
खर्जूरीतरुतोयं तु मदपित्तकरं भवेत् ।
वातश्लेष्महरं रुच्यं दीपनं बलशुक्रकृत् ॥ ११८ ॥

टीका—भूमिखर्जूरिका, स्वाद्वी, दुरारोहा, मृदुच्छदा, स्कंधफला, काककर्कटी, स्वादुमस्तका, ये खजूरके नाम हैं ॥ ११३ ॥ और दूसरी पिण्डखर्जूर है. वह पश्चिममें होती है. मुनक्काके समान जो खजूर होती है वह और द्वीपसे यहां आई है ॥ १४ ॥ और पश्चिमदेशमें होती है, उसको छुहार कहते हैं, तीनों खजूर शीतल, रसपाकमें मधुर, होती है; और चिकनी, रुचिको करनेवाली, हृद्य, क्षत, क्षय, इनको हरनेवाली, भारी, ॥ ११५ ॥ तर्पण, रक्तपित्तको हरती, पुष्टि विष्टम्भ शुक्रको करनेवाली, कुष्ठ वातको हरती, बलको देनेवाली, वमन, वात, कफ इनको हरती, ज्वर, अतिसार, क्षुधा, तृषा, कास, श्वास, इनको हरनेवाली ॥ ११६ ॥ मद, मूर्च्छा, वात, पित्त, और मद्यके सेवनसे उत्पन्नहुए रोगोंको हरनेवाली है. बड़ी खजूरोंसे छोटी खजूर गुणमें न्यून कही है ॥ ११७ ॥ खजूरके वृक्षका जल मद, पित्त, इनको करनेवाला है, और वातकफको हरता, रुचिको देनेवाला, दीपन, बलशुक्रको करनेवाला है ॥ ११८ ॥

अथ सुलेमानीनामगुणाः ।

सुलेमानी तु मृदुला दलहीनफला च सा ।
सुलेमानी श्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छास्रपित्तहृत् ॥ ११९ ॥

टीका—सुलेमानी, मृदुला, दलहीनफला, ये सुलेमानी खजूरके नाम हैं. सुलेमानी खजूर श्रम, भ्रान्ति, दाह, रक्तपित्त, इनको हरनेवाली है ॥ ११९ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ वाताद(बादाम) नामगुणाः।

वातादो वातवैरी स्यान्नेत्रोपमफलस्तथा।
वाताद उष्णः सुस्निग्धो वातघ्नः स च शुक्रकृत् ॥ १२० ॥
वातादमज्जा मधुरो वृष्यः पित्तानिलापहः।
स्निग्धश्च कफकृन्नेष्टो रक्तपित्तविकारिणाम् ॥ १२१ ॥

टीका—वाताद, वातवैरी, नेत्रोपमफल, ये बदामके नाम हैं. बदाम उष्ण, स्निग्ध, वातहर्ता, शुक्रको करनेवाला, भारी होता है ॥ १२० ॥ बदामकी गिरी मधुर, शुक्रको करनेवाली, पित्तवातको हरती, स्निग्ध, उष्ण, कफ करनेवाली होती है; और रक्तपित्तके रोगवालोंको हित नहीं होती ॥ १२१ ॥

अथ सेवनामगुणाः।

मुष्टिप्रमाणं बदरं सेवं सिवितिकाफलम्।
रसे पाके च मधुरं शिशिरं रुचिशुक्रकृत् ॥ १२२ ॥

टीका—मुष्टिप्रमाण बेरको सेव, सिवितिकाफल, ये सेवके नाम हैं. सेव वातपित्तको हरता, पुष्ट, कफको, करनेवाला भारी होता है; और रसपाकमें मधुर, शीतल, रुचि और शुक्रको करनेवाला है ॥ १२२ ॥

अथामृतफलगुणाः।

अमृतफलं लघु वृष्यं सुखदं द्वौ त्रीन्हरेद्दोषान्।
देशेषु मुद्गलानां बहुलं तल्लभ्यते लोकैः ॥ १२३ ॥

टीका—अमृतफल हलका, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, मधुर होता है; और तीनों दोषोंको हरता है. मुगलोंके देशोंमें यह विशेषकरके मिलता है. इसको नासपाती कहते हैं.

अथ पीलुगुणाः।

पीलुर्गुडफलः स्रंसी तथा शीतफलोऽपि च।
पीलु श्लेष्मसमीरघ्नं पित्तलं भेदि गुल्मनुत् ॥ १२४ ॥
स्वादु तिक्तं च यत्पीलु तन्नात्युष्णं त्रिदोषहृत्।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—पीलु, गुडफल, स्रंसी तथा शीतफल ये पीलूके नाम हैं. पीलू कफवातको हरता, पित्तको करनेवाला, भेदन करनेवाला, बायगोलाको हरता है ॥ १२४॥ और जो पीलू मधुर, तिक्त होता है वह बहुत गरम नहीं होता और त्रिदोषको हरता है

अथाक्षोटकनामगुणाः ।

पीलुः शैलभवोऽक्षोटः कर्पराल‌श्च कीर्तितः ॥
अक्षोटकोऽपि वातादसदृशः कफपित्तकृत् ॥ १२५ ॥

टीका—अक्षोट-पहाड़ी पीलूको अक्षोट और कर्पराल कहते हैं. ये अखरोटके नाम हैं. अखरोट भी गुणमें बदामके समान होता है और कफपितको करनेवाला है॥१२५॥

अथ बीजपूर(बिजोरा)नामगुणाः ।

बीजपूरो मातुलुङ्गो रुचकः फलपूरकः ।
बीजपूरफलं स्वादु रसेऽम्लं दीपनं लघु ॥ १२६ ॥
रक्तपित्तहरं कण्ठजिह्वाहृदयशोधनम्।
श्वासकासारुचिहरं हृद्यं तृष्णाहरं स्मृतम् ॥ १२७ ॥

टीका—बीजपूर, मातुलङ्ग, रुचक, फलपूरक ये बिजोरेके नाम हैं. बिजोरेका फल रसमें मधुर और अम्ल होता है. दीपन, हलका, होता है ॥ १२६ ॥ रक्तपित्तको हरता है, कण्ट, जिह्वा, हृदय, इनका शोधन तथा श्वास, कास, अरुचि, इनको हरता, हृद्य और तृषाको हरनेवाला कहा गया है ॥ १२७ ॥

अथ मधुकर्कटीकानामगुणाः ।

बीजपूरोऽपरः प्रोक्तो मधुरो मधुकर्कटी ॥ १२८ ॥
मधुकर्कटिका स्वाद्वी रोचनी शीतला गुरुः ।
रक्तपित्तक्षयश्वासकासहिक्काभ्रमापहा ॥ १२९ ॥

टीका—बिजोरेका भेद मधुककड़ी (चकोतरा)—और किस्मके बिजोरेको मधुककड़ी कहते हैं. मधुककड़ी मधुर, रुचिको करनेवाली, शीतल, भारी, रक्तपित्त, क्षय, श्वास, कास, हिचकी, भ्रम, इनको हरती है ॥ १२९ ॥

अथ जम्बीरद्वयनामगुणाः ।

स्याज्जम्बीरी दन्तशठा जम्भजम्भीरजम्भलाः ।
जम्बीरमुष्णं गुर्वम्लं वातश्लेष्मविबन्धनुत् ॥ १३० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शूलकासकफोत्क्लेशच्छर्दितृष्णामदोषजित् ।
आस्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमान्द्यकृमीन्हरेत् ॥ १३१ ॥
स्वल्पजम्बीरिका तद्वत्तृष्णाछर्दिनिवारिणी ।

टीका—दोनों किस्मके जंबीरी नींबू-जंबीर, दन्तशठ, जम्भ, जम्भीर, जम्भल, ये जंबीरी नींबूके नाम हैं. जंबीर उष्ण, भारी, खट्टा, वात, कफ, विबन्ध इनको हरता है॥ १३० ॥ और शूल, कास, कफ, वमन, उत्क्लेश, तृषा, और आमदोष इनको हरनेवाला है और मुखकी विरसता, हृदयपीडा, अग्निमान्द्य, कृमि इनको हरता है ॥ १३१ ॥ छोटी जंबीरी गुणमें उसीके समान होती है, और तृषा वमनको नाश करनेवाली है ॥

अथ निम्बूनामगुणाः ।

निम्बूः स्त्री निम्बुकं क्लीबे निम्बूकमपि कीर्तितम् ।
निम्बूकमम्लं वातघ्नं दीपनं पाचनं लघु ॥ १३२ ॥
निम्बुकं कृमिविमोहनाशनं तीक्ष्णमम्लमुदरग्रहापहम् ।
वातपित्तकफशूलिने हितं कष्टनष्टरुचिरोचनं परम् ॥ १३३ ॥
त्रिदोषवह्निक्षयवातरोगनिपीडितानां विषविह्वलानाम् ।
मन्दानले बद्धगुदे प्रदेयं विषूचिकायां मुनयो वदन्ति ॥ १३४ ॥

टीका—निंबू ये स्त्रीलिंगमें और नपुंसकलिंगमें निंबुक और निंबूक भी कहा गया है. ये कागजी निंबूके नाम हैं. कागजी निंबू खट्टा, वातहर्ता, दीपन, पाचन, हलका होता है ॥ १३२ ॥ नीबू कृमि, मोह, इनको हरता, तीखा, खट्टा होता है; और फुलेहुए पेटको हरता है और वात, पित्त, कफ इनके शूलमें हित तथा कष्टसाध्य और नष्ट ऐसे अरुचिरोगमें अत्यंत रुचिको करनेवाला है ॥ १३३ ॥ त्रिदोष, अग्निक्षय, वातरोग इनसे पीडित, और विषसे विह्वल इनको और मन्दाग्निमें, बुद्धगुदमें तथा विषूचिकामें देना चाहिये; ऐसा मुनियोंने कहा है ॥ १३४ ॥

अथ मिष्टनिम्बूफलनामगुणाः ।

मिष्टं निम्बूफलं स्वादु गुरु मारुतपित्तनुत् ।
गररोगविषध्वंसि कफोत्क्लेशि च रक्तहृत् ॥ १३५ ॥
शोषारुचितृषाछर्दिहरं बल्यं च बृंहणम् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—मधुर निंबू भारी, वातपित्तको हरता है और गररोग, विष, इनको हरता, कफको उखेड़नेवाला, रक्तको हरता ॥ १३५ ॥ शोष, अरुचि, तृषा, वमन इनको हरता, बलका हित और पुष्ट होता है.

अथ कर्मरङ्गनामगुणाः ।

कर्मरङ्गं हिमं ग्राहि स्वाद्वम्लं कफवातहृत् ॥ १३६ ॥

टीका—कर्मरंग यह कमरखका नाम है. कमरख शीतल, काबिज, मधुर, खट्टा, कफवातको हरता है ॥ १३६ ॥

अथाम्लानामगुणाः ।

अम्लिका चुक्रिकाम्ली च चुक्रा दन्तशठापि च ।
अम्ला च चविका चिञ्चा तिन्तिडीका च तिन्तिडी ॥१३७॥
अम्लिकाम्ला गुरुर्वातहरी पित्तकफास्रकृत् ।
पक्वा तु दीपनी रूक्षा सरोष्णा कफवातनुत् ॥ १३८ ॥

टीका— अम्लिका, चुक्रिका, अम्ली, चुक्रा, दन्तशठा, अम्ला, चविका चिंचा, तिंतिडीका, तिंतिडी, ये इमलीके नाम हैं ॥ १३७ ॥ इमली खट्टी भारी, वातको हरती, पित्त कफ रक्तको करनेवाली है, और पकीहुई इमली दीपन, रूखी, सर, उष्ण, कफवातको हरती है ॥ १३८ ॥

अथाम्लवेतसनामगुणाः ।

स्यादम्लवेतसश्चुक्रः शतवेधी सहस्रनुत् ।
अम्लवेतसमत्यम्लं भेदनं लघु दीपनम् ॥ १३९ ॥
हृद्रोगशूलगुल्मघ्नं पित्तलं लोहमर्षणम् ।
रूक्षं विण्मूत्रदोषघ्नं प्लीहोदावर्तनाशनम् ॥ १४० ॥
हिक्कानाहारुचिश्वासकासाजीर्णवमिप्रणुत् ।
कफवातामयध्वंसि छागमांसद्रवत्वकृत् ॥ १४१ ॥
चणकाम्लगुणं ज्ञेयं लोहसूचीद्रवत्वकृत् ॥

टीका—अम्लवेतस, चुक्र, शतवेधी, सहस्रनुत, ये अमलबेतके नाम हैं. अमलबेत बहुत खट्टा, भेदन, हलका, दीपन होता है ॥ १३९ ॥ और हृदयरोग, शूल, बाय

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गोला इनको हरता, पित्तको करनेवाला, और रोमांचको करनेवाला, रूखा, मलमूत्रदोषको हरता और पिलही, उदावर्त इनको भी हरता है ॥ १४० ॥ और हिचकी, अफारा, अरुचि, श्वास, कास, अजीर्ण, वमन इनको हरता, तथा कफवातके रोगोंको हरनेवाला और बकरीके मांसको गलानेवाला है ॥ १४१ ॥ चणकाम्लके समान गुणमें है. और लोहेकी सुईको गलानेवाला है.

अथ वृक्षाम्लनामगुणाः।

वृक्षाम्लं तिन्तिडीकं च चुक्रं स्यादम्लवृक्षकम् ॥ १४२ ॥
वृक्षाम्लमामम्लोष्णं वातघ्नं कफपित्तलम् ।
पक्वं तु गुरु संग्राहि कटुकं तुवरं लघु ॥ १४३ ॥
अम्लोष्णं रोचनं रूक्षं दीपनं कफवातकृत् ।
तृष्णार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृद्रोगजन्तुजित् ॥ १४४ ॥

टीका—वृक्षाम्ल, तिंतिडीक, चुक्र, अम्लवृक्षक, ये विषाम्बिल (कोकम) के नाम हैं. ॥१४२॥ विषाम्बिल कच्ची खट्टी, उष्ण, वात हरती, कफपित्तको करनेवाली होती है और पकी भारी: काबिज, कड़वी और कसेली, हलकी ॥१४३॥ खट्टी, गरम, अरुचिको करनेवाली, रूखी, दीपन, कफवातको हरनेवाली और तृषा बवासीर, संग्रहणी, बायगोला, शूल, हृदयरोग, कृमि इनको हरनेवाली है ॥ १४४ ॥

अथ चतुरम्लपञ्चाम्लयोर्लक्षणम् ।

अम्लवेतसवृक्षाम्लबृहज्जम्बीरनिम्बुकैः।
चतुरम्लं हि पञ्चाम्लं बीजपूरयुतैर्भवेत् ॥ १४५ ॥

टीका—चतुरम्ल और पञ्चाम्ल इन दोनोंका लक्षण कहते हैं—अम्लवेत, वृक्षाम्ल, और बड़ा जंबीरी नींबू कागजी निंबू, इनसे चतुराम्ल होता है और बिजोरेके मिलानेसे पञ्चाम्ल होता है ॥१४५ ॥

परिभाषा।

फलेषु परिपक्वं यद्गुणवत्तदुदाहृतम् ।
बिल्वादन्यत्र विज्ञेयमामं तद्धि गुणाधिकम् ॥ १४६ ॥
फलेषु सरसं यत्स्याद्गुणवत्तदुदाहृतम् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्राक्षाबिल्वशिवादीनां फलं शुष्कं गुणाधिकम् ॥ १४७ ॥
फलतुल्यगुणं सर्वमज्जानमपि निर्दिशेत् ।
फलं हिमाग्निदुर्वातव्यालकीटादिदूषितम् ।
अकालजं कुभूमीजं पाकातीतं न भक्षयेत् ॥ १४८ ॥
इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे आम्रादिफलवर्गः ॥

टीका--फलोंमें जो पकाहुआ है वह गुणवाला कहा गया है. यह बेलके सिवाय जानना चाहिये. कच्चा बेल गुणमें अधिक होता है ॥ १४६ ॥ फलोंमें रसके सहित जो होता है वह गुणमें अधिक कहा है, परन्तु दाख,बेल आंवले इनके फल सूखेहुए गुणमें अधिक होते हैं ॥ १४७ ॥ सबके मज्जाओंका गुण फलके समान होता है. हिम, अग्नि, दुष्टवात, सर्प, कीट आदिसे दूषित और बे ऋतुका फल, कुत्सित भूमिका, बेपकाहुआ ऐसे फलको भक्षण नहीं करै ॥ १४८ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे फलवर्गः

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्रीः ।

हरीतक्यादिनिघण्टे

धातूपधातुरसोपरसरत्नोपरत्नविषोपविषवर्गः ।

तत्र धातूनां लक्षणानि गुणाश्च ।

स्वर्णं रूप्यं च ताम्रं च रङ्गं जसदमेव च ।
सीसं लोहं च सप्तैते धातवो गिरिसम्भवाः ॥ १ ॥
वलीपलितखालित्यकार्श्याबल्यजरामयान् ।
निवार्य देहं दधति नृणां तद्धातवो मताः ॥ २ ॥

टीका--यह धातु, उपधातु, रस, उपरस, रत्न, उपरत्न और विष, उपविष इनका वर्ग है. इसमें धातुओंका लक्षण और गुण कहते हैं–सोना, रूपा, तांबा, रांग, जस्त, शीसा, लोहा, ये सात पहाड़से उत्पन्न होनेवाले धातु हैं ॥ १ ॥ झुर्रियां, बालोंकी सुफेदी, गंजापन, कृशता और दुर्बलता, बुढ़ापा इन रोगोंको दूर करके जो मनुष्योंके शरीरको धारण करते हैं वेही धातु कहेगये हैं ॥ २ ॥

अथ तत्रादौ सुवर्णस्योत्पत्तिर्लक्षणं नामानि गुणाश्च.

पुरा निजाश्रमस्थानां सप्तर्षीणां जितात्मनाम् ।
पत्नीर्विलोक्य लावण्यलक्ष्मीसम्पन्नयौवनाः ॥ ३ ॥
कन्दर्पदर्पविध्वंसचेतसो जातवेदसः ।
पतितं यद्धरापृष्ठे रेतस्तद्धेमतामगात् ॥ ४ ॥
मरीचिरङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः ।
वसिष्ठश्चेति सप्तैते कीर्तिताः परमर्षयः ॥ ५ ॥
कृत्रिमं चापि भवति तद्रसेन्द्रस्य वेधनात् ।
स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ॥ ६ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तपनीयं च गाङ्गेयं कलधौतं च काञ्चनम् ।
चामीकरं शातकुम्भं तथा कार्तस्वरं च तत् ॥ ७ ॥
जाम्बूनदं जातरूपं महारजत इत्यपि ।
दाहे रक्तं सितं छेदे निकषे कुङ्कुमप्रभम् ॥ ८ ॥
तारशुल्बजितं स्निग्धं कोमलं गुरु हेम सत् ।
तच्छ्वेतं कठिनं रूक्षं विवर्णं समलं दलम् ।
दाहे छेदे सितं श्वेतं कषे त्याज्यं लघु स्फुटम् ॥ ९ ॥
सुवर्णं शीतलं वृष्यं बल्यं गुरु रसायनम् ।
स्वादु तिक्तं च तुवरं पाके च स्वादु पिच्छिलम् ॥ १० ॥
पवित्रं बृंहणं नेत्र्यं मेधास्मृतिमतिप्रदम् ।
हृद्यमायुःकरं कान्तिवाग्विशुद्धिस्थिरत्वकृत् ।
विषद्वयक्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोषजित् ॥ ११ ॥
बलं सवीर्यं हरते नराणां रोगव्रजान् शोषयतीह काये ।
असौख्यकर्ता च सदा सुवर्णमशुद्धमेतन्मरणं च कुर्यात् ॥ १२ ॥
असम्यग्मारितं स्वर्णं बलं वीर्यं च नाशयेत् ।
करोति रोगान् मृत्युं च तद्धन्याद्यत्नतस्ततः ॥ १३ ॥

टीका—इनमें पहले सुवर्णकी उत्पत्ति, नाम, लक्षण और गुण कहते हैं–पहिले निजआश्रममें रहनेवाले जितेन्द्रिय सप्तऋषियोंकी लावण्य-लक्ष्मी करके युक्त, यौवनवाली स्त्रियोंको देखकर ॥ ३ ॥ कंदर्पके दर्पसे ध्वस्त होगया है चित्त जिसका ऐसे अग्निका जो पृथ्वीपर शुक्र गिरा वही सोना होगया ॥ ४ ॥ मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ, ये सात महर्षि कहेगये हैं ॥५॥ कृत्रिम भी सुवर्ण होता है. वह पारेके वेधसे होता है. स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम, हाटक, तपनीय, गांगेय, कलधौत, कांचन, चामीकर, शातकुम्भ, कार्तस्वर ॥ ७ ॥ जाम्बूनद, जातरूय, महारजत, ये सुवर्णके नाम हैं. जो दाहमें लाल, काटनेमें सुफेद और कसोटीमें केसरके समान होता है ॥ ८ ॥ और चांदी तांबेको जीतनेवाला,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चिकना, कोमल,भारी होता है; ऐसा सुवर्ण बहुत अच्छा है.और जो कठिन,रूखा, विवर्ण, समल दलवाला, दाहमें और काटनेमें श्वेत काला, हलका, अलग होनेवाला और जो कसनेमें श्वेत है वही त्यागनेयोग्य है. उसे दलजोर इसप्रकार लोकमें कहते हैं ॥९॥ सोना शीतल, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, बलकारी, रसायन, मधुर, तिक्त, कसेला और पाकमें भी मधुर, पिच्छिल ॥ १० ॥ पवित्र, पुष्ट करनेवाला, नेत्रको हित, मेधा स्मृति बुद्धि इनको देनेवाला,हृद्य, आयुको करनेवाला, कान्ति, वाणीकी शुद्धि, स्थिरता इनको करनेवाला, संसर्गविषको हरनेवाला, उन्माद, त्रिदोष, ज्वर, शोष, इनको हरनेवाला है ॥११॥ अशुद्ध स्वर्ण मनुष्योंका बल वीर्यके सहित हरता है और बहुतसे रोगोंकोकरता है और कायको सुखाता है तथा क्लेशको करने वाला होता है तथा मरणको भी करता है ॥१२॥ अच्छीतरह न फूकाहुआ सोना बलवीर्यको हरता है और रोगोंको तथा मृत्युको भी करता है. इसवास्ते यत्नसे फूके ॥ १३ ॥

अथ रूप्यस्योत्पत्तिनामलक्षणगुणाः ।

त्रिपुरस्य वधार्थाय निर्निमेषैर्विलोचनैः ।
निरीक्षयामास शिवः क्रोधेन परिपूरितः ॥ १४ ॥
अग्निस्तत्कालमपतत्तस्यैकस्माद्विलोचनात् ।
ततो रुद्रः समभवद्वैश्वानर इव ज्वलन् ॥ १५ ॥
द्वितीयादपतन्नेत्रादश्रुबिन्दुस्तु वामकात् ।
तस्माद्रजतमुत्पन्नमुक्तकर्मसु योजयेत् ॥ १६ ॥
कृत्रिमं च भवेत्तद्धि वङ्गादिरसयोगतः ।
रूप्यं तु रजतं तारं चन्द्रकान्ति सितप्रभम् ॥ १७ ॥
गुरु स्निग्धं मृदु श्वेतं दाहे छेदे घनक्षमम् ।
वर्णाढ्यं चन्द्रवत्स्वच्छं रूप्यं नवगुणं शुभम् ॥ १८ ॥
कठिनं कृत्रिमं रूक्षं रक्तपीतदलं लघु ।
दाहच्छेदघनैर्नष्टं रूप्यं दुष्टं प्रकीर्तितम् ॥ १९ ॥
रूप्यं शीतं कषायाह्वं स्वादुपाकरसं सरम् ।
वयसः स्थापनं स्निग्धं लेखनं वातपित्तजित् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रमेहादिकरोगांश्च नाशयत्यचिराद्ध्रुवम् ॥ २० ॥
तारं शरीरस्य करोति तापं विद्धं घनं यच्छति शुक्रनाशम् ।
वीर्यं बलं हन्ति तनोश्च पुष्टिं महागदान् शोषयति ह्यशुद्धम् ॥ २१ ॥

टीका--चांदीकी उत्पत्ति, नाम, लक्षण और गुण–त्रिपुरासुरके मारनेके अर्थ क्रोधसे भरेहुए शिवजीने निमेषरहित नेत्रोंसे देखा ॥ १४ ॥ उसीकाल उनके एक नेत्रसे अग्नि निकला. अग्निके समान जाज्वल्यमान उससे रुद्र हुआ ॥ १५ ॥ दूसरी बांई आंखसें जो आंसू गिरे उससे चांदी उत्पन्न हुई.उसकी कहे हुए काममें योजना करै ॥१६॥ और वह (चांदी) रांगा और पारा आदिकी योजनासे कृत्रिम भी होती है. रूप्य, रजत, तार, चंद्रकान्ति, सितप्रभ,ये चांदीके नाम है ॥१७॥ चांदी भारी, चिकनी, मुलायम, दाहमें और काटनेमें श्वेत, और चोट सहनेवाली और चन्द्रके समान श्वेत, स्वच्छ, ये चांदीके गुण शुभ हैं ॥ १८ ॥ और कृत्रिम, कठिन, रूखी, लालपीले परतोंसे युक्त, हलकी, दाहमें, काटनेमें और चोटमें नष्ट होनेवाली, इसप्रकारकी चांदी खराब होती है ॥ १९ ॥ चांदी शीतल, कसेली, खट्टी और रसपाकमें मधुर, सर, वयको स्थापन करनेवाली,चिकनी, लेखन, वातपित्तको करनेवाली है और प्रमेह आदि रोगोंको निश्चय नाश करती है ॥ २० ॥ विना शोधी चांदी शरीरमें ताप करती है और विधे हुए तथा गाढ़े शुक्रको हरती है और वीर्य, बल तथा शरीरकी पुष्टिको हरती है और बड़े रोगोंको सुखाती है ॥ २१ ॥

अथ ताम्रस्य उत्पत्तिर्नामानि लक्षणं गुणाश्च ।

शुक्रं यत्कार्तिकेयस्य पतितं धरणीतले ।
तस्मात्ताम्रं समुत्पन्नमिदमाहुः पुराविदः ॥ २२ ॥
ताम्रमौदुम्बरं शुल्बमुदुम्बरमपि स्मृतम् ।
रविप्रियं म्लेच्छमुखं सूर्यपर्यायनामकम् ॥ २३ ॥
जपाकुसुमसङ्काशं स्निग्धं मृदु घनक्षमम् ।
लोहनागोज्झितं ताम्रं मारणाय प्रशस्यते ॥ २४ ॥
कृष्णं रूक्षमतिस्तब्धं श्वेतं चापि घनासहम् ।
लोहनागयुतं चेति शुल्बं दुष्टं प्रकीर्तितम् ॥ २५ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ताम्रं कषायं मधुरं च तिक्तमम्लं च पाके कटुसारकं च।
पित्तापहं श्लेष्महरं च शीतं तद्रोपणं स्याल्लघु लेखनं च ॥२६॥
पाण्डूदराऽर्शोज्वरकुष्ठकासश्वासक्षयान् पीनसमम्लपित्तम्।
शोथं कृमिं शूलमपाकरोति प्राहुः परे बृंहणमल्पमेतत् ॥२७॥
एको दोषो विषे ताम्रे त्वसम्यङ्मारितेऽष्ट ते।
दाहः स्वेदोऽरुचिर्मूर्च्छा क्लेदो रेको वमिर्भ्रमः ॥ २८ ॥

टीका—तांबेकी उत्पत्ति नाम, लक्षण और गुणोंको कहते हैं—कार्तिकेयका जो शुक्र पृथ्वीपर गिरा उससे तांबा उत्पन्न हुआ, ऐसा पहिले लोगोंने कहा है ॥२२॥ ताम्र, औदुम्बर, शुल्ब, उदुंबर, रविप्रिय, म्लेच्छमुख और सूर्यके पर्याय नाम ये तांबेके नाम हैं ॥२३॥ जवाफूलके सदृश वर्ण, चिकना, मुलायम, चोटको सहनेवाला, लोहा, शीसा इनसे रहित तांबा फूकनेके वास्ते अच्छा होता है ॥ २४ ॥ काला रूखा, अतिश्वेत और चोटको न सहनेवाला, लोह शीसोंसे युक्त, ऐसा तांबा खराब कहा है ॥ २५ ॥ तांबा कसेला, मधुर, तिक्त, अम्ल, पाकमें कटु और सारक तथा पित्तको हरता, कफ हरता और शीतल होता है. और वह रोपण, हलका और लेखन भी होता है ॥ २६ ॥ और पाण्डुरोग, उदररोग, ज्वर, कुष्ठ, कास, श्वास, क्षय, पनिस, अम्लपित्त, शोथ, कृमि, शूल, इनको हरता है और कोई आचार्य उसको अल्प बृंहण भी कहते हैं ॥ २७ ॥ विषमें एक दोष और अच्छीतरह न फुकेहुए तांबेमें आठ दोष होते हैं. दाह, स्वेद, अरुचि, मूर्च्छा, क्लेद, वमन, विरेचन, भ्रम, ये आठ दोष हैं ॥ २८॥

अथ वङ्गस्य नामलक्षणगुणाः।

रङ्गं वङ्गं त्रपु प्रोक्तं तथा पिच्चटमित्यपि।
खुरकं मिश्रकं चापि द्विविधं वङ्गमुच्यते ॥ २९ ॥
उत्तमं खुरकं तत्र मिश्रकं त्ववरं मतम्।
रङ्गं लघु सरं रूक्षमुष्णं मेहकफकृमीन्।
निहन्ति पाण्डुं सश्वासं चक्षुष्यं पित्तलं मनाक् ॥ ३० ॥
सिंहो यथा हस्तिगणं निहन्ति तथैव वङ्गोऽखिलमेहवर्गम्।
देहस्य सौख्यं प्रबलेन्द्रियत्वं नरस्य पुष्टिं विदधाति नूनम् ॥३१॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका--रांगके नाम,लक्षण और गुण कहते हैं. लालरांगको त्रपु तथा पिच्चट भी कहते हैं. खुरक और मिश्रक ऐसा दोप्रकारका रांग होता है ॥ २९ ॥ उसमें उत्तम खुरक और मिश्रक खराब होता है. रांग हलका,सर,रूखा, गरम होता है और प्रमेह कफ कृमि इनको हरता है और पाण्डुरोग श्वास इनको भी हरता है तथा नेत्रको हित और अल्पपित्त करनेवाला होता है ॥ ३० ॥ जैसे सिंह गजगणोंको हरता है वैसे रांग सम्पूर्ण प्रमेहवर्गको हरता है और देहका सौख्य, इन्द्रियकी प्रबलता और पुष्टिको भी निश्चयसे करता है ॥ ३१ ॥

अथ जसदनामगुणाः ।

जसदं रङ्गसदृशं रीतिहेतुश्च तन्मतम्
जसदं तुवरं तिक्तं शीतलं कफपित्तहृत् ।
चक्षुष्यं परमं मेहान्पाण्डुं श्वासं च नाशयेत् ॥ ३२ ॥

टीका--जसद, रंगसदृश, रीतिहेतु अर्थात् पीतलका कारण, ये जस्तके नाम हैं. जस्त कसेला, तिक्त, शीतल, कफ पित्तको हरता, परमनेत्रको हित, प्रमेह पांडुरोग श्वास इनको भी हरता है ॥ ३२ ॥

अथ सीसस्योत्पत्तिर्नामानि गुणाश्च ।

दृष्ट्वा भोगिसुतां रम्यां वासुकिस्तु मुमोच यत् ।
वीर्यं जातस्ततो नागः सर्वरोगापहो नृणाम् ॥ ३३ ॥
सीसं ब्रध्नं च वप्रं च योगेष्टं नागनामकम् ।
सीसं रङ्गगुणं ज्ञेयं विशेषान्मेहनाशनम् ॥ ३४ ॥
नागस्तु नागशततुल्यबलं ददाति व्याधिं विनाशयति
जीवनमातनोति वह्निं । प्रदीपयति कामबलं करोति
मृत्युं च नाशयति सन्ततसेवितः सः ॥ ३५ ॥
पाकेन हीनौ किल वङ्गनागौ कुष्ठानि गुल्मांश्च तथातिकष्टान् ।
कण्डूं प्रमेहानलसादशोथभगन्दरादीन्कुरुतः प्रभुक्तौ ॥ ३६ ॥

टीका—अब शीसेकी उत्पत्ति, नाम और गुण कहते हैं. वासुकीने सुंदर नागकन्याओंको देखकर स्ववीर्यको छोड़ा, उससे मनुष्योंके सब रोगोंको हरता, शीस

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उत्पन्न हुआ॥ ३३॥शीस, ब्रध्न, वप्र, योगेष्ट नागनामक अर्थात् सांपके नामवला, ये शीसेके नाम हैं.शीसा गुणमें रांगके समान होता है और विशेष करके प्रमेहको हरता है. ॥ ३४ ॥ शीसा सौ हाथीके समान बलको देता है और रोगोंको हरता है तथा जीवनको देता है और अग्निको दीपन करता है तथा कामबलको देता है. निरंतर सेवन करनेसे वह मृत्युको हरता है ॥ ३५ ॥ अच्छीतरह न फुके हुए नाग और वंगोंको खानेसे वह कुष्ठ बायगोला तथा अतिकष्ट खुजली प्रमेह अग्निमान्द्य सूजन भगन्दर आदियोंको करता है ॥ ३६ ॥

अथ लोहस्योत्पत्तिनामलक्षणगुणाः ।

पुरा लोमिनदैत्यानां निहतानां सुरैर्युधि ।
उत्पन्नानि शरीरेभ्यो लोहानि विविधानि च ।
लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी ॥ ३७ ॥
गुरुता दृढतोत्क्लेदः कश्मलं दाहकारिता ।
अश्मदोषः सुदुर्गन्धो दोषाः सप्तायसस्य तु ॥ ३८ ॥
लोहं तिक्तं सरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ।
रूक्षं वयस्यं चक्षुष्यं लेखनं वातलं जयेत् ॥ ३९ ॥
कफं पित्तं गरं शूलं शोथार्शःप्लीहपाण्डुताः
मेदोमेहकृमीन्कुष्ठं तत्किट्टं तद्वदेव हि ॥ ४० ॥
पाण्डुत्वकुष्ठामयमृत्युदं भवेद्धृद्रोगशूलौ कुरुतेऽश्मरीं च ।
नानारुजानां च तथा प्रकोपं करोति हृल्लासमशुद्धलोहम् ॥ ४१ ॥
जीवहारि मदकारि चायसं देहशुद्धिमदसंस्कृतं ध्रुवम् ।
पाटवं न तनुते शरीरके दारुणां हृदि रुजं च यच्छति ॥ ४२ ॥
कूष्माण्डं तिलतैलं च माषान्नं राजिकां तथा ।
मद्यमम्लरसं चापि त्यजेल्लोहस्य सेवकः ॥ ४३ ॥

टीका—लोहकी उत्पत्ति, नाम, लक्षण और गुण कहते हैं—देवताओंकी लड़ाईमें मारेहुए लोमिनदैत्योंके शरीरोंमेंसे नानाप्रकारके लोह उत्पन्न हुए लोह, शस्त्रक, तीक्ष्ण, पिण्ड, कालायस,ये लोहके नाम हैं.॥ ३७ ॥ भारीपन,दृढता,मचली करना,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कास, दाह करना अश्मरीदोष, मृग, दुर्गन्धता, ये सात दोष लोहेके हैं. ॥ ३८ ॥ लोह तिक्त, सर, शीतल, मधुर, कसेला, भारी, रूखा, रसायन, नेत्रको हित, लेखन और वातल है. और कफ, पित्त, विष, शूल, सूजन, बवासीर, प्लीह, पाण्डुरोग ॥ ३९ ॥ मेद, प्रमेह, कृमि, कुष्ठ इनको हरता है; और उसका कीटभी उसीके समान होता है ॥४०॥ अशुद्ध लोहा पांडुता, कुष्ठरोग और मृत्यु इनको करनेवाला है; और हृदयरोग शूल अश्मरी इनको भी करता है; तथा अनेकतरहकी पीडाओंका प्रकोप और हृल्लास इनकोभी करता है ॥ ४१ ॥ बिना शुद्ध किया लोह जीवनको हरता, मद करनेवाला और वमन विरेचन करनेवाला निश्चय है, और शरीरमें चैतन्यता नहीं करता तथा हृदयमें दारुण पीडा भी करता है ॥ ४२ ॥ पेठा, तिलतैल, उड़द, राई, मदिरा, खट्टाई इनको लोहका सेवन करनेवाला त्यागदेवै ॥ ४३ ॥

तत्र सारलोहस्य लक्षणं गुणाश्च ।

क्ष्माभृच्छिखराकारान्यङ्गान्यम्लेन लेपयेत् ।
लोहे स्युर्यत्र सूक्ष्माणि तत्सारमभिधीयते ॥ ४४ ॥
लोहं साराह्वयं हन्याद्ग्रहणीमतिसारकम् ।
अर्धं सर्वाङ्गजं वातं शूलं च परिणामजम् ॥ ४५ ॥
छर्दिं च पीनसं पित्तं श्वासं कासं व्यपोहति ॥ ४६ ॥

टीका—उसमें सारलोहके लक्षण और गुण कहते हैं. पहाड़ वा शिखराकार अंगोंको खटाईसे लेप करै. उस लोहेमेंसे जो सूक्ष्म अंश होते हैं उसको सार कहते हैं ॥ ४४ ॥ सारनामक लोह संग्रहणी, अतीसार और अर्धाङ्ग तथा सर्वांगवात तथा परिणामशूल इनको हरता है ॥ ४५ ॥ और वमन, पीनस, पित्त, श्वास, कास, इनको भी हरता है ॥ ४६ ॥

अथ कान्तलोहस्य लक्षणं गुणाश्च ।

यत्पात्रे न प्रसरति जले तैलबिन्दुः प्रतप्ते
हिङ्गुर्गन्धं त्यजति च निजं तिक्ततां निम्बवल्कः ।
तप्तं दुग्धं भवति शिखराकारकं नैति भूमिं
कृष्णाङ्गः स्यात्सजलचणकः कान्तलोहं तदुक्तम् ॥ ४७ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुल्मोदरार्शःशूलाममामवातं भगन्दरम् ।
कामलाशोथकुष्ठानि क्षयं कान्तमयो हरेत् ॥ ४८ ॥
प्लीहानमम्लपित्तं च यकृच्चापि शिरोरुजम् ।
सर्वांत्रोगान्विजयते कान्तलोहं न संशयः ॥ ४९ ॥
बलं वीर्यं वपुःपुष्टिं कुरुतेऽग्निं विवर्धयेत् ।

टीका—कान्तलोहका लक्षण और गुण कहते हैं–जिसके जलके भरेहुए पात्रमें तेलकी बूंद नहीं फैलती और तपानेमें हींगकी गन्ध निकल जाती है. तथा नींमकी छाल कडुवापन छोड़ देती है और जिसमें गरम दूध, शिखरके आकार ऊंचा होता है परन्तु जमीनपर नहीं गिरता और जलके सहित चने काले होजाते हैं, उसको कान्तलोह कहते हैं ॥ ४७ ॥ कान्तलोह बायगोला, उदररोग, बवासीर, शूल, आम और आमवात, भगंदर, कामला, सूजन, कुष्ठ और क्षय इनको हरता है ॥ ४८ ॥ और पिलही, अम्लपित्त, यकृत्, शिरकी पीडा तथा सब रोग इनको कान्तलोह हरता है. इसमें कोई संशय नहीं ॥ ४९ ॥ और बल, वीर्य, शरीरकी पुष्टि, करता है तथा अग्निको बढ़ाता है.

अथ लोहकिट्टलक्षणगुणाः ।

ध्मायमानस्य लोहस्य मलं मण्डूरमुच्यते ।
लोहसिंघानिका किट्टी सिंघाणं च निगद्यते ॥ ५० ॥
यल्लोहं यद्गुणं प्रोक्तं तत्किट्टमपि तद्गुणम् ।

टीका—तपायेहुए लोहेका जो कीट है उसको मंडूर कहते हैं. और सिंघानिका, किट्टी, सिंघाण, भी कहते हैं ॥ ५० ॥ जो लोहा जिसगुणवाला कहा गया है, उसका कीट उसीके गुणसमान होता है.

उपधातूना लक्षणं गुणाश्च ।

सप्तोपधातवः स्वर्णमाक्षिकं तारमाक्षिकम् ।
तुत्थं कांस्यं च रीतिश्च सिन्दूरश्च शिलाजतु ॥ ५१ ॥
उपधातुषु सर्वेषु तत्तद्धातुगुणा अपि ।
सन्ति किं तेषु तेऽत्रोना तत्तदंशाल्पभावतः ॥ ५२ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—उपधातुओंके लक्षण और गुण कहते हैं सोनामाखी, रूपामाखी, लीलाथोथा, कांसा, पीतल, सिंदूर, शिलाजीत, ये सात उपधातु हैं ॥ ५१ ॥ सब उपधातुवोंमें उन उन धातुवोंके भी गुण हैं। किंतु उन उनके अंश अल्प होनेसे इनमें वो घटके हैं ॥ ५२ ॥

अथ स्वर्णमाक्षिकनामलक्षणगुणाः।

स्वर्णमाक्षिकमाख्यातं तापीजं मधुमाक्षिकम्।
ताप्यं माक्षिकधातुश्च मधुधातुश्च स स्मृतः ॥ ५३ ॥
किञ्चित्सुवर्णसाहित्यात्स्वर्णमाक्षिकमीरितम्।
उपधातुः सुवर्णस्य किञ्चित्स्वर्णगुणान्वितः ॥ ५४ ॥
तथाच काञ्चनाभावे दीयते स्वर्णमाक्षिकम्।
किन्तु तस्यानुकल्पत्वात् किञ्चिदूनगुणस्ततः ॥ ५५ ॥
न केवलं स्वर्णगुणा वर्त्तन्ते स्वर्णमाक्षिके।
द्रव्यान्तरस्य संसर्गात् सन्त्यन्येऽपि गुणा यतः ॥ ५६ ॥
सुवर्णमाक्षिकं स्वादु तिक्तं वृष्यं रसायनम्।
चक्षुष्यं बस्तिरुक्कुष्ठपाण्डुमेहविषोदरान्।
अर्शः शोथं विषं कण्डूं त्रिदोषमपि नाशयेत् ॥ ५७ ॥
मन्दानलत्वं बलहानिमुग्रां विष्टम्भितां नेत्रगदान्सकुष्ठान्।
तथैव मालीव्रणपूर्विकां च करोति तापीजमशुद्धमेतद् ॥५८॥

टीका—उनमें सोनामाखीके नाम और गुण कहते हैं—सुवर्णमाक्षिक तापीज, मधुमाक्षिक, ताप्य, माक्षिक, धातु, मधुधातु, ये उसके नाम हैं ॥ ५३ ॥ कुछ एक सोनेके मिले होनेसे सोनामामाखी कही गई है. सोनेकी उपधातु कुछ एक सोनेके गुणसे युक्त होती है ॥ ५४ ॥ स्वर्णके अभावमें सोनामाखी दीजाती है. किन्तु सोनेके अभावमें दीजाती है इससे सोनेसे यह गुणमें कुछ न्यून है ॥ ५५ ॥ सोनामाखीमें केवल सोनेके ही गुण नहीं हैं किन्तु अन्यपदार्थोंका संसर्ग होनेसे, अन्य गुण भी हैं ॥ ५६ ॥ मधुर, तिक्त, शुक्रको उत्पन्न करनेवाली, रसायन, नेत्रको हित है. बस्तिकी पीडा, कुष्ठ, पाण्डुरोग, प्रमेह, विष, उदररोग ॥ ५७ ॥ बवासीर, शोथ, विष, कंडू, त्रिदोष, इनको भी हरती है. बिना सोधी सोनामाखी,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मन्दाग्नि, बलकी हानि, अत्यन्त विष्टंभ, नेत्ररोग, कुष्ठ, और गंडमाला, इनको करती है ॥ ५८ ॥

अथ तारमाक्षिकस्य लक्षणं गुणाश्च ।

तारमाक्षिकमन्यत्तु तद्भवेद्रजतोपमम् ।
किञ्चिद्रजतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितम् ॥ ५९ ॥
अनुकल्पं तथा तस्य ततो हीनगुणाः स्मृताः ।
न केवलं रूप्यगुणा यतः स्यात्तारमाक्षिकम् ॥ ६० ॥
स्वादु पाके रसे किञ्चित्तिक्तं वृष्यं रसायनम् ।
चक्षुष्यं बस्तिरुक्कुष्ठपाण्डुमेहविषोदरम् ।
अर्शः शोथं क्षयं कण्डूं त्रिदोषमपि नाशयेत् ॥ ६१ ॥
मन्दानलत्वं बलहानिमुग्रां विष्टम्भितां नेत्रगदान्सकुष्ठान् ।
तथैव मालां व्रणवूर्विकां च करोति तापीजमिदं च तद्वत् ॥ ६२ ॥

टीका—रूपामाखीके नाम और गुण—दूसरी रूपामाखी चांदीके समान होती है. कुछेक चांदीके मिलनेसे रूपामाखी कही है ॥ ५९ ॥ उसके पीछे कहनेसे हीनगुण कही गई है. केवल चांदीके गुण रूपामाखीमें नहीं हैं, किंतु अन्य भी हैं॥६०॥ जैसे—पाकमें मधुर, रसमें कुछ तिक्त, शुक्रको उत्पन्न करनेवाली, रसायन, नेत्रको हित है ;और पेटका रोग, कुष्ठ, पाण्डुरोग, प्रमेह, विष, उदररोग ॥६१॥ बवासीर, सूजन, क्षय, कंडू, विषदोष इनको हरती है. बिन सोधीहुई रूपामाखी मन्दाग्नि, बलहानि, विष्टम्भता, नेत्ररोग, कुष्ठ, गंडमाला, इनको करती है ॥ ६२ ॥

अथ तुत्थ (तूतिया) नामगुणाः ।

तुत्थं वितुन्नकं चापि शिखिग्रीवं मयूरकम् ।
तुत्थं ताम्रोपधातुर्हि किञ्चित्ताम्रेण तद्भवेत् ॥ ६३ ॥
किञ्चित्ताम्रगुणं तस्माद्वक्ष्यमाणगुणं च तत् ।
तुत्थकं कटुकं क्षारं कषायं वामकं लघु ॥ ६४ ॥
लेखनं भेदनं शीतं चक्षुष्यं कफपित्तहृत् ।
विषाश्मकुष्ठकण्डूघ्नं खर्परं चापि तद्गुणम् ॥ ६५ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—तुत्थ, वितुन्नक, शिखिग्रीव, मयूरक,ये नीलेथोथेके नाम हैं. नीलाथोथा तांबेकी उपधातु और थोडे तांबसे होता है ॥ ६३ ॥ इसवास्ते थोड़ेसे ताँबके गुण और आगे कहेहुए गुण होते हैं. नीलाथोथा कड़वा, क्षार, कसेला,वमन करनेवाला, हलका॥६४॥लेखन, भेदन, शीतल, नेत्रको हित, कफ पित्तको हरता है और विष. अश्मरी, कुष्ठ, कण्डू,इनको हरता है और खपरिया भी उसीके समान गुणमें है॥६५॥

अथ कांस्यनामगुणाः ।

ताम्रत्रपुजमाख्यातं कांस्यं घोषं च कंसकम् ।
उपधातुर्भवेत् कांस्यं द्वयोस्तरणिरङ्गयोः ॥ ६६ ॥
कांस्यस्य तु गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिसदृशा जनैः ।
संयोगजप्रभावेण तस्यान्येऽपि गुणाः स्मृताः ॥ ६७ ॥
कांस्यं कषायं तिक्तोष्णं लेखनं विशदं सरम् ।
गुरु नेत्रहितं रूक्षं कफपित्तहरं परम् ॥ ६८ ॥

टीका—तांबा और रांगासे उत्पन्न हुआ कांस्य प्रसिद्ध है. कांस्य, घोष,कंसक, ये कांसेके नाम हैं. कांसा तांबा और रांगोंका उपधातु है ॥ ६६ ॥ कांसेके गुण अपने कारणके समान जानने चाहिये. संयोगज प्रभावसे उसके और भी गुण कहे हैं ॥ ६७ ॥ कांसा कसेला, तिक्त, उष्ण, लेखन, सर, विशद, भारी, नेत्रको हित, रूखा, कफपित्तको हरता है ॥ ६८ ॥

अथ पित्तल (पीतल) गुणाः ।

पित्तलं त्वारकूटं स्यादारो रीतिश्च कथ्यते ।
राजरीतिर्ब्रह्मरीतिः कपिला पिङ्गलापि च ॥ ६९ ॥
रीतिरप्युपधातुः स्यात्ताम्रस्य जसदस्य च ।
पित्तलस्य गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिसदृशा जनैः ॥ ७० ॥
संयोगजप्रभावेण तस्याप्यन्ये गुणाः स्मृताः ।
रीतिकायुगलं रूक्षं तिक्तं च लवणं रसे ॥ ७१ ॥
शोधनं पाण्डुरोगघ्नं कृमिघ्नं नातिलेखनम् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—पित्तल, आरकूट, आर, रीति, ये पीतलके नाम हैं. और राजरीति, ब्रह्मरीति, कपिला, पिंगला, ये भी पीतलके नाम हैं ॥ ६९ ॥ पीतल भी तांबा और जस्तका उपधातु कहा है. पीतलके गुण अपने कारणके सदृश जानने चाहिये॥७०॥ संयोगके प्रभावसे उसके भी और गुण कहते हैं. दोनों पीतल रूखे, तिक्त, लवण हैं ॥ ७१॥ और शोधन, पाण्डुरोगको हरते, कृमि हरनेवाले, तथा बहुत लेखन नहीं हैं.

अथ सिन्दूरनामगुणाः ।

सिन्दूरं रक्तरेणुश्च नागगर्भश्च सीसजम् ॥ ७२ ॥
सीसोपधातुः सिन्दूरं गुणैस्तत्सीसवन्मतम् ।
संयोगजप्रभावेण तस्याप्यन्ये गुणाः स्मृताः ॥ ७३ ॥
सिन्दूरमुष्णं वीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहम् ।
भग्नसंधानजननं व्रणशोधनरोपणम् ॥ ७४ ॥

टीका—सिंदूर, रक्तरेणु, नागगर्भ, सीसज, ये सिन्दूरके नाम हैं ॥ ७२ ॥ सिन्दूर, सीसेका उपधातु है और गुण सीसेके समान हैं. तथा संयोगज प्रभावसे उसके भी और गुण कहे हैं ॥ ७३ ॥ सिंदूर गरम, विसर्प, कुष्ठ, खुजली, इनको हरता, और टूटेहुएको जोड़नेवाला, व्रणशोधन और रोपण है ॥ ७४ ॥

अथ शिलाजतूत्पत्तिनामलक्षणगुणाः ।

निदाघे घर्मसन्तप्ता धातुसारं धराधराः ।
निर्यासवत्प्रमुञ्चन्ति तच्छिलाजतु कीर्तितम् ॥ ७५ ॥
सौवर्णं राजतं ताम्रमायसं तच्चतुर्विधम् ।
शिलाजत्वद्रिजतु च शैलनिर्यास इत्यपि ॥ ७६ ॥
गैरेयमश्मजं चापि गिरिजं शैलधातुजम् ।
शिलाजं कटु तिक्तोष्णं कटुपाकं रसायनम् ॥ ७७ ॥
छेदि योगवहं हन्ति कफमेदाश्मशर्कराः ।
मूत्रकृच्छ्रं क्षयं श्वासं वाताशांसि च पाण्डुताम् ॥ ७८ ॥

---

१ तपाकर कांजीमें डालनेसे जिस पीतलमें ललाई झलके उसे राजरीति कहते हैं. २ जिसको तपाकर कांजीमें डालनेसे पीलापन झलके उसे ब्रह्मरीति कहते हैं.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अपस्मारं तथोन्मादं शोथकुष्ठोदरक्रमीन् ॥ ७९ ॥
सौवर्णं तु जवापुष्पवर्णं भवति तद्रसात् ।
मधुरं कटु तिक्तं च शीतलं कटुपाकि च ॥ ८० ॥
राजतं पाण्डुरं शीतं कटुकं स्वादुपाकि च ।
ताम्रं मयूरकण्ठाभं तीक्ष्णमुष्णं च जायते ॥ ८१ ॥
लौहं जटायुपक्षाभं तत्तिक्तलवणं भवेत् ।
विपाके कटुकं शीतं सर्वश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥ ८२ ॥

टीका--शिलाजितकी उत्पत्ति,नाम,लक्षण और गुण-ग्रीष्ममें संतप्तहुए पर्वत धातुके सारको गोंदके समान छोड़ते हैं, उसको शिलाजीत कहते हैं॥७५॥सोनेका,चांदीका, तांबेका और लोहेका ऐसे चार प्रकारका शिलाजीत होता है. शिलाजतु, अद्रिजतु,शैलनिर्यास॥७६॥गैरेय,अश्मज, गिरिज, शैलधातुज, ये शिलाजीतके नाम हैं. शिलाजीत कडुवा, तीखा, उष्ण, पाकमें कटु, रसायन है ॥ ७७॥ और छेदन करनेवाला तथा योगवाही है और कफ, मेद, अश्मरी, शर्करा इनको हरता है, तथा मूत्रकृच्छ्र, क्षय, श्वास, वातकी बावसीर, पाण्डुता॥७८॥मिरगी,उन्माद,शोथ, कुष्ठरोग,उदररोग, कृमि इनको हरता है ॥७९॥ सौवर्ण शिलाजीत वर्णमें जवाफूलके समान होता है, और रसमें मधुर, कटु, तिक्त, शीतल, पाकमें कटु होता है ॥ ८० ॥ चांदीके मैलका शिलाजीत वर्णमें श्वेत, शीतल, कटु पाकमें मधुर होता है. तांबेका वर्णमें मोरके कंठके समान, तीखा, उष्ण होता है ॥ ८१ ॥ लोहेके शिलाजीतका रंग गिद्धके पंखके समान होता है तथा पाकमें कटु, शीतल और सबमें श्रेष्ठ कहा है ॥८२॥

अथ रसस्य निरुक्तिः ।

रसायनार्थिभिर्लोकैः पारदो रस्यते यतः ।
ततो रस इति प्रोक्तः स च धातुरपि स्मृतः ॥ ८३ ॥

टीका—जिसकारण रसायन चाहनेवाले लोग पारा खाते हैं इस कारण पारा रस कहा है. और धातु भी कहागया है ॥ ८३ ॥

अथ पारदस्योत्पत्तिर्लक्षणं नामानि गुणाश्च ।

शिवाङ्गात्प्रच्युतं रेतः पतितं धरणीतले ।
तद्देहसारजातत्वाच्छुक्लमच्छमभूच्च तत् ॥ ८४ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्षेत्रभेदेन विज्ञेयं शिववीर्यं चतुर्विधम् ।
श्वेतं रक्तं तथा पीतं कृष्णं तत्तु भवेत्क्रमात् ॥ ८५ ॥
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्च खलु जातितः ।
श्वेतं शस्तं रुजां नाशे रक्तं किल रसायनम् ॥ ८६ ॥
धातुवेधे तु तत्पीतं खगतौ कृष्णमेव च ।
पारदो रसधातुश्च रसेन्द्रश्च महारसः ॥ ८७ ॥
चपलः शिववीर्यं च रसः सूतः शिवाह्वयः ।
पारदः षड्रसः स्निग्धस्त्रिदोषघ्नो रसायनः ॥ ८८ ॥
योगवाही महावृष्यः सदादृष्टिबलप्रदः ।
सर्वामयहरः प्रोक्तो विशेषात्सर्वकुष्ठनुत् ॥ ८९ ॥
स्वस्थो रसो भवेद्ब्रह्मा बद्धो ज्ञेयो जनार्दनः ।
रञ्जितः कामितश्चापि साक्षाद्देवो महेश्वरः ॥ ९० ॥
मूर्च्छितो हरति रुजं बन्धनमनुभूय खे गतिं कुरुते ।
अजरीकरोति हि मृतः कोऽन्यः करुणाकरः सूतात् ॥ ९१ ॥

टीका—पारेकी उत्पत्ति, नाम, लक्षण, गुण कहते हैं–शिवजीके अंगसे निकलाहुआ वीर्य पृथ्वीपर गिरा. उनके देहसारसे उत्पन्न होनेसे वह श्वेत और स्वच्छ हुआ ॥ ८४ ॥ पारा क्षेत्रभेदसे चारप्रकारका जानना चाहिये. सफेद, लाल, पीला, काला ॥ ८५ ॥ क्रमसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, इन जातियोंवाला होता है. श्वेत रोगोंके हरनेमें प्रशस्त है और लाल रसायन है ॥ ८६ ॥ धातुवेधमें पीला और आकाशगमनमें काला प्रशस्त है. पारद, रसधातु, रसेन्द्र, महारस ॥ ८७ ॥ चपल, शिववीर्य, रस, सूत, शिवनाम ये पारेके नाम हैं. पारा छहरसोंसे युक्त, चिकना, त्रिदोषहर्ता, रसायन ॥ ८८ ॥ योगवाही, अत्यन्त शुक्रको करनेवाला, और दृष्टिबलको देनेवाला है तथा सबरोगोंको और विशेषकरके कुष्ठहर्ता कहा है ॥८९॥स्वस्थ रस ब्रह्मा होता है और बँधाहुआ पारा विष्णू, होता है. रंजित तथा कामित साक्षात् महादेव है ॥ ९० ॥ मूर्छित पारा रोगोंको हरता है. और बन्धको पाकर आकाशमें गतिको करता है तथा मराहुआ अजर करता है; इसवास्ते पारेके सिवाय और कौन करुणाकर है ॥ ९१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

असाध्यो यो भवेद्रोगो यस्य नास्ति चिकित्सितम् ।
रसेन्द्रो हन्ति तं रोगं नरकुञ्जरवाजिनाम् ॥ ९२ ॥
मलं विषं वह्निगिरित्वचापलं नैसर्गिकं दोषमुशन्ति पारदे ।
उपाधिजौ द्वौ त्रपुनागयोगजौ दोषौ रसेन्द्रे कथितौ मुनीश्वरैः॥९३॥
मलेन मूर्च्छा मरणं विषेण दाहोऽग्निना कष्टतरः शरीरे ।
देहस्य जाड्यं गिरिणा सदा स्याच्चाञ्चल्यतो वीर्यहतिश्च पुंसाम् ९४
वङ्गेन कुष्ठं भुजगेन षण्ढो भवेदतोऽसौ परिशोधनीयः ॥ ९५ ॥
वह्निर्विषं मलं चेति मुख्या दोषास्त्रयो रसे ।
एते कुर्वन्ति सन्तापं मृतिं मूर्च्छां नृणां क्रमात् ॥ ९६ ॥
अन्येऽपि कथिता दोषा भिषग्भिः पारदे यदि ।
तथाप्येते त्रयो दोषा हरणीया विशेषतः ॥ ९७ ॥
संस्कारहीनं खलु सूतराजं यः सेवते तस्य करोति बाधाम् ।
देहस्य नाशं विदधाति नूनं कष्टांश्च रोगाञ्जनयेन्नराणाम् ॥ ९८ ॥

टीका—जो रोग असाध्य होजाता है और जिसकी दवा नहीं है, उस-रोगको और मनुष्य घोड़ा हाथी इनके रोगोंको पारा हरता है ॥ ९२ ॥ मल, विष, वन्हि, गिरित्व, चपलता, ये पारेमें नैसर्गिक दोष कहे हैं. दो उपाधि सीसा और रांगा इनके योगसे उत्पन्नहुए दोष पारेमें मुनीश्वरोंने कहे हैं ॥ ९३ ॥ मलसे मूर्च्छा, विषसे मरण, अग्निसे शरीरमें अत्यन्त कठिन दाह, गिरिसे देहमें सदा जडता होती है और चंचलतासे मनुष्योंके वीर्यको हरता है ॥ ९४ ॥ रांगेसे कोढ़, सीसेसे नपुंसकता होती है. इसवास्ते यह पारा शोधनेयोग्य है॥९५॥ पारेमें तीन दोष मुख्य हैं. वन्हि, विष, और मल ये दोष मनुष्योंको क्रमसे सन्ताप, मृत्यु, मूर्च्छा, करते हैं. ॥ ९६ ॥ यदि और भी दोष वैद्योंने पारेमें कहेहैं तथापि ये तीन दोष विशेषकरके दूर करने चाहिये. ॥ ९७ ॥ संस्कारहीन पारेको जो सेवन करता है उसको बाधा करता है और मनुष्योंके देहको हरता है तथा अत्यन्त कष्टसाध्य रोगोंको भी करता है ॥ ९८ ॥

अथोपरसानां लक्षणम् ।

गन्धो हिङ्गुलमभ्रतालकशिलाः स्रोतोञ्जनं टङ्कणं

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

राजावर्तकचुम्बकौ स्फटिकया शंखः खटी गैरिकम् ।
कासीसं रसकं कपर्दसिकता बोलाश्च कङ्कुष्ठकं .
सौराष्ट्री च मता अमी उपरसाः सूतस्य किञ्चिद्गुणैः ॥ ९९ ॥

टीका--गन्धक, सिंगरफ़, अभ्रक, हरताल, मनसिल, सुरमा, सुहागा, रावटी, लोहचुम्बक, पत्थर, फिटकरी, शंख, खड़िया माटी, गेरू, हीराकसीस, रसकपूर, कौड़ी, रेत, बोल (इसको फुलेसत्व भी कहते हैं), कंकुष्ठ (मुरदासंग), सोरठी माटी, ये उपरस कहेगये हैं. पारेका कुछ गुण इनमें होता है ॥ ९९ ॥

हिङ्गुलस्य नामानि लक्षणं गुणाश्च ।

हिङ्गुलं दरदं म्लेच्छमिङ्गुलं पूर्णपारदम् ।
दरदस्त्रिविधः प्रोक्तश्चर्मारः शुकतुण्डकः ॥ ॥ १०० ॥
हंसपादस्तृतीयः स्याद्गुणवानुत्तरोत्तरम् ।
चर्मारः शुक्लवर्णः स्यात्सपीतः शुकतुण्डकः ।
जवाकुसुमसङ्काशो हंसपादो महोत्तमः ॥ १०१ ॥
तिक्तं कषायं कटु हिङ्गुलं स्यान्नेत्रामयघ्नं कफपित्तहारि ।
हृल्लासकुष्ठज्वरकामलांश्च प्लीहामवातौ च गरं निहन्ति ॥१०२॥
ऊर्ध्वपातनयुक्त्या तु डमरूयन्त्रपाचितम् ।
हिङ्गुलं तस्य सूतं तु शुद्धमेव न शोधयेत् ॥ १०३ ॥

टीका—सिंगरफके नाम और गुण–हिंगुल, दरद, म्लेच्छ, इंगुल, पूर्णपारद, ये शिंगरफके नाम हैं. शिंगरफ तीन प्रकारका होता है–चर्मार, शुक्रतुण्डक॥१००॥ और तीसरा हंसपाद. ये उत्तरोत्तर गुणमें अधिक हैं. चर्मार, सफेद होता है और पीला शुकतुण्डक होता है. हंसपाद जवाफूलके समान होता है. यह बहुत उत्तम है ॥ १०१ ॥ हिंगुल तिक्त, कसेला, कड़वा, होता है और नेत्ररोगको हरता तथा कफपित्तको हरता है और हृल्लास, कुष्ट, ज्वर, कामला इनको तथा पिलही आमवात और विष इनको भी हरता है ॥ १०२ ॥ ऊर्ध्वपातनकी युक्तिसे डमरू यंत्रमें पकायेहुए. हिंगुलका पारा शुद्ध है. इसका शोधन न करै ॥ १०३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ गन्धकस्योत्पत्तिर्नामानि लक्षणं गुणाश्च ।

श्वेतद्वीपे पुरा देव्याः क्रीडन्त्या रजसाप्लुतम् ।
दुकूलं तेन वस्त्रेण स्नातायाः क्षीरनीरधौ ।
प्रसृतं यद्रजस्तस्माद्गन्धकः समभूत्ततः ॥ १०४ ॥
गन्धको गन्धिकश्चापि गन्धपाषाण इत्यपि ।
सौगन्धिकश्च कथितो बलिर्बलरसादि च ॥ १०५ ॥
चतुर्धा गन्धकः प्रोक्तो रक्तः पीतः सितोऽसितः ।
रक्तो हेमक्रियासूक्तः पीतश्वेतौ रसायने ॥ १०६ ॥
व्रणादिलेपने श्वेतः कृष्णः श्रेष्ठः सुदुर्लभः ।
गन्धकः कटुकस्तिक्तो वीर्योष्णस्तुवरः सरः ॥ १०७ ॥
पित्तलः कटुकः पाके कण्डूवीसर्पजन्तुजित् ।
हन्ति कुष्ठक्षयप्लीहकफवातान् रसायनः ॥ १०८ ॥
अशोधितो गन्धक एष कुष्ठं करोति तापं विषमं शरीरे ।
शोषं च रूपं च बलं तथोजः शुक्रं निहन्त्येव करोति चास्रम् ॥ १०९ ॥

टीका--गन्धककी उत्पत्ति, नाम, लक्षण और गुणोंको कहते हैं-श्वेतद्वीपमें पहिले क्रीडा करती हुई पार्वतीजीका कपड़ा रजसे भीग या था उस कपड़ेसे क्षीरसागरमें स्नान करती हुई पार्वतीजीका जो रज फैला उससे गन्धक हुआ ॥१०४॥ गन्धक, गन्धिक, गन्धपाषाण, सौगन्धिक, बलि, बलरस ये गन्धकके नाम हैं॥१०५॥ गन्धक चारप्रकारका होता है· लाल, पीला, सुफेद, काला· लाल सुवर्णक्रियामें काम आता है और पीला, सुफेद रसायनमें कहा है॥१०६॥ और घाव आदिके लेपमें सुफेद है· काला श्रेष्ठ होता है किन्तु वह दुर्लभ है· गन्धक कटु, तिक्त, वीर्यमें उष्ण, कसेला, सर होता है॥१०७॥ पित्तको करनेवाला, पाकमें कटु और खुजली, वीसर्प, कृमि इनको हरनेवाला है और कुष्ठ, क्षय, पिलही, कफ, वात, इनको हरता है तथा रसायन है॥१०८॥ विना सोधा हुआ यह गन्धक कुष्ठको और विषम सन्तापको शरीरमें करता है· शोष करता है और रूप, बल तथा ओज, शुक्र इनको हरता और रक्तको करता है ॥ १०९ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथाभ्रकस्योत्पत्तिर्नामानि लक्षणं गुणाश्च ।

पुरा वधाय वृत्रस्य वज्रिणो वज्रघाततः ।
विस्फुलिङ्गास्ततस्तस्य गगने परिसर्पिताः ॥ ११० ॥
ते निपेतुर्घनध्वानाच्छिखरेषु महीभृताम् ।
तेभ्य एव समुत्पन्नं तत्तद्गिरिषु चाभ्रकम् ॥ १११ ॥
तद्वज्रं वज्रपातत्वादभ्रमभ्ररवोद्भवात् ।
गगनात्स्खलितं यस्माद्गगनं च ततो मतम् ॥ ११२ ॥
विप्रक्षत्रियविट्शूद्रभेदात्तत्स्याच्चतुर्विधम् ।
क्रमेणैवासितं रक्तं पीतं कृष्णं च वर्णतः ॥ ११३ ॥
प्रशस्यते सितं तारं रक्तं तत्तु रसायने ।
पीतं हेमनि कृष्णं तु गदेषु द्रुतयेऽपि च ॥ ११४ ॥
पिनाकं दुर्दुरं नागं वज्रं चेति चतुर्विधम् ।
मुञ्चत्यग्नौ विनिक्षिप्तं पिनाकं दलसञ्चयम् ॥ ११५ ॥
अज्ञानाद्भक्षणं तस्य महाकुष्ठप्रदायकम् ।
दर्दुरं त्वग्निनिःक्षिप्तं कुरुते दर्दुरध्वनिम् ॥ ११६ ॥
गोलकान्बहुशः कृत्वा स स्यान्मृत्युप्रदायकः ।
नागं तु नागवद्वह्नौ फूत्कारं परिमुञ्चति ।
तद्भक्षितमवश्यं तु विदधाति भगन्दरम् ॥ ११७ ॥
वज्रं तु वज्रवत्तिष्ठेत्तन्नाग्नौ विकृतिं व्रजेत् ।
सर्वाभ्रेषु वरं वज्रं व्याधिवार्धक्यमृत्युहृत् ॥ ११८ ॥
अभ्रमुत्तरशैलोत्थं बहुसत्त्वं गुणाधिकम् ।
दक्षिणाद्रिभवं स्वल्पसत्त्वमल्पगुणप्रदम् ॥ ११९ ॥
अभ्रं कषायं मधुरं सुशीतमायुष्करं धातुविवर्धनं च ।
हन्यात्त्रिदोषं व्रणमेहकुष्ठप्लीहोदरं ग्रन्थिविषकृमींश्च ॥ १२० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोगान्हन्ति द्रढयति वपुर्वीर्यवृद्धिं विधत्ते
तारुण्याढ्यं रमयति शतं योषितां नित्यमेव ।
दीर्घायुष्काञ्जनयति सुतान्विक्रमैः सिंहतुल्या-
न्मृत्योर्भीतिं हरति सततं सेव्यमानं मृताभ्रम् ॥ १२१ ॥
पीडां विधत्ते विविधां नराणां कुष्ठं क्षयं पाण्डुगदं च शोथम् ।
हृत्पार्श्वपीडां च करोत्यशुद्धमभ्रं त्वसिद्धं गुरुतापदं स्यात् ॥१२२॥

टीका--अभ्रककी उत्पत्ति, नाम, लक्षण और गुणोंको कहते हैं-पहले इन्द्रने वृत्रासुरको मारनेके वास्ते वज्र उठाया. उससे चिनगारे आकाशमें फैलगये॥११०॥ वे बादलोंकी गरजसे पहाड़ोंकी चोटीपर गिरे. उसीसे उन उन पहाड़ोंमें अभ्रक उत्पन्न हुआ ॥ १११ ॥ वह वज्रपातसे उत्पन्न होनेसे वज्र और अभ्र (बादलों)-की गरजसे उत्पन्न होनेसे अभ्र तथा आकाशसे गिरनेसे गगन माना है ॥ ११२ ॥ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन भेद्रोंसे वह चार प्रकारका होता है. क्रमसे सफेद, लाल, पीला, काला, इन चार वर्णोंसे चार जातिका है ॥ ११३ ॥ श्वेत चांदीमें प्रशस्त है, और रक्त रसायनमें प्रशस्त है तथा पीला सोनेमें और काला रोगमें तथा गलानेमें भी प्रशस्त है ॥ ११४ ॥ पिनाक, दर्दुर, नाग, वज्र ऐसे चार प्रकारका अभ्रक होता है. पिनाक आगमें डालनेसे पत्र पत्र अलग होजाता है ॥ ११५ ॥ विनाजाने उसके खानेसे महाकुष्ठ उत्पन्न होता है. दर्दुर आगमें डालनेसे बहुतसे गोलकों करके दर्दुरशब्दको करता है. वह मृत्यु-दायक होता है. नाग अभ्रक सर्पके समान अग्निमें फूत्कारशब्दोंको करता है उसको खानेसे अवश्य भगंदर होता है ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ वज्र अभ्रक अग्निमें वजके समान ठहरता है. वह अग्निमें विकारको नहीं प्राप्त होता. सब अभ्रकोंमें वज्र श्रेष्ठ है. वह रोग, बुढ़ापा और मृत्यु इनको हरता है ॥ ११८ ॥ उत्तरदि-शाके पहाड़ोंमें उत्पन्न हुआ अभ्रक अधिक सत्वसे युक्त और गुणमें अधिक होता है. दक्षिणके पहाड़ोंमें उत्पन्न हुआ थोड़े सत्ववाला और अल्पगुणको देनेवाला है ॥ ११९ ॥ अभ्रक कसेला, मधुर, शीतल, आयुको करनेवाला तथा धातुको बढ़ा-नेवाला होता है और त्रिदोष, व्रण, प्रमेह, कुष्ठ, प्लीहोदर, ग्रन्थि, विष, कृमि, इनको हरता है ॥ १२० ॥ सेवन कियाहुआ अभ्रकका भस्म रोगोंको हरता है, शरी-रको दृढ करता है और शुक्रकी वृद्धिको करता है. इसके सेवन करने-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वाला मनुष्य वृद्ध भी तारुण्यको प्राप्त होता है और तारुण्यसे भरीहुई सौ स्त्रियोंका भोग करता है, तथा सिंहके समान पराक्रमवाले और दीर्घआयुवाले पुत्रोंको उत्पन्न करता है और यह मृत्युके भयको दूर करता है ॥ १२१ विना सोधाहुआ और असिद्ध अभ्रक मनुष्योंको नानाप्रकारकी पीडा करता और कुष्ठ, वात, पांडुरोग, सूजन, हृदय, पसलीकी पीडा इनको करता हैं तथा भारीपन और सन्ताप इनको भी करनेवाला है ॥ १२२ ॥

अथ हरितालस्य नामानि लक्षणं गुणाश्च ।

हरितालं तु तालं स्यादालं तालकमित्यपि ।
हरितालं द्विधा प्रोक्तं पत्राख्यं पिण्डसंज्ञकम् ॥ १२३ ॥
तयोराद्यं गुणैः श्रेष्ठं ततो हीनगुणं परम् ।
स्वर्णवर्णं गुरु स्निग्धं सपत्रं चाभ्रपत्रवत् ।
पत्राख्यं तालकं विद्याद्गुणाढ्यं तद्रसायनम् ॥ १२४ ॥
निष्पत्रं पिण्डसदृशं स्वल्पसत्त्वं तथा गुरु ।
स्त्रीपुष्पहारकं स्वल्पगुणं तत्पिण्डतालकम् ॥ १२५ ॥
हरितालं कटु स्निग्धं कषायोष्णं हरेद्विषम् ।
कण्डूकुष्ठास्यरोगास्रकफपित्तकचव्रणान् ॥ १२६ ॥
हरति च हरितालं चारुतां देहजातां
सृजति च बहुतापामङ्गसङ्कोचपीडाम् ।
वितरति कफवातौ कुष्ठरोगं विदध्या-
दिदमशितमशुद्धं मारितं चाप्यसम्यक् ॥ १२७ ॥

टीका—हरितालके नाम, लक्षण और गुणोंको करते हैं–हरिताल, ताल, आलतालक ये हरितालके नाम हैं. हरिताल दो प्रकारका होता है–एक बरकी, दूसरा गोबरिया ॥ १२३ ॥ उनमें पहिला गुणमें श्रेष्ठ और दूसरा हीनगुण है. रंगमें सोनेके समान, भारी, चिकना और वरकके सहित व अभ्रकके वरकके समान जो होता है उसको वरकी हरिताल जानना चाहिये. वह गुणमें अधिक और रसायन है ॥ १२४ ॥ बे वरक, पिंडके समान, थोड़े सत्ववाला तथा भारी, स्त्रीके रजको

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हरनेवाला, पिण्ड हरिताल गुणमें न्यून होता है ॥ १२५ ॥ हरिताल कड़वी, चिकनी कैसेली, गरम होती है और विष, खुजली, कुष्ठ, मुखरोग, रक्तपित्त, कफ, कच, व्रण इनको हरता है ॥ १२६ ॥ अशुद्ध और अच्छीतरह न फुका हुआ हरताल खानेसे देहकी सुन्दरताको हरता है और अधिक सन्ताप, शरीरका संकोच, पीडा इनको करता है. कफ, वात बढ़ाके कुष्ठरोगको करता है ॥ १२७ ॥

अथ मनःशिलाया नामानि गुणाश्च ।

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका ।
नैपाली कुनटी गोला शिला दिव्यौषधिः स्मृता ॥ १२८ ॥
मनःशिला गुरुर्वर्ण्या सरोष्णा लेखनी कटुः ।
तिक्ता स्निग्धा विषश्वासकासभूतकफास्रनुत् ॥ १२९ ॥
मनःशिला मन्दबलं करोति जन्तुं ध्रुवं शोधनमन्तरेण ।
मलानुबन्धं किल मूत्ररोधं सशर्करं कृच्छ्रगदं च कुर्यात् ॥१३०॥

टीका—मैनशिलके नाम और गुण कहते हैं—मनःशिला, मनोगुप्ता, मनोह्वा, नागजिह्विका, नैपाली, कुनटी, गोला, शिला, दिव्यौषधि, ये मैनसिलके नाम हैं ॥ १२८ ॥ मैनसिल भारी, वर्णको अच्छा करनेवाली, सर, उष्ण, तिक्त, लेखनी, और चिकनी होती है और विष, श्वास,कास,भूत, कफ, रक्त इनको हरनेवाली है ॥१२९शोधनके विना मैनसिल बलको कम करती है और निश्चय कृमिको करती है॥ तथा कबजियत, मूत्रका न होना और शर्कराके सहित मूत्रकृच्छ्रको करती है॥१३०॥

अथ स्रोतोञ्जनसौवीरयोर्नामगुणाः ।

अञ्जनं यामुनं चापि कापोताञ्जनमित्यपि ।
तत्तु स्रोतोञ्जनं कृष्णं सौवीरं श्वेतमीरितम् ॥ १३१ ॥
वल्मीकशिखराकारं भिन्नमञ्जनसन्निभम् ।
घृष्टं तु गैरिकाकारमेतत्स्रोतोञ्जनं स्मृतम् ॥ १३२ ॥
स्रोतोञ्जनसमं ज्ञेयं सौवीरं तत्तु पाण्डुरम् ।
स्रोतोञ्जनं स्मृतं स्वादु चक्षुष्यं कफपित्तनुत् ॥ १३३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कषायं लेखनं स्निग्धं ग्राहि छर्दिविषापहम्।
सिध्मक्षयास्रहृच्छीतं सेवनीयं सदा बुधैः॥ १३४॥
स्रोतोञ्जनगुणाः सर्वे सौवीरेऽपि मता बुधैः।
किन्तु द्वयोरञ्जनयोः श्रेष्ठं स्रोतोञ्जनं स्मृतम्॥ १३५॥

टीका—अंजन, यामुन, कापोतांजन, ये सुरमेके नाम हैं. काले सुरमेको स्रोतोंजन और सफेदको सौवीर कहा है॥१३१॥ बाँबीके शिखराकार, भिन्न, काजलके समान होता है और घिसनेसे गेरूके आकार होता है, उसको स्रोतांजन कहते हैं॥ १३२॥ स्रोतोंजनके समान सौवीरको जानना चाहिये. यह सफेद होता है. काला सुरमा मधुर, नेत्रको हित, कफपित्तको हरता है॥ १३३॥ कसेला, लेखन, चिकना, काबिज, वमन और विषको हरता है और सिध्म, क्षय तथा रक्तको दूर करनेवाला, व शीतल होता है और विद्वानोंके द्वारा सदा सेवन करनेके योग्य है॥ १३४॥ काले सुरमेके सब गुण सफेद सुरमेमें भी पंडितोंने माने है, परन्तु दोनों अंजनोंमें काला अंजन श्रेष्ठ कहा है॥ १३५॥

अथ टङ्कण (सुहागा) नामगुणाः।

टङ्कणोऽग्निकरो रूक्षः कफघ्नो वातपित्तकृत्॥ १३६॥

टीका—सुहागा अग्निको करनेवाला, रूखा, कफको हरता, वातपित्तको करनेवाला है. यह उपरस होनेसे यहांपर फिर कहा गया है॥ १३६॥

अथ स्फटिकानामगुणाः।

स्फटी च स्फटिका प्रोक्ता श्वेता शुभ्रा च रङ्गदा।
दृढरङ्गा रङ्गदा च दृढा रङ्गापि कथ्यते॥ १३७॥
स्फटिका तु कषायोष्णा वातपित्तकफव्रणान्।
निहन्ति श्वित्रवीसर्पान्योनिसङ्कोचकारिणी॥ १३८॥

टीका—स्फटी, स्फटिका, श्वेता, शुभ्रा, रंगदा, दृढरंगा, रंगदाभा, दृढा, रंगा, ये फिटकरीके नाम हैं॥ १३७॥ फिटकरी कसेली, गरम होती है; और वात, पित्त, कफ, व्रण इनको हरती है; तथा श्वित्र, विसर्पको भी हरती है और योनिका सङ्कोच करनेवाली है॥ १३८॥

---

१ इसके नामदि हरीतक्यादिवर्गमें कहे हैं.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ राजावर्तनामगुणाः ।

राजावर्त्तः कटुस्तिक्तः शिशिरः पित्तनाशनः ।
राजावर्त्तः प्रमेहघ्नश्छर्दिहिक्कानिवारणः ॥ १३९ ॥

टीका--राजावर्त (रावटी) कड़वी, तिक्त, शीतल, पित्त, प्रमेह, और वमन हिचकी इनको हरनेवाली है ॥ १३८॥

अथ चुम्बकनामगुणाः ।

चुम्बकः कान्तपाषाणो यः कान्तो लोहकर्षकः ।
चुम्बको लेखनः शीतो मेदोविषगरापहः ॥ १४० ॥

टीका—चुंबक, कान्तपाषाण, कान्त, लोहकर्षक ये लोह[1]चुंबकके नाम हैं, यह लेखन, शीतल, मेद, विष, गर इनको हरता है ॥ १३९ ॥

अथ गैरिकद्वयनामगुणाः ।

गैरिकं रक्तधातुश्च गैरेयं गिरिजं तथा ।
सुवर्णगैरिकं त्वन्यत्ततो रक्ततरं हि तत् ॥ १४१ ॥
गैरिकद्वितयं स्निग्धं मधुरं तुवरं हिमम् ।
चक्षुष्यं दाहपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् ॥ १४२ ॥

टीका—गैरिक, रक्तधातु, गैरेय, गिरिज, ये गेरूके नाम हैं. सोनागेरू दूसरा होता है और वह बहुत लाल होता है ॥१४१॥ दोनों गेरू चिकने, मधुर, कसेले, शीतल, नेत्रको हित और दाह, पित्त, रक्त, कफ, हिचकी, विष, इनको हरते हैं ॥१४२॥

अथ खटीद्वयनामगुणाः ।

खटिका कठिनी चापि लेखनी च निगद्यते ।
खटिका दाहजिच्छीता मधुरा विषशोथजित् ॥ १४३ ॥
लेपादेतद्गुणा प्रोक्ता भक्षिता मृत्तिकासमा ।
खटी गौरखटी द्वे च गुणैस्तुल्ये प्रकीर्तिते ॥ १४४ ॥

टीका—खटिका, कठिनी, लेखनी, ये खड़ियाके नाम हैं. खड़िया दाहको हरनेवाली, शीतल, मधुर और विष शोथको हरनेवाली है ॥ १४३ ॥ लेपसे ये कहे-

---

१ यह्यभी कान्तलोहका एक भेद है.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हुए गुण होते हैं और खानेसे मट्टीके समान होती है. खड़िया और सफेद खड़िया दोनों गुणमें समान कही हैं ॥ १४४ ॥

अथ वालुकानामगुणाः ।

वालुका सिकता प्रोक्ता शर्करा रेतजापि च ।
वालुका लेखनी शीता व्रणोरःक्षतनाशिनी ॥ १४५ ॥

टीका—वालुका, सिकता, शर्करा, रेतजा, ये बालूके नाम हैं. बालू लेखन, शीतल है, व्रण, उरःक्षत इनको हरनेवाली है ॥ १४५ ॥

अथ खर्परीनामगुणाः ।

खर्परी तुत्थकं तुत्थादन्यत्तद्रसकं स्मृतम् ।
ये गुणास्तुत्थके प्रोक्तास्ते गुणा रसके स्मृताः ॥ १४६ ॥

टीका—खपरिया यह लीलाथोथेका भेद है. खर्परी, तुत्थक, रसक ये खपरियाके नाम हैं. जो गुण लीलेथोथेमें कहे हैं वे गुण खपरियामें कहे हैं ॥ १४६ ॥

अथ कासीसनामगुणाः ।

कासीसं धातुकासीसं पांसुकासीसमित्यपि ।
तदेव किंचित्पीतं तु पुष्पकासीसमुच्यते ॥ १४७ ॥
कासीसमम्लमुष्णं च तिक्तं च तुवरं तथा ।
वातश्लेष्महरं केश्यं नेत्रकण्डूविषप्रणुत् ॥ १४८ ॥
मूत्रकृच्छ्राश्मरीश्वित्रनाशनं परिकीर्त्तितम् ।

टीका—कासीस, धातुकासीस, पांशुकासीस, ये कासीसके नाम हैं. कुछ एक पीलेको पुष्पकासीस कहते हैं ॥ १४७ ॥ कासीस खट्टा, गरम, तिक्त, तथा कसेला और वात पित्त कफको हरता, केशको हित तथा नेत्रकी खुजली, विष इनको हरता है ॥ १४८ ॥ और मूत्र, पथरी, श्वित्र, कुष्ठ, इनका नाशक है.

अथ सौराष्ट्रीनामगुणाः ।

सौराष्ट्री तुवरी काक्षी मृत्तालकसुराष्ट्रजे ॥ १४९ ॥
आढकी चापि सा ख्याता मृत्स्ना च सुरमृत्तिका ।
स्फटिकाया गुणाः सर्वे सौराष्ट्र्यामपि कीर्तिताः ॥ १५० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—सौराष्ट्री, तुवरी, काक्षी, मृत्तालका, सुराष्ट्रजा ॥१४९॥ आढकी, मृत्स्ना, सुरमृत्तिका, ये गोपीचन्दन (सोरठकी मिट्टी) के नाम हैं. स्फटिकाके सब गुण सोरठीमें कहे हैं ॥ १५० ॥

अथ कृष्णमृत्तिकागुणाः ।

कृष्णमृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मपित्तनुत् ।

टीका—काली मिट्टी क्षत, दाह, रक्तविकार, प्रदर, कफ, पित्त, इनको दूर करती है ।

अथ कर्दमगुणाः ।

कर्दमो दाहपित्तार्तिशोथघ्नः शीतलः सरः ॥ १५१ ॥

टीका—कीचड़ दाह, पित्त, पीडा, सूजन, इनको हरती, शीतल और सर है॥१५१॥

अथ बोलनामगुणाः ।

बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः समाः ।
बोलं रक्तहरं शीतं मेध्यं दीपनपाचनम् ॥ १५२ ॥
मधुरं कटु तिक्तं च दाहस्वेदत्रिदोषजित् ।
ज्वरापस्मारकुष्ठघ्नं गर्भाशयविशुद्धिकृत् ॥ १५३ ॥

टीका—बोल, गन्धरस, प्राण, पिण्ड, गोपरस, ये बोलके नाम हैं. बोल रक्तहर्ता, शीतल, मेधाको करनेवाला, दीपन, पाचन, मधुर, कटु, तिक्त और दाह, पसीना तथा त्रिदोष इनको हरनेवाला है. ओज, ज्वर, मिरगी, कुष्ठ इनको हरता और गर्भाशयको शुद्ध करनेवाला होता है ॥ १५२ ॥ १५३ ॥

अथ कङ्कुष्ठोत्पत्तिलक्षणनामगुणाः ।

हिमवत्पादशिखरे कङ्कुष्ठमुपजायते ।
तत्रैकं रक्तकालं स्यात्तदन्यदण्डकं स्मृतम् ॥ १५४ ॥
पीतप्रभं गुरु स्निग्धं श्रेष्ठं कङ्कुष्ठमादिशेत् ।
श्यामं पीतं लघु त्यक्तसत्त्वं नेष्टं तथाण्डकम् ॥ १५५ ॥
कङ्कुष्ठं काककुष्ठं च वराङ्गं कोलकाकुलम् ॥ १५६ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कङ्कुष्ठं रेचनं तिक्तं कटूष्णं वर्णकारकम् ।
कृमिशोथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम् ॥ १५७ ॥

टीका—कंकुष्ठ (मुरदासंग) ये एक किस्मकी पहाड़ी मिट्टी है. इसकी उत्पत्ति, लक्षण, नाम और गुण कहते हैं. हिमाचलपर कंकुष्ठ होता है, उसमें एक रक्त काला होता है और दूसरा अंडक कहागया है ॥ १५४ ॥ पीला, भारी, चिकना ऐसेको श्रेष्ठ कंकुष्ठ कहते हैं और काला, पीला, हलका और बेसत्त्व यह अच्छा नहीं. इसको अंडक कहते हैं ॥ १५५ ॥ कंकुष्ठ, काककुष्ठ, वराङ्ग, कोलकाकुल, ये कंकुष्ठके नाम हैं ॥ १५६ ॥ कंकुष्ठ रेचन, तिक्त, कटु, उष्ण, वर्णको करनेवाला और कृमि, सूजन, उदर, आध्मान, बायगोला, अफारा, कफ इनको हरता है ॥ १५७ ॥

अथ रत्ननिरुक्तिः ।

धनार्थिनो जनाः सर्वे रमन्तेऽस्मिन्नतीव यत् ।
ततो रत्नमिति प्रोक्तं शब्दशास्त्रविशारदैः ॥ १५८ ॥

टीका—धनार्थी सबलोग इसमें अधिककरके रमते हैं. इसवास्ते व्याकरणके पंडितोंने रत्न ऐसा कहा है ॥ १५६ ॥

अथ रत्नस्य नामानि रूपं च ।

रत्नं क्लीबे मणिः पुंसि स्त्रियामपि निगद्यते ।
तत्तु पाषाणभेदोऽस्ति मुक्तादि च तदुच्यते ॥ १५९ ॥

टीका—अब रत्नके नाम और लक्षणनिरूपण—रत्न नपुंसकमें और मणि पुल्लिंगमें तथा स्त्रीलिंगमें भी होता है. वह पाषाणका भेद है. और मुक्तादिकको भी रत्न कहते हैं ॥ १५९ ॥

अथ नव रत्नानि ।

रत्नं गारुत्मतं पुष्परागो माणिक्यमेवच ।
इन्द्रनीलश्च गोमेदस्तथा वैडूर्यमित्यपि ।
मौक्तिकं विद्रुमश्चेति रत्नान्युक्तानि वै नव ॥ १६० ॥
विष्णुधर्मोत्तरेऽपि नवरत्ननिरूपणम् ।
मुक्ताफलं हीरकं च वैडूर्यं पद्मरागकम् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्परागं च गोमेदं नीलं गारुत्मतं तथा ।
प्रवालयुक्तान्येतानि महारत्नानि वै नव ॥ १६१ ॥

टीका—नवरत्नका निरूपण—रत्न (हीरा), गारुत्मत (पन्ना), पुष्पराग (पुखराज) और माणिक्य(माणिक), पद्मराग, नील (नीलम), गोमेद तथा वैदूर्य(लहसुनिया) और मोती, मूंगा, इसप्रकार ये नव रत्न कहे हैं ॥ १६० ॥ विष्णुधर्मोत्तरमें भी नवरत्न कहे हैं—मोती, हीरा, वैदूर्य, माणिक्य, पुष्पराग, गोमेद, नील, पन्ना और मूंगा ये नव महारत्न हैं ॥ १६१ ॥

अथ हीरकनामलक्षणगुणाः ।

हीरकः पुंसि वज्रोऽस्त्री चन्द्रो मणिवरश्च सः ।
स तु श्वेतः स्मृतो विप्रो लोहितः क्षत्रियः स्मृतः ॥ १६२ ॥
पीतो वैश्योऽसितः शूद्रश्चतुर्वर्णात्मकश्च सः ।
रसायने मतो विप्रः सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ १६३ ॥
क्षत्रियो व्याधिविध्वंसी जरामृत्युहरः स्मृतः ।
वैश्यो धनप्रदः प्रोक्तस्तथा देहस्य दार्ढ्यकृत् ॥ १६४ ॥
शूद्रो नाशयति व्याधीन्वयस्तम्भं करोति च ।
पुंस्त्रीनपुंसकानीह लक्षणीयानि लक्षणैः ॥ १६५ ॥
सुवृत्ताः फलसम्पूर्णास्तेजोयुक्ता बृहत्तराः ।
पुरुषास्ते समाख्याता रेखाबिन्दुविवर्जिताः ॥ १६६ ॥
रेखाबिन्दुसमायुक्ताः षडस्रास्ते स्त्रियः स्मृताः ।
त्रिकोणाश्च सुदीर्घास्ते विज्ञेयाश्च नपुंसकाः ॥
तेषु स्युः पुरुषाः श्रेष्ठा रसबन्धनकारिणः ॥ १६७ ॥
स्त्रियः कुर्वन्ति कायस्य कान्तिं स्त्रीणां सुखप्रदाः ।
नपुंसकास्त्ववीर्याः स्युरकामाः सत्त्ववर्जिताः ॥ १६८ ॥
स्त्रियः स्त्रीभ्यः प्रदातव्याः क्लीबं क्लीबे प्रयोजयेत् ।
सर्वेभ्यः सर्वदा देयाः पुरुषा वीर्यवर्धनाः ॥ १६९ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अशुद्धं कुरुते वज्रं कुष्ठं पार्श्वव्यथां तथा ।
पाण्डुतां पङ्गुलत्वं च तस्मात्संशोध्य मारयेत् ॥ १७० ॥

टीका—हीरक हीरा इसप्रकार लोकमें प्रसिद्ध है. उसके नाम, लक्षण और गुण कहते हैं–हीरक पुल्लिंगमें और वज्र पुंनपुंसकमें होता है. चंद्र, मणिवर, ये हीरेके नाम हैं. वह श्वेत ब्राह्मण कहागया है और लाल क्षत्रिय कहा है ॥ १६२ ॥ पीला वैश्य और काला शूद्र, ऐसे हीरा चार वर्णका होता है. रसायनमें ब्राह्मण अच्छा है और सब सिद्धियोंको देनेवाला है ॥ १६३ ॥ क्षत्रिय रोग हरता और बुढ़ापा तथा मृत्युको हरता है. वैश्य धनदेनेवाला कहा है तथा शरीरकी दृढता करनेवाला है ॥ १६४ ॥ शूद्र रोगोंको हरता और वयको स्थापन करता है. इसमें स्त्री, पुरुष और नपुंसक इनके लक्षण होते हैं ॥ १६५ ॥ अच्छे, गोल, सब फलवाले, तेजोयुक्त, बहुत बड़े और रेखा बिंदुसे रहित ऐसे हीरे पुरुष कहेगये हैं ॥ १६६ ॥ और रेखा बिंदुसे युक्त, छे कोनवाले स्त्री कहेगये हैं. त्रिकोण और अच्छे लम्बे नपुंसक जानने चाहिये. उनमें पुरुष श्रेष्ठ हैं और वे पारेको बांधनेवाले हैं ॥१६७॥ स्त्रीजातिके हीरे शरीरकी कान्तिको करते हैं और स्त्रियोंको सुख देनेवाले हैं. नपुंसक अवीर्य होते हैं और अकाम तथा सत्वसे रहित होते हैं ॥ १६८ ॥ स्त्रीजातिके हीरे स्त्रियोंको देने चाहिये और नपुंसकको नपुंसक देवे और सबको सर्वदा वीर्यको बढ़ानेवाले पुरुषजातिके हीरे देनेचाहिये ॥ १६९ ॥ विना शोधाहुआ हीरा कोढ़ तथा पसलीकी पीडा, पांडुता और लूलापन इनको करता है; इसवास्ते शोधकर फूंके ॥ १७० ॥

अथ मारितवज्रगुणाः ।

आयुः पुष्टिं बलं वीर्यं वर्णं सौख्यं करोति च ।
सेवितं सर्वरोगघ्नं मृतं वज्रं न संशयः ॥ १७१ ॥

टीका—हीरेकी भस्मका गुण–मारा हुआ हीरा आयु, पुष्टि, बल, वीर्य, वर्ण, सौख्य, इनको करता है. और हीरेका भस्म सेवन करनेसे सब रोगोंको हरता है. इसमें कोई संशय नहीं है ॥ १७१ ॥

अथ गारुत्मत (पन्ना) नामानि ।

गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः ।

टीका—गारुत्मत, मरकत, अश्मगर्भ, हरिन्मणि, ये पन्नेके नाम हैं ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ माणिक्यनामानि।

माणिक्यं पद्मरागः स्याच्छोणरत्नं च लोहितम् ॥ १७२ ॥

टीका--माणिक्य, पद्मराग, शोणरत्न, लोहित, ये माणिकके नाम हैं ॥१७२॥

अथ पुष्पराग (पुखराज) नामानि।

पुष्परागो मञ्जुमणिः स्याद्वाचस्पतिवल्लभः ।

टीका--पुष्पराग, मंजुमणि, वाचस्पतिवल्लभ, ये पुखराजके नाम हैं ।

अथेन्द्रनीलगोमेदयोर्नामानि ।

नीलं तथेन्द्रनीलं च गोमेदः पीतरत्नकम् ॥ १७३ ॥

टीका--नील, इन्द्रनील, ये नीलमके नाम हैं. गोमेद तथा पीतरत्नक ये गोमेदके नाम हैं ॥ १७३ ॥

अथ वैदूर्य (लहसुनियां) नामानि।

वैदूर्यं दूरजं रत्नं स्यात्केतुग्रहवल्लभम् ।

टीका--वैदूर्य, दूरज, केतुग्रहवल्लभ, ये वैदूर्य (लहसुनिया) के नाम हैं.

अथ मौक्तिक (मोती) नामानि।

मौक्तिकं शौक्तिकं मुक्ता तथा मुक्ताफलं च तत् ॥ १७४ ॥

टीका—मौक्तिक, शौक्तिक, मुक्ता तथा मुक्ताफल, ये मोतीके नाम हैं ॥१७४॥

अथ मौक्तिकोत्पत्तिस्थानानि।

शुक्तिः शङ्खो गजः क्रोडः फणी मत्स्यश्च दर्दुरः ।
वेणुरेते समाख्यातास्तज्ज्ञैर्मौक्तिकयोनयः ॥ १७५ ॥
मौक्तिकं शीतलं वृष्यं चक्षुष्यं बलपुष्टिदम्

टीका—शीप, शंख, हाथी, शूकर, सर्प, मछली, मेंढक और बांस ये जाननेवालोंने मोतीके उत्पत्तिस्थान कहे हैं ॥ १७५ ॥ मोती शीतल, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, नेत्रको हित और बल पुष्टिका देनेवाला है ।

अथ प्रवालनामानि।

पुंसि क्लीबे प्रवालः स्यात्पुमानेव तु विद्रुमः ॥ १७६ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—पुल्लिंग और नपुंसकमें प्रवाल होता है, और विद्रुम पुल्लिंगमें ही होता है ॥ १७६ ॥

अथ सर्वरत्नभक्षणधारणगुणाः ।

रत्नानि भक्षितानि स्युर्मधुराणि सराणि च ।
चक्षुष्याणि च शीतानि विषघ्नानि धृतानि च ।
मङ्गल्यानि मनोज्ञानि ग्रहदोषहराणि च ॥ १७७ ॥

टीका—भक्षणकिये हुए रत्न मधुर और सर होते हैं. तथा नेत्रको हित, शीतल और विषको हरते हैं, और धारण किये मङ्गलके करनेवाले, मनोज्ञ व ग्रहदोषको हरते हैं ॥ १७७ ॥

अथ ग्रहप्रियाणि रत्नानि ।

किं रत्नं कस्य ग्रहस्य प्रीतिकारित्वेन ग्रहदोषहरं
भवतीति प्रश्ने तदुत्तरमाह रत्नमालायाम्
माणिक्यं तरणेः सुजातममलं मुक्ताफलं शीतगो-
र्माहेयस्य तु विद्रुमो निगदितः सौम्यस्य गारुत्मतम् ।
देवेज्यस्य च पुष्परागमसुराचार्यस्य वज्रं शने-
र्नीलं निर्मलमन्ययोर्निगदिते गोमेदवैडूर्यके ॥ १७८ ॥

टीका—कौनसा रत्न किस ग्रहका प्रीतिकर होनेसे दोषनाशक होता है इस प्रश्नमें उसका उत्तर रत्नमालामें कहते हैं. सूर्यका माणिक, चंद्रका मोती, मङ्गलका मूंगा, बुधका पन्ना कहा है. बृहस्पतिका पुखराज, शुक्रका हीरा, शनिका निर्मल नीलमणि और राहुका गोमेद, केतुका वैडूर्य कहा है ॥ १७८ ॥

अथोपरत्ननामगुणाः ।

उपरत्नानि काचश्च कर्पूराश्मा तथैव च ।
मुक्ताशुक्तिस्तथा शङ्ख इत्यादीनि बहून्यपि ॥ १७९ ॥
गुणा यथैव रत्नानामुपरत्नेषु ते तथा ।
किन्तु किञ्चित्ततो हीना विशेषोऽयमुदाहृतः ॥ १८० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—काच, कापूरी पत्थर, और मोतीकी सीप, शंख, इत्यादि बहुतसे उपरत्न हैं ॥ १७९ ॥ रत्नोंके जैसे गुण हैं वैसे ही उपरत्नोंमें भी गुण कहे हैं; परन्तु कुछ उनसे कम हैं, यह विशेष कहा है ॥ १८० ॥

अथ विषस्य नामलक्षणगुणाः ।

विषं तु गरलः क्ष्वेडस्तस्य भेदानुदाहरेत् ।

टीका—विष, गरल, क्ष्वेड, ये विषके नाम हैं. उनके भेदोंको कहते हैं.

अथ विषभेदाः ।

वत्सनाभः सहारिद्रः सक्तुकश्च प्रदीपनः ॥ १८१ ॥
सौराष्ट्रिकः शृङ्गिकश्च कालकूटस्तथैवच ।
हालाहलो ब्रह्मपुत्रो विषभेदा अमी नव ॥ १८२ ॥

टीका—वत्सनाभ, हारिद्र, सक्तुक, प्रदीपन, ॥ १८१ ॥ सौराष्ट्रिक, शृंगिक, कालकूट, हालाहल, ब्रह्मपुत्र, ये विषके भेद हैं ॥ १८२ ॥

अथ वत्सनाभस्वरूपम् ।

सिन्दुवारसदृक्पत्रो वत्सनाभ्याकृतिस्तथा ।
यत्पार्श्वे न तरोर्वृद्धिर्वत्सनाभः स भाषितः ॥ १८३ ॥

टीका—लाल कचनारके समान पत्ते तथा बछड़ेके नाभिके आकार और जिसके पास अन्य वृक्षकी वृद्धि नहीं होती है उसको बच्छनाग कहते हैं॥ १८३ ॥

अथ हारिद्रस्वरूपम् ।

हरिद्रातुल्यमूलो यो हारिद्रः स उदाहृतः ।

टीका—जो हरदीकी जड़के समान होता है उसे हारिद्र कहते हैं.

अथ सक्तुकस्वरूपम् ।

यद्ग्रन्थिः सक्तुकेनैव पूर्णमध्यः स सक्तुकः ॥ १८४ ॥

टीका—जो गांठ बीचमें सत्तूसे भरीहुईके समान होती है वह सक्तुक है १८४॥

अथ प्रदीपनस्वरूपम् ।

वर्णतो लोहितो यः स्याद्दीप्तिमान् दहनप्रभः ।
महादाहकरः पूर्वैः कथितः स प्रदीपनः ॥ १८५ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—जो रंगमें लाल होता है और अङ्गारेके समान दीप्यमान होता है तथा बहुत दाहको करनेवाला होता है उसको प्राचीन लोगोंने प्रदीपन कहा है ॥ १८५ ॥

अथ सौराष्ट्रिकस्वरूपम् ।

सुराष्ट्रविषये यः स्यात्स सौराष्ट्रिक उच्यते ॥ १८६ ॥

टीका—सुराष्ट्रदेशमें जो होता है वह सौराष्ट्रिक कहा है ॥ १८६ ॥

अथ शृङ्गिकस्वरूपम् ।

यस्मिन् गोशृङ्गके बद्धे दुग्धं भवति लोहितम् ।
स शृङ्गिक इति प्रोक्तो द्रव्यतत्त्वविशारदैः ॥ १८७ ॥

टीका—सिंगियाका स्वरूप–जिसको गायके सींगमें बांधनेसे दुग्ध लाल होता है उसको द्रव्यके तत्त्वोंके जाननेवालोंने शृङ्गिक कहा है ॥ १८७ ॥

अथ कालकूटस्वरूपम् ।

देवासुररणे देवैर्हतस्य पृथुमालिनः ।
दैत्यस्य रुधिराज्जातस्तरुरश्वत्थसन्निभः ॥ १८८ ॥
निर्यासः कालकूटोऽस्य मुनिभिः परिकीर्तितः ।
सोऽहिक्षेत्रे शृङ्गवेरे कोङ्कणे मलये भवेत् ॥ १८९ ॥

टीका—देवता और दानवोंके युद्धमें देवताओंसे मारेगये पृथुमाली नाम दैत्यके रुधिरसे पीपलके समान वृक्ष उत्पन्न हुआ ॥ १८८ ॥ इसके गोंदको कालकूट ऐसा मुनिओंने कहा है. वह अहिक्षेत्रमें, शृंगवेरमें और कोङ्कणदेश तथा मलयाचलमें होता है ॥ १८९ ॥

अथ हालाहलस्वरूपम् ।

गोस्तनाभफलो गुच्छस्तालपत्रच्छदस्तथा ।
तेजसा यस्य दह्यन्ते समीपस्था द्रुमादयः ॥ १९० ॥
असौ हालाहलो ज्ञेयः किष्किन्धायां हिमालये ।
दक्षिणाब्धितटे देशे कोङ्कणेऽपि च जायते ॥ १९१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—गायके स्तनकेसे फलोंके गुच्छे तथा तालपत्रके समान जिसके पत्र होते हैं और जिसके तेजसे पासके वृक्षादिक जलजाते हैं ॥ १९० ॥ इसको हालाहल जानना चाहिये. और यह किष्किन्धामें, हिमालयमें, दक्षिणसमुद्रके किनारेपरके देशोंमें और कोङ्कणदेशमें भी उत्पन्न होता है ॥ १९१ ॥

अथ ब्रह्मपुत्रस्य स्वरूपम् ।

वर्णतः कपिलो यः स्यात्तथा भवति सारतः ।
ब्रह्मपुत्रः स विज्ञेयो जायते मलयाचले ॥ १९२ ॥

टीका—जो रंगसे कपिल तथा सारसे कपिल होता है उसको ब्रह्मपुत्र जानना चाहिये. वह मलयाचलमें होता है ॥ १९२ ॥

अथ विषसामान्यगुणाः ।

ब्राह्मणः पाण्डुरस्तेषु क्षत्रियो लोहितप्रभः ।
वैश्यः पीतः सितः शूद्रो विष उक्तश्चतुर्विधः ॥ १९३ ॥
रसायने विषं विप्रं क्षत्रियं देहपुष्टये ।
वैश्यं कुष्ठविनाशाय शूद्रं दद्याद्वधाय हि ॥ १९४ ॥
विषं प्राणहरं प्रोक्तं व्यवायि च विकाशि च ।
आग्नेयं वातकफहृद्योगवाहि मदावहम् ॥ १९५ ॥

व्यवायि सकलकायगुणव्यापनपूर्वकं पाकगमनशीलम् । विकाशि ओजःशोषणपूर्वकं सन्धिबन्धशिथिलीकरणशीलम् । आग्नेयम् अधिकाग्न्यम् । योगवाहि सङ्गिगुणग्राहकम् । मदावहम् तमोगुणाधिक्येन बुद्धिविध्वंसकम् ।

टीका—ब्राह्मणजातिका श्वेत, लाल क्षत्रिय, पीला वैश्य और काला शूद्र ऐसे विष चारप्रकारका कहा है ॥ १९३ ॥ रसायनमें सफेद, शरीरकी पुष्टिके अर्थ लाल, पीला कुष्ठनाशके अर्थ और काला मरणके अर्थ देवे ॥ १९४ ॥ विष प्राणहर और व्यवायि तथा विकाशि और अग्निगुणवाला, वातकफको हरनेवाला, योगवाही तथा मद करनेवाला है ॥ १९५ ॥ व्यवायि–संपूर्ण

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शरीरगुणोंमें व्यापनपूर्वक पचनेवाला व्यवायि है. विकाशि–ओजके शोषणपूर्वक जोड़ोंके बन्धनको शिथिल करनेवाला. आग्नेय–अर्थात् बहुत गरम. योगवाहि अर्थात् संगवालेके गुणको ग्रहण करनेवाला. मदावह–तमोगुणकी अधिकतासे बुद्धिको हरण करनेवाला.

तदेव युक्तियुक्तं तु प्राणदायि रसायनम् ।
योगवाहि त्रिदोषघ्नं बृंहणं वीर्यवर्धनम् ॥ १९६ ॥
ये दुर्गुणा विषेऽशुद्धे ते स्युर्हीना विशोधनात् ।
तस्माद्विषं प्रयोगेषु शोधयित्वा प्रयोजयेत् ॥ १९७ ॥

टीका—वह विष युक्तिपूर्वक योजना कियाहुआ प्राण देनेवाला, रसायन, योगवाही, त्रिदोषहर्ता, बृंहण और वीर्यको बढ़ानेवाला है ॥ १९६ ॥ जो दुर्गुण अशुद्ध विषमें हैं वे शोधनसे हीन हो जाते हैं. इससे प्रयोगोंमें सोधेहुए विषका उपयोग करे ॥ १९७ ॥

अथोपविषजातयः ।

अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं लाङ्गली करवीरकः ।
गुञ्जाहिफेनो धत्तूरः सप्तोपविषजातयः ॥ १९८ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे धातूपधातुरसोपरसरत्नोपरत्नविषोपविषवर्गः ।

टीका—आकका दूध, थूहरका दूध, करिहारी, कनेर, चिरमिठी, अफीम, धतूरा, ये सात जात उपविषकी हैं अर्थात् गौणविष, इनका गुण जहां २ इनक वर्णन है वहां देखलेना ॥ १९८ ॥

इति हरीतक्यादिनिघण्टे धातूपधातुरसोपरसरत्नोपरत्नविषोपविषवर्गः समाप्तः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्रीः ।

अथ

हरीतक्यादिनिघण्टे

धान्यवर्गः ।

तत्र धान्यानां भेदाः ।

शालिधान्यं व्रीहिधान्यं शूकधान्यं तृतीयकम् ।
शिम्बीधान्यं क्षुद्रधान्यमित्युक्तं धान्यपञ्चकम् ॥ १ ॥
शालयो रक्तशाल्याद्या व्रीहयः षष्टिकादयः ।
यवादिकं शूकधान्यं मुद्गाद्यं शिम्बिधान्यकम् ॥
कङ्ग्वादिकं क्षुद्रधान्यं तृणधान्यं च तत्स्मृतम् ॥ २ ॥

टीका—धान्योंके भेद–शालिधान्य, व्रीहिधान्य, शूकधान्य, शिम्बीधान्य, क्षुद्रधान्य, इसप्रकार पांचप्रकारके धान्य कहे हैं ॥ १ ॥ लाल चावल आदि शालिधान्य, साठी आदि व्रीहिधान्य, जव आदिक शूकधान्य, मूंग आदि शिम्बीधान्य और कंगुनी आदि क्षुद्रधान्य, है तथा उसको तृणधान्य भी कहते हैं ॥ २ ॥

अथ शालिधान्यलक्षणम् ।

कण्डनेन विना शुक्ला हैमनाः शालयः स्मृताः ॥ ३ ॥

टीका—शालिधान्यका लक्षण और गुण–विना कूटे सुफेद और हेमन्तमें होनेवाले चावल शालिधान्य कहेगये हैं ॥ ३ ॥

अथ शालिभेदाः ।

रक्तशालिः सकलमः पाण्डुकः शकुनाहृतः ।
सुगन्धकः कर्दमको महाशालिश्च दूषकः ॥ ४ ॥
पुष्पाण्डकः पुण्डरीकस्तथा महिषमस्तकः ।
दीर्घशूकः काञ्चनको हायनो लोध्रपुष्पकः ॥ ५ ॥
इत्याद्याः शालयः सन्ति बहवो बहुदेशजाः ।
ग्रन्थविस्तरभीतेस्ते समस्ता नात्र भाषिताः ॥ ६ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका--रक्तशालि, कलम, पांडुक, शकुनाहृत, सुगन्धक, कर्दमक, महाशालि, दूषक ॥ ४ ॥ पुष्पांडक, पुण्डरीक, महिषमस्तक, दीर्घशूक, कांचनक, हायन, लोध्रपुष्पक ॥ ५ ॥ इत्यादि बहुतप्रकारके बहुतसे देशोंमें होनेवाले शालिधान्य (चावल) होते हैं. ग्रन्थ बढ़जानेके भयसे सब यहांपर नहीं कहे गये॥ ६ ॥

अथ तेषां गुणाः ।

शालयो मधुराः स्निग्धा बल्या बद्धाल्पवर्चसः ।
कषाया लघवो रुच्याः स्वर्या वृष्याश्च बृंहणाः ॥ ६ ॥
अल्पानिलकफाः शीताः पित्तला मूत्रलास्तथा ।
शालयो दग्धमृज्जाताः कषाया लघुपाकिनः ॥ ७ ॥
सृष्टमूत्रपुरीषाश्च रूक्षाः श्लेष्मापकर्षणाः ।
कैदारा वातपित्तघ्ना गुरवः कफशुक्रलाः ॥ ८ ॥
कैदाराः कृष्टक्षेत्रजा उप्ताः ।
कषाया अल्पवर्चस्का मेध्याश्चैव बलावहाः ।
स्थलजाः स्वादवः पित्तकफघ्ना वातपित्तदाः ॥
किञ्चित्तिक्ताः कषायाश्च विपाके कटुका अपि ॥ ९ ॥
स्थलजा अकृष्टभूमिजाताः ।
वापिता मधुरा वृष्या बल्याः पित्तप्रणाशनाः ।
श्लेष्मलाश्चाल्पवर्चस्काः कषाया गुरवो हिमाः ॥ १० ॥
वापिताः कृष्टक्षेत्रे अकृष्टक्षेत्रे च ।
वापितेभ्यो गुणैः किंचिद्धीनाः प्रोक्ता अवापिताः ।
कृष्टक्षेत्रे अकृष्टक्षेत्रे वा ।
रोपितास्तु नवा वृष्याः पुराणा लघवः स्मृताः ।
तेभ्यस्तु रोपिता भूयः शीघ्रपाका गुणाधिकाः ॥ ११ ॥
छिन्नरूढा हिमा रूक्षा बल्याः पित्तकफापहाः ।
बद्धविट्काः कषायाश्च लघवश्चाल्पतिक्तकाः ॥ १२ ॥

टीका—धान मधुर, चिकने, बल करनेवाले, मलको बांधनेवाले और थोडा मल करनेवाले, कसेले, हलके, रुचिको करनेवाले, स्वरको अच्छा करनेवाले, शुक्रके अच्छा करनेवाले, पुष्ट ॥ ६ ॥ अल्प वात कफको करनेवाले, शीतल, पित्त तथा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मूत्रको करनेवाले होते हैं. दग्धभूमिमें उत्पन्न हुए धान कसेले, लघुपाकवाले होते हैं ॥७॥ मलमूत्रको करनेवाले, रूखे, कफको घटानेवाले हैं. वातपित्तके नाशक, भारी, कफ शुक्रको करनेवाले हैं ॥८॥ कसेले, अल्पमलको करनेवाले, मेध्य, बलको करनेवाले हैं. कैदार अर्थात् जोते हुए खेतमें बोये हुए, स्थलज अर्थात् विना जोती हुई जमीनमें स्वयं उत्पन्न हुए मधुर, पित्तकफको हरते, वातपित्तको करनेवाले, कुछ एक तिक्त और कसेले, विपाकमें भी कटु होते हैं ॥ ९ ॥ जोते खेतमें और बेजोते खेतमें बोये हुए मधुर, शुक्रको करनेवाले, बलको देनेवाले, पित्त हरते हैं. कफको करनेवाले, थोड़े मलको करनेवाले, कसेले, शीतल, भारी होते हैं ॥१०॥ बोयेहुओंसे कुछ गुणमें हीन बेबोये हुए कहे हैं. जोतेहुए खेतमें अथवा बेजोते हुए खेतमें, नये बोये हुए शुक्रको करनेवाले हैं और पुराने हलके कहे हैं. उनसे बेबोये हुए शीघ्रपाकवाले और गुणमें अधिक कहे हैं ॥ ११ ॥ कोमल कटेहुए शीतल, रूखे, बलको करनेवाले, पित्त कफको हरते, मलको बांधनेवाले, कसेले, हलके, थोड़े तिक्त होते हैं ॥१२॥

अथ रक्तशालेर्गुणाः ।

रक्तशालिर्वरस्तेषु बल्यो वर्ण्यस्त्रिदोषजित् ।
चक्षुष्यो मूत्रलः स्वर्यः शुक्रलस्तृड्ज्वरापहः ॥ १३ ॥
विषव्रणश्वासकासदाहनुद्वह्निपुष्टिदः ।
तस्मादल्पान्तरगुणाः शालयो महदादयः ॥ १४ ॥

रक्तशालिः ‘ दाउदखानी ’ इति लोके, मगधदेशे प्रसिद्धः ।

टीका—उनमें लालधान श्रेष्ठ हैं. बलको और वर्णको करनेवाले, शुक्रको करनेवाले, तृषा ज्वरको हरते हैं ॥ १३ ॥ और विष, व्रण, श्वास, कास, दाह, इनको हरते; अग्नि और पुष्टिको देनेवाले हैं. उससे अल्पान्तरगुण महाशालि आदिमें हैं. लालधान—इसको लोकमें ‘ दाउदखानी ’ इसप्रकार कहतै हैं. यह मगधदेशमें प्रसिद्ध है ॥ १४ ॥

अथ व्रीहिधान्यस्य लक्षणं गुणाश्च ।

वार्षिकाः कण्डिताः शुक्ला व्रीहयश्चिरपाकिनः ।
कृष्णव्रीहिः पाटलश्च कुक्कुटाण्डक इत्यपि ।
शालामुखो जतुमुख इत्याद्या व्रीहयः स्मृताः ॥ १५ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कृष्णव्रीहिः स विज्ञेयो यः कृष्णतुषतण्डुलः ।
पाटलः पाटलापुष्पवर्णको व्रीहिरुच्यते ॥ १६ ॥
कुक्कुटाण्डाकृतिर्व्रीहिः कुक्कुटाण्डक उच्यते ।
शलामुखः कृष्णशूकः कृष्णतण्डुल उच्यते ॥ १७ ॥
लाक्षावर्णं मुखं यस्य ज्ञेयो जतुमुखस्तु सः ।
व्रीहयः कथिताः पाके मधुरा वीर्यतो हिताः ॥ १८ ॥
अल्पाभिष्यन्दिनो बद्धवर्चस्काः षष्टिकैः समाः ।
कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषां तस्मादल्पगुणाः परे ॥ १९ ॥

टीका—बरसाती कुटेहुए और देरमें पकनेवाले व्रीहि धान कहे गये हैं. कृष्णव्रीहि, पाटल, कुक्कुटाण्डक, शालामुख, जतुमुख, इत्यादि व्रीहिके भेद हैं ॥ १५ ॥ काला धान उसे जानना चाहिये जो काले छिलकेका हो. पाटलाके फूल समानवर्णवालीको पाटलव्रीहि कहते हैं ॥ १६ ॥ मुरगेके अण्डेके आकारवाली व्रीहिको कुक्कुटाण्डक कहते हैं. जिसका शूक (कांटा) और चावल काले हों वह शालामुख है. कृष्णशूक, कृष्णतण्डुल ये भी उसके नाम हैं ॥१७॥ लाखके समान वर्ण जिसके मुखका हो उसे जतुमुख कहते हैं. धान पाकमें मधुर और वीर्यसे हित कहेगये हैं॥१८॥ और थोड़ा अभिष्यन्द करनेवाले, मलको बांधनेवाले, सांठीके समान होते हैं. उनमें काला धान श्रेष्ठ है और बाकी सब उससे गुणमें थोड़े हैं१९

अथ षष्टिकानां लक्षणं नामानि गुणाश्च ।

गर्भस्था एव ये पाकं यान्ति ते षष्टिका मताः ।
षष्टिकः शतपुष्पश्च प्रमोदकमुकुन्दकौ ॥ २० ॥
महाषष्टिक इत्याद्याः षष्टिकाः समुदाहृताः ।
एतेऽपि व्रीहयः प्रोक्ता व्रीहिलक्षणदर्शनात् ॥ २१ ॥
षष्टिका मधुराः शीता लघवो बद्धवर्चसः ।
वातपित्तप्रशमनाः शालिभिः सदृशा गुणैः ॥ २२ ॥
षष्टिका प्रवरा तेषां लघ्वी स्निग्धा त्रिदोषजित् ।
स्वाद्वी मृद्वी ग्राहिणी च बलदा ज्वरहारिणी ॥ २३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रक्तशालिगुणैस्तुल्या ततः स्वल्पगुणाः परे ।

टीका—सांठीके लक्षण, नाम और गुणोंको कहते हैं. जो गर्भमें रहतेहुए ही पाकको प्राप्त होते हैं वे सांठी हैं. षष्टिक, शतपुष्प, प्रमोदक, मुकुन्दक ॥ २० ॥ महाषाष्टिक, इत्यादिक षष्टिक कहेगये हैं. इनमें भी धानके लक्षण देखनेसे ये भी धान कहे हैं ॥२१॥ साठी मधुर, शीतल, हलके, मलको बांधनेवाले, वातपित्तको शमन करनेवाले और धानोंके समान गुणमें होते हैं ॥ २२ ॥ उनमें साठी बहुत श्रेष्ठ, हलकी, चिकनी, त्रिदोषको जीतनेवाली, मधुर, मृदु, काबिज, बलको देनेवाली, ज्वर हरती है ॥ २३ ॥ लाल धानके समान गुणमें होती है. उससे और गुणमें स्वल्प होते हैं. उसको लोकमें साठी ऐसा कहते हैं.

अथ शूकधान्यानि तत्र यवनामगुणाः ।

यवस्तु शितशूकः स्यान्निःशूकोऽतियवः स्मृतः ॥ २४ ॥
तोक्यस्तद्वत्सहरितस्ततश्चाल्पश्च कीर्तितः ।
यवः कषायो मधुरः शीतलो लेखनो मृदुः ॥ २५ ॥
व्रणेषु तिलवत्पथ्यो रूक्षो मेधाग्निवर्धनः ।
कटुपाकोऽनभिष्यन्दी स्वर्यो बलकरो गुरुः ॥ २६ ॥
बहुवातमलो वर्णस्थैर्यकारी च पिच्छिलः ।
कण्ठत्वगामयश्लेष्मपित्तमेदोप्रणाशनः ॥ २७ ॥
पीनसश्वासकासोरुस्तम्भलोहिततृट्प्रणुत् ।
अस्मादतियवो न्यूनस्तोक्यो न्यूनतरस्ततः ॥ २८ ॥

टीका—जौ गेहूं आदि शुक धान्य हैं उनमें जवके भेद-जव सफेद नोकवाले होते हैं और बेनोकवाले अतियव कहेगये हैं॥२४॥तथा तोक्य उसीके समान और हरित उससे अल्पगुण कहागया है. जव कसेला, मधुर,शीतल,लेखन,मुलायम ॥२५॥ और व्रणमें तिलके समान पथ्य,रूक्ष,मेधा और अग्निको बढ़ानेवाला है. पाकमें कटु,अभिष्यन्द न करनेवाला, स्वरको अच्छा करनेवाला, बलकारक, भारी ॥ २६ ॥ बहुत वातमलको करनेवाला और वर्णस्थिरताको करनेवाला, पिच्छिल है और कंठरोग, त्वचाके रोग, कफ, पित्त, मेद इनको हरता है ॥ २७ ॥ तथा पीनस, श्वास, कास, ऊरुस्तम्भ, रक्त, तृषा, इनको हरता है. इससे अतियव गुणमें न्यून है. और तोक्य उससे भी गुणमें न्यून है ॥ २८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ गोधूमस्य नामानि लक्षणं गुणाश्च ।

गोधूमः सुमनोऽपि स्यात्त्रिविधः स च कीर्तितः ।
महागोधूम इत्याख्यः पश्चाद्देशात्समागतः ॥ २९ ॥
माधूली तु ततः किञ्चिदल्पा सा मध्यदेशजा ।
निःशूको दीर्घगोधूमः क्वचिन्नन्दीमुखाभिधः ॥ ३० ॥
गोधूमो मधुरः शीतो वातपित्तहरो गुरुः ।
कफशुक्रप्रदो बल्यः स्निग्धः सन्धानकृत्सरः ॥ ३१ ॥
जीवनो बृंहणो वर्ण्यो व्रण्यो रुच्यः स्थिरत्वकृत् ॥ ३२ ॥
कफप्रदो नवीनः नतु पुराणः ।
पुराणयवगोधूमक्षौद्रजाङ्गलभागिति ।
वाग्भटेन वसन्ते गृहीतत्वात् ।
मधूली शीतला स्निग्धा पित्तघ्नी मधुरा लघुः ।
शुक्रला बृंहणी पथ्या तद्वन्नन्दीमुखः स्मृतः ॥ ३३ ॥

टीका—अब गेहूंके नाम, लक्षण और गुण कहते हैं. गोधूम और सुमन भी गेहूंके नाम हैं. वह तीन प्रकारका कहा है. बड़ा गेहूं इस नामसे पश्चिमदेशमें होता है ॥ २९ ॥ महागोधूम बड़े गोधूम इस नामसे लोकमें प्रसिद्ध हैं. मधूली भी उससे गुणमें कुछ अल्प होती है. वह मध्यदेशमें होनेवाली है: बेनोक, लंबा गेहूं कहींपर नंदिमुखनामसे है ॥ ३० ॥ गेहूं, मधुर, शीतल, वातपित्तको हरता, भारी, कफ-शुक्रको करनेवाला, बलको करनेवाला, चिकना, सन्धान करनेवाला, सर, जीवन, पुष्ट, वर्णको, अच्छा करनेवाला, व्रणको हित, रुचिको करनेवाला और स्थिरताको करनेवाला है. नवीन कफको करनेवाला गेहूं है. न कि पुराना क्योंकि, पुराना जव, गेहूं, मधु, हरिण आदियोंके मांसका कबाब इनका वसंतमें सेवन करना चाहिये ऐसा वाग्भटने कहा है ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ मधूली अर्थात् न बहुत बड़ा न छोटा ऐसे गेहूं, शीतल, पित्तहर्ता, मधुर होते हैं ॥ ३३ ॥ शुक्रको करनेवाले, पुष्ट, पथ्य अर्थात् हित होते हैं और इसीके समान नन्दीमुख कहे गये हैं.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ शिम्बीधान्यस्य नामगुणाः ।

शमीजाः शिम्बिजाः शिम्बीभवाः सर्याश्च वैदलाः ।
वैदला मधुरा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ॥ ३४ ॥
वातलाः कफपित्तघ्ना बद्धमूत्रमला हिमाः ।
ऋते मुद्गमसूराभ्यामन्ये त्वाध्मानकारिणः ॥ ३५ ॥
मुद्गमसूरयोराध्मानकारित्वमन्यवैदलापेक्षया न तु सर्वथा, एतयोरपि किञ्चिदाध्मानकारित्वात् ।

टीका--शिम्बीधान्य अर्थात् जो दो दलवाले होते हैं. उनके पार्यायोंको कहते हैं-शमीज, शिम्बीज, शिम्बीभव, सर्य, वैदल ये शिर्म्बाधान्यके नाम हैं ॥ ३४ ॥ गुण-शिम्बीधान्य मधुर, रूखे, कसेले, पाकमें कटु, वातको करनेवाले, कफपित्तको हरते, मलमूत्रको रोकनेवाले, शीतल होते हैं. मूंग मसूरको छोड़के बाकी सब पेटको फुलाते हैं ॥ ३५ ॥ मूंग मसूरको आध्मानकारित्व और दालोंकी अपेक्षासे है, सर्वथा नहीं, इनमें भी कुछ आध्मानकारित्व होनेसे.

अथ मुद्गस्य गुणाः ।

मुद्गो रूक्षो लघुर्ग्राही कफपित्तहरो हिमः ।
स्वादुरल्पानिलो नेत्र्यो ज्वरघ्नो वनजस्तथा ॥ ३६ ॥
मुद्गो बहुविधः श्यामो हरितः पीतकस्तथा ।
श्वेतो रक्तश्च तेषां तु पूर्वः पूर्वो लघुः स्मृतः ॥ ३७ ॥
सुश्रुतेन पुनः प्रोक्तो हरितः प्रवरो गुणैः ।
चरकादिभिरप्युक्त एष एव गुणाधिकः ॥ ३८ ॥

टीका--मूंगके गुण कहते हैं-मुद्ग रूखा, हलका, काबिज, कफपित्तको हरता, शीतल, मधुर, अल्पवातको करनेवाला, नेत्रको हित, ज्वर हरता है. ऐसे ही वनमूंग होतो है ॥ ३६ ॥ मूंग अनेक प्रकारके होते हैं. काले हरे, पीले, सुफेद, लाल उनमें पहिले हलके कहे हैं ॥ ३७ ॥ सुश्रुतने कहा है कि हरा मूंग गुणमें अधिक होता है और चरकादिमुनियोंने भी कहा है कि यही (हरा ही) गुणमें अधिक होता है ॥ ३८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ माषनामगुणाः ।

माषो गुरुः स्वादुपाकः स्निग्धो रुच्योऽनिलापहः ।
स्रंसनस्तर्पणो बल्यः शुक्रलो बृंहणः परः ॥ ३९ ॥
भिन्नमूत्रमलस्तन्यो मेदःपित्तकफप्रदः ।
गुदकीलार्दितश्वासपक्तिशूलानि नाशयेत् ॥ ४० ॥
कफपित्तकरा माषाः कफपित्तकरं दधि ।
कफपित्तकरा मत्स्या वृन्ताकं कफपित्तकृत् ॥ ४१ ॥

टीका—माष अर्थात् उड़द भारी, पाकमें मधुर, चिकना, रुचिकों करनेवाला, वातहरता, स्रंसन, तर्पण, बलकोहित, शुक्रको करनेवाला, पुष्ट होता है ॥३९॥ और मलमूत्रको करनेवाला, दुग्धको करनेवाला, मेद और पित्तको करनेवाला है और गुद, आर्दित, श्वास, पक्तिशूल इनको हरता है ॥४०॥ उड़द कफ पित्तको करनेवाला है और दही कफपित्तको करनेवाला है और मछलियां कफपित्तको करनेवाली हैं तथा बैंगन कफपित्तको करनेवाला है ॥ ४१ ॥

अथ राजमाषनामगुणाः ।

राजमाषो महामाषश्चपलश्चवलः स्मृतः ।
राजमाषो गुरुः स्वादुस्तुवरस्तर्पणः सरः ॥ ४२ ॥
रूक्षो वातकरो रुच्यः स्तन्यभूरिबलप्रदः ।
श्वेतो रक्तस्तथा कृष्णस्त्रिविधः स प्रकीर्तितः ॥ ४३ ॥
यो महांस्तेषु भवति स एवोक्तो गुणाधिकः ।

टीका—राजमाषका बोड़ा यह नाम बनारसमें प्रसिद्ध है और बेरातरा, लोबिया इन नामोंसे भी वह कईक शहरोंमें प्रसिद्ध है. राजमाष, महामाष, चपल, चवल, ये लोबियाके नाम कहे हैं. लोबिया भारी, मधुर, कसेला, तृप्तिको करनेवाला, सर ॥ ४२ ॥ रूखा, वातकारी, रुचिको करनेवाला, दुग्ध और बहुत बलको देनेवाला है. सफेद, लाल तथा काला ऐसे तीनप्रकारका कहा है ॥४३॥ उनमें जो बड़ा है वह गुणमें अधिक होता है.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ निष्पावनामगुणाः ।

निष्पावो राजशिम्बिः स्याद्वल्लकः श्वेतशिम्बिकः ।
निष्पावो मधुरो रूक्षो विपाकेऽम्लो गुरुः सरः ॥ ४४ ॥
कषायः स्तन्यपित्तास्रमूत्रवातविबन्धकृत् ।
विदाह्युष्णो विषश्लेष्मशोथहृच्छुक्रनाशनः ॥ ४५ ॥

टीका--निष्पाव-इसको दक्खिनमें पावटा कहते हैं, और पूर्वमें भटवांस कहते हैं. निष्पाव, राजशिम्बी, वल्लक, श्वेतशिम्बिक, ये इसके नाम हैं. यह मधुर, रूखा, विपाकमें खट्टा, भारी, सर ॥ ४४ ॥ कसेला, और दुग्ध, रक्तपित्त, मूत्र, वात, विबन्ध इनको करनेवाला है तथा विदाही, गरम, विष, कफ, सूजन इनको हरता और शुक्रको हरता है ॥ ४५ ॥

अथ मकुष्ठनामगुणाः ।

मकुष्ठो वनमुद्गः स्यान्मकुष्ठकमुकुष्ठकौ ।
मुकुष्ठो वातलो ग्राही कफपित्तहरो लघुः ॥ ४६ ॥
वह्निजिन्मधुरः पाके कृमिकृज्ज्वरनाशनः ।

टीका—मकुष्ठ, वनमुद्ग, मकुष्ठक, मुकुष्ठक ये मोठके नाम हैं. मोठ वातको करनेवाला, काबिज, कफपित्तको हरता, हलका होता है ॥४६ ॥ अग्निको हरनेवाला, पाकमें मधुर, कृमिको करनेवाला, ज्वर हरता है

अथ मसूरनामगुणाः ।

मङ्गल्यको मसूरः स्यान्मङ्गल्या च मसूरिका ॥ ४७ ॥
मसूरो मधुरः पाके संग्राही शीतलो लघुः ।
कफपित्तास्रजिद्रूक्षो वातलो ज्वरनाशनः ॥ ४८ ॥

टीका--मंगल्यक, मसूर और मंगल्या, मसूरिका, ये मसूरके नाम हैं ॥ ४७॥ मसूर पाकमें मधुर और काबिज, हलकी, शीतल होती है तथा कफ, रक्तपित्त इनको हरनेवाली, वातको करनेवाली, ज्वर हरती है ॥ ४८ ॥

१५

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथाढकी (अरहर) नामगुणाः ।

आढकी तुवरी चापि सा प्रोक्ता शणपुष्पिका ।
आढकी तुवरा रूक्षा मधुरा शीतला लघुः ॥ ४९ ॥
ग्राहिणी वातजननी वर्ण्या पित्तकफास्रजित् ।

टीका—आढकी, तुवरी, शणपुष्पिका, ये अरहरके नाम हैं. अरहर कसेली, रूखी, मधुर, शीतल, हलकी ॥ ४९ ॥ काबिज, वातको करनेवाली, वर्णको अच्छा करनेवाली, पित्त-कफ-रक्तको हरनेवाली है.

अथ चणकनामगुणाः ।

चणको हरिमन्थः स्यात्सकलप्रिय इत्यपि ॥ ५० ॥
चणकः शीतलो रूक्षः पित्तरक्तकफापहः ।
लघुः कषायो विष्टम्भी वातलो ज्वरनाशनः ॥ ५१ ॥
स चाङ्गारेण सम्भृष्टस्तैलभृष्टश्च तद्गुणः ।
आर्द्रभृष्टो बलकरो रोचनश्च प्रकीर्तितः ॥ ५२ ॥
शुष्कभृष्टोऽतिरूक्षश्च वातकुष्ठप्रकोपनः ।
स्विन्नः पित्तकफं हन्यात्सूपः क्षोभकरो मतः ॥ ५३ ॥
आर्द्रोऽतिकोमलो रुच्यः पित्तशुक्रहरो हिमः ।
कषायो वातलो ग्राही कफपित्तहरो लघुः ॥ ५४ ॥

टीका—चणक, हरिमन्थ, सकलप्रिय, ये चनेके नाम हैं ॥ ५० ॥ चना शीतल, रूखा, पित्त, कफ, रक्त इनको हरता है; और हलका, कसेला, विष्टम्भी, वातको करनेवाला, ज्वर हरता है ॥ ५१ ॥ अंगारेसे भुनाहुआ तथा तेलसें भुनाहुआ चना भी ऐसे ही गुणवाला है. गीला भूना हुआ बल करनेवाला और रुचिको करनेवाला कहा है ॥ ५२ ॥ सूखा भूनाहुआ बहुत रूखा, वात कुष्ठका प्रकोप करनेवाला है. पित्त कफको हरता है. पकीहुई इसकी दाल क्षोभको करनेवाली कही है ॥ ५३ ॥ अतिगीला, अतिकोमल चना रुचिको देनेवाला, पित्तशुक्रको हरनेवाला कहा है और कसेला, वातको करनेवाला, काबिज, कफपित्तका हरता तथा हलका है ॥ ५४ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ कलायनामगुणाः।

कलायो वर्तुलः प्रोक्तः सतीनश्च हरेणुकः।
कलायो मधुरः स्वादुः पाके रूक्षश्च शीतलः॥ ५५॥

टीका—कलाय, वर्तुल, सतीन, हरेणुक, ये मटरके नाम हैं. मटर मधुर, पाकमें मधुर, रूखा और शीतल है॥ ५५॥

अथ त्रिपुट (खेसारी, दुबिया) नामगुणाः।

त्रिपुटः खण्डकोऽपि स्यात्कथ्यन्ते तद्गुणा अथ।
त्रिपुटो मधुरस्तिक्तस्तुवरो रूक्षणो भृशम्॥ ५६॥
कफपित्तहरो रुच्यो ग्राहकः शीतलस्तथा।
किन्तु खञ्जत्वपङ्गुत्वकारी वातातिकोपनः॥ ५७॥

टीका—त्रिपुट, खंडिक, ये खेसारीके नाम हैं. खेसारी मधुर, तिक्त, कसेली, अत्यन्त रूखी॥५६॥कफ पित्तको हरती, रुचिको करनेवाली, काबिज तथा शीतल होती है किन्तु खंजा पंगुला करनेवाली और अधिक वातको करनेवाली है॥५७॥

अथ कुलत्थनामगुणाः।

कुलत्थिका कुलत्थश्च कथ्यन्ते तद्गुणा अथ।
कुलत्थः कटुकः पाके कषायः पित्तरक्तकृत्॥ ५८॥
लघुर्विदाही वीर्योष्णः श्वासकासकफानिलान्।
हन्ति हिक्काश्मरीशुक्रदाहानाहान्विनाशयेत्॥ ५९॥
स्वेदसंग्राहको मेदोज्वरकृमिहरः परः।

टीका—कुलत्थिका, कुलत्थ, ये कुलथीके नाम हैं–और अब इसके गुण कहते हैं–कुलथी पाकमें कड़वी, कसेली, पित्तरक्तको करनेवाली है॥ ५८॥ और हलकी, विदाही, वीर्यमें उष्ण, श्वास,कास,कफ, वात इनको हरती है, और हिचकी,पथरी, शुक्र, दाह, अफारा इनको हरती है॥ ५९॥ पसीनोंको रोकनेवाली, मेद, ज्वर, कृमि इनको हरती है.

अथ तिलनामगुणाः।

तिलः कृष्णः सितो रक्तः सवर्णोऽल्पतिलः स्मृतः॥ ६०॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तिलो रसे कटुस्तिक्तो मधुरस्तुवरो गुरुः ।
विपाके कटुकः स्वादुः स्निग्धोष्णः कफपित्तनुत् ॥ ६१ ॥
बल्यः केश्यो हिमस्पर्शस्त्वच्यः स्तन्यो व्रणे हितः ।
दन्त्योऽल्पमूत्रकृद्ग्राही वातघ्नोऽग्निमतिप्रदः ॥ ६२ ॥
कृष्णः श्रेष्ठतमस्तेषु शुक्रलो मध्यमः सितः ।
अन्ये हीनतराः प्रोक्तास्तज्ज्ञै रक्तादयस्तिलाः ॥ ६३ ॥

टीका—तिल काला, सफेद, लाल, वर्ण्य और अल्पतिल ऐसा कहा है ॥६०॥ तिल रसमें कटु, तिक्त, मधुर, कसेला, भारी, विपाकमें कटु, मधुर, चिकना, गरम, कफपित्तको हरता है॥६१॥ और बलको हित, केशको अच्छा करनेवाला, शीतल स्पर्शवाला, त्वचाको हित, दुग्धको करनेवाला, व्रणमें हित, दांतोंको हित, अल्पमूत्रको करनेवाला, काबिज, वातहर्ता अग्नि और मतिको देनेवाला है ॥ ६२ ॥ उनमें काला बहुत श्रेष्ठ है और शुक्रको करनेवाला श्वेत मध्य और लाल आदिक तिलोंके जाननेवालोंने अत्यन्तहीन गुण कहे हैं ॥ ६३ ॥

अथातसीनामगुणाः।

अतसी नीलपुष्पी च पार्वती स्यादुमा क्षुमा ।
अतसी मधुरा तिक्ता स्निग्धा पाके कटुर्गुरुः ।
उष्णा दृक्शुक्रवातघ्नी कफपित्तविनाशिनी ॥ ६४ ॥

टीका—अतसी, नीलपुष्पी, पार्वती, उमा, क्षुमा ये अलसीके नाम हैं. अलसी मधुर, चिकनी, तिक्त, पाकमें कटु, भारी, गरम होती है और दृष्टि,शुक्र,वात इनको हरती और कफ पित्त इनको हरती है ॥ ६४ ॥

अथ तुवरीनामगुणाः ।

तुवरी ग्राहिणी प्रोक्ता लघ्वी कफविषास्रजित् ।
तीक्ष्णोष्णा वह्निदा कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमिप्रणुत् ॥ ६५ ॥

टीका—तोरी इसको तोडिस इसप्रकार कहते हैं.तोरीका बीज हलका,कफ विष रक्त इनको हरनेवाला है; तीखा, उष्ण, अग्निको करनेवाला है और खुजली कुष्ठ कोष्ठ कृमि इनको हरता है ॥ ६५ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ सर्षपनामगुणाः ।

सर्षपः कटुकः स्नेहस्तुन्तुभश्च कदम्बकः ।
गौरस्तु सर्षपः प्राज्ञैः सिद्धार्थ इति कथ्यते ॥ ६६ ॥
सर्षपस्तु रसे पाके कटुः स्निग्धः सतिक्तकः ।
तीक्ष्णोष्णः कफवातघ्नो रक्तपित्ताग्निवर्धनः ॥ ६७ ॥
रक्षोहरो जयेत्कण्डूं कुष्ठकोष्ठकृमिग्रहान् ।
यथा रक्तस्तथा गौरः किन्तु गौरो वरो मतः ॥ ६८ ॥

टीका——सर्षप, कटुक, स्नेह, तुंतुभ,कदंबक, ये लाल सरसोंके नाम हैं.पीले सरसोंको बुद्धिमानोंने सिद्धार्थ ऐसा कहा है ॥ ६६ ॥ सरसों रस और पाकमें कटु; चिकना, कुछ तिक्त, तीखा, उष्ण, कफ, वातको हरता और रक्तपित्त अग्नि इनको बढ़ानेवाला है ॥ ६७ ॥ राक्षसोंको हरता है. कण्डू कोष्ठ कृमि ग्रह इनको हरता है. जैसा लाल वैसा पीला किन्तु पीला श्रेष्ठ कहा है ॥ ६८ ॥

अथ राजीनामगुणाः ।

राजी तु राजिका तीक्ष्णगन्धा कुञ्जनिकासुरी ।
क्षवः क्षुताभिजनकः कृमिकृत्कृष्णसर्षपः ॥ ६९ ॥
राजिका कफपित्तघ्नी तीक्ष्णोष्णा रक्तपित्तकृत् ।
किञ्चिद्रूक्षाग्निदा कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमीन् हरेत् ॥ ७० ॥
अतितीक्ष्णा विशेषेण तद्वत्कृष्णापि राजिका ।

टीका—राजी, राजिका, तीक्ष्णगन्धा, कुञ्जनिका, सुरी, ये राईके नाम हैं. क्षव, क्षुताभिजनक, कृमिकृत्, कृष्णसर्षप, ये काली राईके नाम हैं ॥ ६९ ॥ राई कफपित्तको हरती, तीखी, गरम, रक्तपित्तको करनेवाली, कुछेक रूखी, अग्निदीपन, खुजली, कुष्ठ, कोष्ठ, कृमि इनको हरती है ॥ ७० ॥ और बहुत तीखी है. विशेष करके काली राई भी इसीके सदृश होती है.

अथ क्षुद्रधान्यनामगुणाः ।

क्षुद्रधान्यं कुधान्यं च तृणधान्यमिति स्मृतम् ।
क्षुद्रधान्यमनुष्णं स्यात्कषायं लघु लेखनम् ॥ ७१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मधुरं कटुकं पाके रूक्षं च क्लेदशोषकम्।
वातकृद्बद्धविट्कं च पित्तरक्तकफापहम्॥ ७२॥

टीका—क्षुद्रधान्य, कुधान्य, तृणधान्य ये क्षुद्रधान्यके नाम हैं. क्षुद्रधान्य शीतल, कसेला, हलका, लेखन॥ ७१॥ मधुर, पाकमें कटु, रूखा, कफको सुखानेवाला, वातको करनेवाला और मलको बांधनेवाला; पित्त, रक्त और कफको हरता है॥७२॥

अथ कङ्गुनामगुणाः।

स्त्रियां कङ्गुप्रियंगू द्वे कृष्णा रक्ता सिता तथा।
पीता चतुर्विधा कङ्गुस्तासां पीता वरा स्मृता॥ ७३॥
कङ्गुस्तु भग्नसन्धानवातकृद्बृंहणी गुरुः।
रूक्षा श्लेश्महरातीव वाजिनां गुणकृद्भृशम्॥ ७४॥

टीका—उनमें कंगुनीके स्त्रीलिंगमें कंगु प्रियगुं ये दो नाम होते हैं.काली,लाल, सुफेद तथा पीली ऐसी चार प्रकारकी कंगुनी होती है. उनमें पीली श्रेष्ठ कही है॥ ७३॥ कंगुनी टूटे हाड़को जोड़नेवाली, वातकृत्, पुष्ट, भारी, रूखी, कफकी अत्यन्त नाशक है; और घोड़ोंको अत्यन्त ही गुण करनेवाली है॥ ७४॥

अथ चीनाकनामगुणाः।

चीनाकः कङ्गुभेदोऽस्ति स ज्ञेयः कङ्गुवद्गुणैः।

टीका—चीना कांगुनीका भेद है.उसको गुणमें कंगुनीके समान जानना चाहिये.

अथ श्यामाकनामगुणाः।

श्यामाकः शोषणो रूक्षो वातलः कफपित्तहृत्॥ ७५॥

टीका—सांवा शोषण, रूखा, वातको करनेवाला, कफपित्तको हरता है॥७५॥

अथ कोद्रवनामगुणाः।

कोद्रवः कोरदूषः स्यादुद्दालो वनकोद्रवः।
कोद्रवो वातलो ग्राही हिमपित्तकफापहः॥ ७६॥
उद्दालस्तु भवेदुष्णो ग्राही वातकरो भृशम्।

टीका—कोद्रव, कोरदूष, ये कोदोंके नाम हैं. और वनकोद्रव, उद्दाल,ये वनकोदोंके नाम हैं. कोदों वातको करनेवाला, काबिज, शीतल, कफको हरता है॥७६॥ बनकोदों उष्ण, काबिज और अत्यन्त वातको करनेवाला है.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ चारुकनामगुणाः ।

चारुकः सरबीजः स्यात्कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ॥ ७७ ॥
चारुको मधुरो रूक्षो रक्तपित्तकफापहः ।
शीतलो लघुर्वृष्यश्च कषायो वातकोपनः ॥ ७८ ॥

टीका—चारुक सरबीजका नाम है. अब उसका गुण कहते हैं. सरबीज मधुर, रूखा; रक्त, पित्त, कफ इनको हरता है ॥ ७७ ॥ और शीतल, हलका, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, कसेला, वातको करनेवाला है ॥ ७८ ॥

अथ वंशयवनामगुणाः ।

यवा वंशभवा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ।
बद्धमूत्राः कफघ्नाश्च वातपित्तकराः सराः ॥ ७९ ॥

टीका—बांसके बीज रूखे, कसेले और कटुपाकवाले हैं. मूत्रको रोकनेवाले, कफ हर्ता, वातपित्तको करनेवाले, सर होते हैं ॥ ७९ ॥

अथ कुसुम्भबीजनामगुणाः ।

कुसुम्भबीजं वरटा सैव प्रोक्ता वराटिका ।
वरटा मधुरा स्निग्धा रक्तपित्तकफापहा ॥ ८० ॥
कषाया शीतला गुर्वी सा स्याद्वृष्यानिलापहा ।

टीका—कुसुंभबीज, वरटा, वराटिका ये कुसुमके बीज बरके नाम हैं. वरटा मधुर, चिकना और रक्तपित्त कफको हरता है ॥ ८० ॥ और कसेला, शीतल, भारी, शुक्रको करनेवाला, वातको हरता है.

अथ गवेधुकानामगुणाः ।

गवेधुका तु विद्वद्भिर्गवेधुः कथिता स्त्रियाम् ।
गवेधुः कटुका स्वाद्वी कार्श्यकृत्कफनाशिनी ॥ ८१ ॥

टीका—गवेधुकाको विद्वानोंने गवेधु ऐसा स्त्रीलिंगमें कहा है. इसको देवधान कहते हैं. देवधान कडुवा, मधुर, कृशताको करनेवाला, कफपित्तको हरता है ॥८१॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ प्रसाधिकानामगुणाः ।

प्रसाधिका तु नीवारस्तृणान्नमिति च स्मृतम् ।
नीवारः शीतलो ग्राही पित्तघ्नः कफवातकृत् ॥ ८२ ॥

टीका—प्रसाधिका, नीवार और तृणान्न ये तीनीके नाम हैं. यह तीनी शीतळ, काबिज, पित्त हरती, कफवातको करनेवाली है ॥ ८२ ॥

अथ यावनालनामगुणाः ।

यावनालो हितः स्वादुर्लोहितः श्लेष्मपित्तजित् ।
अवृष्यस्तुवरो रूक्षः क्लेदकृत्कथितो लघुः ॥ ८३ ॥

टीका—यावनाल यह पुनेराका नाम है. पुनेरा शीतल, लाल, मधुर, कफपित्तको हरनेवाला है; और शुक्रको हरता, कसेला, ग्लानिको करनेवाला, हलका कहा है ८३॥

परिभाषा ।

धान्यं सर्वं नवं स्वादु गुरु श्लेष्मकरं स्मृतम् ।
तत्तु वर्षोषितं पथ्यं यतो लघुतरं हितम् ॥ ८४ ॥
वर्षोषितं सर्वधान्यं गौरवं परिमुञ्चति ।
न तु त्यजति वीर्यं स्वं क्रमान्मुञ्चत्यतः परम् ॥ ८५ ॥
एतेषु यवगोधूमतिलमाषा नवा हितः ।
पुराणा विरसा रूक्षा न तथा गुणकारिणः ॥ ८६ ॥
पुराणा वर्षद्वयादुपरिस्थिताः यवादयो नवाः स्वास्थ्यान्प्रति हिताः पथ्याशिनां तु पुराणा हिताः ।
"पुराणा यवगोधूमक्षौद्रजाङ्गलशूल्यभुक्"
इति वासन्ते वाग्भटेनोक्तत्वात् ।

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे धान्यवर्गः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—सब नया धान्य मधुर, भारी और कफको रोकनेवाला कहा है. एक वर्षका पुराना धान्य हित होता है. क्यों कि वह बहुत हलका होता है ॥ ८४ ॥ एक बरस गुजर जानेपर सब धान्य भारीपनको छाड़देते हैं, परन्तु अपने वीर्यको नहीं छोड़ते. इसके उपरान्त क्रमसे छोड़देते हैं ॥ ८५ ॥ इनमें जव, गेहूं, तिल, उड़द ये नये हित हैं. पुराने बेरस, रूखे और वैसे गुणकारी भी नहीं हैं (पुराने अर्थात् दोवरससे ऊपरके) जव आदिक नये निरोगियोंको हित हैं और पथ्यभोजन करनेवालोंको तो पुराने हित हैं. क्योंकि " पुराने जव, गेहं, मधु,हरिण आदियोंके मांसका कबाब इनको भोजन करनेवाला " इसप्रकार वसन्तऋतुमें वाग्भटने कहा है) ॥ ८६ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे धान्यवर्गः समाप्तः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्रीः ।

अथ

हरीतक्यादिनिघण्टे

शाकवर्गः ।

तत्र शाकनिरूपणं गुणाश्च ।

पत्रं पुष्पं फलं नालं कन्दं संस्वेदजं तथा ।
शाकं षड्विधमुद्दिष्टं गुरु विद्याद्यथोत्तरम् ॥ १ ॥
प्रायः शाकानि सर्वाणि विष्टम्भीनि गुरूणि च ।
रूक्षाणि बहुवर्चांसि सृष्टविण्मारुतानि च॥ २ ॥
शाकं भिनत्ति वपुरस्थि निहन्ति नेत्रं
वर्णं विनाशयति रक्तमथापि शुक्रम् ।
प्रज्ञाक्षयं च कुरुते पलितं च नूनं
हन्ति स्मृतिं गतिमिति प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥ ३ ॥
शाकेषु सर्वेषु वसन्ति रोगास्ते हेतवो देहविनाशनाय ।
तस्माद्बुधः शाकविवर्जनं तु कुर्यात्तथाम्लेषु स एव दोषः ॥ ४ ॥
एतानि शाकनिन्दकानि वचनानि सामान्यानि ।

टीका--पत्र, फूल,फल,नाल,कन्द, तथा संस्वेदज इसप्रकार छे प्रकारका साग कहा है. उनमें यथोत्तर भारी जानने ॥ १ ॥ अब शाकोंके गुण–प्रायः सब शाक विष्टंभी और भारी हैं. तथा रूखे बहुत मलको करनेवाले हैं ॥ २ ॥ साग शरीर अस्थिको भेदन करता है और नेत्रको हरता है तथा वर्णको हरता है और रक्त तथा शुक्रको भी हरता है. बुद्धिका क्षय भी करता हैं. सिरके बाल भी धौले होते हैं और स्मृति तथा मतिको भी हरता है ऐसा उसके जाननेवालोंने कहा है ॥३॥सब सागोंमें रोग वसते हैं, वे देह नाशके कारण हैं इसवास्ते बुद्धिमान् साग न सेवन करै. वैसे ही अम्लमें भी वही दोष हैं ॥४॥ ये सागकी निन्दाके सामान्य वचन हैं.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ शाकेषु विशिष्टानि वचनानि । तत्रपत्रशाकानि ।
तत्रापि वास्तूकद्वयस्य नामानि गुणाश्च ।

वास्तूकं वास्तुकं च स्यात्क्षारपत्रं च शाकराट् ।
तदेव तु बृहत्पत्रं रक्तं स्याद्गौडवास्तुकम् ॥ ५ ॥
प्रायशो यवमध्ये स्याद्यवशाकमतः स्मृतम् ।
वास्तूकद्वितयं स्वादु क्षारं पाके कटूदितम् ॥ ६ ॥
दीपनं पाचनं रुच्यं लघु शुक्रबलप्रदम् ।
सरं प्लीहास्रपित्तार्शःकृमिदोषत्रयापहम् ॥ ७ ॥

टीका— अब शाकमें विशेषवचनोंको कहते हैं. उसमें पत्रशाका उनमें भी दोनों बथुयेके नाम और गुण कहते हैं–वास्तूक, वास्तुक, क्षारपत्र, शाकराट, ये बथुवेके नाम हैं. जो बड़ेपत्तेका लाल होता है उसको गौडवास्तुक कहते हैं ॥ ५ ॥ प्रायः जवके बीचमें होता है इसवास्ते यवशाक कहा है. दोनों बथुवे मधुर, क्षार, पाकमें कड़वे कहे हैं ॥ ६ ॥ और दीपन, पाचन, रुचिको करनेवाले, हलके, शुक्र बलको देनेवाले हैं. सर, पिलही, रक्तपित्त, ववासीर, कृमि, तीनों दोष इनको हरते हैं ॥ ७ ॥

अथ पोतकीनामगुणाः ।

पोतक्युपोदिका सा तु मालवामृतवल्लरी ।
पोतकी शीतला स्निग्धा श्लेष्मला वातपित्तनुत् ॥ ८ ॥
अकण्ठ्या पिच्छिला निद्राशुक्रदा रक्तपित्तजित् ।
बलदा रुचिकृत्पथ्या बृंहणी तृप्तिकारिणी ॥ ९ ॥

टीका—पोतकी, उपोदिका, मालवा, अमृतवल्लरी, ये पोईके नाम हैं. पोई शीतल, चिकनी, कफको करनेवाली, वातपित्तको हरती है ॥ ८ ॥ कंठको हित, पिच्छिल, निद्रा और शुक्रको करनेवाली तथा रक्तपित्तको हरनेवाली है और बलको देनेवाली है. रुचिको करनेवाली, पथ्य, पुष्ट तथा तृप्तिको करनेवाली है ॥ ९ ॥

अथ मारिषनामगुणाः ।

मारिषो बाष्पको मार्षः श्वेतो रक्तश्च स स्मृतः ।
मारिषो मधुरः शीतो विष्टम्भो पित्तनुद्गुरुः ॥ १० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वातश्लेष्मकरो रक्तपित्तनुद्विषमाग्निजित् ।
रक्तमाषो गुरुर्नाति सक्षारो मधुरः सरः ॥ ११ ॥
श्लेष्मलः कटुकः पाके स्वल्पदोष उदीरितः ।

टीका--सुफेद मरसा और लाल मरसा जिसे नवडा इसप्रकार भी कहते हैं. मारिष, वृष्यक, मार्ष ये मरसेके नाम हैं. वह लाल और सुफेद कहा है. मरसा मधुर, शीतल, विष्टंभ करनेवाला, पित्तको हरता, भारी है ॥ १० ॥ वातकफको करनेवाला, रक्तपित्तको हरता, विषम अग्निको हरनेवाला है. लाल मरसा बहुत भारी नहीं होता और क्षीरके सहित मधुर, सर होता है ॥ ११ ॥ और कफको करनेवाला, पाकमें कटु और अल्पदोष करनेवाला कहा है ॥

अथ तण्डुलीयनामगुणाः ।

तण्डुलीयो मेघनादः काण्डेरस्तण्डुलेरकः ॥ १२ ॥
भण्डीरस्तण्डुलीबीजो विषघ्नश्चाल्पमारिषः ।
तण्डुलीयो लघुः शीतो रूक्षः पित्तकफास्रजित् ॥ १३ ॥
सृष्टमूत्रमलो रुच्यो दीपनो विषहारकः ।
पानीयं तण्डुलीयं तु कचटं समुदाहृतम् ॥ १४ ॥
कचटं तिक्तकं रक्तपित्तानिलहरं लघु ।

टीका—इसे छोटा मरसा इसप्रकार कहते हैं. तंडुलीय, मेघनाद, काण्डेर, तंडुलेरक, भंडीर, तंडुलीबीज, विषघ्न, अल्पमारिष, ये चवराईके नाम हैं ॥ १२ ॥ चवराई हलकी, शीतल, रूखी, पित्त कफ रक्त इनको हरनेवाली है, और मल मूत्रको करनेवाली, रुचिको करनेवाली, दीपन, विष हरती है ॥ १३ ॥ दूसरे किस्मकी चवराई [पनिया चवराई] शास्त्रमें कचट इस नामसे प्रसिद्ध है. पानीय तंडुलीयक, कचट इसप्रकार कहा है. पनिया चवराई तिक्त, पित्त और वात इनको हरती, हलकी होती है ॥ १४ ॥

अथ पलक्यानामगुणाः ।

पलक्या वास्तुकाकारा छुरिका चीरितच्छदा ॥ १५ ॥
पलक्या वातला शीता श्लेष्मला भेदिनी गुरुः ।
विष्टम्भिनी मदश्वासपित्तरक्तकफापहा ॥ १६ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—पलक्या, वास्तुकाकारा (बथुवेकीसी), छुरिका, चीरितच्छदा, ये पालकके नाम हैं. पालक वातको करनेवाला, शीतल, कफको करनेवाला, भेदन, भारी है ॥ १९ ॥ और विष्टम्भको करनेवाला तथा मद, श्वास, पित्त, रक्त, कफ, इनको हरता है ॥ १६ ॥

अथ नाडिकानामगुणाः ।

नाडिकं कालशाकं च श्राद्धशाकं च कालकम् ॥ १७ ॥
कालशाकं सरं रुच्यं वातकृत्कफशोथहृत् ।
बल्यं रुचिकरं मेध्यं रक्तपित्तहरं हिमम् ॥ १८ ॥

टीका—इसको कालासाग भी कहते हैं. नाडीक, कालशाक, श्राद्धशाक, कालक, ये कालेसागके नाम हैं ॥ १७॥ काला साग रुचिको करनेवाला, सर, वायुको करनेवाला और कफ शोथको हरता है तथा बलको करनेवाला, रुचिकर, कान्तिको करनेवाला, रक्तपित्तको हरता, शीतल है ॥ १८ ॥

अथ पट्टशाकनामगुणाः ।

पट्टशाकस्तु नाडीको नाडीशाकश्च स स्मृतः ।
नाडीको रक्तपित्तघ्नो विष्टम्भी वातकोपनः ॥ १९ ॥

टीका—पट्टशाक, नाडीक, नाडीशाक, ये पटुवाके नाम हैं. पटुवा रक्तपित्तको हरता, विष्टम्भ करनेवाला, वातकोपन है ॥ १९ ॥

अथ कलम्बीनामगुणाः ।

कलम्बी शतपर्वी च कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ।
कलम्बी स्तन्यदा प्रोक्ता मधुरा शुक्रकारिणी ॥ २० ॥

टीका—कलंबी, शतपर्वी, ये कलगीसागके नाम हैं. कलगी दुग्धको करनेवाली कही है और मधुर, शुक्रको करनेवाली कही है ॥ २० ॥

अथ लोणानामगुणाः ।

लोणा लोणी च कथिता बृहल्लोणी तु घोटिका ।
लोणी रूक्षा स्मृता गुर्वी वातश्लेष्महरी पटुः ॥ २१ ॥
अर्शोघ्नी दीपनी चाम्ला मन्दाग्निविषनाशिनी ।
घोटिकाम्ला सरा चोष्णा वातकृत्कफपित्तहृत् ॥ २२ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वाग्दोषव्रणगुल्मघ्नी श्वासकासप्रमेहनुत् ।
शोथलोचनरोगे च हिता तज्ज्ञैरुदाहृता ॥ २३ ॥

टीका—लोणा, लोणी ये नोनियाके नाम हैं. और बड़ी नोनियाको घोटिका कहते हैं. नोनिया रूखी कही है, और भारी, वातकफको हरती, नमकीन होती है ॥२१॥ और बवासीरको हरती, दीपन, खट्टी होती है; तथा मन्दाग्नि, विष इनको हरती है. बड़ी नोनिया खट्टी, सर, गरम, वातको करनेवाली, कफपित्तको हरती है ॥ २२ ॥ वाणीका दोष, व्रण, बायगोला उनकों हरती है तथा श्वास, कास, प्रमेह इनको हरती तथा सूजन और नेत्ररोगमें हित है. ऐसा उसके जाननेवालोंने कहा है ॥ २३ ॥

अथ चाङ्गेरीनामगुणाः ।

चाङ्गेरी चुक्रिका दन्तशठाम्बष्ठाम्ललोणिका ।
अश्मन्तकस्तु शफरी पिसली चाम्लपत्रकः ॥ २४ ॥
चाङ्गेरी दीपनी रुच्या रूक्षोष्णा कफवातनुत् ।
पित्तलाम्ला ग्रहण्यर्शःकुष्ठातीसारनाशिनी ॥ २५ ॥

टीका—चाङ्गेरी (अँबिलोना) यह चूकका भेद है. चांगेरी, चुक्रिका, दन्तशठा, अम्बष्ठा, अम्ललोणिका, ये चांगेरीके नाम हैं और अश्मन्तक, शफरी, पिसली, अम्लपत्रक, येभी इसके नाम हैं ॥ २४ ॥ चांगेरी, दीपनी, रुचिको करनेवाली, रूखी, उष्ण, कफवातको हरती, पित्तको करनेवाली है. खट्टी होती है और संग्रहणी, बवासीर, कुष्ठ, अतीसार इनको हरती है ॥ २५ ॥

अथ चुक्रानामगुणाः ।

चुक्रिका स्यात्तु पत्राम्ला रोचनी शतवेधिनी ।
चुक्रा त्वम्लतरा स्वाद्वी वातघ्नी कफपित्तकृत् ॥ २६ ॥
रुच्या लघुतरा पाके वृन्ताकेनातिरोचनी ।

टीका—चुक्रिका, पत्राम्ला, रोचनी, शतवेधिनी, ये चूकके नाम हैं. चूक बहुत खट्टी, मधुर, कफपित्तको करनेवाली ॥ २६ ॥ रुचिको करनेवाली, पाकमें बहुत हलकी, बैंगनके साथ खानेसे बहुत रुचिको करनेवाली है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ चिंचानामगुणाः ।

चिञ्चा चंचुश्चंचुकी च दीर्घपत्रा सतिक्तका ॥ २७ ॥
चुंचुः शीता सरा रुच्या स्वाद्वी दोषत्रयापहा ।
धातुपुष्टिकरी बल्या मेध्या पिच्छिलका स्मृता ॥ २८ ॥

टीका-चिञ्चा, चञ्चु, चंचुकी, दीर्घपत्रा, सतिक्तका, ये चाबुनाके नाम हैं॥२७॥ चाबुना शीतल, सर, रुचिको करनेवाला, मधुर, तीनों दोषोंको हरता है, धातु पुष्ट करनेवाला, बलको करनेवाला, कान्तिको करनेवाला, पिच्छिल कहा है ॥२८॥

अथ ब्राह्मी(हुरहुर)नामगुणाः ।

ब्राह्मी शंखधरा चारी ब्राह्मी च हिलमोचिका ।
शोथं कुष्ठं कफं पित्तं हरते हिलमोचिका ॥ २९ ॥

टीका--ब्राह्मी, शंखधरा, चारी, ब्राह्मी, हिलमोचिका, ये हुरहुरके नाम हैं. हुरहुर सूजन, कुष्ठ, कफ, पित्त, इनको हरता है ॥ २९ ॥

अथ शितिवारनामगुणाः ।

शितिवारः शितिवरः स्वस्तिकः सुनिषण्णकः ।
श्रीवारकः सूचिपत्रः पणिकः कुक्कुटः शिखी ॥ ३० ॥
चाङ्गेरीसदृशः पत्रैश्चतुर्दल इतीरितः ।
शाको जलान्विते देशे चतुष्पत्रीति चोच्यते ॥ ३१ ॥
सुनिषण्णो हिमो ग्राही मोहदोषत्रयापहः ।
अविदाही लघुः स्वादुः कषायो रूक्षदीपनः ॥ ३२ ॥
वृष्यो रुच्यो ज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रमप्रणुत् ।

टीका—शितिवार, शितिवर, स्वस्तिक, सुनिषण्णक, श्रीवारक, सूचीपत्र, पणीक, कुक्कुट, शिखी, ये शिरिआरीके नामहैं ॥३०॥ यह चंगेरीके समान पत्रवाली चौपत्ती कही गयी है. यह साग जलान्वितदेशमें होता है और इसे चौपत्ती ऐसा कहते हैं ॥ ३१ ॥ शिरिआरी शीतल, काबिज, होती है और मोह तथा तीनों दोष इनको हरती है और अविदाही, हलकी, मधुर, कसेली, रूखी, दीपन है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

॥ ३२ ॥ और शुक्रको करनेवाली और रुचिको करनेवाली है और ज्वर, श्वास, प्रमेह, कुष्ठ, भ्रम, इनको हरती है ॥

अथ मूलकपत्रनामगुणाः ।

पाचनं लघु रुच्योष्णं पत्रं मूलकजं नवम् ।
स्नेहसिद्धं त्रिदोषघ्नं प्रसिद्धं कफपित्तकृत् ॥ ३३ ॥

टीका—नये मूलीके पत्ते पाचन, हलके, रुचिको करनेवाले, उष्ण होते हैं और चिकनाईमें सिद्धकिये हुए त्रिदोषनाशक और कच्चे कफपित्तको करनेवाले हैं ॥ ३३

अथ द्रोणपुष्पीदलनामगुणाः ।

द्रोणपुष्पीदलं स्वादु रूक्षं गुरु च पित्तकृत् ।
भेदनं कामलाशोथमेहज्वरहरं कटु ॥ ३४ ॥

टीका—गूमाका पत्र मधुर, रूखा, भारी, पित्तको करनेवाला है और भेदन, कामला, सूजन, मेह, ज्वर, इनको हरता, कटु है ॥ ३४ ॥

अथ यवानीशाकनामगुणाः ।

यवानीशाकमाग्नेयं रुच्यं वातकफप्रणुत् ।
उष्णं कटु च तिक्तं च पित्तलं लघु शूलहृत् ॥ ३५ ॥

टीका—अजवाइनका साग गरम, रुचिको करनेवाला, वातकफको हरता है. और उष्ण, कटु, तिक्त, पित्तको करनेवाला है. हलका और शूलको हरनेवाला है ॥ ३५ ॥

अथ दद्रुघ्नपत्रनामगुणाः ।

दद्रुघ्नपत्रं दोषघ्नमम्लं वातकफापहम् ।
कण्डूकासकृमिश्वासदद्रुकुष्ठप्रणुल्लघु ॥ ३६ ॥

टीका—चकवँडका पत्र दोषहरता, खट्टा और वात कफको हरता है, और खुजली, कास, कृमि, श्वास, दाद, कुष्ठ इनको हरता है ॥ ३६ ॥

अथ सेहुण्डपत्रनामगुणाः ।

सेहुण्डस्य दलं तीक्ष्णं दीपनं रोचनं हरेत् ।
आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणि च ॥ ३७ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—सेहुंडके पत्ते तीखे, दीपन, रोचन होते हैं और आध्मान, अष्ठीला, बायगोला, शूल, सूजन और उदररोग इनको हरते हैं ॥ ३७ ॥

अथ पर्पटनामगुणाः ।

पर्पटो हन्ति पित्तास्रज्वरतृष्णाकफभ्रमान् ।
संग्राही शीतलस्तिक्तो दाहनुद्वातलो लघुः ॥ ३८ ॥

टीका—पित्तपापड़ा रक्तपित्त, ज्वर, तृषा, कफ, भ्रम, इनको हरता है और काबिज, शीतल, तिक्त, दाह, इनको हरता, वातको करनेवाला, हलका होता है ॥ ३८ ॥

अथ गोजिह्वानामगुणाः ।

गोजिह्वा कुष्ठमेहास्रकृच्छ्रज्वरहरो लघुः ।

टीका—गोभी कोढ़, प्रमेह, रक्त, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर इनको हरती है.

अथ पटोलपत्रनामगुणाः ।

पटोलपत्रं पित्तघ्नं दीपनं पाचनं लघु ॥ ३९ ॥
स्निग्धं वृष्यं तथोष्णं च ज्वरकासकृमिप्रणुत् ।

टीका—परवरके पत्ते पित्तनाशक, दीपन, पाचन, हलके, चिकने, शुक्रको करवाले हैं ॥ ३९ ॥ तथा उष्ण, ज्वर, कास, कृमि इनको हरनेवाले कहे हैं.

अथ गुडूचीपत्रनामगुणाः ।

गुडूचीपत्रमाग्नेयं सर्वज्वरहरं लघु ।
कषायं कटु तिक्तं च स्वादुपाकं रसायनम् ॥ ४० ॥
बल्यमुष्णं च संग्राहि हन्याद्दोषत्रयं तृषाम् ।
दाहप्रमेहवातास्रक्कामलाकुष्ठपाण्डुताम् ॥ ४१ ॥

टीका—गिलोयके पत्र गरम, सब ज्वरोंको हरते, हलके, कसैले, कड़वे, तिक्त, पाकमें मधुर, रसायन, ॥ ४० ॥ बलको करनेवाले, उष्ण, काबिज होते हैं और तीनों दोष तथा तृषा इनको हरते हैं और दाह, प्रमेह, वातरक्त, कामला, कुष्ठ, पाण्डुरोग इनको भी हरते हैं ॥ ४१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ कासमर्दनामगुणाः ।

कासमर्दोऽरिमर्दश्च कासारिः कर्कशस्तथा ।
कासमर्ददलं रुच्यं वृष्यं कासविषास्रनुत् ॥ ४२ ॥
मधुरं कफवातघ्नं पाचनं कण्ठशोधनम् ।
विशेषतः कासहरं पित्तघ्नं ग्राहकं लघु ॥ ४३ ॥

टीका—कासमर्द, अरिमर्द, कासारि तथा कर्कश ये कसोंदीके नाम हैं. कसोंदीके पत्र रुचिको करनेवाले, शुक्रको करनेवाले और कास, विष, रक्त, इनको हरते हैं ॥ ४२ ॥ और मधुर, कफ वातको हरते, पाचन, कण्ठको शोधन हैं. विशेष करके कास हरते, पित्तको भी हरते हैं और काबिज हलके हैं ॥ ४३ ॥

अथ चणकशाकगुणाः ।

रुच्यं चणकशाकं स्याद्दुर्जरं कफवातकृत् ।
अम्लं विष्टम्भजनकं पित्तनुद्दन्तशोथहृत् ॥ ४४ ॥

टीका—चनेका साग रुचिको करनेवाला है और दुर्जर, कफवातको करनेवाला और खट्टा, विष्टंभ करनेवाला, पित्त हरता, दांतोंकी सूजनको दूर करनेवाला है ॥ ४४ ॥

अथ कलायशाकनामगुणाः ।

कलायशाकं भेदि स्याल्लघु तिक्तं त्रिदोषजित् ।

टीका—मटरका साग भेदन करनेवाला, हलका, तिक्त, त्रिदोषको हरनेवाला है

अथ सर्षपशाकनामगुणाः ।

कटुकं सार्षपं शाकं बहुमूत्रमलं गुरु ॥ ४५ ॥
अम्लपाकं विदाहि स्यादुष्णं रूक्षं त्रिदोषजित् ।
सक्षारं लवणं तीक्ष्णं स्वादु शाकेषु निन्दितम् ॥ ४६ ॥

टीका—सरसोंका साग कड़वा, बहुत मूत्र मलको करनेवाला, भारी ॥ ४५ ॥ पाकमें अम्ल, विदाही, उष्ण, रूखा, त्रिदोषको हरनेवाला है. क्षारके सहित, नमकीन, तीखा, मधुर और सागोंमें निन्दित है ॥ ४६ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ पुष्पशाकानि, तत्र अगस्तिपुष्पगुणाः ।

अगस्तिकुसुमं शीतं चातुर्थिकनिवारणम् ।
नक्तान्ध्यनाशनं तिक्तं कषायं कटुपाकि च ॥ ४७ ॥
पीनसश्लेष्मपित्तघ्नं वातघ्नं मुनिभिर्मतम् ।

टीका--अब पुष्पशाकोंको कहते हैं. उनमें अगस्तिके फूलका गुण कहते हैं. अगस्तिका फूल शीतल और चौथैयाको हरनेवाला है और रतोंधीको हरता, तिक्त, कसैला, पाकमें कटु कहा है ॥ ४७ ॥ और पीनस कफ पित्तको हरता तथा वातहर्ता है ऐसा मुनियोंने कहा है ।

अथ कदलीपुष्पनामगुणाः ।

कदल्याः कुसुमं स्निग्धं मधुरं तुवरं गुरु ॥ ४८ ॥
वातपित्तहरं शीतं रक्तपित्तक्षयप्रणुत् ।

टीका—केलेका फूल चिकना, मधुर, कसैला, भारी ॥ ४८ ॥ वातपित्तको हरता, शीतल और रक्त पित्त क्षय इनको हरता है.

अथ शिग्रुपुष्पगुणाः ।

शिग्रोः पुष्पं तु कटुकं तीक्ष्णोष्णं स्नायुशोथकृत् ॥ ४९ ॥
कृमिहृत्कफवातघ्नं विद्रधिप्लीहगुल्मजित् ।
मधुशिग्रोस्त्वक्षिहितं रक्तपित्तप्रसादनम् ॥ ५० ॥

टीका—सोहांजनेका फूल कडुआ, तीखा, उष्ण, स्नायु शोथको करनेवाला ॥ ४९ ॥ कृमिको हरता, कफवातको हरता और विद्रधि, पिलही, बायगोला इनको हरनेवाला है. लाल संहिजना नेत्रको हित, रक्तपित्तको अच्छा करनेवाला है ॥५०॥

अथ शाल्मलीपुष्पशाकनामगुणाः ।

शाल्मलीपुष्मशाकं तु घृतसैन्धवसाधितम् ।
प्रदरं नाशयत्येव दुःसाध्यं च नसंशयः ॥ ५१ ॥
रसे पाके च मधुरं कषायं शीतलं गुरु ।
कफपित्तास्रजिद्ग्राहि वातलं च प्रकीर्तितम् ॥ ५२ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका–सेमलके फूलका साग घृत सैन्धवसे सिद्ध कियाहुआ कष्टसाध्य प्रदरको भी हरता है, इसमें कोई संदेह नहीं ॥ ५१ ॥ रस और पाकमें कटु, मधुर, कसैला, शीतल, भारी होता है और कफ, रक्तपित्त, इनको हरनेवाला है ॥ ५२ ॥

अथ फलशाकानि,

तत्र कूष्माण्डस्य नामानि गुणाश्च ।

कूष्माण्डं स्यात्पुष्पफलं पीतपुष्पं बृहत्फलम् ।
कूष्माण्डं बृंहणं वृष्यं गुरु पित्तास्रवातनुत् ॥ ५३ ॥
बालं पित्तापहं शीतं मध्यमं कफकारकम् ।
वृद्धं नातिहिमं स्वादु सक्षारं दीपनं लघु ॥ ५४ ॥
बस्तिशुद्धिकरं चेतोरोगहृत्सर्वदोषजित् ।

टीका—फलशाक, उनमें पेठेके नाम और गुण कहते हैं. कूष्माण्ड, पुष्पफल, पीतपुष्प, बृहत्फल ये पेठेके नाम हैं. पेठा पुष्ट, शुक्रको करनेवाला, भारी, रक्त पित्त और वात इनको हरता है ॥ ६३ ॥ छोटा पित्त हरता और शीतल होता है और मध्यम कफ करनेवाला तथा बड़ा बहुत शीतल नहीं होता और मधुर, क्षारके सहित, दीपन, हलका ॥ ५४ ॥ बस्तिको शुद्ध करनेवाला, मानसिक रोगोंके हरता और सब दोषोंको हरनेवाला है.

अथ कूष्माण्डीनामगुणाः ।

कूष्माण्डी तु भृशं लघ्वी कर्कारुरपि कीर्तितम् ।
कर्कारुर्ग्राहिणी शीता रक्तपित्तहरा गुरुः ॥ ५५ ॥
पक्वा तिक्ताग्निजननी सक्षारा कफवातनुत् ।

टीका—छोटा पेठा बहुत हलका होता है और इसको कर्कारु भी कहते हैं. छोटा पेठा काबिज, शीतल, रक्तपित्तको हरता और भारी होता है ॥ ५५ ॥ पक्का तिक्त, अग्निको करनेवाला, क्षारके सहित कफवातको हरता है.

अथालाबूनामगुणाः ।

अलाबूः कथिता तुम्बी द्विधा दीर्घा च वर्तुला ॥ ५६ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मिष्टतुम्बीफलं हृद्यं पित्तश्लेष्मापहं गुरु ।
वृष्यं रुचिकरं प्रोक्तं धातुपुष्टिविवर्धनम् ॥ ५७ ॥

टीका—अलाबू, तुम्बी ये लौकीके नाम हैं. यह दोप्रकारकी होती है—लंबी और गोल ॥ ५६ ॥ मीठी तुम्बीके फल हृद्य, पित्तकफको हरते, भारी होते हैं और शुक्रको करनेवाले, रुचिकर, धातुपुष्टिको बढ़ानेवाले हैं ॥ ५७ ॥

अथ कटुतुम्बीनामगुणाः ।

इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्यात्सा तुम्बी च महाफला ।
कटुतुम्बी हिमा हृद्या पित्तकासविषापहा ॥ ५८ ॥
तिक्ता कटुर्विपाके च वातपित्तज्वरान्तकृत् ।

टीका—इक्ष्वाकु,कटुतुम्बी ये कड़वी लौकीके नाम हैं. वह बड़े फूलवाली होती है. कडवी तुम्बी शीतल, हृद्य, पित्त, कास, विष इनको हरती है ॥ ५८ ॥ तिक्त, विपाकमें कटु होती है और वात पित्त ज्वर इनको हरती है.

अथ कर्कटीनामगुणाः ।

एर्वारुः कर्कटी प्रोक्ता कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ॥ ५९ ॥
कर्कटी शीतला रूक्षा ग्राहिणी मधुरा गुरुः ।
रुच्या पित्तहरा सामा पक्वा तृष्णाग्निपित्तकृत् ॥ ६० ॥

टीका—एर्वारु, कर्कटी, ये काकड़ीके नाम हैं. अब उसके गुण कहते हैं ॥ ५९ ॥ कडवी,रूखी,शीतल, काबिज, मधुर,भारी, रुचिको करनेवाली, पित्त हरती, कच्ची होती है और पकीहुई तृषा, अग्नि, पित्त इनको करनेवाली है ॥ ६० ॥

अथ चिचिण्डनामगुणाः ।

चिचिण्डः श्वेतराजिः स्यात्सुदीर्घो गृहकूलकः ।
चिचिण्डो वातपित्तघ्नो बल्यः पथ्यो रुचिप्रदः ॥ ६१ ॥
शोषिणोऽतिहितः किञ्चिद्गुणैर्न्यूनः पटोलतः ।

टीका—चिचिंड, श्वेतराजि, सुदीर्घ, गृहकूलक ये चिचिंडके नाम हैं. चिचिंडा वातपित्तको हरता, बलको हित, पथ्य, रुचिको देनेवाला है ॥ ६१ ॥ शोषरोगीको अतिहित और परवलसे कुछ एक गुणमें न्यून होता है.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ कारवेल्लनामगुणाः ।

कारवेल्लं कठिल्लं स्यात्कारवेल्ली ततो लघुः ॥ ६२ ॥
कारवेल्लं हिमं भेदि लघु तिक्तमवातलम् ।
ज्वरपित्तकफास्रघ्नं पाण्डुमेहकृमीन्हरेत् ॥ ६३ ॥
तद्गुणा कारवेल्ली स्याद्विशेषाद्दीपनी लघुः ।

टीका—कारवेल्ल, कठिल्ल, ये करेलेके नाम हैं और करेली उससे छोटी होती है ॥ ६२ ॥ करेला शीतल, भेदन करनेवाला, हलका, तिक्त, वातको करनेवाला है और ज्वर पित्त कफ रक्त इनको हरता है और पाण्डुरोग प्रमेह कृमि इनको हरता है ॥ ६३ ॥ करेली उसीके समान गुणमें होती है. विशेषकरके दीपन, हलकी है.

अथ महाकोशातकीनामगुणाः ।

महाकेशातकी प्रोक्ता सैव हस्तिमहाफला ॥ ६४ ॥
धामार्गवो घोषकश्च हस्तिपर्णश्च स स्मृतः ।
महाकोशातकी स्निग्धा रक्तपित्तानिलापहा ॥ ६५ ॥

टीका—महाकोशातकी, हस्तिघोषा, महाफला, धामार्गव, घोष, हस्तिपर्ण, ये घियातोरईके नाम हैं ॥ ६४ ॥ घियातोरई चिकनी, रक्त पित्त वात इनको हरती है ॥ ६५ ॥

अथ धामार्गवनामगुणाः ।

धामार्गवः पीतपुष्पो जालिनी कृतवेधना ।
राजकोशातकी चेति तथोक्ता राजिमत्फला ॥ ६६ ॥
राजकोशातकी शीता मधुरा कफवातला ।
पित्तघ्नी दीपनी श्वासज्वरकासकृमिप्रणुत् ॥ ६७ ॥

टीका—धामार्गव, पीतपुष्प, जालिनी, कृतवेधना, राजकोशातकी, ये तोरईके नाम हैं तथा लकीरोसें युक्त फल होता है ॥ ६६ ॥ तुरई शीतल, मधुर, कफवातको करनेवाली, पित्तनाशक, दीपन होती है और श्वास कास ज्वर कृमि इनको हरती है ॥ ६७ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ पटोलनामगुणाः ।

पटोलः कूलकस्तिक्तः पाण्डुकः कर्कशच्छदः ।
राजीफलः पाण्डुफलो राजेयश्चामृताफलः ॥ ६८ ॥
बीजगर्भः प्रतीकश्च कुष्ठहा कासभञ्जनः ।
पटोलं पाचनं हृद्यं वृष्यं लघ्वग्निदीपनम् ॥ ६९ ॥
स्निग्धोष्णं हन्ति कासास्रज्वरदोषत्रयकृमीन् ।
पटोलस्य भवेन्मूलं विरेचनकरं सुखात् ॥ ७० ॥
नालं श्लेष्महरं पत्रं पित्तहारि फलं पुनः ।
दोषत्रयहरं प्रोक्तं तद्वत्तिक्ता पटोलिका ॥ ७१ ॥

टीका—पटोल, कूलक, तिक्त, पांडुक, कर्कशच्छद, राजीफल, पाण्डुफल, राजेय, अमृताफल ॥ ६८ ॥ बीजगर्भ, प्रतीक, कुष्ठहा, कासभञ्जन, ये परवलके नाम हैं- परवल पाचन, हृद्य, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, हलका, अग्निदीपन ॥ ६९ ॥ चिकना, उष्ण है और कास श्वास ज्वर तीनों दोष कृमि इनको हरता है. परवलकी जड़ सुखसे विरेचन करनेवाली है ॥ ७० ॥ नाल कफहर्ता, पत्र पित्तहर्ता और फल त्रिदोषहर्ता कहा है. उसीप्रकार तिक्त पटोलिका है ॥ ७१ ॥

अथ बिम्बीनामगुणाः ।

बिम्बी रक्तफला तुण्डी तुण्डकेरी च बिम्बिका ।
ओष्ठोपमफला प्रोक्ता पीलुपर्णी च कथ्यते ॥ ७२ ॥
बिम्बीफलं स्वादु शीतं गुरु पित्तास्रवातजित् ।
स्तम्भनं लेखनं रुच्यं विबन्धाध्मानकारकम् ॥ ७३ ॥

टीका—बिम्बी, रक्तफला, तुण्डिकेरी, बिम्बिका, ओष्ठोपमफला, पीलुपर्णी ये कुन्दुरूके नाम हैं ॥ ७२ ॥ कुन्दुरुफल मधुर, शीतल, भारी, रक्त पित्त वात इनको हरनेवाला है. स्तंभन, लेखन, रुचिको करनेवाला, विबन्ध और आध्मान करनेवाला है ॥ ७३ ॥

अथ शिम्बीनामगुणाः ।

शिम्बिः शिम्बी पुस्तशिम्बी तथा पुस्तकशिम्बिका ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शिम्बीद्वयं च मधुरं रसे पाके हिमं गुरु ॥ ७४ ॥
बल्यं दाहकरं प्रोक्तं श्लेष्मलं वातपित्तजित् ।

टीका—शिम्बि, शिम्बी, पुस्तशिम्बी, पुस्तकशिम्बिका ये सेमके नाम हैं. दोनो सेम रस और पाकमें मधुर और शीतल, भारी हैं ॥ ७४ ॥ बलको हित, दाहकर, कफको करनेवाले और वातपित्तको हरनेवाले हैं.

अथ कोलशिम्बिनामगुणाः ।

कोलशिम्बिः कृष्णफला तथा पर्यङ्कपट्टिका ॥ ७५ ॥
कोलशिम्बिः समीरघ्नी गुर्व्युष्णा कफपित्तकृत् ।
शुक्राग्निसादकृत्प्रोक्ता रुचिदा बद्धविड्गुरुः ॥ ७६ ॥

टीका—सुवरासेम इसको आलकुशी भी कहते हैं कालशिम्बी, कृष्णफला, पर्यंकपट्टिका, ये आलकुशीके नाम हैं ॥ ७५ ॥ आलकुशी वात हरती, भारी, उष्ण, कफपित्तको करनेवाली है और शुक्र अग्निमान्द्य इनको करनेवाली, शुक्रको करनेवाली, रुचिको करनेवाली, मलको बांधनेवाली, भारी है ॥ ७६ ॥

अथ सोभाञ्जनफल (सुनगा) नामगुणाः ।

सोभाञ्जनफलं स्वादु कषायं कफपित्तनुत् ।
शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्महृद्दीपनं परम् ॥ ७७ ॥

टीका—सहिंजनेका फल मधुर, कसेला, कफपित्तको हरता है और शूल कुष्ठ क्षय श्वास वायगोला इनको हरता और अत्यंत दीपन है ॥ ७७ ॥

अथ वृन्ताक (बैंगन) नामगुणाः ।

वृन्ताकं स्त्री तु वार्ताकुर्भण्टाकी भाण्टिकापि च ।
वृन्ताकं स्वादु तीक्ष्णोष्णं कटुपाकमपित्तलम् ॥ ७८ ॥
ज्वरवातबलासघ्नं दीपनं शुक्रलं लघु ।
तद्बालं कफपित्तघ्नं वृद्धं पित्तकरं लघु ॥ ७९ ॥
वृन्ताकं पित्तलं किञ्चिदङ्गारपरिपाचितम् ।
कफमेदोनिलामघ्नमत्यर्थं लघु दीपनम् ॥ ८० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तदेव च गुरु स्निग्धं सतैलं लवणान्वितम् ।
अपरं श्वेतवृन्ताकं कुक्कुटाण्डसमं भवेत् ॥ ८१ ॥
तदर्शःसु विशेषेण हित हीनं च पूर्ववत् ।

टीका—वृन्ताक, वार्त्ताकु, भंटाकी, भाण्टिका, ये बैंगनके नाम हैं. बैंगन मधुर, तीखा, उष्ण, पाकमें कटु और पित्तको न करनेवाला है ॥ ७८ ॥ और ज्वर वात कफ इनको हरता है. दीपन, शुक्रको करनेवाला, हलका है. वैसे ही कच्चा, कफ पित्तको हरता और बड़ा पित्तको करनेवाला, हलका होता है ॥ ७९ ॥ अंगारेपर पकाहुआ कुछेक पित्तको करनेवाला है और कफ मेद वात आम इनको हरता, अत्यन्त दीपन, हलका है ॥ ८० ॥ वही भारी, चिकना, तेल और लवणके युक्त होता है. दूसरा सफेद बैंगन मुरगेके अण्डेके समान होता है ॥ ८१ ॥ वह बवासीरमें विशेषकरके हित है और पूर्ववत् हीन भी है.

अथ डिण्डिशनामगुणाः।

डिण्डिशो रोमशफलो मुनिनिर्मित इत्यपि ॥ ८२ ॥
डिण्डिशो रुचिकृद्भेदी पित्तश्लेष्मापहः स्मृतः ।
सुशीतो वातलो रूक्षो मूत्रलश्चाश्मरीहरः ॥ ८३ ॥

टीका—डिंडिश, रोमशफल, मुनिनिर्मित, ये टिंढे (डींड़िस) के नाम हैं॥८२॥ टिंढा रुचिको करनेवाला, भेदन, पित्तकफको हरता कहा है और शीतल, वातको करनेवाला, रूखा, मूत्रको करनेवाला, अश्मरी हरता है ॥ ८३ ॥

अथ पिण्डारनामगुणाः ।

पिण्डारं शीतलं बल्यं पित्तघ्नं रुचिकारकम् ।
पाके लघु विशेषेण विषशान्तिकरं स्मृतम् ॥ ८४ ॥

टीका—पिंडार (पिण्डालु) शीतल, बलको करनेवाला, पित्त हरता, रुचिको करनेवाला, पाकमें हलका और विशेषकरके विषकी शान्तिको करनेवाला कहा है ॥ ८४ ॥

अथ कर्कोटीनामगुणाः ।

कर्कोटी पीतपुष्पा च महाजालीति चोच्यते ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर्कोटी मलहृत्कुष्ठहृल्लासारुचिनाशिनी ॥ ८५ ॥
श्वासकासज्वरान्हन्ति कटुपाका च दीपनी ।

टीका—कर्कोटी पीतपुष्पा, महाजाली, ये खेखसेके नाम हैं. खेखसा मलको हरता और कुष्ठ, हृल्लास, अरुचि, इनको हरता है ॥ ८५ ॥ और श्वास कास ज्वर इनको हरता है तथा पाकमें कड़वा, दीपन है.

अथ डोडिका नामगुणाः ।

डोडिका विषमुष्टिश्च डोडीत्यपि सुमुष्टिका ॥ ८६ ॥
डोडिका पुष्टिदा वृष्या रुच्या वह्निप्रदा लघुः ।
हन्ति पित्तकफार्शांसि कृमिगुल्मविषामयान् ॥ ८७ ॥

टीका—डोडिका, विषमुष्टि, डोडी, सुमुष्टिका ये करेरुआके नाम हैं ॥ ८६ ॥ करेरुआ पुष्टि करनेवाली, अग्निदीपन, हलकी होती है और पित्त कफ बवासीर कृमि बायगोला विषरोग इनको हरती है ॥ ८७ ॥

अथ कण्टकारीफलनामगुणाः ।

कण्टकारीफलं तिक्तं कटुकं दीपनं लघु ।
रूक्षोष्णं श्वासकासघ्नं ज्वरानिलकफापहम् ॥ ८८ ॥

टीका—कटेरीका फल तिक्त, कटु, दीपन, हलका, रूखा, उष्ण है और श्वास कास इनको हरता तथा ज्वर वात कफ इनको हरता है ॥ ८८ ॥

अथ नालशाकानि तत्र सार्षपनालगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णं सार्षपं नालं वातश्लेष्मव्रणापहम् ।
कण्डूवमिहरं दद्रुकुष्ठघ्नं रुचिकारकम् ॥ ८९ ॥

टीका—नालशाक-उनमें सरसोंका नाल तीखा, गरम होता है और वात व्रण कफ इनको हरता है और खुजली वमन इनको हरता तथा दाद कुष्ठ खुजली इनको हरता तथा रुचिको करनेवाला है ॥ ८९ ॥

अथ कन्दशाकानि तत्र सूरणस्य नामानि गुणाश्च ।

सूरणः कन्द ओलुश्च कन्दलोऽर्शोघ्न इत्यपि ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सूरणो दीपनो रूक्षः कषायः कण्डुकृत्कटुः ॥ ९० ॥
विष्टम्भी विशदो रुच्यः कफार्शःकृन्तनो लघुः ।
विशेषादर्शसे पथ्यः प्लीहागुल्मविनाशनः ॥ ९१ ॥
सर्वेषां कन्दशाकानां सूरणः श्रेष्ठ उच्यते ।
दद्रूणां रक्तपित्तिनां कुष्ठिनां न हितो हि सः ॥ ९२ ॥
सन्धानयोगं सम्प्राप्तः सूरणो गुणवत्तरः ।

टीका—सूरनके नाम और गुण—सूरण, कन्द, ओल, कन्दल, अर्शोघ्न, ये सूरनके नाम हैं. सूरन दीपन, रूखा, कसेला, खाज करनेवाला, कटु होता है ॥ ॥९०॥ और विष्टम्भ करनेवाला, विशद, रुचिको करनेवाला, कफ बवासीरको हरता और हलका है. विशेषकरके बवासीरमें पथ्य है और पिलही बायगोला इनको हरता है ॥ ९१ ॥ सब कन्दशाकोंमें सूरण श्रेष्ठ कहा है. दादवाले और रक्तपित्तवाले तथा कुष्ठवाले इनको नहीं हित है ॥ ९२ ॥ सन्धानयोगमें प्राप्त हुआ सूरण अधिक गुणवाला होता है.

अथालूकनामगुणाः ।

आरुकमप्यालूकं तत्कथितं वीरसेनश्च ॥ ९३ ॥
काष्ठालुकशंखालुकहस्त्यालुकानि कथ्यन्ते ।
पिण्डालुकसप्तालुकरक्तालूकानि चोक्तानि ॥ ९४ ॥
काष्ठालुकं काठिन्ययुक्तम् (कढारु) ।
शंखालुकं श्वेततायुक्तम् (शंखालु) ।
हस्त्यालुकं दीर्घतायुक्तम् महाशरीरम् ।
पिण्डालुकं वर्तुलं (पिण्डालू) ।
सप्तालुकं मधुरतायुक्तं रोमान्वितम् ।
रक्तालुकं (रक्तालु, रतालू) ।
आलुकं शीतलं सर्वं विष्टम्भि मधुरं गुरु ।
सृष्टमूत्रमलं रूक्षं दुर्जरं रक्तपित्तनुत् ॥ ९५ ॥
कफानिलकरं बल्यं वृष्यं स्वल्पाग्निवर्धनम् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—आरुक, आलूक, वीरसेन, ये आलूके नाम हैं. कठिया आलु, संखालु, हस्त्यालु ॥ ९३ ॥ पिंडालू, सप्तालुक, रक्तालु, ये कहे हैं. काष्ठालुक—कढारु काठिन्ययुक्त, श्वेततायुक्त शङ्खालुक (शङ्खारु), हस्त्यालुक, दीर्घतायुक्त बड़ा, पिंडालु-गोल सुथनी, सप्तालुक मधुरतायुक्त, रोमोंकरके युक्त लंबी सुथनी होती है. रक्तालू अर्थात् शकरकन्द ॥ ९४ ॥ सब आलू शीतल, विष्टम्भ करनेवाले, मधुर, भारी, मलमूत्र-को करनेवाले, रूखे, दुर्जर, रक्तपित्तको हरते हैं ॥ ९५ ॥ कफवातको करनेवाले, बलको हित, शुक्रको करनेवाले, अल्प अग्निको बढ़ानेवाले हैं.

अथालुकी (अरुई) नामगुणाः।

रक्तालुभेदे या दीर्घा तन्वी च प्रथितालुकी ॥ ९६ ॥
आलुकी बलकृत्स्निग्धा गुर्वी हृत्कफनाशिनी।
विष्टम्भकारिणी तैले तलितातिरुचिप्रदा ॥ ९७ ॥

टीका—अथ अरुई रक्तालुका भेद—जिसका छीलनेमें पतला छिलका होता है वह अरुई है ॥ ९६॥ अरुई बलको करनेवाली, चिकनी और भारी, हृदयके कफ-को हरती है. तेलमें भुनीहुई विष्टम्भ करनेवाली और रुचिको देनेवाली है ॥ ९७॥

अथ मूलकनामगुणाः

मूलकं द्विविधं प्रोक्तं तत्रैकं लघु मूलकम्।
शालमर्कटकं विस्रं शालेयं मरुसम्भवम् ॥ ९८ ॥
चाणक्यं मूलकं तीक्ष्णं तथा मूलकपोतिका।
नेपालमूलकं चान्यत्तद्भवेद्गजदन्तवत् ॥ ९९ ॥
लघुमूलं कटूष्णं स्याद्रुच्यं लघु च पाचनम्।
दोषत्रयहरं स्वर्यं ज्वरश्वासविनाशनम् ॥ १०० ॥
नासिकाकण्ठरोगघ्नं नयनामयनाशनम्।
महत्तदेवरूक्षोष्णं गुरु दोषत्रयप्रदम् ॥ १०१ ॥
स्नेहसिद्धं तदेव स्याद्दोषत्रयविनाशनम्।

टीका—मूली दोप्रकारकी कही है. उसमें एक छोटी मूली—शालमर्कटक, विस्र, शालेय, मरुसंभव ॥ ९८ ॥ चाणक्य, मूलक, तीक्ष्ण तथा मूलकपोतिका, ये मूलीके

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नाम हैं. और दूसरी नैपाली मूली–यह हाथीके दांतके समान होती है ॥ ९९ ॥ छोटी मूली कड़वी, गरम होती है और रुचिको करनेवाली, हलकी, पाचन, होती है और तीनों दोषोंको हरती, स्वरको अच्छा करनेवाली और ज्वर, श्वासको हरती है ॥ १०० ॥ और नासिकारोग तथा कण्ठरोग इनको हरती है और नेत्ररोगको हरती है. बड़ी मूली रूखी, गरम, भारी, तीनों दोषोंको छेदनेवाली है ॥ १०१ ॥ स्नेहसिद्ध वही तीनों दोषोंको हरती है.

अथ गाजरनामगुणाः।

गाजरं गृञ्जनं प्रोक्तं तथा नारङ्गवर्णकम् ॥ १०२ ॥
गाजरं मधुरं तीक्ष्णं तिक्तोष्णं दीपनं लघु।
संग्राहि रक्तपित्तार्शोग्रहणीकफवातजित् ॥ १०३ ॥

टीका—गाजर, गृंजन नारंगवर्णक, ये गाजरके नाम हैं ॥ १०२ ॥ गाजर मधुर, तीखा, उष्ण, दीपन, हलका होता है और काबिज, रक्तपित्त, बवासीर, संग्रहणी, कफ, वात इनको हरनेवाला है ॥ १०३ ॥

अथ कदलीकन्दनामगुणाः।

शीतलः कदलीकन्दो बल्यः केश्योऽम्लपित्तजित्।
वह्निकृद्दाहहारी च मधुरो रुचिकारकः ॥ १०४ ॥

टीका—केलाका कन्द शीतल, बलको देनेवाला, केशको हित, अम्लपित्तको हरनेवाला, अग्निदीपन, दाहको हरता, मधुर, रुचिको करनेवाला है ॥ १०४ ॥

अथ मानकनामगुणाः।

मानकः स्यान्महापत्रः कथ्यन्ते तद्गुणा अथ।
मानकः शोथहृच्छीतः पित्तरक्तहरो लघुः ॥ १०५ ॥

टीका—मानकंद–मानक, महापत्र, ये नाम हैं. अब इसके गुण कहतें हैं. मानकंद शोथको हरता, शीतल, पित्तरक्तको हरता, हलका होता है ॥ १०५ ॥

अथ वाराहीनामगुणाः।

वाराही पित्तला बल्या कट्वी तिक्ता रसायनी।
आयुःशुक्राग्निकृन्मेहकफकुष्ठानिलापहा ॥ १०६ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—इसको ठोंठी इसप्रकार लोकमें कहते हैं. वाराहीकन्द पित्तको करनेवाला, बलको हित, कड़वा, तिक्त, रसायन और आयु शुक्रको और अग्निको करनेवाला और प्रमेह कफ कुष्ठ वात इनको हरता है ॥ १०६ ॥

अथ हस्तिकर्णीनामगुणाः ।

गजकर्णी तु तिक्तोष्णा तथा वातकफाञ्जयेत् ।
शीतज्वरहरी स्वादुः पाके तस्यास्तु कन्दकः ॥ १०७ ॥
पाण्डुशोथकृमिप्लीहगुल्मानाहोदरापहः ।
ग्रहण्यर्शोविकारघ्नो वनसूरणकन्दवत् ॥ १०८ ॥

टीका—हस्तिकर्णी तिक्त, उष्ण, तथा वात कफ इनको हरती है और शीतज्वरको हरती, पाकमें मधुर होती है. उसका कन्द ॥ १०७ ॥ पण्डुरोग, सूजन, कृमि, प्लीह, बायगोला, आनाह, उदररोग इनको हरता है और संग्रहणी व बवासीरके विकारको हरता है. यह वनसूरणके समान होता है ॥ १०८ ॥

अथ केमुकनामगुणाः ।

केमुकं कटुकं पाके तिक्तं ग्राहि हिमं लघु ।
दीपनं पाचनं हृद्यं कफपित्तज्वरापहम् ॥ १०९ ॥
कुष्ठकासप्रमेहास्रनाशनं वातलं कटु ।

टीका—केमुक कड़वा, पाकमें तिक्त, काबिज, शीतल, हलका होता है. दीपन, पाकमें हृद्य, कफ पित्त ज्वर इनको हरता है ॥ १०९ ॥ और कुष्ठ कास प्रमेह रक्त इनको हरता, वातको करनेवाला, कटु होता है.

अथ कसेरुनामगुणाः ।

कसेरु द्विविधं तत्तु महद्राजकसेरुकम् ॥ ११० ॥
मुस्ताकृतिर्लघु स्याद्यत्तच्चिचोढमिति स्मृतम् ।
कसेरुकद्वयं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ॥ १११ ॥
पित्तशोणितदाहघ्नं नयनामयनाशनम् ।
ग्राहि शुक्रानिलश्लेष्मारुचिस्तन्यकरं स्मृतम् ॥ ११२

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—कसेरु दोप्रकारका होता है. उसमें बडा राजकसेरुक ॥ ११० ॥ और मोथेके आकार छोटा जो होता है उसको चिचोढ ऐसा कहा है. दोनों कसेरू शीतल, मधुर, कसेले, भारी, ॥ १११ ॥ पित्त रक्त दाह इनको हरते और नेत्ररोगोंको हरते हैं. काबिज, शुक्र वात कफ अरुचि दुग्ध इनको करनेवाले कहे हैं ११२

अथ शालूकनामगुणाः।

पद्मादिकन्दः शालूकं करहाटश्च कथ्यते।
मृणालमूलं भिस्साण्डं लज्जालूकं च कथ्यते॥ ११३॥
शालूकं शीतलं वृष्यं पित्तदाहास्रनुद्गुरु।
दुर्जरं स्वादुपाकं च स्तन्यानिलकफप्रदम्॥ ११४॥
संग्राहि मधुरं रूक्षं भिस्साण्डमपि तद्गुणम्।

टीका—पद्म आदियोंके कंदको शालूक और करहाट कहते हैं. मृणाणमूल, भिस्साण्ड,लज्जालूक, ये भी शालूक (भसींड़) के नाम हैं ॥ ११३ ॥ भसींड़ शीतल, शुक्रको करनेवाली, पित्त दाह रक्त इनकी नाशक, भारी है और दुर्जर, पाकमें मधुर, दुग्ध वात कफ इनको करनेवाली है ॥ ११४ ॥ तथा काबिज, मधुर, रूखी, भिस्साण्ड भी उसीके समान गुणमें है.

अथ त्याज्यकन्दशाकानि।

बालं ह्यनार्तवं जीर्णं व्याधितं क्रिमिभक्षितम्॥ ११५॥
कन्दं विवर्जयेत्सर्वं यद्वाऽग्न्यादिविदूषितम्।
अतिजीर्णमकालोत्थं रूक्षं सिद्धमदेशजम्॥ ११६॥
कर्कशं कोमलं चाति शीतव्यालादिदूषितम्।
संशुष्क सकलं शाकं नाश्नीयान्मूलकं विना॥ ११७॥

टीका—कच्चा, अनार्तव, आजीर्ण, व्याधित, कीड़ोंसे खायाहुआ ॥ ११५ ॥ ऐसे सब कन्द त्यागदेवै. अथवा जो अग्नि आदिसे दूषित, बहुत जीर्ण, बेमौसमका, रूखा, सिद्धकिया, अदेशज ॥ ११६ ॥ अतिकर्कश, अतिकोमल और शीतल,सर्पआदिसे दूषित, बहुत सूखाहुआ सब शाकोंका मूलीके विना न सेवन करै ११७

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ संस्वेदजशाकानि । तेषां नामानि गुणाश्च ।

उक्तं संस्वेदजं शाकं भूमिच्छत्रं शिलीन्ध्रकम् ।
क्षितिगोमयकाष्ठेषु वृक्षादिषु तदुद्भवेत् ॥ ११८ ॥
सर्वे संस्वेदजाः शीता दोषलाः पिच्छिलाश्च ते ।
गुरवश्छर्द्यतीसारज्वरश्लेष्मामयप्रदाः ॥ ११९ ॥
श्वेतशुभ्रस्थलीकाष्ठवंशगोव्रणसंभवाः ।
नातिदोषकरास्ते स्युः शेषास्तेभ्यो विगर्हिताः ॥ १२० ॥
इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे शाकवर्गः समाप्तः ।

टीका—अब संस्वेदज शाक और उनके नाम और गुण कहते हैं. संस्वेदज शाक उसे कहते हैं जो दबी पड़ी हुई जमीनसे होता है. उसे संस्वेदज, भूमिच्छत्र, शिलीन्ध्रक कहते हैं. पृथ्वी, गोबर, काष्ठ, वृक्ष, आदिमें भी उत्पन्न होता है, उसे कुकुरमुसा कहतें हैं ॥ ११८ ॥ सब संस्वेदज शीतल, दोषको उत्पन्न करनेवाले, पिच्छिल जो होते हैं वे भारी होते हैं और वमन, अतिसार, ज्वर, कफके रोग इनको करनेवाले हैं ॥ ११९ ॥ श्वेत और शुभ्र, बेबनी हुई, जमीन, काष्ठ, बांस, गोव्रण इनसे उत्पन्न अतिदोष करनेवाले नहीं हैं. बाकी उनसे निन्दित हैं. संस्वेदज इसको छाता इसप्रकार लोकमें करते हैं ॥ १२० ॥

इति हरीतक्यादिनिघण्टे शाकवर्गः समाप्तः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्रीः ।

अथ हरीतक्यादिनिघण्टे

मांसवर्गः ।

अथ मांसस्य नामानि ।

मांसं तु पिशितं क्रव्यमामिषं पललं पलम् ।
मांसं वातहरं सर्वं बृंहणं बलपुष्टिकृत् ।
प्रीणनं गुरु हृद्यं च मधुरं रसपाकयोः ॥ १ ॥

टीका--मांस, पिशित, क्रव्य, आमिष, पलल और पल, ये मांसके संस्कृत नाम हैं. सर्व प्रकारके मांस–वातनाशक, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, तृप्तिदायक, भारी, हृदयको प्रिय और रसमें तथा पाकमें मधुर हैं ॥ १ ॥

अथ मांसभेदाः ।

मांसवर्गो द्विधा ज्ञेयो जाङ्गलाऽऽनूपभेदतः ॥ २ ॥

टीका—सम्पूर्ण मांस दो प्रकारके हैं, एक जांगलमांस, और दूसरे आनूपमांस ॥ २ ॥

जाङ्गलमांसस्य लक्षणं गुणाश्च ।

मांसवर्गोऽत्र जंघाला बिलस्थाश्च गुहाशयाः ।
तथा पर्णमृगा ज्ञेया विष्किराः प्रतुदास्तथा ॥ ३ ॥
प्रसहा अथ च ग्राम्या अष्टौ जाङ्गलजातयः ॥ ४॥
जाङ्गला मधुरा रूक्षास्तुवरा लघवस्तथा ।
बल्यास्ते बृंहणा वृष्या दीपना दोषहारिणः ॥ ५ ॥
मूकतां मिन्मिनत्वं च गद्गदत्वार्दिते तथा ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बाधिर्य्यमरुचिच्छर्दिप्रमेहमुखजान्गदान् ।
श्लीपदं गलगण्डं च नाशयत्यनिलामयान् ॥ ६ ॥

टीका—यहाँ मांसवर्गमें जांगल, बिलस्थ (बिलेशय), गुहाशय, पर्णमृग, विष्किर, प्रतुद, प्रसह और ग्राम्य, ये आठ जांगल जातिमें हैं. जांगलजातिके मांस–मधुर, रूक्ष, कसैले, हलके, बलदायक, पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, अग्निको दीपन करनेवाले, दोषनाशक और गूंगापन, मिन्मिनापन, तोतलापन, अर्दितवात, (लकवा) बहरापन, अरुचि, वमन, प्रमेह, मुखरोग, श्लीपद, गलगण्ड, तथा वातसंबंधी रोगोंको नष्ट करते हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

अथ आनूपमांसस्य लक्षणं गुणाश्च ।

कूलेचराः प्लवाश्चापि कोशस्थाः पादिनस्तथा ।
मत्स्या एते समाख्यताः पञ्चधाऽऽनूपजातयः ॥ ७ ॥
आनूपा मधुराः स्निग्धा गुरवो वह्निसादनाः ।
श्लेष्मलाः पिच्छिलाश्चापि मांसपुष्टिप्रदा भृशम् ॥ ८ ॥
तथाऽभिष्यन्दिनस्ते हि प्रायः पथ्यतमाः स्मृताः ॥ ९ ॥

टीका—कूलेचर, प्लुव, कोशस्थ, पादी और मत्स्य, ये पाँच अनूपजातिमें हैं. अनूपजातिके मांस–मधुर, स्निग्ध, भारी, अग्निको मन्द करनेवाले, कफकारक, पिच्छिल, मांसको बहुत पुष्टिदायक, अभिष्यन्दी और विशेषकरके बहुत पथ्य हैं ॥ ६ ॥ ७ ॥

अथ जंघालानां (जंगली पशुओंकी) गणना विशिष्टगुणाश्च ।

हरिणैणकुरङ्गर्ष्यपृषतन्यङ्कुशम्बराः ।
राजीवोऽपि च मुण्डी चेत्याद्या जाङ्गलसंज्ञकाः ॥ १० ॥
हरिणस्ताम्रवर्णः स्यादेणः कृष्णः प्रकीर्तितः ।
कुरङ्ग ईषत्ताम्रः स्यादेणतुल्याकृतिर्महान् ॥ ११ ॥
ऋष्यो नीलाङ्गको लोके स रोझ इति कीर्तितः ।
पृषतश्चन्द्रबिन्दुः स्याद्धरिणात्किञ्चिदल्पकः ॥ १२ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

न्यङ्कुर्बहुविषाणोऽथ शम्बरो गवयो महान् ।
राजीवस्तु मृगो ज्ञेयो राजिभिः परितो वृतः ॥ १३ ॥
यो मृगः शृङ्गहीनः स्यात्स मुण्डीति निगद्यते ।
जङ्घालाः प्रायशः सर्वे पित्तश्लेष्महराः स्मृताः ।
किञ्चिद्वातकराश्चापि लघवो बलवर्द्धनाः ॥ १४ ॥

टीका—हरिण, एण, कुरङ्ग, ऋष्य, पृषत, न्यंकु, शम्बर, राजीव और मुण्डी इत्यादि पशु जंघालसंज्ञक हैं. जो मृग लालवर्णका हो उसको हरिण, जो काला हो उसको एण, जो किंचित् लालवर्णका, बड़ा और एणके सदृश आकृतिवाला हो उसको कुरंग, जो नीले वर्णका हो उसको ऋष्य और लोकमें रोझ, जो चन्द्रके सदृश छींटोंवाला और हरिणसे कुछ छोटा हो उसको पृषत, जिसके बहुतसे सींग हों उसको न्यंकु (बारहसिंगा), बड़े रोझको शम्बर, जिसके शरीरमें अधिक रेखा पड़ी हों उसको राजीव और जो मृग सींगरहित होता है उसको मुण्डी कहते हैं। प्रायः सर्व जंघाल–पित्त तथा कफनाशक, कुछ वातकारक, हलके और बलवर्द्धक हैं॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥

अथ बिलेशयानां गणना गुणाश्च ।

गोधाशशभुजङ्गाखुशल्लक्याद्या बिलेशयाः ।
बिलेशया वातहरा मधुरा रसपाकयोः ॥ १५ ॥
बृंहणा बद्धविण्मूत्रा वीर्योष्णाश्च प्रकीर्तिताः ।

टीका—बिलमें रहनेवालोंकी गणना और गुण कहते हैं. गोह, खरगोश, सांप, चूहा, साही आदि बिलेशय हैं. बिलेशय वात हरता और रसपाकमें मधुर हैं॥१५॥ तथा पुष्ट, मलमूत्रको बांधनेवाले और वीर्यमें उष्ण कहे हैं ।

अथ गुहाशयानां गणना गुणाश्च ।

सिंहव्याघ्रवृकाः ऋक्षतरक्षुद्वीपिनस्तथा ॥ १६ ॥
बभ्रुजम्बूकमार्जारा इत्याद्याः स्युर्गुहाशयाः ।
स्थूलपुच्छो रक्तनेत्रो बभ्रुदेहः स नाकुलः ॥ १७ ॥
गुहाशया वातहरा गुरूष्णा मधुराश्च ते ।
स्निग्धा बल्या हिता नित्यं नेत्रगुह्यविकारिणाम् ॥ १८ ॥

डा० जयनारायण कपूरिया वैद्य
६०, गाँधी गली, देहली-६

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—अब गुहाशयोंकी गणना और गुण-शेर, भेड़िया, रीछ, तेन्दुवा, बाघ, चीता, नउला, गीदड, बिलाव, इत्यादि गुहाशय हैं. तरक्षुको हउहा इसप्रकार लोकमें कहते हैं. और इसको चीता व्याघ्र, इसप्रकार भी लोकमें कहते हैं. मोटी पुच्छ, लाल आंखें, पिंगल शरीर, नेउला है ॥ १६ ॥ १७ ॥ गुहाशय वातहर्ता, भारी, उष्ण, मधुर, चिकने, बलको करनेवाले और सदा नेत्र गुदा व लिंगरोग वालोंको हित हैं ॥ १८ ॥

अथ पर्णमृगाणां गणना गुणाश्च ।

वनौको वृक्षमार्जारो वृक्षमर्कटिकादयः ।
एते पर्णमृगाः प्रोक्ताः सुश्रुताद्यैर्महर्षिभिः ॥ १९ ॥
वनौको वानर इति लोके वानरः वृक्षमार्जारो वृक्षबिडालः
वृक्षमर्कटिका 'रूषी'
स्मृताः पर्णमृगा वृष्याश्चक्षुष्याः शोषणे हिताः ।
श्वासार्शः कासशमनाः सृष्टमूत्रपुरीषकाः ॥ २० ॥

टीका—बन्दर, वृक्षमार्जार अर्थात् वृक्षपर रहनेवाले बिलाव (बनबिलाव), वृक्षमर्कटिका ('रूषी' वानर) आदिक ये पर्णमृग सुश्रुतादि महर्षियोंने कहे हैं ॥ १९ ॥ पर्णमृग शुक्रको करनेवाले, नेत्रको और शोषवालेको हित और श्वास, बवासीर, कास इनको हरते, मलमूत्रको करनेवाले हैं ॥ २० ॥

अथ विष्किराणां गणना गुणाश्च ।

वर्त्तकालाववर्तीरकपिञ्जलकतित्तिराः ।
कुलिङ्गकुक्कुटाद्याश्च विष्किराः समुदाहृताः ॥ २१ ॥
विकीर्य भक्षयन्त्येते यस्मात्तस्माद्धि विष्किराः ।
कपिञ्जल इति प्राज्ञैः कथितो गौरतित्तिरिः ॥ २२ ॥
विष्किरा मधुराः शीताः कषायाः कटुपाकिनः ।
बल्या वृष्यास्त्रिदोषघ्नाः पथ्यास्ते लघवः स्मृताः ॥ २३ ॥

टीका—अथ विष्किरोंकी गणना और गुण-वर्तक (अनेक रंगोंके परोंवाली चिड़िया), लवा, बटेर, सफेद तीतर, कुलिंग (चिडे, छोटी गौरैया), मुरगा आदिक, ये विष्किर कहे हैं॥२१॥ छितराके खाते हैं इसवास्ते ये विष्किर हैं. सुफेद तीतरको बुद्धि-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मानोंने कपिञ्जल ऐसा कहा है ॥ २२ ॥ विष्किर मधुर, शीतल, कसेले, पाकमें कटु, बलको करनेवाले, त्रिदोष हरते, पथ्य और हलके हैं ॥ २३ ॥

अथ प्रतुदानां गणना गुणाश्च ।

हारीतो धवलः पाण्डुश्चित्रपक्षो बृहच्छुकः ।
पारावतः खञ्जरीटः पिकाद्याः प्रतुदाः स्मृताः ॥ २४ ॥
प्रतुद्य भक्षयन्त्येते तुण्डेन प्रतुदास्ततः ।
हारीतः 'हरियल' इति लोके ।
कपोतो धवलः पाण्डुः शतपत्रो बृहच्छुकः ॥ २५ ॥
"दार्वाघाट" इत्यमरः । 'कठ फोरा' इति लोके ।
प्रतुदा मधुराः पित्तकफघ्नास्तुवरा हिमाः ।
लघवो बद्धवर्चस्काः किञ्चिद्वातकराः स्मृताः ॥ २६ ॥

टीका--प्रतुदों (चोंचसे खानेवाले पक्षियों की गणना और गुण--हारीत, कठफोरवा, जंगली तीतर, पहाड़ी तोता, पारवा, खंजन, कोईल इत्यादिक ये प्रतुद कहे हैं ॥ २४ ॥ अपनी चोंचसे तोड़कर खाते हैं इसवास्ते प्रतुद कहे है. हारीतको 'हरील' इसप्रकार लोकमें कहते हैं, कपोत धवल,पाण्डु शतपत्र, बृहच्छुक है. दार्वाघाट, इसप्रकार अमरमें कहा है. 'कठफोरवा' इसप्रकार लोकमें कहते हैं ॥ २५ ॥ प्रतुद मधुर, पित्त कफको हरते, कसैले, शीतल,हलके, मलको बांधनेवाले और कुछ एक वातको करनेवाले कहे हैं ॥ २६ ॥

अथ प्रसहानां गणना गुणाश्च ।

काको गृध्र उलूकश्च चिल्लश्च शशघातकः ।
चाषो भासश्च कुरर इत्याद्याः प्रसहाः स्मृताः ॥ २७ ॥
शशघातकः 'बाज' इति लोके ।
चाषो 'नीलकण्ठ' इति लोके ।
"भासो गृध्रविशेषः स्यात्" कुररः (करांकुर) इति लोके ।
प्रसहाः कीर्तिता एते प्रसह्याच्छिद्य भक्षणात् ॥ २८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रसहाः खलुवीर्योष्णास्तन्मांसं भक्षयन्ति ये ।
ते शोषभस्मकोन्मादशुक्रक्षीणा भवन्ति हि ॥ २९ ॥

टीका—अथ प्रसहोंकी गणना और गुण–कौवा, गिद्ध, उल्लू, चील, बाज, नीलकंठ, भास 'यह गिद्धका भेद है, कुरीर, इत्यादि ये पक्षी प्रसह कहे हैं ॥ २७ ॥ शशघातकको ' बाज ' इसप्रकार लोकमें कहते हैं. भास यह गिद्धके किस्ममें है. कुररको कुरांकुर इसप्रकार लोकमें कहते हैं. ये जबरदस्ती काटकर खाते हैं इसवास्ते प्रसह हैं ॥२८॥ प्रसह वीर्यमें उष्ण हैं. उनके मांसको जो भक्षण करते हैं वे शोष, भस्मक, उन्मादयुक्त और शुक्रक्षीण होजाते हैं ॥ २९ ॥

अथ ग्राम्याणां गणना गुणाश्च ।

छागमेषवृषाश्वाश्च ग्राम्याः प्रोक्ता महर्षिभिः ॥ ३० ॥
ग्राम्या वातहराः सर्वे दीपनाः कफपित्तलाः ।
मधुरा रसपाकाभ्यां बृंहणा बलवर्धनाः ॥ ३१ ॥

टीका—अथ ग्राम्योंकी गणना और गुण–बकरी, मेंढा, बैल, घोड़ा, इनको महर्षियोंने ग्राम्य कहा है ॥ ३० ॥ सब ग्राम्य वातको हरते, दीपन, कफपित्तको करनेवाले हैं और रसपाकमें मधुर, पुष्ट, बलको बढ़ानेवाले हैं ॥ ३१ ॥

अथ कूलेचराणां गणना गुणाश्च ।

लुलायगण्डवाराहचमरीवारणादयः ।
एते कूलचराः प्रोक्ता यतः कूले चरन्त्यपाम् ॥ ३२ ॥
लुलायो महिषः । गण्डः खड्गः । चमरी चमरपुच्छी गौ ।
कूलेचरा मरुत्पित्तहरा वृष्या बलावहाः ।
मधुराः शीतलाः स्निग्धा मूत्रलाः श्लेष्मवर्धनाः ॥ ३३ ॥

टीका—अथ कूलेचरोंकी गणना और गुण–भैंस, गौंडा, सूकर, चमरी, (चमर पुच्छ गाय), हाथी आदिक ये कूलेचर हैं. क्योंकि ये जलके किनारे विचरते हैं ३२ ॥ कूलेचर वातपित्तको हरते, शुक्रको करनेवाले, बलकारी, मधुर, शीतल, चकने, मूत्रको करनेवाले और कफको बढ़ानेवाले हैं ॥ ३३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ प्लवानां गणना गुणाश्च ।

हंससारसकारण्डबकक्रौञ्चसरारिकाः ।
नन्दीमुखी सकादम्बा बलाकाद्याः प्लवाः स्मृताः ।
प्लवन्ति सलिले यस्मादेते तस्मात्प्लवाः स्मृताः ॥ ३४ ॥
कारण्डः कपर्दिकाख्यो बृहद्धंसभेदः ।
स्थूलाः कठोरा वृत्ता च यस्याश्चञ्चूपरि स्थिता ।
गुटिका जम्बुसदृशी प्रोक्ता नन्दीमुखीति सा ।
बलाका बगुली इति लोके ।
प्लवाः पित्तहराः स्निग्धा मधुरा गुरवो हिमाः ।
वातश्लेष्मप्रदाश्चापि बलशुक्रकराः सराः ॥ ३६ ॥

टीका—अथ प्लवोंकी गणना और गुण—हंस, सारस, कुरंड, बगला, टींक, आडी, नन्दीमुखी, ये वह जानवर हैं. जिसके चोंचपर, जामनके सम गुठली होती है और बतकसा होता है. करवा, बगुला, आदि ये प्लव कहे हैं ॥ ३४ ॥ ये जलमें तैरते रहते हैं इसवास्ते इनको प्लव कहा है, स्थूल, कठोर, गोल, जामूनकी गुठलींके समान जिसके चोंचपर रहता है वो नन्दीमुखी कही है ॥ ३५ ॥ प्लव पित्त हरते, चिकने, मधुर, भारी, शीतल, वातकफको करनेवाले और शुक्रको करनेवाले, सर हैं ॥ ३६ ॥

अथ कोशस्थानां गणना गुणाश्च ।

शंखः शंखनखश्चापि शुक्तिशम्बूककर्कटाः ।
जीवा एवंविधाश्चान्ये कोशस्थाः परिकीर्तिताः ॥ ३७ ॥
कोशस्था मधुराः स्निग्धा वातपित्तहरा हिमाः ।
बृंहणा बहुवर्चस्का वृष्याश्च बलवर्धनाः ॥ ३८ ॥

टीका—अनन्तर कोशस्थोंकी गणना और गुण कहते हैं. शंख, छोटा शंख, सीप, घोंघा, केकड़ा, इसप्रकारके और जीव कोशस्थ कहे हैं ॥३७॥ कोशस्थ मधुर, चिकने, वातपित्तको हरते, शीतल, पुष्ट, बहुत मलको करनेवाले और बलको बढ़ानेवाले हैं ३८

अथ पादिनां गणना गुणाश्च ।

कुम्भीरकूर्मनक्राश्च गाधामकरशङ्कवः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

घण्टिकः शिशुमारश्चेत्यादयः पादिनः स्मृताः ॥ ३९ ॥
(कुम्भीरो मारको जलजन्तुः । कूर्मः कच्छपः ।
नक्रः 'नाका' इति लोके । गोधा 'गोही' जलजन्तुः ।
मकरः 'मगर' इति लोके । शङ्कुः 'शाकुच, इतिलोके ।
घण्टिकः 'घडियाल' इति लोके ।
पादिनोऽपि च ये ते तु कोशस्थानां गुणैः समाः ।

टीका—अनन्तर पादियोंकी गणना और गुण-कुम्भीर मारक (जलजन्तु) यह मगरका भेद है, कछुआ, नाका, गोही, मगर, साकुच, घड़ियाल, सूस इत्यादि, ये पादी कहे हैं ॥ ३९ ॥ (कुंभीर यह मारक जलजीव है। कूर्म-कछवा नक्र-'नाका-गोधा') । गोही मकर-मगर, शंकु-साकुच, घण्टिक-घरिआल, जो पादि हैं वे भी कोशस्थोंके समान गुणमें हैं.

अथ मत्स्यानां नामानि गुणाश्च ।

मत्स्यो मीनो विकारश्च झषो वैसारिणोऽण्डजः ॥ ४० ॥
शकुली पृथुरोमा च स सुदर्शन इत्यपि ।
रोहिताद्यास्तु ये जीवास्ते मत्स्याः परिकीर्तिताः ॥ ४१ ॥
मत्स्याः स्निग्धोष्णमधुरा गुरवः कफपित्तलाः
वातघ्ना बृंहणा वृष्या रोचका बलवर्धनाः ।
मद्यव्यवायसक्तानां दीप्ताग्नीनां च पूजिताः ॥ ४२ ॥

टीका-मछलियोंके नाम और गुण-मत्स्य, मीन, विकार, झष, वैसारिण, अंडज ४० शकुली पृथुरोमा और सुदर्शन ये मछलियोंके नाम हैं. रोहू आदिक जो जीव हैं वे मत्स्य कहे हैं ॥४१॥ मत्स्य चिकने, उष्ण, मधुर, भारी, कफपित्तको करनेवाले हैं और वात हरते, पुष्ट, शुक्रको करनेवाले, रोचक, बलको बढ़ानेवाले हैं तथा मद्य मैथुनमें आसक्तोंको और दीप्ताग्नियोंको भी हित हैं ॥ ४२ ॥

अथ जंघालानां नामानि गुणाश्च ।

तत्र जंघालेषु हरिणस्य गुणाः ।

हरिणः शीतलो बद्धविण्मूत्रो दीपनो लघुः ॥ ४३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसे पाके च मधुरः सुगन्धिः सन्निपातहा ।

टीका—अनन्तर जंघाल आदियोंके नाम गुण—उनमें हरीणके गुण—हरिण शीतल, मलमूत्रको बढ़ानेवाला, दीपन, हलका रस और पाकमें मधुर, सुगन्धि, सन्निपातको हरता है ॥ ४३ ॥

अथैणगुणाः ।

एणः कषायो मधुरः पित्तास्रक्कफवातहृत् ।
संग्राही रोचनो बल्यो ज्वरप्रशमनः स्मृतः ॥ ४४ ॥

टीका—अनन्तर कालाहरिण—एण कसैला, मधुर, रक्त पित्त कफ वात इनको हरता है और काबिज, रोचन, बलको हित, ज्वरको हरनेवाला कहा है ॥ ४४ ॥

अथ कुरङ्गगुणाः ।

कुरङ्गो बृंहणो बल्यः शीतलः पित्तहृद्गुरुः ।
मधुरो वातहृद्ग्राही किञ्चित्कफकरः स्मृतः ॥ ४५ ॥

टीका—कुरंग बृंहण, बलको हित, शीतल, पित्तहर्ता, भारी, मधुर, वातहर्ता, काबिज और कुछ कफ करनेवाला कहा है ॥ ४५ ॥

अथ ऋष्यगुणाः ।

ऋष्यो नीलाङ्गकश्चापि गवयो रोझ इत्यपि ।
गवयो मधुरो बल्यः स्निग्धोष्णः कफपित्तलः ॥ ४६ ॥

टीका—ऋष्य, नीलाङ्गक, गवय, रोझ, ये नीलगायके नाम हैं. नीलगाय मधुर, बलको हित, चिकनी, उष्ण, कफपित्तको करनेवाली है ॥ ४६ ॥

अथ पृषतगुणाः ।

पृषतस्तु भवेत्स्वादुर्ग्राहकः शीतलो लघुः ।
दीपनो रोचनः श्वासज्वरदोषत्रयास्रजित् ॥ ४७ ॥

टीका—चित्तारी मधुर, काबिज, शीतल, हलका, दीपन, रोचन है और श्वास ज्वर तीनों दोष रक्त इनका हरनेवाला है ॥ ४७ ॥

अथ न्यङ्कुगुणाः ।

न्यङ्कुः स्वादुर्लघुर्बल्यो वृष्यो दोषत्रयापहः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका--बारहसिंगा मधुर, हलका, बलको हित, शुक्रको करनेवाला, तीनों दोषोंको हरता है.

अथ साबरगुणाः ।

साबरं पललं स्निग्धं शीतलं गुरु च स्मृतम् ॥ ४८ ॥
रसे पाके च मधुरं कफदं रक्तपित्तहृत् ।

टीका—साबरका मांस चिकना, शीतल, भारी, कहा है ॥ ४८ ॥ रसपाकमें मधुर, कफको करनेवाला, रक्तपित्तको हरता है.

अथ राजीवगुणाः ।

राजीवस्तु गुणैर्ज्ञेयः पृषतेन समो जनैः ॥ ४९ ॥

टीका—राया चित्तलीके समान गुणमें जानना ॥ ४९ ॥

अथ मुण्डिगुणाः ।

मुण्डी तु ज्वरकासास्लक्षयश्वासापहो हिमः ।

टीका--पीठी ज्वर, कास, रक्त, क्षय, श्वास इनको हरता, शीतल होता है

अथ बिलेशयाः । तत्र शशस्य नामगुणाः ।

लम्बकर्णः शशः शूली लोमकर्णो बिलेशयः ॥ ५० ॥
शशः शीतो लघुर्ग्राही रूक्षः स्वादुः सदाहितः ।
वह्निकृत्कफवातघ्नो वातसाधारणः स्मृतः ॥ ५१ ॥
ज्वरातीसारशोषास्रश्वासामयहरश्च सः ।

टीका--अब बिलेशयोंमें शशके नाम गुण-लम्बकर्ण, शश, शूली, लोमकर्ण, बिलेशय, ये खरगोशके नाम हैं ॥ ५० ॥ खरगोश शीतल, हलका, काबिज, रूखा, मधुर, सदा शीतल, अग्निदीपन, कफवातको हरता, साधारण, कफवातको करनेवाला कहा है ॥ ५१ ॥ और ज्वर अतीसार शोष रक्त श्वासरोग इनको हरता है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ सेधानामगुणाः ।

सेधा तु शल्यकः श्वावित्कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ॥ ५२ ॥
शल्यकः श्वासकासास्रशोषदोषत्रयापहः ।

टीका—सेधा, शल्यक, श्वावित्, ये साहीके नाम हैं. उसके गुण कहते हैं॥५२॥ साही श्वास, कास, रक्त, शोष और त्रिदोष इनको हरता है ।

अथ पक्षिणां नामानि गुणाश्च ।

पक्षी खगो विहङ्गश्च विहगश्च विहङ्गमः ॥ ५३ ॥
शकुनिर्विः पतत्री च विष्किरो विकिरोऽण्डजः ।
धान्याङ्कुरचरा येऽत्र तेषां मांसं लघूत्तमम् ॥ ५४ ॥
आनूपं बलकृन्मांसं स्निग्धं गुरुतरं स्मृतम् ।

टीका—अब पक्षियोंके नाम और गुण—पक्षी, खग, विहंग, विहग विहंगम, शकुनि, वि, पतत्री, विष्किर, विकिर, अंडज, ये पक्षियोंके नाम हैं ॥५३॥ धान्य और अंकुरचर जो इनमें हैं उनके मांस हलके और अच्छे हैं ॥ ५४॥ आनूप पक्षियोंका मांस बलकारी, चिकना, गुरुतर कहा है.

अथ तेषु विष्किरेषु वर्त्तकनामगुणाः ।

वर्त्तीको वर्त्तकश्चित्रस्ततोऽन्या वर्त्तका स्मृता ॥ ५५ ॥
वर्त्तकोऽग्निकरः शीतो ज्वरदोषत्रयापहः ।
सुरुच्यः शुक्रदो बल्यो वर्तकाल्पगुणा ततः॥ ५६ ॥

टीका—उन विष्किरोंमें बटेर, वर्त्तीक—वर्तक, चित्र ये बटेरके नाम हैं. और उससे दूसरी वर्त्तका कही है ॥ ५५ ॥ बटेर अग्निदीपन, शीतल, ज्वर और तीनों दोष इनको हरता है और अच्छा, रुचिको करनेवाला, शुक्रको करनेवाला, बलको हित होता है और बटई उससे गुणमें अल्प है ॥ ५६ ॥

अथ लावगुणाः ।

लावा विष्किरवर्गेषु ते चतुर्धा मता बुधैः ।
पांशुलो गौरकोऽन्यस्तु पौण्ड्रको दर्भरस्तथा ॥ ५७ ॥
लावा वह्निकराः स्निग्धा गरघ्ना ग्राहिका हिताः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पांशुलः श्लेष्मलस्तेषु वीर्योष्णोऽनिलनाशनः ॥ ५८ ॥
गौरो लघुतरो रूक्षो वह्निकारी त्रिदोषजित् ।
पौण्ड्रकः पित्तकृत्किञ्चिल्लघुर्वातकफापहः ॥ ५९ ॥
दर्भरो रक्तपित्तघ्नो हृदामयहरो हिमः ।

टीका--विष्करवर्गमें लवा चारप्रकारका पंडितोंनें माना है. पांशुल, गौरक, और दूसरा पौण्ड्रक, दर्भर ये लवाके भेद हैं ॥ ५७ ॥ लवा अग्निको करनेवाला, चिकना, विषहर्ता, काबिज और पथ्य है. और उनमें पांशुल कफकारी, शुक्रको करनेवाला, वातको हरता है ॥५८॥ गौर बहुत हलका, रूखा, दीपन और त्रिदोषको हरनेवाला है. पौंड्रक पित्तको करनेवाला, कुछ हलका, वातकफको हरता है. ॥ ५९ ॥ दर्भर रक्तपित्तका हरता और हृदयरोगका हरता शीतल है ।

अथ वालीकनामगुणाः ।

वालीको वर्तिचटको वार्त्तीकश्चैव स स्मृतः ॥ ६० ॥
वालीको मधुरः शीतो रूक्षश्च कफपित्तनुत् ।

टीका--वालीक, वर्तिचटक, वार्तीक, ये बगेराके नाम हैं ॥ ६० ॥ बगेरा मधुर, शीतल, रूखा, कफपित्तको हरता है ।

अथ तित्तिरिनामगुणाः ।

तित्तिरिः कृष्णवर्णः स्याच्चित्रोऽन्यो गौरतित्तिरिः ॥ ६१ ॥
तित्तिरिर्बलदो ग्राही हिक्कादोषत्रयापहः ।
श्वासकासज्वरहरस्तस्माद्गौरोऽधिको गुणैः ॥ ६२ ॥

टीका--काला तीतर और चित्र दूसरा सफेद तीतर होता है ॥ ६१ ॥ तीतर बलको देनेवाला, काबिज है और हिचकियां, तीनों दोष, श्वास, कास, ज्वर इनको हरता है. सफेद तीतर गुणमें अधिक है ॥ ६२ ॥

अथ चटकनामगुणाः ।

चटकः कलविङ्कः स्यात्कुलिङ्गः कालकण्टकः ।
कुलिङ्गः शीतलः स्निग्धः स्वादुः शुक्रकफप्रदः ॥ ६३ ॥
सन्निपातहरो वेश्मचटकश्चातिशुक्रलः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—चटक, कलविंक, कालकण्ठक, ये गवरैआके नाम हैं. गवरैआ शीतल, चिकना, मधुर, शुक्र और कफको करनेवाली ॥ ६३ ॥ तथा सन्निपातको हरती है और घरकी गवरैआ बहुत शुक्रको करनेवाली है ।

अथ कुक्कुटनामगुणाः ।

कुक्कुटः कृकवाकुः स्यात्कालज्ञश्चरणायुधः ॥ ६४ ॥
ताम्रचूडस्तथा दक्षो प्रातर्नादी शिखण्डिकः ।
कुक्कुटो बृंहणः स्निग्धो वीर्योष्णोऽनिलहृद्गुरुः ॥ ६५ ॥
चक्षुष्यः शुक्रकफकृद्बल्यो वृष्यः कषायकः ।
आरण्यकुक्कुटः स्निग्धो बृंहणः श्लेष्मलो गुरुः ॥ ६६ ॥
वातपित्तक्षयवमिविषमज्वरनाशनः ।

टीका—कुकुट, कृकवाकु, कालज्ञ, चरणायुध ॥ ६४ ॥ ताम्रचूड, दक्ष, प्रातर्नादी, शिखिण्डिक, ये मुरगेके नाम हैं. मुरगा पुष्ट, चिकना, वीर्यमें उष्ण, वातहर्ता, भारी है ॥ ६५ ॥ और नेत्रको हित, शुक्र कफको करनेवाला, बलको हित, शुक्रको करनेवाला, कसैला है. बनमुरगा चिकना, पुष्ट, कफको करनेवाला, भारी है ॥६६॥ और वात, पित्त, क्षय, वमन, विषमज्वर इनको हरता है ।

अथ हारीतगुणाः ।

हारीतो रक्तपीतः स्याद्धरितोऽपि स कथ्यते ।
हारीतो रूक्ष उष्णश्च रक्तपित्तकफापहः ॥ ६७ ॥
स्वेदस्वरकरः प्रोक्त ईषद्वातकरश्च सः ।

टीका— हारीत, रक्तपीत, हरित ये नाम हैं. इसको हरील इसप्रकार लोकमें कहते हैं. हरील रूखा, गरम, रक्त पित्त कफको हरता है और स्वेद स्वरको करनेवाला कहा है तथा अल्पवातको करनेवाला कहा है ॥ ६७ ॥

अथ पाण्डुगुणाः ।

पाण्डुस्तु द्विविधो ज्ञेयश्चित्रपक्षः कलध्वनिः ॥ ६८ ॥
द्वितीयो धवलः प्रोक्तः स कपोतः स्फुटस्वनः ।
चित्रपक्षः कफहरो वातघ्नो ग्रहणीप्रणुत् ।
धवलः पाण्डुरुद्दिष्टो रक्तपित्तहरो हिमः ॥ ६९ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—पाण्डु और धवलपाण्डु पिंडुका दो प्रकारका होता है. चित्रपक्ष कलध्वनि ॥ ६८ ॥ दूसरा धवल कहा है. कपोत स्फुटस्वन ये पेडकीके नाम हैं. चित्रपक्ष कफ हरतावात हरता और संग्रहणीको हरता है. धवल पाण्डु रक्त पित्तको हरता शीतल कहा है ॥ ६९ ॥

अथ मयूरनामगुणाः ।

मयूरश्चन्द्रकी केकी मेघरावो भुजङ्गभुक् ।
शिखी शिखावलो बर्हीं शिखण्डी नीलकण्ठकः ॥ ७० ॥
शुक्लापाङ्गः कलापी च मेघनादानुलास्यपि ।
रसे पाके च मधुरः संग्राही वातशान्तिकृत् ॥ ७१ ॥

टीका—अनन्तर मोर, चन्द्रकी, केकी, मेघराव, भुजङ्गभुक्, शिखी, शिखावल, बर्हीं, शिखण्डी, नीलकण्ठक ॥ ७० ॥ शुक्लापाङ्ग, कलापी, मेघनाद ये मोरके नाम हैं. मोर रसपाकमें मधुर, काबिज. वात करनेवाला है ॥ ७१ ॥

अथ पारावतनामगुणाः ।

पारावतः कलरवः कपोतो रक्तवर्धनः ।
पारावतो गुरुः स्निग्धो रक्तपित्तानिलापहः ॥ ७२ ॥
संग्राही शीतलस्तज्ज्ञैः कथितो वीर्यवर्धनः ।

टीका—अनन्तर कबूतर परेवा-पारावत, कलरव, कपोत, रक्तवर्धन, ये कबूतरके नाम हैं. कबूतर भारी, चिकना. रक्त पित्त वातको हरता है ॥ ७२ ॥ और काबिज, शीतल, इसको जाननेवालोंने वीर्यका बढ़ानेवाला कहा है ।

अथ पक्ष्यण्डगुणाः ।

नातिस्निग्धानि वृष्याणि स्वादुपाकरसानि च ॥ ७३ ॥
वातघ्नान्यपि शुक्राणि गुरूण्यण्डानि पक्षिणाम् ।

टीका—अनन्तर पक्षियोंके अंडोंका गुण–न बहुत चिकने, शुक्रको करनेवाले, रस और पाकमें मधुर ॥ ७३ ॥ वातहर्ता, अतिशुक्रको करनेवाले, भारी, ऐसे पक्षियोंके अंडे होते हैं ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ ग्राम्येषु छागनामगुणाः ।

छागलो बर्करश्छागो बस्तोऽजश्छेलकः स्तुभः ॥ ७४ ॥
अजा छागी स्तुभा चापि छेलिका च गलस्तनी ।
छागमांसं लघु स्निग्धं स्वादुपाकं त्रिदोषनुत् ॥ ७५ ॥
नातिशीतमदाहि स्यात्स्वादु पीनसनाशनम् ।
परं बलकरं रुच्यं बृंहणं वीर्यवर्धनम् ॥ ७६ ॥
अजायास्त्वप्रसूताया मांसं पीनसनाशम् ।
शुष्ककासेऽरुचौ शोषे हितमग्नेश्च दीपनम् ॥ ७७ ॥
अजासुतस्य बालस्य मांसं लघुतरं स्मृतम् ।
हृद्यं ज्वरहरं श्रेष्ठं सुखदं बलदं भृशम् ॥ ७८ ॥
मांसं निष्कासिताण्डस्य छागस्य कफकृद्गुरु ।
स्रोतःशुद्धिकरं बल्यं मांसदं वातपित्तनुत् ॥ ७९ ॥
वृद्धस्य वातलं रूक्षं तथा व्याधिमृतस्य च ।
ऊर्ध्वजत्रुविकारघ्नं छागलाण्डं रुचिप्रदम् ॥ ८० ॥

टीका--ग्राम्यमें बकरेके नाम गुण—छागल, वर्कर, छाग बस्त, अज, छेलके, स्तुम्भ, ये बकरेके नाम हैं ॥७४॥ और अजा, छागी, स्तुभा, छेलिका, गलस्तनी, पे बकरीके नाम हैं. छागमांस हलका, चिकना, पाकमें मधुर, त्रिदोष हरता ॥७५॥ न बहुत शीतल, अविदाही, मधुर होता है, और पीनसको हरता है,अत्यन्त बलको करनेवाला, रुचिको करनेवाला, पुष्ट, वीर्यको बढ़ानेवाला है ॥ ७६ ॥ बिन बच्चोंको दीहुई बकरीका मांस पीनस हरता है. सूखी खांसीमें,रुअचिमें, शोषमें हित है और और अग्निदीपन है ॥ ७७ ॥ बकरीके बच्चेका मांस लघुतर कहा है. हृद्य, ज्वर हरता, श्रेष्ठ, सुखको देनेवाला और अत्यन्त बलको देनेवाला है ॥ ७८ ॥ अण्ड कोश निकाले हुए बकरेका मांस कफको करनेवाला, भारी है और स्रोतोंको शुद्ध करनेवाला, बलको हित,मांसको करनेवाला, वातपित्तका हर्ता कहा है ॥ ७९ ॥ वृद्धछागका मांस वातल, रूखा; तथा रोगसे मरेहुएका मांस भी वैसाही होता है. बकरेका अंडकोश जत्रुके ऊपर होनेवाले रोगको हरता और रुचिको करनेवाला है ॥ ८० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ मेषनामगुणाः ।

मेढ्रो मेढो हुडो मेष उरणोऽप्येडकोऽपि च ।
अविर्वृष्णिस्तथोर्णायुः कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ॥ ८१ ॥
मेषस्य मांसं पुष्टं स्यात्पित्तश्लेष्मकरं गुरु ।
तस्यैवाण्डविहीनस्य मांसं किंचिल्लघु स्मृतम् ॥ ८२ ॥

टीका—मेढ्र, मेढ, हुड, मेष, उरण, एडक, अवि, वृष्णि, ऊर्णायु, ये मेंढेके नाम हैं. अब उसके गुण कहते हैं ॥ ८१ ॥ मेंढेका मांस पुष्ट होता है और पित्तकफको करनेवाला, भारी है. अंडरहित उसका मांस किंचित् हलका कहा है ॥ ८२ ॥

अथैडक(दुम्बा)नामगुणाः ।

एडकः पृथुश्शृङ्गः स्यान्मेदःपुच्छस्तु दुम्बकः ।
एडकस्य पलं ज्ञेयं मेषामिषसमं गुणैः ॥ ८३ ॥
मेदःपुच्छोद्भवं मांसं हृद्यं वृष्यं श्रमापहम् ।
पित्तश्लेष्मकरं किंचिद्वातव्याधिविनाशनम् ॥ ८४ ॥

टीका—एडक, पृथुशृङ्ग, मेदःपुच्छ, दुम्बक, ये दुम्बेके नाम हैं. दुम्बेका मांस मेंढेके मांसके समान गुणमें जानना चाहिये ॥ ८३ ॥ उसके दुमका मांस हृद्य, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, श्रम हरता है और पित्त कफको करनेवाला तथा कुछएक वातके रोगको हरता है ॥ ८४ ॥

अथ बलीवर्दनामगुणाः ।

बलीवर्दस्तु वृषभ ऋषभश्च तथा वृषः ।
अनड्वान् सौरभेयोऽल्पगौरुक्षा भद्र इत्यपि ॥ ८५ ॥
सुरभिः सौरभेयी च माहेयी गौरुदाहृता ।
गोमांसं तु गुरु स्निग्धं पित्तश्लेष्मविवर्धनम् ॥ ८६ ॥
बृंहणं वातहृद्बल्यमपथ्यं पीनसप्रणुत् ।

टीका—बलीवर्द, वृषभ, ऋषभ, वृष, अनड्वान्, सौरभेय, अल्पगौ, उक्षा, भद्र, ये बैलके नाम हैं ॥ ८५ ॥ सुरभी, सौरभेयी, माहेयी, गौ, ये गायके नाम हैं. गोमांस भारी, चिकना, पित्तकफको बढ़ानेवाला हैं ॥ ८६ ॥ और पुष्ट, वातहर्ता, बलको करनेवाला, अहित और पीनसको हरता है.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथाश्वनामगुणाः ।

घोटकेऽप्यश्वतुरगतुरङ्गाश्च तुरङ्गमाः ॥ ८७ ॥
वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः ।
अश्वमांसं तु तुवरं वह्निकृत्कफपित्तलम् ॥ ८८ ॥
वातहृद्बृंहणं बल्यं चक्षुष्यं मधुरं लघु ।

टीका–घोड़ाके नाम कहते हैं–घोटक, अश्व, तुरग, तुरंग, तुरङ्गम, ॥८७॥ वाजि, वाह, अर्व, गंधर्व, हय, सैन्धव, सप्ति, ये घोड़के नाम हैं. घोड़का मांस कसेला, दीपन, कफ-पित्तको करनेवाला है॥८८॥वात हरता, बृंहण, बलको हित, नेत्रको मधुर, हलका है.

अथ महिषनामगुणाः ।

महिषो घोटकारिः स्यात्कासरश्च रजस्वलः ॥ ८९ ॥
पीनस्कन्धः कृष्णकायो लुलायो यमवाहनः ।
महिषस्यामिषं स्वादु स्निग्धोष्णं वातनाशनम् ॥ ९० ॥
निद्राशुक्रप्रदं बल्यं तनुदार्ढ्यकरं गुरु ।
वृष्यं च सृष्टविण्मूत्रं वातपित्तास्रनाशनम् ॥ ९१ ॥

टीका––भैंसाके नाम कहते हैं–महिष, घोटकारि, कासर, रजस्वल, ॥ ८९ ॥ पीनस्कन्ध, कृष्णकाय, लुलाय, यमवाहन, ये भैंसेके नाम हैं. भैंसाका मांस मधुर, चिकना, गरम, वातको हरता है ॥ ९० ॥ और निद्रा शुक्रको करनेवाला, बलको, हित, शरीरको दृढ करनेवाला, भारी शुक्रको, करनेवाला और मलमूत्रको करनेवाला, वात, रक्त, पित्त इनको हरता है ॥ ९१ ॥

अथ मण्डूकनामगुणाः ।

मण्डूकः प्लवगो भेको वर्षाभूर्दर्दुरो हरिः ।
मण्डूकः श्लेष्मलो नातिपित्तलो बलकारकः ॥ ९२ ॥

टीका––मंडूक, प्लवग, भेक, वर्षाभू, दर्दुर, हरि, ये मंडूकके नाम हैं. मंडूक कफ करनेवाला और बहुत पित्तको करनेवाला नहीं है. तथा बल करनेवाला है ॥ ९२ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ कच्छपनामगुणाः ।

कच्छपो गूढपात्कूर्मः कमठो दृढपृष्ठकः ।
कच्छपो बलदो वातपित्तनुत्पुंस्त्वकारकः ॥ ९३ ॥

टीका—कच्छप, गूढपात्, कूर्म, कमठ, दृढपृष्ठक ये कछुवेके नाम हैं. कछुवा बलको देनेवाला, वातपित्तको हरता, पुरुषत्वको करनेवाला है ॥ ९३ ॥

अथ सद्योहतादिमांसगुणाः ।

सद्योहतस्य मांसं स्यात् व्याधिघाति यथाऽमृतम् ।
वयस्यं बृहणं सात्म्यमन्यथा तद्विवर्जयेत् ॥ ९४ ॥
स्वयं मृतस्य चापथ्यमतीसारकरं गुरु ।
वृद्धानां दोषलं मांसं बालानां बलहृल्लघु ॥ ९५ ॥
सर्पदष्टस्य तु प्रोक्तं शुष्कं मांसं त्रिदोषकृत् ।
व्यालदष्टं च दुष्टं च शुष्कं शूलकरं परम् ॥ ९६ ॥
विषाम्बुरुङ्मृतस्यैतन्मृत्युदोषरुजाकरम् ।
क्लिन्नमुत्क्लेशजनकं कृशं वातप्रकोपनम् ॥ ९७ ॥
तोयपूर्णं शिराजालं मृतमप्सु त्रिदोषकृत् ।

टीका— तत्कालके मारेहुएका मांस रोग हरता जैसे अमृत, वयको हित, पुष्ट, सात्म्य होता है और इससे विरुद्ध उसको त्याग देवे ॥ ९४ ॥ आपही मरे हुएका मांस बल हरता, अतीसारको करनेवाला, भारी होता है. वृद्ध और बालका मांस–वृद्धोंका मांस, दोषकारक और बच्चोंका मांस बलको देनेव.ला, हलका होता है ॥ ९५ ॥ सांपके काटे हुएका मांस, और सूका मांस त्रिदोष कारक है. सांपके काटेहुएका मांस और दुष्ट तथा सूका मांस परम शूलकारक है ॥ ९६ ॥ विष, जल और रोग इनसे मरेहुएका मांस मृत्यु, दोष, रोग इनको करनेवाला, है और सड़ा उत्क्लेशको करनेवाला, कृश, वातके प्रकोपको करनेवाला है ॥ ९७ ॥ जलमें माराहुआ, जलसे भरा, शिराजालवाला, ऐसा मांस त्रिदोषको करनेवाला है.

अथ जात्यादिपरत्वेन मांसस्य गुणाः ।

विहङ्गेषु पुमान् श्रेष्ठः स्त्री चतुष्पदजातिषु ॥ ९८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पराधों लघुपुंसां स्यात्स्त्रीणां पूर्वार्धमादिशेत् ।
देहमध्यं गुरुप्रायं सर्वेषां प्राणिनां स्मृतम् ॥ ९९ ॥
पक्षक्षेपाद्विहङ्गानां तदेव लघु कथ्यते ।

टीका—पक्षियोंमें नर श्रेष्ठ और चौपायोंमें स्त्री श्रेष्ठ है ॥ ९८ ॥ नरोंका पिछला हिस्सा हलका होता है और स्त्रियोंका अगला हिस्सा हलका. सब जीवोंका मध्यदेह प्रायः भारी कहा है ॥ ९९ ॥ पक्षक्षेपसे परिन्दोंका वही हलका कहा है.

अथ अण्डादिगुणाः ।

गुरूण्यण्डानि सर्वेषां गुर्वी ग्रीवा च पक्षिणाम् ॥ १०० ॥
उरःस्कन्धोदरं कुक्षी पादौ पाणी कटी तथा ।
पृष्ठत्वग्यकृदन्त्राणि गुरूणीह यथोत्तरम् ॥ १०१ ॥
लघु वातकरं मांसं खगानां धान्यचारिणाम् ।
मत्स्याशिनां पित्तकरं वातघ्नं गुरु कीर्तितम् ॥ १०२ ॥
पलाशिनां श्लेष्मकरं लघु रूक्षमुदीरितम् ।
बृंहणं गुरु वातघ्नं तेषामेव पलाशिनाम् ॥ १०३ ॥
तुल्यजातिश्चाल्पदेहा महादेहेषु पूजिताः ।
अल्पदेहेषु शस्यन्ते तथैव स्थूलदेहिनः ॥ १०४ ॥

टीका—सर्व पक्षियोंके अण्डे भारी और गरदन भी भारी होती है और छाती कन्धा उदर कूख पाँय हाथ तथा कमर पीठ त्वचा यकृत् आंत ये यथोत्तर भारी हैं ॥ १०१ ॥ धान चरनेवाले पक्षियोंका मांस हलका और वात करनेवाला है और मछली खानेवालोंका पित्त वात हरता भारी कहा है ॥ १०२ ॥ मांस खानेवालों-का कफ करनेवाला, हलका, रूखा कहा है. इन्हींके मांस खानेवालोंका मांस दुष्ट, भारी, वात हरता है ॥ १०३ ॥ समान जातिवाले बड़े देहवालोंमें अल्पदेहवाले श्रेष्ठ हैं. उसीप्रकार अल्पशरीरवालोंमें स्थूलदेहवाले प्रशस्त हैं ॥ १०४ ॥

अथ रोहितगुणाः ।

रक्तोदरो रक्तमुखो रक्ताक्षो रक्तपक्षतिः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कृष्णपुच्छो झषश्रेष्ठो रोहितः कथितो बुधैः ॥ १०५ ॥
रोहितः सर्वमत्स्यानां वरो वृष्योऽर्दितार्त्तिजित् ।
कषायानुरसः स्वादुर्वातघ्नो नातिपित्तकृत् ॥ १०६ ॥
उर्ध्वजत्रुगतान्रोगान्हन्याद्रोहितमुण्डकम् ।

टीका—मछलियोंमें रोहका मांस–लाल उदर, लाल मुख, लाल पैर, काली पूंछ, मछलियोंमें श्रेष्ठ पंडितोंनें कही है ॥ १०५ ॥ रोह सब मछलियोंमें श्रेष्ठ, शुक्रको करनेवाली, आर्दितरोगको हरनेवाली, पीछेसे कसैली, मधुर, वात हरती, न बहुत पित्तको करनेवाली है ॥ १०६ ॥ रोहका शिर गलेके ऊपरके रोगोंको हरता है.

अथ शिलीन्ध्रगुणाः ।

शिलीन्ध्रः श्लेष्मलो बल्यो विपाके मधुरो गुरुः ॥ १०७ ॥
वातपित्तहरो हृद्य आमवातकरश्च सः ।

टीका—सिलन्ध कफको करनेवाली, बलको हित, विपाकमें मधुर, भारी ॥१०७॥ वातपित्तको हरती, हृद्य और आमवातको करनेवाली है.

अथ भक्कुरनामगुणाः ।

भक्कुरो मधुरः शीतो वृष्यः श्लेष्मकरो गुरुः ॥ १०८ ॥
विष्टम्भजनकश्चापि रक्तपित्तहरः स्मृतः ।

टीका—भूकर मधुर, शीतल, शुक्रको करनेवाली, कफकारक, भारी होती है ॥ १०८ ॥और विष्टम्भजनक तथा रक्तपित्तको हरनेवाली कही है.

अथ मोचकागुणाः ।

मोचका वातहृद्बल्या बृंहणी मधुरा गुरुः ॥ १०९
पित्तहृत्कफकृद्रुच्या वृष्या दीप्ताग्नये हिता ।

टीका—मोचिका वात हरती, बलको करनेवाली, पुष्ट, मधुर, भारी ॥ १०९ ॥ पित्त हरती, कफको करनेवाली और दीप्ताग्निवालेको हित है.

अथ पाठिननामगुणाः ।

पाठिनः श्लेष्मलो बल्यो निद्रालुः पिशिताशनः ॥ ११० ॥
दूषयेद्रुधिरं पित्तं कुष्ठरोगं करोति च ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—पठना कफको करनेवाली, बलको हित, निद्राको करनेवाली है और मांस खानेवालेके रुधिरको बिगाड़ती है ॥ ११० ॥ तथा पित्त और कुष्ठरोगको भी करती है.

अथ शृङ्गीगुणाः ।

शृङ्गी तु वातशमनी स्निग्धा श्लेष्मप्रकोपनी ॥ १११ ॥
रसे तिक्ता कषाया च लघ्वी रुच्या स्मृता बुधैः ।

टीका—सींगी वातको शमन करनेवाली, चिकनी, कफप्रकोप करनेवाली, रसमें तिक्त, कसेली, रुचिको करनेवाली, पंडितोंनें कही है ॥ १११ ॥

अथेल्लसनामगुणाः ।

इल्लसो मधुरः स्निग्धो रोचनो वह्निवर्धनः ॥ ११२ ॥
पित्तहृत्कफकृत्किञ्चिल्लघुर्वृष्योऽनिलापहः ।

टीका—हीलसा मधुर, चिकनी, रुचिको करनेवाली, दीपन ॥ ११२ ॥ पित्त हरती, कफको करनेवाली, कुछ हलकी, शुक्रको करनेवाली, वात हरती है.

अथ शष्कुलीनामगुणाः ।

शष्कुली ग्राहिणी हृद्या मधुरा तुवरा स्मृता ॥ ११३ ॥

टीका—सौरी काबिज, हृद्य, मधुर, कसेली कही है ॥ ११३ ॥

अथ गर्गरगुणाः ।

गर्गरः पित्तलः किंचिद्वातजित्कफकोपनः ।

टीका—गर्गरा पित्तको करनेवाली, कुछ एक वातको हरनेवाली, कफको कुपित करनेवाली है ।

अथ कविकागुणाः ।

कविका मधुरा स्निग्धा कफघ्ना रुचिकारिणी ॥ ११४ ॥
किञ्चित्पित्तकरी वातनाशिनी वह्निवर्धिनी ।

टीका—कवई मधुर, चिकनी, कफ हरती, रुचिको करनेवाली ॥ ११४ ॥ कुछ एक पित्तको करनेवाली, वात हरती, अग्निको बढ़ानेवाली है.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ वर्मिमत्स्यगुणाः ।

वर्मिमत्स्यो हरेद्वातं पित्तं रुचिकरो लघुः ॥ ११५ ॥

टीका—जाम्बीमछली वातपित्तको हरती है और रुचिको करनेवाली, हलकी है ॥ ११५ ॥

अथ दण्डमत्स्यगुणाः ।

दण्डमत्स्यो रसे तिक्तः पित्तं रक्तं कफं हरेत् ।
वातसाधारणः प्रोक्तः शुक्रलो बलवर्धनः ॥ ११६ ॥

टीका—दण्डारी मछली रसमें तिक्त और पित्त रक्त कफ इनको हरती है तथा साधारण वातको करनेवाली, शुक्रको करनेवाली और बलको बढ़ानेवाली कही है ॥ ११६ ॥

अथैरङ्गीगुणाः ।

एरङ्गी मधुरः स्निग्धो विष्टम्भी शीतलो लघुः ।

टीका—अरंगी मधुर, चिकनी, विष्टम्भको करनेवाली, शीतल, हलकी होती है.

अथ महाशफर (पापता) गुणाः ।

महाशफरसंज्ञस्तु तिक्तः पित्तकफापहः ।
शिशिरो मधुरो रुच्यो वातसाधारणः स्मृतः ॥ ११७ ॥

टीका—पापता तिक्त, पित्तकफको हरती, शीतल, मधुर, रुचिको करनेवाली, साधारण वातको करनेवाली कही है ॥ ११७ ॥

अथ गरघ्नीगुणाः ।

गरघ्नी मधुरा तिक्ता तुवरा वातपित्तहृत् ।
कफघ्नी रुचिकृल्लघ्वी दीपनी बलवीर्यकृत् ॥ ११८ ॥

टीका—गरई मधुर, तिक्त, कसेली, वात पित्तको हरती, कफ हरती, रुचिको करनेवाली, दीपन, बलवीर्यको करनेवाली है ॥ ११८ ॥

अथ मद्गुरीगुणाः ।

मद्गुरी वातहृद्बल्यो वृष्यः कफकरो लघुः ।

टीका—मद्गुरी वात हरती, बलको हित, शुक्रको करनेवाली, कफकारक, हलकी है.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ सपादमत्स्यगुणाः ।

सपादमत्स्यो मेधाकृन्मेहक्षयकरश्च सः ॥ ११९ ॥
वातपित्तकरश्चापि रुचिकृत्परमो मतः ।

टीका—टेंगरा कान्तिको करनेवाली और, प्रमेहको हरती है ॥ ११९ ॥ तथा वातपित्तकर और परम रुचिको करनेवाली कही है.

अथ प्रोष्ठीगुणाः ।

प्रोष्ठी तिक्ता कटुः स्वादुः शुक्रघ्नी कफवातजित् ॥ १२० ॥
स्निग्धास्यकण्ठरोगघ्नी रोचनी च लघुः स्मृता ।

टीका—पोठी तिक्त, कड़वी, मधुर, शुक्रको करनेवाली है और कफवातको हरनेवाली है ॥ १२० ॥ चिकनी, मुख कंठ इनके रोगोंको हरती, रुचिको करनेवाली, हलकी कही है.

अथ क्षुद्रमत्स्यगुणाः ।

क्षुद्रा मत्स्याः स्वादुरसा दोषत्रयविनाशनाः ॥ १२१ ॥
लघुपाका रुचिकरा बलदास्ते हिता मताः ।

टीका--छोटी मछलियां रसमें मधुर, तीनों दोषोंको हरती ॥ १२१ ॥ पाकमें हलकी, रुचिको करनेवाली, बलको देनेवाली व हित हैं.

अतिसूक्ष्ममत्स्यगुणाः ।

अतिसूक्ष्माः पुंस्त्वहरा रुच्याः कासानिलापहाः ॥ १२२ ॥

टीका—बहुत छोटी मछलियां पुरुषत्वको हरती, रुचिको करनेवाली, कासवातको हरती हैं ॥ १२२ ॥

अथ मत्स्याण्डगुणाः ।

मत्स्यगर्भो भृशं वृष्यः स्निग्धः पुष्टिकरो लघुः ।
कफमेहप्रदो बल्यो ग्लानिकृन्मेहनाशनः ॥ १२३ ॥

टीका--मछलीके अंडे अत्यन्त शुक्रको करनेवाले, चिकने, पुष्टिको करनेवाले हलके हैं और कफ प्रमेहको करनेवाले, बलको हित, ग्लानिको करनेवाले, प्रमेहको हरते हैं ॥ १२३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ शुष्कमत्स्यगुणाः ।

शुष्कमत्स्या नवा बल्या दुर्जरा विड्विबन्धिनः ।

टीका--सूकी मछली नई, बलको देनेवाली, दुर्जर, मलको बांधनेवाली है.

अथ दग्धमत्स्यगुणाः ।

दग्धमत्स्यो गुणैः श्रेष्ठः पुष्टिकृद्बलवर्धनः ।

टीका--दग्ध मछली गुणमें श्रेष्ठ, पुष्टिको करनेवाली, बलको बढ़ानेवाली है.

अथ कौपादिमत्स्यगुणाः ।

कौपमत्स्याः शुक्रमूत्रकुष्ठश्लेष्मविवर्धनाः ॥ १२४ ॥
सरोजा मधुराः स्निग्धा बल्या वातविनाशनाः ।
नादेया बृंहणा मत्स्या गुरवोऽनिलनाशनाः ॥ १२५ ॥
रक्तपित्तकरा वृष्याः स्निग्धोष्णाः स्वल्पवर्चसः ।
चौञ्जाः पित्तकराः स्निग्धा मधुरा लघवो हिमा ः ॥ १२६ ॥
ताडागा गुरवो वृष्याः शीतला बलमूत्रदाः ।
ताडागावत्क्षिप्तजातां बलायुर्मतिदृक्करा: ॥ १२७ ॥

टीका--कुएकी मछलियां शुक्र, मूत्र, कुष्ठ, कफ इनको बढ़ानेवाली हैं. ॥ १२४ ॥ सरोवरकी मछलियां मधुर, चिकनी, बलको करनेवाली, वातको हरती हैं. नदीकी, मछलियां पुष्ट, भारी, वातको हरती हैं ॥ १२५ ॥ और रक्त पित्तको करनेवाली, चिकनी, उष्ण, अल्प मलको करनेवाली हैं. गढ़ईकी मछलियां पित्तको करनेवाली, चिकनी मधुर, हलकी, शीतल होती है ॥ १२६ ॥ तालाबकी मछलियां भारी, शुक्रको करनेवाली, शीतल, बल मूत्रको देनेवाली है. तडागज मछलियोंके समान ही झरनेकी मछलियां बल, आयु, मति, दृष्टि, इनको करनेवाली हैं ॥ १२७ ॥

अथ ऋतुविशेषे मत्स्यविशेषाः ।

हेमन्ते कूपजा मत्स्याः शिशिरे सारसा हिताः ।
वसन्ते ते तु नादेया ग्रीष्मे चौञ्जसमुद्भवाः ॥ १२८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तडागजाता वर्षासु तास्वपथ्या नदीभवाः ।
नैर्झराः शरदि श्रेष्ठा विशेषोऽयमुदाहृतः ॥ १२९ ॥
इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे मांसवर्गः समाप्तः ।

टीका---अथ ऋतुविशेषसे मत्स्यविशेष–हेमन्तमें कूवेकी मछली, शिशिरमें सरोवरकी, वसन्तमें नदीकी, ग्रीष्ममें गढ़ईकी ॥ १२८ ॥ बरसातमें तलावकी हित होती है और बरसातमें नदीकी अहित होती है. झरनेकी शरदमें श्रेष्ठ होती है. यह विशेष कहा है ॥ १२९ ॥

इति हरीतक्यादिनिघण्टे मांसवर्गः समाप्तः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्रीः ।

हरीतक्यादिनिघण्टे

कृतान्नवर्गः ।

तत्रान्नानां साधनप्रकारः सिद्धानां गुणाश्च ।

परिभाषा ।

समवायिनि हेतौ ये मुनिभिर्गणिता गुणाः ।
कार्येऽपि तेखिला ज्ञेयाः परिभाषेति भाषिता ॥ १ ॥
क्वचित्संस्कारभेदेन गुणभेदो भवेद्यतः ।
भक्तं लघु पुराणस्य शालेस्तच्चिपिटो गुरुः ॥ २ ॥
क्वचिद्योगप्रभावेण गुणान्तरमपेक्ष्यते ।
कदन्नं गुरु सर्पिश्च लघूक्तं सुहितं भवेत् ॥ ३ ॥

टीका—अब अन्नोंके बनानेका प्रकार और बनेहुएके गुण कहते हैं. परिभाषा-समवायि कारणमें जो गुण मुनियोंने माने हैं वे सब कार्यमें भी जानने चाहिये· इसप्रकार परिभाषा कही है ॥ १ ॥ कहींपर संस्कारभेदसे गुणभेद होता है, जैसे-पुराने चावलोंका भात हलका और उसका चिड़वा भारी होता है ॥ २ ॥ कहींपर योगके प्रभावसे गुणान्तर होजाता है, जैसे कदन्न भारी है परंतु सघृत हलका और हित होता है ॥ ३ ॥

अथ भक्तस्य नामानि साधनं गुणाश्च ।

भक्तमन्नं तथान्धश्च क्वचित्कूरं च कीर्तितम् ।
ओदनोऽस्त्री स्त्रियां भिस्सा दिविदः पुंसि भाषितः ॥ ४ ॥
सुधौतास्तण्डुलाः स्फीतास्तोये पञ्चगुणे पचेत् ।
तद्भक्तं प्रस्रुतं चोष्णं विशदं गुणवन्मतम् ॥ ५ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भक्तं वह्निकरं पथ्यं तर्पणं रोचनं लघु ।
अधौतमस्रुतं शीतं गुर्वरुच्यं कफप्रदम् ॥ ६ ॥

टीका—अथ भातके नाम, साधन और गुण-भक्त, अन्न, अन्ध, पुंनपुंसकमें ओदन, स्त्रीलिंगमें भिस्सा, दिविद पुलिंगमें कहा है॥४॥अच्छीतरह धोयेहुए चावल पांचगुने पानीमें पकावै. वह पसेयाहुआ गरम, विशद, गुणयुक्त भात कहा है ॥५॥ भात दीपन, पथ्य, तर्पण, रोचन, हलका होता है और बिनधोया तथा बिनपसेया शीतल, भारी, अरुचिको देनेवाला और कफकारी होता है ॥ ६ ॥

अथ दाल्या नामानि साधनं गुणाश्च ।

दलितं शिम्बीधान्यं तु दालिर्दाली स्त्रियामुभे ।
दाली तु सलिले सिद्धा लवणार्द्रकहिङ्गुभिः ॥ ७ ॥
संयुक्ता सूपनाम्नी स्यात्कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ।
सूपो विष्टम्भको रूक्षः शीतस्तु स विशेषतः ॥ ८ ॥
निस्तुषो भ्रष्टसंसिद्धो लाघवं सुतरां व्रजेत् ॥ ९ ॥

टीका—दलेहुए शिम्बाधान्यके दाली दालि येह दोनों रूप स्त्रीलिंगमें होते हैं ॥ ६ ॥ दाल-जलमें सिद्ध और लवण आर्द्रक हिङ्गु इनसे युक्तका सूप नाम है. अब उसके गुण कहते हैं ॥ ७ ॥ दाल विष्टम्भ करनेवाली, रूखी, शीतल, होती है. विशेषसेबे छिलकेकी भूनके सिद्ध कीहुई बहुत हलकी होजाती है ॥ ८ ॥ ९ ॥

अथ कृशरा (खिचडी) गुणाः ।

तण्डुला दालिसंमिश्रा लवणार्द्रकहिङ्गुभिः ।
संयुक्ता सलिले सिद्धा कृशरा कथिता बुधैः ॥ १० ॥
कृशरा शुक्रला बल्या गुरुः पित्तकफप्रदा ।
दुर्जरा बुद्धिविष्टम्भमलमूत्रकरी स्मृता ॥ ११ ॥

टीका—दाल मिले हुए चावल लवण आर्द्रक हींगसे युक्त जलमें सिद्धको पंडितोंने कृसरा (खिचड़ी) कहा है ॥ १० ॥ खिचड़ी शुक्रको करनेवाली, बलको हित, भारी, पित्त कफको देनेवाली और दुर्जर, बुद्धि, विष्टंभ मलको करनेवाली कही है ॥ ११ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ तापहारी (तहरी) गुणाः ।

घृते हरिद्रासंयुक्ते माषजां भर्जयेद्वटीम् ।
तण्डुलांश्चापि निर्धौतान्सहैव परिभर्जयेत् ॥ १२ ॥
सिद्धयोग्यं जलं तत्र प्रक्षिप्य कुशलः पचेत् ।
लवणार्द्रकहिङ्गूनि मात्रया तत्र निःक्षिपेत् ॥ १३ ॥
एषा सिद्धिः समानज्ञा प्रोक्ता तापहरी बुधैः ।
भवेत्तापहरी बल्या वृष्या श्लेष्माणमाचरेत् ।
बृंहणी तर्पणी रुच्या गुर्वी पित्तहरा स्मृता ॥ १४ ॥

टीका—हरदीके साथ घृतमें उड़दकी बड़ियोंको भूने बिन धोये चावलोंको भी साथही भूने ॥ १२ ॥ उसमें पकनेके अंदाजसे जल डालकर चतुर पकावै. लवण आर्द्रक हींग उसमें हिसाबसे डालै ॥ १३ ॥ इस सिद्धहुईको पंडितोंनें ताहरी कहा है. ताहरी बलको देनेवाली, शुक्रको करनेवाली है और कफको करती हैं ॥१४॥ बृंहण, तर्पण, रुचिको करनेवाली, भारी, पित्त हरती है.

अथ क्षीरिका (खीर) गुणाः ।

पायसं परमान्नं स्यात्क्षीरिकापि तदुच्यते ।
शुद्धेऽर्धपक्के दुग्धे तु घृताक्तांस्तण्डुलान्पचेत् ॥ १५ ॥
ते सिद्धा क्षीरिका ख्याता स सिताज्ययुतोत्तमा ।
क्षीरिका दुर्जरा प्रोक्ता बृंहणी बलवर्धिनी ॥ १६ ॥

टीका—पायस, परमान्न, क्षीरिका ये क्षीरके नाम है. शुद्ध अधऔटे दूधमें घृतयुक्त चावलोंको पकावै ॥ १५॥ वह शुद्ध क्षीरिका चीनी घृतसे युक्त उत्तम कही है. खीर दुर्जर, पुष्ट, बलको बढ़ानेवाली है ॥ १६ ॥

अथ नारिकेरक्षीरीगुणाः ।

नालिकेरं तनूकृत्य छिन्नं पयसि गोः क्षिपेत् ।
सितागव्याज्यसंयुक्ते तत्पचेन्मृदुनाऽग्निना ॥ १७ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नारिकेरोद्भवा क्षीरी स्निग्धा शीतातिपुष्टिदा ।
गुर्वी सुमधुरा वृष्या रक्तपित्तानिलापहा ॥ १८ ॥

टीका—नारियलको छीलके गायके दूधमें डालै. चीनी, गायके घृतसे युक्त उसको मन्दी आंचसे पकावै ॥ १७ ॥ नारियलकी खीर चिकनी, शीत, अतिपुष्टिको करनेवाली, भारी, मधुर, शुक्रको करनेवाली और रक्त पित्त वात इनको हरती है ॥ १८ ॥

अथ सेविका (सेवई) गुणाः ।

समितावर्त्तिकां कृत्वा सूक्ष्मां तु यवसन्निभाम् ।
शुष्का क्षीरेण संसाध्या भोज्या घृतसितान्विता ॥ १९ ॥
सेविका तर्पणी बल्या गुर्वी पित्तानिलापहा ।
ग्राहिणी सन्धिकृद्रुच्या तां खादेन्नातिमात्रया ॥ २० ॥

टीका—सूक्ष्म जवके समान बराबर बत्तांको करके सुखाकर दूधसे पकावै और घृत चीनीके साथ खावै ॥ १९ ॥ यह सेवई तर्पण, बलको देनेवाली, भारी, पित्तवातको हरती, काबिज, सन्धि करनेवाली, रुचिको करनेवाली होती है. उसको बहुत न खावै ॥ २० ॥

अथ मण्डकगुणाः ।

गोधूमा धवला धौताः कुट्टिताः शोषितास्ततः ।
प्रोक्षिता यन्त्रनिष्पिष्टाश्चालिताः समिताः स्मृताः ॥ २१ ॥
वारिणा कोमलां कृत्वा समितां साधु मर्दयेत् ।
हस्तलालनया तस्या लोप्त्रीं सम्यक् प्रसारयेत् ॥ २२ ॥
अधोमुखघटस्यैतद्विस्तृतं प्रक्षिपेद्बहिः ।
मृदुना वह्निना साध्यः सिद्धो मण्डक उच्यते ॥ २३ ॥
(' लोप्त्री ') लोई ' इति लोके ।
दुग्धेन साज्यखण्डेन मण्डकं भक्षयेन्नरः ।
अथवा सिद्धमांसेन सतक्रवटकेन वा ॥ २४ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मण्डको बृंहणो वृष्यो बल्यो रुचिकरो भृशम् ।
पाकेऽपि मधुरो ग्राही लघुर्दोषत्रयापहः ॥ २५ ॥

टीका—मंड-सुफेद धोये कुटेहुए और सुखायेहुए गेहूंको प्रोक्षित करके चक्कीसे पिसेहुए तथा चलनीसे छानेहुएको समिता अर्थात् मैदा कहते है ॥ २१ ॥ मैदेको पानीमें घोलकरके अच्छीतरह मर्दन करै. हाथकी लालनासे उसकी लोई अच्छीतरहसे करै ॥ २२ ॥ नीचेमुख उपर इस फैली हुईको डालै. मन्द अग्निसे सिद्ध हुईको मंड कहते हैं ॥ २३ ॥ 'लोप्त्री' को लोकमें लोई इसप्रकार कहते हैं. दूध, घृत, खांड, इनसे मनुष्य मंडेको खावै अथवा सिद्ध मांससे वा दहीके बड़ेसे खावै ॥ २४ ॥ मंडा शुक्रको करनेवाला और बलके हित, अत्यन्त रुचिको करनेवाला है. पाकमें भी मधुर, काबिज, हलका, दोषत्रयको हरता है ॥ २५ ॥

अथ पर्पटिका (पूरी) गुणाः ।

कुर्यात्समितयाऽऽतीव तन्वीं पर्पटिकां ततः ।
स्वेदयेत्तप्तके तां तु पोलिकां जगदुर्बुधाः ।
तां खादेल्लप्सिकायुक्तां तस्या मण्डकवद्गुणाः ॥ २६ ॥
(तप्तकं ' तवा ' इति लोके ।)

टीका—मैदेसे अतीव सूक्ष्म पपड़ी करे उसके अनन्तर उसको तवेपर सेंकै. उसको पोलिका विद्वानोंने कहा है. उसको लपसीके साथ खावै. उसका गुण मंडके समान है ॥ २६ ॥ (तप्तका)—'तवा' इसप्रकार लोकमें कहा जाता है.

अथ लप्सिका (लप्सी) गुणाः ।

समितां सर्पिषा भृष्टां शर्करां पयसि क्षिपेत् ।
तस्मिन् घनीकृते न्यस्येल्लवङ्गं मरिचादिकम्॥ २७ ॥
सिद्धैषा लप्सिका ख्याता गुणास्तस्या वदाम्यहम् ॥ २८ ॥
लप्सिका बृंहणो वृष्या बल्या पित्तानिलापहा ।
स्निग्धा श्लेष्मकरी गुर्वी रोचनी तर्पणी परम् ॥ २९ ॥

टीका—मैदेको घृतसे भूनकर शर्कराके साथ दूधमें डाले. वह गाढ़ा होजानेपर लौंग मिरच आदि डाले ॥ २७ ॥ यह सिद्ध हुई लप्सी कही है. इसके गुणोंको

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कहते हैं॥२८॥लप्सी पुष्ट, शुक्रको करनेवाली, बलको करनेवाली, बलको करनेवाली, व पित्तवातको हरती, चिकनी, कफकारी, भारी, रोचनी, तर्पणी है ॥ २९ ॥

अथ रोटिका(रोटी) गुणाः ।

शुष्कगोधूमचूर्णेन किञ्चित्पुष्टां च पोलिकाम् ।
तप्तके स्वेदयेत्कृत्वा भूर्यङ्गारेऽपि तां पचेत् ॥ ३० ॥
सिद्धैषा रोटिका प्रोक्ता गुणं तस्याः प्रचक्ष्महे ।
रोटिका बलकृद्रुच्या बृंहणी धातुवर्धनी ॥ ३१ ॥
वातघ्नी कफकृद्गुर्वी दीप्ताग्नीनां प्रपूजिता ।

टीका--सूखे गेहूंके आटेसे कुछ मोटी रोटीको तवेपर सेंकै और सेककै उसको बहुतसे अंगारोंपर पकावै ॥ ३० ॥ इसको रोटिका कहते हैं. उसके गुण कहते हैं-रोटी बलको करनेवाली, रुचिको हित, पुष्ट, धातुको बढानेवाली, वात हरती, कफको करनेवाली, भारी, दीप्ताग्निवालोंको श्रेष्ठ है ॥ ३१ ॥

अथ अङ्गारकर्कटी (बाटी) गुणाः ।

शुष्कगोधूमचूर्णं तु साम्बु गाढं विमर्दयेत् ।
विधाय वटकाकारं निर्धूमेऽग्नौ शनैः पचेत् ॥ ३२ ॥
अङ्गारकर्कटी ह्येषा बृंहणी शुक्रला लघुः ।
दीपनी कफकृद्बल्या पीनसश्वासकासजित् ॥ ३३ ॥

टीका—सूखे गेहूंके आटेको जलके साथ गाढा ओसने और वटकाकार करके निर्धूम अग्निमें धीरेधीरे पकावै ॥ ३२ ॥ यह अंगारककड़ी (बाटी) पुष्ट, शुक्रको करनेवाली, हलकी कही है और दीपनी, कफको करनेवाली, बलको हित और पीनस श्वास कास इनको हरनेवाली है ॥ ३३ ॥

अथ यवजारोटिकागुणाः ।

यवजा रोटिका रुच्या मधुरा विशदा लघुः
मलशुक्रानिलकरी बल्या हन्ति कफामयान् ॥ ३४ ॥

टीका—जवकी रोटी रुचिको करनेवाली, मधुर, विशद, हलकी, मल, शुक्र, वातको करनेवाली, बलको हित होती है और कफके रोगोंको हरती है ॥ ३४ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ माषजारोटिका (झर्झरी) गुणाः ।

माषाणां दालयस्तोये स्थापितास्त्यक्तकञ्चुकाः ।
आतपे शोषिता यन्त्रे पिष्टास्ता धूमसी स्मृता ॥ ३५ ॥
धूमसी रचिता चैव प्रोक्ता झर्झरिका बुधैः ।
झर्झरी कफपित्तघ्नी किञ्चिद्वातकरी स्मृता ॥ ३६ ॥

टीका—उड़दकी दालको पानीसे भिगोके छिलके निकाली हुईको धूपमें सुखावे और चक्कीमें पीसै. उसको धूमसी कहते हैं ॥३५॥ धूमसीसे बनीहुई रोटी झर्झरिका कही है. झर्झरी कफपित्तको हरती, कुछ एक वातको करनेवाली कही है ॥ ३६ ॥

अथ चणकरोटिकागुणाः ।

चणक्या रोटिका रूक्षा श्लेष्मपित्तास्रनुद्गुरुः ।
विष्टम्भिनी न चक्षुष्या तद्गुणा चातिशष्कुली ॥ ३७ ॥

टीका—चनेकी रोटी रूखी और कफ पित्त रक्तपित्त इनको हरती, भारी, विष्टम्भ करनेवाली, नेत्रको हित और उसीके गुणवाली अतिशष्कुली है ॥ ३७ ॥

अथ बेढमिका (बढ़ई) गुणाः ।

दालिः संस्थापिता तोये ततोऽपहृतकञ्चुका ।
शिलायां साधु सम्पिष्टा पिष्टिका कथिता बुधैः ॥ ३८ ॥
माषपिष्टिकया पूर्णा गर्भी गोधूमचूर्णतः ।
रचिता रोटिका सैव प्रोक्ता बेढ़मिका बुधैः ॥ ३९ ॥
भवेद्वेढ़मिका बल्या वृष्या रुच्याऽनिलापहा ।
उष्मसन्तर्पणी गुर्वी बृंहणी शुक्रला परम् ॥ ४० ॥
भिन्नमूत्रमला स्तन्यमेदःपित्तकफप्रदा ।
गुदकीलार्दितश्वासपक्तिशूलानि नाशयेत् ॥ ४१ ॥

टीका—दालको पानीमें भिगोके और उसका छिलका निकालकर सिलपर अच्छी तरह पीसीहुईको पिष्ठी पंडितोंने कही है ॥ ३८ ॥ उड़दकी पिट्ठीको आटेके भीतर भरके बनाईहुईको बेढ़ई पंडितोंने कहा है ॥ ३९ ॥ बेढ़ई बलको करनेवाली,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शुक्रको उत्पन्न करनेवाली, रुचिको करनेवाली, वात हरती, गरम, सन्तर्पणी, भारी, पुष्ट, शुक्रको करनेवाली है ॥ ४० ॥ मलमूत्रको करनेवाली, दुग्ध, मेद, पित्त, कफ इनको देनेवाली है और गुदकील, अर्दित, श्वास, पक्तिशूल इनको हरती है ॥४१॥

अथ पर्पट (पापड़) गुणाः ।

धूमसीरचिता हिङ्गुहरिद्रालवणैर्युता ।
जीरकस्वर्जिकाभ्यां च तनूकृत्य च वेल्लिता ॥ ४२ ॥
पर्पटास्ते सदाङ्गारभृष्टाः परमरोचकाः ।
दीपनाः पाचना रूक्षा गुरवः किञ्चिदीरिताः ॥४३॥
मौद्गाश्च तद्गुणाः प्रोक्ता विशेषाल्लघवो हिताः ।
चणकस्य गुणैर्युक्ताः पर्पटाश्चणकोद्भवाः ॥ ४४ ॥
स्नेहभृष्टास्तु ते सर्वे भवेयुर्मध्यमा गुणैः ॥ ४५ ॥

टीका—पूर्वोक्त धूमसीसे हींग, हलदी, लवणको मिलाके बनाया हुआ और जीरा सज्जी इनको मिलाके बारीक करके बेलाहुआ पापड़ है ॥ ४२ ॥ वे पापड़ अङ्गारेसे भूनेहुए परम रोचक, दीपन, पाचन, रूखे, कुछ भारी कहे हैं ॥ ४३ ॥ और मूंगके पापड़ भी इन्हींके समान गुणमें कहे हैं. विशेष करके हलके हित होते है. चनेके पापड़ चनेके गुणके समान होते हैं ॥ ४४ ॥ तेलके भूनेहुए सभी पापड गुणसे मध्यम है ॥ ४५ ॥

अथ पूरिका (कचौरी) गुणाः ।

माषाणां पिष्टिकां पूर्याल्लवणार्द्रकहिङ्गुभिः ।
तया पिष्टिकया पूर्णा समिता कृतपोलिका ॥ ४६ ॥
ततस्तैलेन पक्वा सा पूरिका कथिता बुधैः ।
रुच्या स्वाद्वी गुरुः स्निग्धा बल्या पित्तास्रदूषिका ॥ ४७ ॥
चक्षुस्तेजोहरी चोष्णा पाके वातविनाशिनी ।
तथैव घृतपक्वापि चक्षुष्या रक्तपित्तहृत् ॥ ४८ ॥

टीका—उडदकी पिट्ठी, लवण, अद्रक, हींगसे युक्त करके उस पिट्ठीसे पूर्ण मेदाकी कीहुई पोलिका ॥४६॥ व तेलसे पकी पूरिका पंडितोंने कही है. वह रुचिको

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

करनेवाली, मधुर, भारी, चिकनी, बलको हित, रक्तपित्तको बिगाड़नेवाली कही है ॥ ४७ ॥ नेत्रकी तेजीको हरनेवाली, गरम, पाकमें वातको हरनेवाली वैसेही घीकी पकीहुई भी है; किंतु नेत्रको हित, रक्तपित्तको हरती है ॥ ४८ ॥

अथ माषवटकगुणाः ।

माषाणां पिष्टिकां युक्तां लवणार्द्रकहिङ्गुभिः ।
कृत्वा विदध्याद्वटकांस्तांस्तैलेषु पचेच्छनैः ॥ ४९ ॥
विशुष्का वटका बल्या बृंहणा वीर्यवर्धनाः ।
वातामयहरा रुच्या विशेषाददिंतापहाः ॥ ५० ॥
बिबन्धभेदिनः श्लेष्मकारिणोऽत्यग्निपूजिताः ।
संचूर्ण्य निक्षिपेत्तक्रे भृष्टं जीरकहिङ्गुभिः ॥ ५१ ॥
लवणं तत्र वटकान् सकलानपि मज्जयेत् ।
शुक्रलस्तत्र वटको बलकृद्रोचनो गुरुः ॥ ५२ ॥
विबन्धहृद्विदाही च श्लेष्मलः पवनापहः ।
राज्यक्तपातिनो वान्यान् पाचनांस्तांस्तु भक्षयेत् ॥ ५३ ॥
(राज्यक्तः ' राइता ' इति लोके ।)

टीका—अथ बड़ा उडदोंकी पिठीका लवण, अद्रक, हींग, इनसे युक्त करके बडे बनावै उनकों तेलमें धीरे धीरे पकावै ॥ ४९ ॥ सूके हुए बडे, बलको करनेवाले, पुष्ट, धातुको बढानेवाले, वातरोगोंको हरते, रुचिको, करनेवाले, विशेष करके अर्दितरोगके नाशक हैं ॥ ५० ॥ विबन्धका भेदन करनेवाले, कफको न करनेवाले, अति अग्निमें पुजित हैं. चूरा करके जीरा हींगके साथ मेठमें डाले ॥ ५१ ॥ और लवण भी डाले. उसमें सब बडोंको डुंबावे उसमेंका बडा शुक्रको करनेवाले, बलको करनेवाला, रोचन, भारी है ॥ ५२ ॥ बिबन्धको हरता, विदाही, कफको करनेवाले, वातको हरता, राइता घोला हुआ वा और कुछ पाचन उनकों खावै ॥५३॥ राज्यकाको राइता इसप्रकार लोकमें कहते हैं.

अथ काञ्जिकवटकगुणाः ।

मन्थनी नूतना धार्या कटुतैलेन लेपिता ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्मलेनाम्बुनापूर्य तस्यां चूर्णं विनिःक्षिपेत् ॥ ५४ ॥
राजिकां जीरलवणहिङ्गुशुण्ठीनिशाकृतम् ।
निःक्षिपेद्वटकांस्तत्र भाण्डस्यास्यं च मुद्रयेत् ।
ततो दिनत्रयादूर्ध्वमम्लाः स्युर्वटका ध्रुवम् ॥ ५५ ॥
काञ्जिकवटको रुच्यो वातघ्नः श्लेष्मकारकः शीतः ।
दाहं शूलमजीर्णं क्षिप्रं हरते दृगामयेष्वहितः ॥ ५६ ॥

टीका—नवीन मन्थनी कटुतैलसे लेपित रखे उसमें निर्मल जल भरके यह चूर्ण डाले ॥ ५४ ॥ राई, जीरा, लवण, हींग, सोंठ, हलदी, इनसे किया हुआ उसमें बड़े डालै और इस बरतनका मुख ढक देवै. बड़े ए तीन दिनके बाद निश्चय खट्टे होते हैं ॥ ५५ ॥ कांजी बड़ा रुचिको करनेवाला, वातको हरता, कफकारक, शीत दाह शूल अजीर्ण इनको हरता है और दृष्टिरोगमें अहित है ॥ ५६ ॥

अथ अम्लिकावटकगुणाः ।

अम्लिकां स्वेदयित्वा तु जलेन सह मर्दयेत् ।
तन्नीरे कृतसंस्कारे वटकान्मज्जयेत्पुनः ॥ ५७ ॥
अम्लिकावटकास्ते तु रुच्या वह्निप्रदीपनाः ।
वटकस्य गुणैः पूर्वैरेषोऽपि च समन्वितः ॥ ५८ ॥

टीका—इमलीको गरम करके जलके साथ मले. मसाला डाले हुए उस जलमें बड़ोंको डालदेवै ॥ ५७ ॥ वे इमलीके बड़े रुचिको करनेवाले, अग्निदीपन हैं. पहिले बड़ोंके गुणके समान हैं ॥ ५८ ॥

अथ मुद्गवटकगुणाः ।

मुद्गानां वटकास्तक्रे भर्जिता लघवो हिमाः ।
संस्कारजप्रभावेण त्रिदोषशमना हिताः ॥ ५९ ॥

टीका—मूंगके बड़े भूनेहुए हलके, शीतल हैं और संस्कारके प्रभावसे त्रिदोषशमन तथा हित होते हैं ॥ ५९ ॥

अथ माषवटिकागुणाः ।

माषाणां पिष्टिका हिङ्गुलवणार्द्रकसंस्कृता ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तथा विरचिता वस्त्रे वटिकाः साधुशोषिताः ॥ ६० ॥
भर्जितास्तप्ततैलैस्ता अथवाम्बुप्रयोगतः ।
वटकस्य गुणैर्युक्ता ज्ञातव्या रुचिदा भृशम् ॥ ६१ ॥

टीका—उदड़की पिठी हींग, लवण, आर्द्रक इनसे संस्कार कीहुई कपड़ेपर अच्छीतरह सुखाय ॥ ६० ॥ गरम तेलसे भूने अथवा जलमें पकावै. इसको बड़ेके गुणके समान जानना चाहिये और अत्यन्त रुचिको करनेवाली है ॥ ६१ ॥

अथ कूष्माण्डवटिकागुणाः।

कूष्माण्डकवटी ज्ञेया पूर्वोक्तवटिकागुणा ।
विशेषात्पित्तरक्तघ्नी लघ्वी च कथिता बुधैः ॥ ६२ ॥

टीका—कोहड़ौरी पूर्वोक्त वटिकाके गुण समान है. विशेषकरके पित्तरक्तको हरती, हलकी, पंडितोंने कही है ॥ ६२ ॥

अथ मुद्गवटिकागुणाः।

मुद्गानां वटिका तद्वद्रचिता साधिता तथा ।
पथ्या रुच्या तथा लघ्वी मुद्गसूपगुणा स्मृता ॥ ६३ ॥

टीका—मूगकी बड़ी मूंगकी वटिका बनाईहुई और साधित पथ्य, रुचिको करनेवाली तथा हलकी, मूंगकी दालके समान गुणमें कही है ॥ ६३ ॥

अथालीकमत्स्यगुणाः।

माषपिष्टिकया लिप्तं नागवल्लीदलं महत् ।
तत्तु संस्वेदयेद्युक्त्या स्थाल्यामास्तारकोपरि ॥ ६४ ॥
ततो निष्कास्य तं खण्डयं ततस्तैलेन भर्जयेत् ।
अलीकमत्स्य उक्तोऽयं प्रकारः पाकपण्डितैः ॥ ६५ ॥
तं वृन्ताकभटित्रेण वास्तूकेन च भक्षयेत् ।

टीका—उड़दकी पिठीसे लिप्त बड़ा नागबेलका पान उसको तसलेमें कपड़ेके ऊपर युक्तिसे पकावै ॥ ६४ ॥ उसे निकालकर उसके टुकड़े करके तेलके साथ भूने.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टुकडा अर्थात् टुकडेकरके युक्त अलीकमत्स्यका यह प्रकार पाकपंडितोंने कहा है॥६४॥ इसको भटेके भरतेके साथ अथवा बथुवेके साथ खावै.

अथ क्वथिका (कढी) गुणाः ।

स्थाल्यां घृते वा तैले वा हरिद्राहिङ्गु भर्जयेत् ॥ ६६ ॥
अवलेहनसंयुक्तं तक्रं तत्रैव निक्षिपेत् ।
एषा सिद्धा समरिचा कथिता क्वथिका बुधैः ॥ ६७ ॥
क्वथिका पाचनी रुच्या लघ्वी वह्निप्रदीपनी ।
कफानिलविबन्धघ्नी किञ्चित्पित्तप्रकोपिनी ॥ ६८ ॥
अलीकमत्स्याः शुष्का वा किंवा क्वथितया पुनः ।
बृंहणा रोचना वृष्या बल्या वातगदापहाः ॥ ६९ ॥
कोष्ठशुद्धिकरा युक्त्या किञ्चित्पित्तप्रकोपनाः ।
अर्दिते सहनुस्तम्भे विशेषेण हिताः स्मृताः ॥ ७० ॥

टीका––तसलेमें घृत अथवा तेलमें हलदी हींग भूने ॥ ६६ ॥ अवलेहनके साथ मठेको उसीमें डाले. यह सिद्ध मरिचके साथ औटाईहुईको पण्डितोंनें कढी कही है ॥६७॥हरियन इसप्रकार लोकमें कहते हैं. कढी पाचन, रुचिको करनेवाली,हलकी, दीपन,कफ वात विबन्धकी नाशक, कुछएक पित्तके प्रकोपको करनेवाली है ॥६८॥ अलीकमत्स्य सूके अर्थात् फिरसे औटानेसे होते हैं. पुष्ट,रोचन, शुक्रको करनेवाले बलको हित, वातरोगकों हरते हैं ॥ ६९ ॥ युक्तिके साथ कोष्ठशुद्धिको करनेवाले कुछ पित्तप्रकोप करनेवाले कहे हैं. अर्दित सहनुस्तंभमें विशेषकरके हित कहे हैं ॥ ७० ॥

अथान्ये वटकप्रकाराः ।

तत्र मुद्गार्द्रकवटकः ।

मुद्गपिष्टीविरचितान्वटांस्तैलेन पाचितान् ।
हस्तेन चूर्णयेत्सम्यक् तस्मिंश्चूर्णे विनिःक्षिपेत् ॥ ७१ ॥
भृष्टं हिङ्ग्वार्द्रकं सूक्ष्मं मरिचं जीरकं तथा ।
निम्बूरसं जवानीं च युक्त्या सर्वं विमिश्रयेत् ॥ ७२ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मुद्गपिष्टिं पचेत्सम्यक्स्थाल्यामास्तारकोपरि ।
तस्यास्तु गोलकं कुर्यात्तन्मध्ये पूरणं क्षिपेत् ॥ ७३ ॥
तैले तान् गोलकान्पक्त्वा क्वथिकायां निमज्जयेत् ।
गोलकाः पाचकाः प्रोक्तास्ते त्वार्द्रकवटा अपि ॥ ७४ ॥
मुद्गार्द्रकवटा रुच्या लघवो बलकारकाः ।
दीपनास्तर्पणाः पथ्यास्त्रिषु दोषेषु पूजिताः ॥ ७५ ॥

टीका—मूंगकी पिट्ठीसे बनी बड़ीको तेलसे पकावै. उसको हाथसे अच्छीतरह चूर्ण करै. उस चूरेमें इनको डालै ॥ ७१ ॥ भूनी हींग, अद्रक, मिरच तथा जीरा इनको पीसके डालै और नींबूका रस, अजवायन इनको युक्तिसे सबको मिलावै ॥ ७२ ॥ तसलेमें कपड़ेके ऊपर मुद्गकी पिट्ठिको अच्छीतरह पकावै. उसका गोलक करके उसके बीचमें पूरण भरे ॥ ७३ ॥ इन गोलकोंको तैलमें पकाके कढीमें डुबादेवै. गोलक पाचक है और अर्द्रकवट भी उसीको कहते हैं ॥७४॥ मूंगके आर्द्रकवटक रुचिको करनेवाले, हलके, बलकारक हैं और दीपन, तर्पण, पथ्य और तीनों दोषोंको अच्छे हैं ॥ ७५ ॥

अथ बेसनवटी (पकौड़ी फुलौड़ी) गुणाः ।

दालयश्चणकानां तु निस्तुषा यन्त्रपेषिताः ।
तच्चूर्णं बेसनं प्रोक्तं पाकशास्त्रविशारदैः ॥ ७६ ॥
वटिका बेसनस्यापि क्वथिकायां निभर्जिता ।
रुच्या विष्टम्भजननी बल्या पुष्टिकरी स्मृता ॥ ७७ ॥

टीका—चनेकी दालोंको बेछिलके करके चक्कीमें पीसै. उस चूर्णको बेसन पाकशास्त्रके जाननेवालोंनें कहा है ॥ ७६ ॥ बेसनकी वटिका भूनके कढीमें पकीहुई रुचिको करनेवाली, विष्टम्भको करनेवाली, बलको हित, पुष्टिको करनेवाली कही है ॥ ७७ ॥

अथ मांसप्रकाराः ।

तत्र शुद्धमांसम् ।

पाकेपात्रे घृतं दद्यात्तैलं च तदभावतः ।
तत्र हिङ्गु हरिद्रां च भर्जयेत्तदनन्तरम् ॥ ७८ ॥
छागादेरस्थिरहितं मांसं तत्खण्डितं ध्रुवम् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धौतं निर्गालितं तस्मिन्घृते तद्भर्जयेच्छनैः ॥ ७९ ॥
सिद्धयोग्यं जलं दत्त्वा लवणं तु पचेत्ततः ।
सिद्धे जलेन संपिष्य वेशवारं परिक्षिपेत् ॥ ८० ॥
द्रव्याणि वेशवारस्य नागवल्लीदलानि च ।
तण्डुलाश्च लवङ्गानि मरिचानि समासतः ॥ ८१ ॥
अनेन विधिना सिद्धं शुद्धमांसमिति स्मृतम् ।
शुद्धमांसं परं वृष्यं बल्यं रुच्यं च बृंहणम् ॥ ८२ ॥
त्रिदोषशमकं श्रेष्ठं दीपनं धातुवर्धनम् ।

टीका—शुद्धमांसको सुधवा इसप्रकार लोकमें कहते हैं. पकानेके बरतनमें घृत डाले. उसके अभावमें तेल डाले. उसमें हींग, हलदीको भूने और बाद ॥ ७७ ॥ बकरे आदिका बेहड्डीका मांस टुकड़े कियाहुआ और धोके साफ कियाहुआ उस घीमें उसको धीरेधीरे भूने ॥ ७८ ॥ उसमें पकनेके योग्य जल देकर और लवण देकर पकावै. उसके अनन्तर सिद्धहुएमें पानीसे गरम मसाला पीसकर उसमें डालै ॥७९॥ मसालेकी वस्तु—पान, चावल, लवंग, मिरिच, ये संक्षेपसे हैं॥८०॥ इसविधिसेसिद्ध कियाहुआ शुद्धमांस ऐसा कहा है. शुद्ध मांस परम शुक्रको करनेवाला, बलकारी, रुचिको करनेवाला, पुष्ट ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ त्रिदोषका शमक, श्रेष्ठ, दीपन, धातु बढ़ानेवाला है.

अथ सहार्द्रक (सहवांसु) नामगुणाः ।

छागादेर्मांसमूर्वादेः कुट्टितं खण्डितं पुनः ॥ ८३ ॥
शुद्धमांसविधानेन पचेदेतत्सहार्द्रकम् ।
सहार्द्रकं गुणैर्ग्रन्थे शुद्धमांसगुणं स्मृतम् ॥ ८४ ॥

टीका—सहार्द्रकको सहवांसु ऐसा लोकमें कहते हैं. बकरे आदिके जांघ आदिका मांस कुटाहुआ अलग अलग टुकड़े कियेहुए॥८३॥ इसको शुद्धमांसकी विधिसे पकावे. यह सहार्द्रक है सहार्द्रकके निघंटमें शुद्धमांसके समान गुणमें कहा है ॥८४॥

अथ तक्रमांस (अखनी) गुणाः ।

पाकपात्रे घृतं दत्त्वा हरिद्राहिङ्गु भर्जयेत् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छागादेः सकलस्यापि खण्डान्यपि च भर्जयेत् ॥ ८५ ॥
सिद्धयोग्यं जलं दत्त्वा पचेन्मृदुतरं तथा ।
जीरकादियुते तक्रे मांसखण्डानि तारयेत् ॥ ८६ ॥
तक्रमांसं तु वातघ्नं लघु रुच्यं बलप्रदम् ।
कफघ्नं पित्तलं किञ्चित्सर्वाहारस्य पाचनम् ॥ ८७ ॥

टीका--पकानेके पात्रमें घृत डालकर हलदी और हींगको भूने और बकरे आदिके सबके मांसके टुकड़ोंको भी भूने ॥ ८५ ॥ पकनेके योग्य जल देकर मन्द आंचसे पकावै. जीरा आदिकसे युक्त मट्ठेमें मांसके टुकड़ोंको डालै ॥ ८६ ॥ यह तक्रमांस वातहर्ता, हलका, रुचिका करनवाला, बलको देनेवाला, कफहर्ता, कुछ पित्तको करनेवाला, सब आहारका पाचक है ॥ ८७ ॥

अथ हरीसा (आस) गुणाः ।

पाकपात्रे तु बृहन्ति मांसखण्डानि निःक्षित् ।
पानीयं प्रचुरं सर्पिः प्रभूतं हिङ्गु जीरकम् ॥ ८८ ॥
हरिद्रामार्द्रकं शुण्ठीं लवणं मरिचानि च ।
तण्डुलांश्चापि गोधूमान् जम्बीराणां रसान् बहून् ॥ ८९ ॥
यथा सर्वाणि वस्तूनि सुपक्वानि भवन्ति हि ।
तथा पचेत्तु निपुणो बहुमांसं क्षितिर्यथा ॥ ९० ॥
एषा हरीसा बलकृद्धातपित्तापहा गुरुः ।
शीतोष्णा शुक्रदा स्निग्धा सरा सन्धानकारिणी ॥ ९१ ॥

टीका--पकानेके बरतनमें बड़े मांसके टुकड़े डालै. पानी बहुतसा, घृत बहुत, हीङ्ग, जीरा ॥८८॥ अद्रक, हलदी, सोंठ, लवण, मिरच, चावल और गेहूं जम्बीरीका बहुत रस ॥ ८९ ॥ जिस सब मांस अच्छीतरह पकजावै वैसे सब वस्तुओंको निपुण पकावै. जैसे बहुत मांसको क्षिति ॥ ९० ॥ यह हरीसा बलको करनेवाला, वातपित्तको हरता, भारी, शीत, उष्ण, शुक्रको करनेवाला, चिकना, सर सन्धान करनेवाला है ॥ ९१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ तलितमांसगुणाः ।

शुद्धमांसविधानेन मांसं सम्यक्प्रसाधितम् ।
पुनस्तदाज्ये सम्भृष्टं तलितं प्रोच्यते बुधैः ॥ ९२ ॥
तलितं बलमेधाग्निमांसौजःशुक्रवृद्धिकृत् ।
तर्पणं लघु सुस्निग्धं रोचनं दृढताकरम् ॥ ९३ ॥

टीका—शुद्धमांसकी विधिसे मांसको अच्छीतरह पका करके फिरसे उसको घृतमें भूने. उसको तलितमांस कहते हैं ॥ ९२ ॥ तलाहुआ मांस बल, कान्ति, मांस और शुक्र इनको बढ़ानेवाला, तर्पण, हलका, बहुत स्निग्ध, रोचन दृढता करनेवाला है ॥ ९३ ॥

अथ शूल्य (कबाब) गुणाः ।

कालखण्डादिमांसानि ग्रन्थितानि शलाकया ।
घृतं सलवणं दत्त्वा निर्धूमे दहने पचेत् ॥ ९४ ॥
तत्तु शूल्यमिदं प्रोक्तं पाककर्मविचक्षणैः ।
शूल्यं पलं सुधातुल्यं रुच्यं वह्निकरं लघु ॥ ९५॥
कफवातहरं बल्यं किञ्चित्पित्तकरं हि तत् ।

टीका—कालखण्डादि मांसोंको सीकमें लगाकर निमक घी देकर निर्धूम अग्निमें पकावै ॥ ९४॥ पाककर्ममें चतुर पुरुषोंने उसको शूल्य ऐसा कहाते हैं. शूल्य मांस अमृतके समान, रुचिको करनेवाला, दीपन, हलका ॥ ९५ ॥ कफवातको हर्ता, बलको करनेवाला, कुछ पित्तको करनेवाला, होता है.

अथ मांसश्रृङ्गाटकगुणाः ।

शुद्धमांसं तनूकृत्य कर्त्तितं स्वेदितं जले ॥ ९६ ॥
लवङ्गहिङ्गुलवणमरिचार्द्रकसंयुतम् ।
एलाजीरकधान्याकनिम्बूरससमन्वितम् ॥ ९७ ॥
घृते सुगन्धे तद्भृष्टं मांसश्रृङ्गाटकंस्मृतम् ।
मांसश्रृङ्गाटकं रुच्यं बृंहणं बलकृद्गुरु ॥ ९८ ॥
वातपित्तहरं वृष्यं कफघ्नं वीर्यवर्धनम् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—शुद्धमांस बारीक करके जलमें पकावै ॥ ९६ ॥ लौंग, हींग, लवण, मरिच और आर्द्रक इनसे युक्त तथा इलायची, जीरा, धनियां, निम्बूका रस इनसे युक्त ॥ ९७ ॥ अच्छे घृतमें उसको भूने उसको मांस-शृंगाटक कहते हैं ॥ ९८॥ मांसशृंगाटक रुचिको करनेवाला, पुष्ट, बल करनेवाला, भारी होता है और वातपित्तको हर्ता, शुक्रको करनेवाला, कफहर्ता,वीर्यको बढ़ा-नेवाला है ।

अथ मांसरस (सुरवा) गुणाः ।

सिद्धमांसरसो रुच्यः श्रमश्वासक्षयापहः ॥ ९९ ॥
प्रीणनो वातपित्तघ्नः क्षीणानामल्परेतसाम् ।
विश्लिष्टभग्नसन्धीनां शुद्धानां शुद्धिकांक्षिणाम् ॥ १०० ॥
शस्यते स्वरहीनानां ज्वरक्षीणक्षतोरसाम् ।
स्मृत्योजोबलहीनानां दृष्ट्यायुःश्रवणार्थिनाम् ॥ १०१ ॥
प्रकाराः कथिताः सन्ति बहवो मांससम्भवाः ।
ग्रन्थविस्तारभीतेस्ते मया नात्र प्रकीर्तिताः ॥ १०२ ॥

टीका—सिद्धमांसका रस रुचिको करनेवाला, श्रम श्वास क्षय इनको हरता है ॥ ९९ ॥ और प्रीणन वातपित्तको हरता और क्षीण तथा अल्प शुक्रवाले इनको और विश्लिष्ट भग्नसन्धिवाले, शुद्धि चाहनेवाले ॥ १०० ॥ स्मृति ओज बल इनसे हीन ज्वर क्षीण क्षत उरवाले इनको हित है और हीनस्वरवाले तथा दृष्टि आयु श्रवणार्थियोंको भी हित है ॥ १०१ ॥ मांसकी बहुतसी किस्म बनानेकी हैं परन्तु ग्रन्थ बढ़जानेके डरसे उनको मैने यहांपर नहीं कहा है ॥१०२ ॥

अथ शाकानां साधनप्रकारः ।

हिङ्गुजीरयुते तैले क्षिपेच्छाकं सुखण्डितम् ।
लवणं चाम्लचूर्णादि सिद्धे हिंगूदकं क्षिपेत् ॥ १०३ ॥
इत्येवं सर्वशाकानां साधनेऽभिहितो विधिः ।

टीका—हींग जीराके सहित तेलमें अच्छी तरह बनाये हुए शाकको डाले. पक जानेपर लवण आमचूरआदि तथा हींगका पानी डाले ॥ १०३ ॥ इसप्रकार सब शाकोंके बनानेकी विधि इष्ट है ॥ १०४ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ मठ (मठली) गुणाः ।

समिता मर्दयेदन्यजलेनापि च सन्नयेत् ॥ १०४ ॥
तस्यास्तु वटिकां कृत्वा पचेत्सर्पिषि नीरसम् ।
एलालवङ्गकर्पूरमरीचाद्यैरलंकृते ॥ १०५ ॥
मज्जयित्वा सितापाके ततस्तं च समुद्धरेत् ।
अयं प्रकारः संसिद्धो मठ इत्यभिधीयते ॥ १०६ ॥
मठस्तु बृंहणो वृष्यो बल्यः सुमधुरो गुरुः ।
पित्तानिलहरो रुच्यो दीप्ताग्नीनां सुपूजितः ॥ १०७ ॥
समिताशर्करासर्पिर्निर्मिता अपरेऽपि ये ।
प्रकारा अमुना तुल्यास्तेऽपि चेत्तद्गुणाः स्मृताः ॥ १०८ ॥

टीका—मैदेको मले और पानीसे सानै. उसकी वटिका करके घृतमें नीरस पकावै. इलायची, लवंग, कपूर, मरिच आदिसे युक्त ॥ १०५ ॥ इसको चीनीके पाकमें डालै. अनन्तर उसको निकालै. इसतरहपर सिद्धहुएको मठली ऐसा कहते हैं ॥ १०६ ॥ मठली पुष्ट, शुक्रको करनेवाली, बलको हित, अच्छी, मधुर, भारी, पित्त वातको हरती, रुचिको करनेवाली, दीप्ताग्निवालोंको अच्छी है ॥ १०७ ॥ और भी जो मैदा शक्कर घी इनसे बनायेहुए पदार्थ, इसीके समान प्रकारवाले हैं वे भी इसीके समान गुणवाले कहे हैं ॥ १०८ ॥

अथ सम्पाव (गुझिया) गुणाः ।

पर्पट्यः साज्यसमिता निर्मिता घृतभर्जिताः ।
कुट्टिताश्चालिताः शुद्धशर्कराभिर्विमर्दिताः १०९ ॥
तत्र चूर्णं क्षिपेदेलालवङ्गमरिचानि च ।
नालिकेरं सकर्पूरं चारबीजान्यनेकधा ॥ ११० ॥
घृताक्तसमिता पुष्टरोटिका रचिता ततः ।
तस्यान्तः पूरणं तस्य कुर्यान्मुद्रां दृढां सुधीः ॥ १११ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सर्पिषि प्रचुरे तां तु सुपचेन्निपुणो जनः ।
प्रकारज्ञैः प्रकारोऽयं सम्पाव इति कीर्तितः ॥ ११२ ॥

टीका—घृतके सहित मैदेसे बनायेहुए रोट घीमें भूनेहुए और कूटकर चालेहुए तथा सफेद शकर मिलायेहुए ॥ १०९ ॥ उस चूर्णमें इलायची, लवंग, मरिच, नारियल, कपूर, चिरोंजी, और अनेक प्रकार ॥ ११० ॥ उसके अनन्तर मैदेमें घी मिलाकर मोटी रोटी बनावै. उसके अनन्तर उसके बीचमें उसका पूरण देवै और बुद्धिमान् दृढ मुद्रा करे ॥ १११ ॥ बुद्धिमान् उसको बहुतसे घृतमें पकावै तरकीबके जाननेवालोने इसको सम्पाव ऐसा कहा है ॥ ११२॥

अथ कर्पूरनालिकागुणाः।

घृताढ्यया समितया लम्बं कृत्वा पुटं ततः ।
लवङ्गोल्बणकर्पूरयुतं च सितयाऽन्वितम् ॥ ११३ ॥
पचेदाज्येन सिद्धे सा ज्ञेया कर्पूरनालिका ।
सम्पावसदृशी ज्ञेया गुणैः कर्पूरनालिका ॥ ११४ ॥

टीका—बहुत घृत डालकर मैदेसे लम्बा वुटकरके अनन्तर लवंग, अधिक कपूरके युक्त चीनीसे युक्तको ॥ ११३ ॥ घृतमें पकावै. यह सिद्ध कर्पूरनालिका जाननी चाहिये. संपावके समान गुणमें कर्पूरनालिका जाननी चाहिये ॥११४॥

अथ फेनिका (सूतफेनी) गुणाः ।

समिताया घृताढ्याया वर्तिं दीर्घां समाचरेत् ।
तास्तु सन्निहिता दीर्घाः पीठस्योपरि धारयेत् ॥ ११५ ॥
वेल्लयेद्वेल्लनेनैता यथैका पर्पटी भवेत् ।
ततश्छुरिकया तां तु सलग्नामेव कर्तयेत् ॥ ११६ ॥
ततस्तु वेल्लयेद्भूपसट्टकेन च लेपयेत् ।
शालिचूर्णं घृतं तोयं मिश्रितं सट्टकं वदेत् ॥ ११७ ॥
ततः संवृत्य तल्लोप्त्रीं विदधीत पृथक्पृथक् ।
पुनस्तां वेल्लयेल्लोप्त्रीं यथा स्यान्मण्डलाकृतिः ॥ ११८ ॥
ततस्तां सुपचेदाज्ये भवेयुश्च पुटाः स्फुटाः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सुगन्धया शर्करया तदुद्धूलनमाचरेत् ॥ ११९ ॥
सिद्धैषा फेनिका नाम्नी मण्डकेन समा गुणैः।
ततः किञ्चिल्लघुरियं विशेषोऽयमुदाहृतः ॥ १२० ॥

टीका—घृतके सहित मैदेसे लम्बी बत्ती करै उनको सन्निहित बड़े पाटेके ऊपर रखे ॥ ११४ ॥ इनको बेलनेसे बेलै. जिसमें एक रोटी होजावै. उसके अनन्तर उसको छुरीसे लगीहुईके ही काटै ॥ ११६ ॥ फिर उसे बेलै और सट्टक लेपन करे चावलका चूर्ण, घृत, जल, इन सब मिले हुएको सट्टक कहते हैं ॥ ११७ ॥ उससे लोई गोल करके अलग अलग रखे. फिर उस लोईको बेलै जिसमें मंडलाकृति होजावे ॥ ११८ ॥ उसके अन्तर उसको घृतमें पकावै. जब उसके पड़ते खिल जावैं तब सुगन्धचीनीको उसके ऊपर बुरकावे॥११९॥ सिद्ध यह फेनी मंडकके समान गुणमें होती है. यह विशेष कहा है ॥ १२० ॥

अथ शष्कुलीगुणाः।

समिताया घृताक्ताया लोप्त्रीं कृत्वा च वेल्लयेत्।
आज्ये तां भर्जयेत्सिद्धा शष्कुली फेनिकागुणा ॥ १२१ ॥

टीका—अनन्तर घृतके सहित मैदेकी लोई बनाकर बेले. उसको घृतमें पकावै. वह सिद्ध हुई फेनीके समान गुणमें होती है ॥ १२१ ॥

अथ सेविकामोदकगुणाः।

घृताढ्यया समितया कृत्वा सूत्राणि तानि तु।
निपुणो भर्जयेदाज्ये खण्डपाकेन योजयेत्।
युक्तेन मोदकान्कुर्यात्ते गुणैर्मण्डका यथा ॥ १२२ ॥
मुद्गानां धूमसी सम्यग्घोलयेन्निर्मलाऽम्बुना ॥ १२३ ॥

टीका—घृतके सहित मैदासे सूत्र करके उनको निपुण पुरुष घृतमें पकावै. अनन्तर खाण्डके पाकमें डालै ॥ १२२ ॥ उनके लड्डू करै. वे गुणमें मण्डकके समान होते हैं ॥ १२३ ॥

अथ मुद्गमोदक (बूंदीके लड्डु)गुणाः।

कटाहस्य वृतेरूर्ध्वं झर्झरं स्थापयेत्ततः।
धूमसीं तु द्रवीभूतां प्रक्षिपेज्झर्झरोपरि ॥ १२४ ॥
पतन्ति बिन्दवस्तस्मात्तान् सुपक्वान् समुद्धरेत्।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सितापाकेन संयोज्य कुर्याद्धस्तेन मोदकान् ॥ १२५ ॥
लघुर्ग्राही त्रिदोषघ्नः स्वादुः शीतो रुचिप्रदः ।
चक्षुष्यो ज्वरहृद्बल्यस्तर्पणो मुद्गमोदकः ॥ १२६ ॥

टीका—मूंगके आटेको निर्मलजलमें घोलै. कढ़ाईके किनारेपर झारेको रखे. अनन्तर उस घोलेहुए मूंगके आटेके झारेके ऊपर डाले ॥ १२४ ॥ ऊससे बूंद गिरते हैं उन पकेहुओंको निकाललेवे. चीनीके पाकमें मिलाकर हाथसे लड्डू बनावै ॥ १२५ ॥ यह हलका, काबिज, त्रिदोषहर्ता, मधुर, शीतल, रुचिको करनेवाला, नेत्रको हित,ज्वरहर्ता, बलकारी, तर्पण, मुद्गका लड्डू हैं ॥ १२६ ॥

अथ सेवनमोदकगुणाः ।

एवमेव प्रकारेण कार्याः सेवनमोदकाः ।
ते बल्या लघवः शीताः किञ्चिद्वातकरास्तथा ॥ १२७ ॥
विष्टम्भिनो ज्वरघ्नाश्च पित्तरक्तकफापहाः ॥ १२८ ॥

टीका—ऐसेही सेवके लड्डू बनावै. वे बलको हित, हलके, शीतल, कुछ एक वातको करनेवाले हैं ॥ १२७ ॥ और विष्टम्भ करनेवाले, ज्वरहारक तथा रक्त पित्त कफ इनको हरते हैं ॥ १२८ ॥

अथ दुग्धकूपिकागुणाः ।

तण्डुलचूर्णविमिश्रितनष्टक्षीरेण सान्द्रपिष्टेन ।
दृढकूपिकां विदध्यात्तां च पचेत्सर्पिषा सम्यक् ॥ १२९ ॥
अथ तां कोरितमध्यां घनपयसा पूर्णगर्भां च ।
सद्दृकमुद्रितवदनां सर्पिषि संपक्ववदनां च ॥ १३० ॥
अथ पाण्डुखण्डपाके स्नपयेत्कर्पूरवासिते कुशलः ।
अथ दुग्धकूपिका सा बल्या पित्तानिलापहा चैव ॥ १३१ ॥
वृष्या शीता गुर्वी शुक्रकरी बृंहणी तथा रुच्या ।
विदधाति कायपुष्टिं दृष्टिं दूरप्रसारिणीं सुचिरम् ॥ १३२ ॥

टीका—अनन्तर दुग्धकूपिका-चांवलके आटेको मिलाकरके फटे दूधको मावा करके उससे दृढकूपी करै. उसको घीमें पकावै ॥ १२९ ॥ अनन्तर उसको बी-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चर्मेंसे खाली करके उसमें खोया भरै और उसका मुख घृत, जल, चावलके आटेसे बन्द करके घीमें पकावै ॥ १३० ॥ अनन्तर कुशल कपूरसे वासित सुफेद खांडके पाकमें डुबावै. यह दुग्धकूपी ॥ १३१ ॥ बलको हित, पित्तवातको हरती है. शुक्रको करनेवाली, शीतल, भारी, पुष्ट, रुचिको करनेवाली है और शरीरकी पुष्टिको करती है तथा बहुतकालतक अच्छी दृष्टि करती है ॥ १३२ ॥

अथ कुण्डलिनी (जलेबी) गुणाः ।

नूतनं घटमानीय तस्यान्तः कुशलो जनः ।
प्रस्थार्धपरिमाणेन दध्नाऽम्लेन प्रलेपयेत् ॥ १३३ ॥
द्विःप्रस्थां समितां तत्र दध्यम्लं प्रस्थसम्मितम् ।
घृतमर्धशरावं च घोलयित्वा घृते क्षिपेत् ॥ १३४ ॥
आतपे स्थापयेत्तावद्यावद्याति तदम्लताम् ।
ततस्तत्प्रक्षिपेत्पात्रे सच्छिद्रे भाजने तु तत् ॥ १३५ ॥
परिभ्राम्य यथास्वं च तत्तु तप्ते घृते क्षिपेत् ।
पुनः पुनस्तदावृत्त्या विदध्यान्मण्डलाकृतिम् ॥ १३६ ॥
तां सुपक्कां घृतान्नीत्वा सितापाके तनुद्रवे ।
कर्पूरादिसुगन्धं च स्नापयित्वोद्धरेत्ततः ॥ १३७ ॥
एषा कुण्डलिनी नाम्ना पुष्टिकान्तिबलप्रदा ।
धातुवृद्धिकरी वृष्या रुच्या च क्षिप्रतर्पणी ॥ १३८ ॥

टीका—कुशल मनुष्य नया घड़ा लाकर उसके भीतर आधसेर खट्टे दहीसे लेप करावे ॥ १३३ ॥ उसमें दोसेर मैदा और एकसेर खट्टा दही पावभर घृत उनको घोलकर घृतमें डालै ॥१३४॥ इसको धूपमें रखै तबतक जबतक खट्टापन इसमें न आवै अनन्तर छेदवाले बरतनमें उसको डालै ॥ १३५ ॥ उसको घुमारकर जलतेहुए घीमें डालै फिर उसकी फिरसे मंडलाकृति करै ॥ १३६ ॥ उस पकीहुईको घृतसे निकालकर चीनीके पतले पाकमें डालै कपूर आदिसे युक्तमें डालकर निकाललेवै ॥ १३७ ॥ यह जलेबी पुष्ट, कान्ति बलको देनेवाली है और धातुको बढ़ानेवाली, शुक्रको करनेवाली, नेत्रको तर्पण है ॥ १३८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ रसाला (शिखरन)गुणाः ।

आदौ माहिषमम्लमम्बुरहितं दध्याढकं शर्करां
शुभ्रां प्रस्थयुगोन्मितां शुचिपटे किञ्चिच्च किञ्चित्क्षिपेत् ।
दुग्धेनार्धघटेन मृण्मयनवस्थाल्यां दृढं स्रावये-
देलाबीजलवङ्गचन्द्रिमरिचैर्योग्यैश्च तद्योजयेत् ॥ १३८ ॥
भीमेन प्रिथभोजनेन रचिता नाम्ना रसाला स्वयं
श्रीकृष्णेन पुरा पुनःपुनरियं प्रीत्या समास्वादिता ।
एषा येन वसन्तवार्जितदिने संसेव्यते नित्यश-
स्तस्य स्यादतिवीर्यवृद्धिरनिशं सर्वेन्द्रियाणां बलम् ॥ ४० ॥
ग्रीष्मे तथा शरदि ये रविशोषिताङ्गा
ये च प्रमत्तवनितासुरतादिखिन्नाः ।
ये चापि मार्गपरिसर्पणशीर्णगात्रा-
स्तेषामियं वपुषि पोषणमाशु कुर्यात् ॥ १४१ ॥
रसाला शुक्रला बल्या रोचनी वातपित्तजित् ।
दीपनी बृंहणी स्निग्धा मधुरा शिशिरा सरा ॥ १४२ ॥
रक्तपित्ततृषादाहप्रतिश्यायान् विनाशयेत् ॥ १४२॥

टीका—पहिले भैंसके जलरहित चारसेर दहीको सफेद दोसेर शर्कराके सहित सुफेद कपड़ेपर थोड़ा थोड़ा डाले. अर्ध घट दुग्धसे नई मिट्टीकी स्थालीमें छनवावै. इलायची, लौंग, चन्दन, मिरच, और उचित उसमें डाले ॥ १३९ ॥ अच्छे भोजन करनेवाले भीमसेनने वह रसाला स्वयं बनाई है. पहिले श्रीकृष्णने वारंवार इसको प्रीतिसे आस्वादन किया है. इसको जो वसन्तसे रहित दिनोंमें नित्य सेवन करता है उसके अतिवीर्यवृद्धि और सब इन्द्रियोंका बल होता है ॥१४०॥ ग्रीष्ममें तथा शरदमें जो सूर्यसे शोषित अंगवाले हैं और जो प्रमत्तस्त्रीके मैथुनसे अतिखिन्न तथा जो मार्ग चलनेसे शीर्णगात्र हैं उनके शरीरमें यह शीघ्र पोषण करती है ॥१४१ ॥ रसाला शुक्रको करनेवाली, बलको हित,रोचन, वातपित्तको हरनेवाली है और दीपन पुष्ट, चिकनी, मधुर, शीतल, सर है, रक्त पित्त तृषा दाह प्रतिश्याय इनको हरती है ॥ १४२ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ शर्करोदक (सरबत) गुणाः ।

जलेन शीतलेनैव घोलिता शुभ्रशर्करा ।
एलालवङ्गकर्पूरमरिचैश्च समन्विता ॥ १४२ ॥
शर्करोदकनाम्ना तत्प्रसिद्धं विदुषां मुदे ।
शर्करोदकमाख्यातं शुक्रलं शिशिरं सरम् ॥ १४३ ॥
बल्यं रुच्यं लघु स्वादु वातपित्तप्रणाशनम् ।
मूर्च्छाछर्दितृषादाहज्वरशान्तिकरं परम् ॥ १४४ ॥

टीका—शीतल जलसे घोलीहुई सुफेदचीनी और इलायची लवङ्ग कपूर मिरिच इनसे युक्त शर्करोदक नामसे प्रसिद्ध पंडितोंको सुखदायक है ॥ १४३ ॥ शर्करोदक प्रसिद्ध है. शुक्रको करनेवाला, शीतल, सर है और बलको हित, रुचिको करनेवाला, हलका, मधुर, वातपित्तको हरता है और मूर्च्छा, वमन, तृषा, दाह, ज्वरकी शान्तिको करनेवाला है ॥ १४४ ॥

अथ प्रपानकानि । तत्राम्रफलप्रपानकगुणाः ।

आम्रमामं जले स्विन्नं मर्दितं दृढपाणिना ।
सिताशीताम्बुसंयुक्तं कर्पूरमरिचान्वितम् ॥ १४५ ॥
प्रपानकमिदं श्रेष्ठं भीमसेनेन निर्मितम् ।
सद्योरुचिकरं बल्यं शीघ्रमिन्द्रियतर्पणम् ॥ १४६ ॥

टीका—अथ पनेकी कृति–उसमें आमका पना–कच्चे आमको पानीमें उबालके, हाथसे खूब मलै. चीनी और शीतलजलसे युक्त और कपूर मिरिचके साथ यह प्रपानक श्रेष्ठ भीमसेनका बनयाहुआ तत्काल रुचिको करनेवाला, बलको हित, शीघ्र इन्द्रियका तर्पण है ॥ १४६ ॥

अथाम्लिकाफलप्रपानकगुणाः ।

अम्लिकायाः फलं पक्वं मर्दितं वारिणा दृढम् ।
शर्करामरिचैर्मिश्रं लवङ्गेन्दुसुवासितम् ॥ १४७ ॥
अम्लिकाफलसम्भूतं पानकं वातनाशनम् ।

२०

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पित्तश्लेष्मकरं किञ्चित्सुरुच्यं वह्निबोधनम् ॥ १४८ ॥

टीका—पकी इमलीको पानीके साथ खूब मले. शक्कर और मिरिचसे युक्त और लवङ्ग कपूरसे सुवासित ॥ १४७ ॥ यह इमलीका पना वातको हरता है और कुछ पित्त कफको करनेवाला, तथा रुचिकर दीपन है ॥ १४८ ॥

अथ निम्बूफलपानकगुणाः।

भागैकं निम्बुजं तोयं षड्भागं शर्करोदकम्।
लवङ्गमरिचैर्मिश्रं पानं पानकमुत्तमम् ॥ १४९ ॥
निम्बूफलभवं पानमत्यम्लं वातनाशनम्।
वह्निदीप्तिकरं रुच्यं समस्ताहारपाचकम् ॥ १५० ॥

टीका—निम्बूका पना—एक भाग नीम्बूका रस, छः भाग सरबत, लौंग मिरचसे युक्त पना पनामें श्रेष्ठ है ॥ १४९ ॥ निंबूका पना बहुत खट्टा,वातहर्ता, अग्निदीपन, रुचिकर, सम्पूर्ण आहारको पकानेवाला है ॥ १५० ॥

अथ धान्यकपानकगुणाः।

शिलायां साधु सम्पिष्टं धान्यकं वस्त्रगालितम्।
शर्करोदकसंयुक्तं कर्पूरादिसुसंस्कृतम् ॥ १५१ ॥
नूतने मृण्मये पात्रे स्थितं पित्तहरं परम् ॥ १५२ ॥

टीका—धनियाका पना—सिलपर अच्छीतरह पिसा हुआ धनिया कपड़छान करके सर्बतके सहित कपूर आदिसे युक्त नवीन मिट्टीके वरतनमें रखाहुआ परम पित्तको हरता है ॥ १५१ ॥ १५२ ॥

अथ काञ्जिगुणाः।

काञ्जिविधिर्वटकावसरे लिखितः।

काञ्जिकं रोचनं रुच्यं पाचनं वह्निदीपनम्।
शूलाजीर्णविबन्धघ्नं कोष्ठशुद्धिकरं परम् ॥ १५३ ॥
न भवेत्काञ्जिकं यत्र तत्र जालिः प्रदीयते ॥ १५४ ॥

अथ जालिगुणाः।

आममाम्रफलं पिष्टं राजिकालवणान्वितम्।
भ्रष्टहिङ्गुसमायुक्तं घोलितं जालिरुच्यते ॥ १५५ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जालिर्हरति जिह्वायाः कुण्ठत्वं कण्ठशोधनी ।
मन्दं मन्दं तु पीता सा रोचनी वह्निबोधिनी ॥ १५६ ॥

टीका—कांजीकी विधि वटकके अवसरमें कही है. कांजी रोचन, रुचिको करनेवाली, पाचन, अग्निदीपन है और शूल, अजीर्ण, विबन्धको हरती तथा परम कोष्ठशुद्धिको करनेवाली है ॥ १५३ ॥ जहांपर कांजी न हो वहांपर जालि दी जाती है ॥ १५४ ॥ कच्चे आमके फलको पीसकर राई और लवणसे युक्त भूनी हींगके सहित घोली हुईको जालि कहते हैं ॥ १५५ ॥ जीभकी कुंठताको जालि हरती है और कण्ठकी शोधन है. मन्द मन्द पीहुई वह रोचन, अग्निको जगानेवाली है ॥ १५६ ॥

अथ तक्रगुणाः ।

तुर्यांशेन जलेन संयुतमतिस्थूलं सदम्लं दधि
प्रायो माहिषमम्बुकेन विमले मृद्भाजने गालयेत् ।
भ्रष्टं हिङ्गु च जीरकं च लवणं राजीं च किञ्चिन्मितां
पिष्ट्वा तत्र विमिश्रयेद्भवति तत्तक्रं न कस्य प्रियम् ॥ १५७॥
तक्रं रुचिकरं वह्निदीपनं पाचनं परम् ।
उदरे ये गदास्तेषां नाशनं तृप्तिकारकम् ॥ १५८ ॥

टीका—चौथाई जलसे युक्त, अतिस्थूल अच्छा खट्टा दही प्रायः भैंसका जलसे विमल मिट्टीके बरतनमें रखे. भूनाहुआ हींग, जीरा, लवण, राई भी कुछ युक्त पीसके उसमें मिलावै. वह मट्ठा किसके प्रिय नहीं होता ॥ १५७ ॥ मट्ठा रुचिकर, दीपन, पाचन और उदरके जो रोग हैं उनको हरता, तृप्तिकारक है ॥ १५८ ॥

अथ दुग्धगुणाः ।

विदाहीन्यन्नपानानि यानि भुङ्क्ते हि मानवः ।
तद्विदाहप्रशान्त्यर्थं भोजनान्ते पयः पिबेत् ॥ १५९ ॥
(दुग्धस्यापरे गुणा उक्ता एव दुग्धवर्गे ।)

टीका—मनुष्य जिन विदाहि अन्नपानोंका भोजन करता है उसके विदाहप्र-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शान्तिके अर्थ भोजनके अन्तमें दुग्ध पीवै ॥ १५९ ॥ दुग्धवर्गमें दुग्धके और गुण कहेही हैं.

अथ सक्तवः (सत्तू.)

धान्यानि भ्राष्ट्रभ्रष्टानि यन्त्रपिष्टानि सक्तवः ॥ १६० ॥

टीका—अनन्तर सत्तू-भाड़में धान्य भूने चक्कीसे पीसेहुए सत्तू हैं ॥ १६० ॥

अथ यवसक्तुगुणाः ।

यवजाः सक्तवः शीता दीपना लघवः सराः ।
कफपित्तहरा रूक्षा लेखनाश्च प्रकीर्तिताः ॥ १६१ ॥
ते पीता बलदा वृष्या बृंहणा भेदनास्तथा ।
तर्पणा मधुरा रुच्याः परिणामे बलापहाः ॥ १६२ ॥
कफपित्तश्रमक्षुत्तृड्वृद्धिनेत्रामयापहाः ।
प्रशस्ता घर्मदाहाढ्यव्यायामार्तशरीरिणाम् ॥ १६३॥

टीका—जवका सत्तू शीतल, दीपन, हलका, सर, कफपित्तको हरता, लेखन कहा है ॥ १६१॥ वे पियेहुए बलको देनेवाले, शुक्रकारक, पुष्ट, भेदन, तपर्ण, मधुर रुचिको करनेवाले और परिणाममें बलको हरते हैं ॥ १६२ ॥ कफ पित्त श्रम क्षुधा तृषावृद्धि नेत्ररोग इनको हरते हैं. घर्मदाहाढ्य, कसरतपीडित, शरीरवालोंको हित हैं ॥ १६३ ॥

अथ चणकसक्तुगुणाः ।

निस्तुषैश्चणकैर्भ्रष्टैस्तुर्यांशैश्च यवैः कृताः ।
सक्तवः शर्करासर्पिर्युक्ता ग्रीष्मेऽतिपूजिताः ॥ १६४ ॥

टीका—अथ चनेजवका सत्तू-छिलकेसे रहित चनोंको भून और चौथाई जवसे बनायाहुआ सत्तू शर्कराघृतसे युक्त ग्रीष्ममें अतिपूजित है ॥ १६४ ॥

अथ शालिसक्तुगुणाः ।

सक्तवः शालिसम्भूता वह्निदा लघवो हिमाः ।
मधुरा ग्राहिणो रुच्याः पथ्याश्च बलशुक्रदाः ॥ १६५ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका--अथ धानका सत्तू-धानका सत्तू अग्निदीपन, हलका, शीतल, मधुर, काबिज, रुचिको करनेवाला, पथ्य, बल, शुक्रको देनेवाला है ॥ १६५ ॥

अथ सामान्यपरिभाषा ।

न भुक्त्वा न रदैश्छित्वा न निशायां न वा बहून् ।
न जलान्तरितानद्भिः सक्तूनद्यान्न केवलान् ॥ १६६ ॥
पृथक् पानं पुनर्दानमामिषं पयसा निशि ।
दन्तच्छेदनमुष्णं च सप्त सक्तुषु वर्जयेत् १६७ ॥

टीका--न भोजन करके, न दांतोंसे काटकर, न रात्रिमें, न बहुत, न जलसे अन्तरित और न केवल सत्तूको खावै ॥ १६६ ॥ अलग पान, फिरसे देनामनांसके साथ, रातमें, दन्तछेदन और गरम यह सात सत्तूमें त्यागदेवै ॥ १६७ ॥

अथ धाना (बहुरी) गुणाः ।

यवास्तु निस्तुषा भ्रष्टाः स्मृता धाना इति स्त्रियाम् ।
धानाः स्युर्दुर्जरा रूक्षास्तृट्प्रदा गुरवश्च ताः ॥ १६८ ॥
तथा मेहकफच्छर्दिनाशिन्यः सम्प्रकीर्तिताः ।

टीका—बेछिलकेके भूने जव स्त्रीलिंगमें धाना इसप्रकार कहाते हैं.धाना दुर्जर,रूखे, तृषा दाहको देनेवाले, भारी हैं तथा प्रमेह कफ वमन इनको हरनेवाले हैं॥१६८॥

अथ लाजागुणाः ।

येषां स्युस्तण्डुलास्तानि धान्यानि सतुषाणि च ॥ १६९ ॥
भ्रष्टानि स्फुटितान्याहुर्लाजानिति मनीषिणः ।
लाजाः स्युर्मधुराः शीता लघवो दीपनाश्च ते ।
स्वल्पमूत्रमला रूक्षा बल्याः पित्तकफच्छिदः ॥ १७० ॥
छर्द्यतीसारदाहास्रमेहमेदस्तृषापहाः ।

टीका--खील-जिनके चावल होते हैं वे छिलकेके सहित भुनेहुए धान विद्वानाने लाजा इसप्रकार कहे हैं ॥ १६९ ॥ खीला मधुर, शीतल, हलके, दीपन होते हैं. वे अल्प मलमूत्रको करनेवाले, रूखे, बलको करनेवाले हैं और पित्तकफको काटनेवाले हैं ॥ १७० ॥ तथा वमन अतीसार दाह रक्त मेद मेह तृषा इनको हरते हैं.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ चिपिटगुणाः ।

शालयः सतुषा आर्द्रा भृष्टा अस्फुटिताश्च तत् ।
कुट्टिताश्चिपिटाः प्रोक्तास्ते स्मृता पृथुका अपि ॥ १७१ ॥
पृथुका गुरवो वातनाशनाः श्लेष्मला अपि ।
सक्षीरा बृंहणा वृष्या बल्या भिन्नमलाश्च ते ॥ १७२ ॥

टीका—अनन्तर चिड़वा–छिलकेवाले धान गीले और भूनेहुए अस्फुटित कूटे हुए चिपिट कहे हैं ॥ १७१ ॥ वे पृथुक भी कहे हैं. चिड़वा भारी, वातहर्ता भी कहा है और दूधके सहित पुष्ट, शुक्रको करनेवाले, मलको अलग करनेवाले हैं ॥ १७२ ॥

अथ होलकगुणाः ।

अर्धपक्वैः शमीधान्यैस्तृणभृष्टैश्च होलकः ॥ १७३ ॥
होलकोऽल्पानिलो मेदःकफदोषत्रयापहः ।
भवेद्यो होलको यस्य स च तत्तद्गुणो भवेत् ॥ १७४ ॥

टीका—आधे पके हुए शिम्बीधान्य तृणसे भूनेहुओंको होल कहा है ॥ १७३॥ होल अलपवात, मेद, कफ, त्रिदोष इनको हरता है. जो जिसका होला होता है वह उसके गुणवाला होता है ॥ १७४ ॥

अथोचीगुणाः ।

मञ्जरी त्वर्द्धपक्का या यवगोधूमयोर्भवेत् ।
तृणानलेन संभृष्टा बुधैरूचीति सा स्मृता ॥ १७५ ॥
ऊची कफप्रदा बल्या लघ्वी पित्तानिलापहा ।

टीका—जव गेहूंकी जो अधपकी बालें होती हैं, तृणाग्निसे भूनीहुई उनको विद्वानोंने ऊची ऐसा कहा है ॥ १७५ ॥ लोकमें उमिया इसप्रकार कहते हैं. ऊंची कफको करनेवाली, बलको हित, हलकी, पित्तवातको हरती है.

अथ कुल्माषगुणाः ।

अर्धस्विन्नास्तु गोधूमा अन्येऽपि चणकादयः ।
कुल्माषा इति कथ्यन्ते शब्दशास्त्रेषु पण्डितैः ॥ १७६ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुल्माषा गुरवो रूक्षा वातला भिन्नवर्चसः ॥ १७७ ॥

टीका--आधे पकायेहुए गेहूं और चने आदिको व्याकरणके पंडितोंने कुल्माष ऐसा कहा है ॥ १७६ ॥ कुल्माष भारी, रूखे, वातको करनेवाले, मलको अलग करनेवाले हैं ॥ १७७ ॥

अथ पललगुणाः ।

पललं तु समाख्यातं सैक्षवं तिलपिष्टकम् ।
पललं मलकृद्वृष्यं वातघ्नं कफपित्तकृत् ॥ १७८ ॥
बृंहणं च गुरु स्निग्धं मूत्राधिक्यनिवर्तकम् ।

टीका--गुडके सहित तिलकी पिट्ठीको पलल कहते हैं. पलल मलकारी, शुक्रको करनेवाला, वातहर्ता, कफपित्तको करनेवाला है ॥ १७८ ॥ पुष्ट, भारी, चिकना और मूत्राधिक्यको दूर करनेवाला है ॥ १७९ ॥

अथ तिलकिट्टगुणाः ।

तिलकिट्टं तु पिण्याकं तथा तिलखलिः स्मृता ॥ १७९ ॥
पिण्याको लेखनो रूक्षो विष्टम्भी दृष्टिदूषणः ।

टीका--तिलकिट्टको पिण्याक तथा तिलखली कहते हैं. खली लेखन, रूक्ष, विष्टंभी, दृष्टिदूषण होती है.

अथ तण्डुलगुणाः ।

तण्डुलो मेहजन्तुघ्नः स नवस्त्वतिदुर्जरः ॥ १७९ ॥
इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे कृतान्नवर्गः समाप्तः ।

टीका--चावल प्रमेह कृमिको हरता और नया अतिदुर्जर होता है ॥ १८० ॥

इति हरीतक्यादिनिघण्टे कृतान्नवर्गः समाप्तः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्रीः ।

अथ

हरीतक्यादिनिघण्टे

वारिवर्गः ।

तत्र पानीयस्य नामानि गुणाश्च ।

पानीयं सलिलं नीरं कीलालं जलमम्बु च ।
आपो वार्वारिकं तोयं पयः पाथस्तथोदकम् ॥
जीवनं वनमम्भोऽर्णोऽमृतं घनरसोऽपि च ॥ १ ॥
पानीयं श्रमनाशनं क्लमहरं मूर्च्छापिपासापहं
तन्द्राछर्दिविबन्धहृद्बलकरं निद्राहरं तर्पणम् ।
हृद्यं गुप्तरसं ह्यजीर्णशमकं नित्यं हितं शीतलं
लघ्वच्छं रसकारणं तु निगते पीयूषवज्जीवनम् ॥ २ ॥

टीका—अब जलके नाम और गुण कहते हैं—पानीय, सलिल, नीर, कीलाल, जल, अमृत, आप, वारि,वारक, तोय, पय, पाथ, उदक, जीवन, अंभ, अर्ण, अमृत, घनरस, ये पानीके नाम हैं ॥ १ ॥ जल श्रमहर्ता, क्लमहर, मूर्च्छा पिपासाको हरता, निद्रा वमन विबन्ध इनको हरता, बलकर, निद्रा हरता, तर्पण, हृद्य, गुप्त-रस, अजीर्णशमक, नित्य, हित, शीतल होता है. हलका, स्वच्छ, रसकारण, अमृतके समान जीवन कहा है ॥ २ ॥

अथ पानीयभेदाः ।

पानीयं मुनिभिः प्रोक्तं दिव्यं भौममिति द्विधा ।
दिव्यं चतुर्विधं प्रोक्तं धाराजं करकाभवम् ॥
तौषारं च तथा हैमं तेषु धारं गुणाधिकम् ॥ ३ ॥

टीका—उसके भेद—मुनियोंने जल दो प्रकारका कहा है. दिव्य और भौम.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दिव्य चारप्रकारका कहा है-धारका, ओलोंका, तुषारका तथा हैम. धारका गुणमें अधिक होता है ॥ ३ ॥

तत्र धारस्य लक्षणं गुणाश्च ।

धाराभिः पतितं तोयं गृहीतं स्फीतवाससा ।
शिलायां वा सुधायां वा धौतायां पतितं च तत् ॥ ४ ॥
सौवर्णे राजते ताम्रे स्फाटिके काचनिर्मिते ।
भाजने मृण्मये वापि स्थापितं धारमुच्यते ॥ ५ ॥
धारं नीरं त्रिदोषघ्नमनिर्देश्यरसं लघु ।
सौम्यं रसायनं बल्यं तर्पणं ह्लादि जीवनम् ॥ ६ ॥
पाचनं मतिकृन्मूर्च्छातन्द्रादाहश्रमक्लमान् ।
तृष्णां हरति चात्यर्थं विशेषात्प्रावृषि स्थितम् ॥ ७ ॥

अथ धाराजलस्य भेदाः ।

धाराजलं च द्विविधं गाङ्गसामुद्रभेदतः ॥ ८ ॥

टीका—धारासे शिलापर, सुधापर वा धोई हुई पृथ्वीपर गिराहुआ साफ कपड़ेमें छानके लियाहुआ ॥ ४ ॥ वह सोनेके चांदीके ताम्बेके स्फटिकके काचके बनेहुए नं। अथवा मिट्टीकेमें रखाहुआ जल धार कहा है ॥ ५ ॥ धारजल त्रिदोष हरता, अनिर्देश्य रस, हलका, सौम्य, रसायन, बलको हित, तर्पण, ल्हादि, जीवन ॥ ६ ॥ पाचन, मतिको करनेवाला, मूर्च्छा तन्द्रा दाह भ्रम क्लम तृषा इनको हरता है. अत्यन्त बिशेषकरके प्रावृट्कालमें स्थित है ॥ ७ ॥ धाराजल दो प्रकारका होता है-गांग और सामुद्र ॥ ८ ॥

अथ गाङ्गसामुद्रयोर्लक्षणं गुणाश्च ।

आकाशगङ्गासम्बन्धि जलमादाय दिग्गजाः ।
मेघैरन्तरिता वृष्टिं कुर्वन्तीति वचः सताम् ॥ ९ ॥
गाङ्गमाश्वयुजे मासि प्रायो वर्षति वारिदः ।
सर्वथा तज्जलं देयं तथैव चरके वचः ॥ १० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्थापितं हैमजे पात्रे राजते मृण्मयेऽपि वा ।
शाल्यन्नं येन संसिक्तं भवेदक्लेदि वर्णवत् ॥ ११ ॥
तद्गाङ्गं सर्वदोषघ्नं ज्ञेयं सामुद्रमन्यथा ।
तत्तु सक्षारवलणं शुक्रदृष्टिबलापहम् ॥ १२ ॥
विस्रं च दोषलं तीक्ष्णं सर्वकर्मसमाहितम् ।
सामुद्रं त्वाश्विने मासि गुणैर्गाङ्गवदादिशेत् ॥ १३ ॥
यतोऽगस्त्यस्य दिव्यर्षेरुदयात्सकलं जलम् ।
निर्मलं निर्विषं स्वादु शुक्रलं स्याददोषलम् ॥ १४ ॥
फूत्कारविषवातेन नागानां व्योमचारिणाम् ।
वर्षासु सविषं तोयं दिव्यमप्याश्विनं विना ॥ १५ ॥

टीका—उसके लक्षण कहते हैं–दिग्गज आकाशगंगासम्बन्धि जल लेकर मेघोंसे अन्तरित वृष्टिको करते हैं, इसप्रकार सत्पुरुषोंका वचन है ॥ ९ ॥ मेघ गंगाजलको प्रायः आश्विनके महीनेमें बरसाते हैं· सर्वथा वह जल देनेयोग्य है· वैसाही चरकका वचन है ॥ १० ॥ सोनेके वा चान्दीके अथवा मिट्टीके पात्रमें रखे हुएमें धान भिजोये हुए क्लेदरहित वर्णवाला होवे ॥ ११ ॥ वह गङ्गाजल सब दोषोंको हरता जानना चाहिये· इससे विपरीत सामुद्र जल क्षारके सहित, शुक्र दृष्टिबलको हरता है ॥ १२ ॥ दुर्गन्धियुक्त दोषको करनेवाला तीखा सर्व कर्म समाहित है और सामुद्र आश्विनके महीनेमें गुणमें गंगाजलके समान होता है ॥१३॥ क्योंकि अगस्त्यऋषिके उदयसे सम्पूर्ण जल निर्मल और निर्विष, मधुर, शुक्रको करनेवाला, अदोषल हो जाता है ॥ १४ ॥ व्योमचारी सांपोंके फूत्कार विषवातसे आश्विनके विना वर्षामें दिव्यभी जल सविष होता है ॥ १५ ॥

अथानार्त्तवानां गुणाः ।

अनार्त्तवं प्रमुञ्चन्ति वारि वारिधरास्तु यत् ।
तत्त्रिदोषाय सर्वेषां देहिनां परिकीर्तितम् ॥ १६ ॥
अनार्त्तवं तु पौषादिचतुर्मासगतं भवेत् ।

टीका—जो बेऋतुका जल मेघ छोड़ते हैं वह सब देहियोंके त्रिदोषके अर्थ कहा है ॥ १६ ॥ बेऋतुका अर्थात् पौषादि मासचतुष्टयका विषय है·

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ करकाजलस्य गुणाः ।

दिव्यवाय्वग्निसंयोगात्संहताः खात्पतन्ति याः ॥ १७ ॥
पाषाणषण्डवच्चापस्ताः कारिक्योऽमृतोपमाः ।
कारिकाजं जलं रूक्षं विशदं गुरु च स्थिरम् ॥ १८ ॥
दारुणं शीतलं सान्द्रं पित्तहृत्कफवातकृत् ।

टीका—अब ओलोंके जलका लक्षण और गुण ॥ १७ ॥ अन्तिरिक्षवायु अग्निके संयोगसे संहत पत्थरके टुकड़ेके समान जल आकाशसे जो गिरते हैं वे ओले अमृतके समान होते हैं. ओलोंका पानी रूखा विशद भारी स्थिर है ॥१८॥ दारुण, शीतल, सान्द्र, पित्त हरता, कफवातको करनेवाला है.

अथ तुषारजलस्य लक्षणानि गुणाश्च ।

अपि नद्याः समुद्रान्ते वह्निरापस्तदुद्भवाः ॥ १९ ॥
धूमावयवनिर्मुक्तास्तुषाराख्यास्तु ताः स्मृताः ।
अपथ्याः प्राणिनां प्रायो भूरुहाणां तु नो हिताः ॥२०॥
तुषाराम्बु हिमं रूक्षं स्याद्वातलमपित्तलम् ।
कफोरुस्तम्भकण्ठाग्निमेहकण्ठादिरोगनुत् ॥ २१ ॥

टीका—नदीसे लेकर समुद्रपर्यन्त अग्नि होती है उससे उत्पन्न धूमांशरहित ॥ १९ ॥ वह जल तुषारनामक कहा है नदीसे लेकर समुद्रपर्यंत अग्नि होता है उस अग्निसे उत्पन्न धूमांशरहित जल तुषारनाम है. तुष और तुषार इसप्रकारभी लोकमें कहते हैं. यह प्रायः प्राणियोंको अहित है और वृक्षादिकोंको हित नहीं है ॥२०॥ तुषारजल शीतल रूखा होता है और वातको करनेवाला तथा पित्तको करनेवाला है और कफ ऊरुस्तंभ कण्ठरोग अग्निमान्द्य प्रमेह कण्ठादिरोगको हरता है ॥२१॥

अथ हैमजलस्य लक्षणानि गुणाश्च ।

हिमवच्छिखरादिभ्यो द्रवीभूयाभिवर्षति ।
यत्तदेव हिमं हैमं जलमाहुर्मनीषिणः ॥ २२ ॥
हिमाम्बु शीतं पित्तघ्नं गुरु वातविवर्धनम् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(हैमं जलम्-कुआशाजलम् । अन्येतु । और्वानलधूमेरित मम्बु समुद्रस्य यद्घनीभूतम्।पवनानीतमुदीच्यां तद्धिममिति कथ्यते सद्भिः।। हिमं कु आशा इति लोके.)

हिमं तु शीतलं रूक्षं दारुणं सूक्ष्ममित्यपि ॥ २३ ॥
न तद्दूषयते वातं न च पित्तं न वा कफम् ।

टीका—हिमालयके शिखरादियोंसे निकलके जो बरसता है वह हिम है, उसके जलको हैमजल मुनियोंने कहा है ॥२ ॥ बरफका पानी शीतल,पित्तको हरता,भारी, वायुको बढ़ानेवाला है. (वडवानलके धूमसे प्रेरित समुद्रका जल जो गाढ़ाहुआ वायुसे लायाहुआ उत्तरमें होता है उसको हिम ऐसा विद्वानोंने कहा है लोकमें 'कुआशा' ऐसा कहते हैं ।) बरफ शीतलः रूखा, दारुण, सूक्ष्म भी है ॥ २३ ॥ वह न वातको न पित्तको न कफको बिगाड़ता है.

अथ भौमजलस्य भेदा लक्षणानि गुणाश्च ।

भौममम्भो निगदितं प्रथमं त्रिविधं बुधैः ॥ २४ ॥
जाङ्गलं परमानूपं ततः साधारणं क्रमात् ।
अल्पोदकोऽल्पवृक्षश्च पित्तरक्तामयान्वितः ॥ २५ ॥
ज्ञातव्यो जाङ्गलो देशस्तत्रत्यं जाङ्गलं जलम् ।
बह्वम्बुर्बहुवृक्षश्च वातश्लेष्मामयान्वितः ॥ २६ ॥
देशोऽनूप इति ख्यात आनूपं तद्भवं जलम् ।
मिश्रचिह्नस्तु यो देशः स हि साधारणः स्मृतः ॥ २७ ॥
तस्मिन्देशे यदुदकं तत्तु साधारणं स्मृतम् ।
जाङ्गलं सलिलं रूक्षं लवणं लघु पित्तनुत् ॥ २८ ॥
वह्निकृत्कफकृत्पथ्यं विकारान्हरते बहून् ।
आनूपं वार्यभिष्यन्दि स्वादु स्निग्धं घनं गुरु ॥ २९ ॥
वह्निकृत्कफकृद्धृद्यं विकारान् हरते बहून् ।
साधारणं तु मधुरं दीपनं शीतलं लघु ॥ ३० ॥
तर्पणं रोचनं तृष्णादाहदोषत्रयप्रणुत् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—भूमिका जल और उसके भेद–पंडितोंने भूमिका जल तीनप्रकारकी प्रथम कहा है ॥ २४ ॥ क्रमसे जाङ्गल दूसरा आनूप और साधारण उसके लक्षण और गुण–थोड़ा जल, थोडे वृक्ष, पित्तरक्तरोगयुक्त॥२५॥ऐसा देश जङ्गल जानना. उसमेंका जल जाङ्गल जानना चाहिये. बहुत जल, बहुत वृक्ष, वातकफरोगसे युक्त॥२६॥ ऐसा अनूपदेश प्रसिद्ध है. वहांका जल अनूप है और मिलेहुए देशवाला जो लक्षण है वह साधारण कहा है ॥ २७ ॥ उस देशमें जो जल होता है वह साधारण कहा है. जाङ्गलजल रूखा, नमकीन, हलका, पित्त हरता॥२८॥अग्निको करनेवाला, कफको करनेवाला, हृद्य और बहुतसे विकारोंको हरता है. आनूपजल अभिष्यन्दि होता है और मधुर, चिकना, भारी होताहै ॥२९॥ अग्निको करनेवाला, कफकारी, हृद्य तथा बहुत रोगोंको हरता है. साधारण जल मधुर, दीपन, शीतल, हलका ॥ ३० ॥ तर्पण, रोचन होता है. तृषा, दाह, तीनों दोष इनको हरता है.

अथ नादेयस्य लक्षणं गुणाश्च ।

नद्या नदस्य वा नीरं नादेयमिति कीर्तितम् ॥ ३१ ॥
नादेयमुदकं रूक्षं वातलं लघु दीपनम् ।
अनभिष्यन्दि विशदं कटुकं कफपित्तनुत् ॥ ३२ ॥
नद्यः शीघ्रवहा लघ्व्यः सर्वाश्चाप्यमलोदकाः ।
गुर्व्यः शैवलसंछन्ना मन्दगाः कलुषाश्च याः ॥ ३३ ॥
हिमवत्प्रभवाः पथ्या नद्योऽश्माहतपाथसः ।
गङ्गाशतद्रुसरयुयमुनाद्या गुणोत्तमाः ॥ ३४ ॥
सह्यःशैलभवा नद्यो वेणागोदावरीमुखाः ।
कुर्वन्ति प्रायशः कुष्ठमीषद्वातकफावहाः ॥ ३५ ॥
नदीसरस्तडागस्थे कूपप्रस्रवणादिजे ।
उदके देशभेदेन गुणान् दोषांश्च लक्षयेत् ॥ ३६ ॥

टीका—नदका अथवा नदीका जो जल है उसको नादेय ऐसा कहते हैं ॥३१॥ नादेय जल रूखा, वातको करनेवाला, हलका, दीपन, अनभिष्यन्दि, विशद, कटुक, कफपित्तको हरता कहा है ॥ ३२ ॥ शीघ्र वहनेवाली और स्वच्छ उदकवाली सब नदियां हलकी होती हैं. सेवारमें ढकी मन्द चलनेवाली और जो काली होती है वे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भारी हैं ॥३३॥ हिमालयसे निकली और पाषाणासहित जलवाली नदियां हित हैं. गङ्गा सतलुज सरयू यमुना आदि गुणमें उत्तम हैं ॥ ३४ ॥ सह्य पहाडसे निकली वेणा गोदावरी प्रमुख हैं प्रायः कुष्ठको करती है और कुछ वातकफको भी करती है ॥३५॥नदी सरोवर तलाव इनका और कूँवा झरना आदिके जलोंमे देशभेदसे गुणदोषोंको जाने ॥ ३६ ॥

अथौद्भिदस्य लक्षणं गुणाश्च ।

विदार्य भूमिं निम्नां यन्मत्या धारया स्रवेत् ।
तत्तोयमौद्भिदं नाम वदन्तीति महर्षयः ॥ ३७ ॥
औद्भिदं वारि पित्तघ्नमविदाह्यतिशीतलम् ।
प्रीणनं मधुरं बल्यमीषद्वातकरं लघु ॥ ३८ ॥

टीका—अनन्तर औद्भिदका लक्षण और गुण—भूमिको ढालवां खनके बड़ी धारसे जो जल गिरता है उस जलको औद्भिद ऐसा महर्षियोंने कहा है ॥ ३७ ॥ औद्भिद जल पित्त हरता,अविदाहि,अति शीतल होता है,और प्रीणन, मधुर, ब[लको] हित, थोड़ा वातको करनेवाला, हलका होता है ॥ ३८ ॥

अथ नैर्झरस्य लक्षणं गुणाश्च ।

शैलसानुस्रवन्वारि प्रवाहो निर्झरो झरः ।
स तु प्रस्रवणश्चापि तत्रत्यं नैर्झरं जलम् ॥ ३९ ॥
नैर्झरं रुचिकृन्नीरं कफघ्नं दीपनं लघु ।
मधुरं कटुपाकं च वातलं स्यादपित्तलम् ॥ ४९ ॥

टीका—पहाड़ी तराईसे झिरनेवाला जलप्रवाह जो आता है उसको निर्झर और प्रस्रवण भी कहते हैं. उसका पानी नैर्झर है ॥३९॥ झरनेका पानी रुचिको करनेवाला, कफ हरता, दीपन, हलका, मधुर, पाकमें कटु, वात तथा पित्तको करनेवाला है ॥ ४० ॥

अथ सारसस्य लक्षणं गुणाश्च ।

नद्याः शैलादिरुद्धाया यत्र संसृत्य तिष्ठति ।
तत्सरो जलसंछन्नं तदम्भः सारसं स्मृतम् ॥ ४१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सारसं सलिलं बल्यं तृष्णाघ्नं मधुरं लघु ।
रोचनं तुवरं रूक्षं बद्धमूत्रमलं स्मृतम् ॥ ४२ ॥

टीका—अब सारसका लक्षण-पहाड़ आदिसे रुकीहुई नदीका जल जहांपर बहकर ठहरता है वह आच्छादित सरोवर है. उसका पानी सारस कहा है ॥४१॥ सारस जल बलको हित, तृषाको हरता, मधुर, हलका, रोचन, कसेला, रूखा, मल-मूत्रको रोकनेवाला कहा है ॥ ४२ ॥

अथ ताडागस्य लक्षणं गुणाश्च ।

प्रशस्तभूमिभागस्थो बहुसंवत्सरोषितः ।
जलाशयस्तडागः स्यात्ताडागं तज्जलं स्मृतम् ॥ ४३ ॥
ताडागमुदकं स्वादु कषायं कटुपाकि च ।
वातलं बद्धविण्मूत्रमस्रक्पित्तकफापहम् ॥ ४४ ॥

टीका—प्रशस्तभूमिभागका बहुत बरसका पुराना जलाशय तालाब होता है, उसका पानी ताडाग कहा है ॥४३॥ तालाबका पानी मधुर, कसेला, पाकमें कटु, वातल, मलमूत्रको बांधनेवाला और रक्त पित्त कफ इनको हरता है ॥ ४४ ॥

अथ वाप्यजलस्य लक्षणं गुणाश्च ।

पाषाणैरिष्टिकाभिर्वा बद्धः कूपो बृहत्तरः ।
ससोपाना भवेद्वापी तज्जलं वाप्यमुच्यते ॥ ४५ ॥
वाप्यं वारि यदि क्षारं पित्तकृत्कफवातहृत् ।
तदेव मिष्टं कफकृद वातपित्तहरं भवेत् ॥ ४६ ॥

टीका—पत्थर अथवा ईंटोंसे बनाया हुआ बड़ा कूवा यदि सीढ़ियोंके सहित हो तो वह बावड़ी है और उसके जलको वाप्य कहते हैं ॥४५॥ बावडीका पानी यदि खारा हो तो वह पित्त करनेवाला, कफवातको हरता कहा है. वही मीठा कफ करनेवाला, वातपित्तको हरता है ॥ ४६ ॥

अथ कौपजलस्य लक्षणं गुणाश्च ।

भूमौ खातोऽल्पविस्तारो गम्भीरो मण्डलाकृतिः ।
बद्धोऽबद्धः स कूपः स्यात्तदम्भः कौपमुच्यते ॥ ४७ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कौपं पयो यदि स्वादु त्रिदोषघ्नं हितं लघु ।
तत्क्षारं कफवातघ्नं दीपनं पित्तकृत्परम् ॥ ४८ ॥

टीका—अनन्तर कूवेके जलका लक्षण और गुण—भूमिमें थोड़ा चौड़ा, गह गोल, खोदाहुआ बँधा वा बे बँधाहुआ कूप है. उसका जल कौप कहा ॥ ४७ ॥ कूवेका पानी यदि मधुर हो तौ त्रिदोष हरता, हलका, हित होता और वह खारा कफवातको हरता, दीपन, अत्यन्त पित्त करनेवाला है ॥ ४८

अथ चौञ्जजलस्य लक्षणं गुणाश्च ।

शिलाकीर्णं स्वयं श्वभ्रं नीलाञ्जनसमोदकम् ।
लतावितानसंछन्नं चौञ्जमित्यभिधीयते ॥ ४९ ॥
अश्मादिभिरबद्धं यत्तच्चौञ्जमिति वापरे ।
तत्रत्यमुदकं चौञ्जं मुनिभिस्तदुदाहृतम् ॥ ५० ॥
चौञ्जं वह्निकरं नीरं रूक्षं कफहरं लघु ।
मधुरं पित्तनुद्रुच्यं पाचनं विशदं स्मृतम् ॥ ५१ ॥

टीका—अनन्तर चौञ्जका लक्षण और गुण-शिलाओंसे आकीर्ण, खुदाहुआ गढ़ा सुरमेके समान उदक लताओंके फैलावसे ढकाहुआ चौंज ऐसा कहा है ॥ ४९ ॥ और आचार्य पत्थर आदिसे बँधेहुएको चौंज ऐसा कहते हैं. उसमेके जलको चौंज ऐसा मुनियोंने कहा है ॥ ५० ॥ चौंज जल अग्निको करनेवाला, रूखा, कफ हरता, मधुर, पित्त हरता, रुचिको करनेवाला, पाचन, विशद कहा है ॥ ५१ ॥

अथ पाल्वलस्य लक्षणं गुणाश्च ।

अल्पं सरः पल्वलं स्याद्यत्र चन्द्रर्क्षगे रवौ ।
(रवौ सूर्ये चन्द्रर्क्षे कर्कराशिस्थे श्रावणे मासि इति यावत् ।
"चन्द्रर्क्षे मृगशिरस्तत्रगे इति मुख्यपाठः" ।)
न तिष्ठति जलं किञ्चित्तत्रत्यं वारि पाल्वलम् ॥ ५२ ॥
पाल्वलं वर्त्यभिष्यन्दि गुरु स्वादु त्रिदोषकृत् ।

टीका—अनन्तर पाल्वलका लक्षण और गुण—श्रावणमासमें छोटी गढई जो होती है उसको पल्वल कहते हैं. अथवा चन्द्रर्क्ष अर्थात् मृगशिरमें जब सूर्य होते हैं. तब जिसमें जल नहीं रहता उसमेंका जल पाल्वल है ॥५२॥ गढईका जल अभिष्यन्दि, भारी, मधुर, त्रिदोष करनेवाला है.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेद विद्यापीठ महाविद्यालय दिल्ली

अथ चिकिरजलस्य लक्षणं गुणाश्च ।

नद्यादिनिकटे भूमिर्या भवेद्वालुकामयी ॥ ५३ ॥
उद्भाव्यते ततो यत्तु तज्जलं चिकिरं विदुः ।
चिकिरं शीतलं स्वच्छं निर्दोषं लघु च स्मृतम् ॥ ५४ ॥
तुवरं स्वादु पित्तघ्नं क्षारं तत्पित्तलं मनाक् ।

टीका—नदीआदिके निकट जो रेतीकी जमीन होती है ॥ ५३ ॥ उससे जो जल निकलता है, उस जलको चिकिर कहते हैं. चिकिर शीतल, स्वच्छ, निर्दोष, हलका कहा है ॥ ५४ ॥ कसेला, मधुर, पित्त हरता, भारी और वह थोड़ा पित्तको करनेवाला है.

अथ कैदारस्य लक्षणं गुणाश्च ।

केदारं क्षेत्रमुद्दिष्टं कैदारं तज्जलं स्मृतम् ॥ ५५ ॥
कैदारं वार्यभिष्यन्दि मधुरं गुरु दोषकृत् ।

टीका—केदार खेतको कहते हैं. और उसमेंके जलको कैदार कहते हैं ॥ ५५ ॥ कैदार जल अभिष्यन्दी, मधुर, भारी, दोषको करनेवाला है.

अथ वार्षिकजललक्षणगुणाः ।

वार्षिकं तदहर्वृष्टं भूमिस्थमहितं जलम् ॥ ५६ ॥
त्रिरात्रमुषितं तत्तु प्रसन्नममृतोपमम् ।

टीका—दिनका बरसाहुआ जमीनका जो जल सो वार्षिक है, वह अहित होता है ॥ ५६ ॥ और तीनदिनका रखाहुआ वह स्वच्छ अमृतके समान होता है ।

अथ ऋतुपरत्वे जलगुणाः ।

हेमन्ते सारसं तोयं ताडागं वा हितं स्मृतम् ॥ ५७ ॥
हेमन्ते विहितं तोयं शिशिरेऽपि प्रशस्यते ।
वसन्तग्रीष्मयोः कौपं वाप्यं वा नैर्झरं जलम् ॥ ५८ ॥
नादेयं वारि नाऽऽदेयं वसन्तग्रीष्मयोर्बुधैः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषवद्वनवृक्षाणां पत्राद्यैर्दूषितं च यत् ॥ ५९ ॥
औद्भिदं वान्तरिक्षं वा कौपं वा प्रावृषि स्मृतम् ।
शस्तं शरदि नादेयं नीरमंशूदकं परम् ॥ ६० ॥
दिवा रविकरैर्जुष्टं निशि शीतकरांशुभिः ।
ज्ञेयमंशूदकं नाम स्निग्धं दोषत्रयापहम् ॥ ६१ ॥
अनभिष्यन्दि निर्दोषमान्तरिक्षजलोपमम् ।
बल्यं रसायनं मेध्यं शीतं लघु सुधासमम् ॥ ६२ ॥

रविकरैर्जुष्टमित्युक्ते दिवापदं समस्तदिवसप्राप्त्यर्थं शीतकरांशुभिर्जुष्टमित्युक्ते निशीतिपदं समस्तरात्रिप्राप्त्यर्थम् । अन्यच्च—'शरदि स्वच्छमुदयादगस्त्यस्याखिलं हितम्' । वृद्धसुश्रुतस्तु ।

पौषे वारि सरोजातं माघे तत्तु तडागजम् ।
फाल्गुने कूपसम्भूतं चैत्रे चौञ्ज्यं हितं मतम् ॥ ६३ ॥
वैशाखे नैर्झरं नीरं ज्येष्ठे शस्तं तथौद्भिदम् ।
आषाढे शस्यते कौपं श्रावणे दिव्यमेव च ॥ ६४ ॥
भाद्रे कौप्यं पयः शस्तमाश्विने चौञ्ज्यमेव च ।
कार्तिके मार्गशीर्षे च जलमात्रं प्रशस्यते ॥ ६५ ॥

टीका—अनन्तर हेमन्तादिकालविशेषमें विहित जलविशेषको कहते हैं—हेमन्तमें सारस जल अथवा तालाबका हित कहा है ॥५७॥ हेमन्तमें कहाहुआ जल शिशिरमें भी प्रशस्त है. वसन्तग्रीष्ममें कुवेका, बावड़ीका, झरनेका जल ॥५८॥ वसन्त और ग्रीष्मकालमें नदीका नहीं ग्राह्य है; क्योंकि विषवाले वनवृक्षोंके पत्रआदिसे दूषित होता है ॥५९॥ औद्भिद आन्तरिक्ष कौप ये जल प्रावृट्कालमें कहे हैं. शरदमें नदीका और अंशूदक जल परम प्रशस्त है ॥ ६० ॥ दिनमें सूर्यकी किरणोंसे जुष्ट और रातमें चंद्रकी किरणोंसे सेवितको अंशूदक नाम जानना चाहिये. वह चिकना, दोषत्रयको हरता है ॥ ६१ ॥ और अनभिष्यन्दि, दोषरहित, आन्तरिक्ष जलके समानहोता है. बलको हित रसायन मेध्य शीतल हलका अमृतके समान होता है ॥ ६२ ॥ सूर्यकी किरणोंसे जुष्ट इसप्रकारके कहनेसे दिवापद समस्त दिवसप्राप्तिके अर्थ

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

है. चन्द्रकी किरणोंसे जुष्ट इसप्रकारके कहनेसे रात्रिपद समस्त रात्रिप्राप्त्यर्थ है. औरभी-शरदमें अगस्तिके उदयसे संपूर्ण जल स्वच्छ होजाता है। वृद्धश्रुतने भी कहा है-पौषमें सरोवरका पानी, माघमें तालाबका पानी, फाल्गुनमें कूवेका पानी, चैत्रमें जौहड़का पानी हित कहा है ॥ ६६ ॥ वैशाखमें झरनेका जल और ज्येष्ठमें औद्भिद प्रशस्त है. आषाढमें कूवेका और श्रावणमें आन्तरिक्ष प्रशस्त है ॥ ६४ ॥ भाद्रपदमें कूवेका जल प्रशस्त होता है. आश्विनमें चौञ्य, कार्तिक और मार्गशीर्षमें जलमात्र प्रशस्त है ॥ ६५ ॥

अथ जलग्रहणकालः ।

भौमानामम्भसां प्रायो ग्रहणं प्रातरिष्यते ।
शीतत्वं निर्मलत्वं च यतस्तेषां मता गुणाः ॥ ६६ ॥

टीका—जलग्रहणका काल-प्रायः भूमिके जलका ग्रहण प्रातःकालमें प्रशस्त है. क्योंकि शीतलता और निर्मलता उनका गुण है ॥ ६६ ॥

अथ जलपानविधिः ।

अत्यम्बुपानान्न विपच्यतेऽन्नं निरम्बुपानाच्च स एव दोषः ।
तस्मान्नरो वह्निविवर्धनाय मुहुर्मुहुर्वारि पिबेदभूरि ॥ ६७ ॥

टीका—अधिक जलके पीनेसे अन्नपरिपाक नहीं होता और जलके न पीनेसे वही दोष होता है, इसवास्ते मनुष्य अग्निवृद्धिके अर्थ थोड़े जलको वारंवार पीवै ॥६७॥

अथ शीतजलपानगुणाः ।

मूर्च्छापित्तोष्णदाहेषु विषे रक्ते मदात्यये ।
श्रमे भ्रमे विदग्धेऽन्ने तमके वमथौ तथा ॥
ऊर्ध्वगे रक्तपित्ते च शीतमम्बु प्रशस्यते ॥ ६८ ॥

टीका—अब शीतलजल पानका विषय—मूर्च्छा, पित्त, उष्ण, दाहमें और विष, रक्त, मदात्यय, श्रम, भ्रम, विदग्ध अन्न, तमकमें तथा वमनमें, उर्ध्वग रक्तपित्तमें भी शीतल जल प्रशस्त है ॥ ६८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ शीतजलपाननिषेधः।

पार्श्वशूले प्रतिश्याये वातरोगे गलग्रहे।
आध्माने स्तिमिते कोष्ठे सद्यः शुद्धौ नवज्वरे ॥ ६९ ॥
अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषु विद्रधौ।
हिक्कायां स्नेहपाने च शीताम्बु परिवर्जयेत् ॥ ७० ॥

टीका—पार्श्वशूलमें, प्रतिश्यायमें, वातरोगमें, गलग्रहमें, आध्मानमें, स्तिमित कोष्ठमें, सद्यःशुद्धिमें, नवज्वरमें और अरुचि, संग्रहणी, बायगोला, श्वास, कास, इनमें, विद्रधिमें, हिचकीमें, स्नेहपानमें भी शीतलजल त्यागदेवै ॥ ६९ ॥ ७० ॥

अथाल्पजलपानविषयाः।

अरोचके प्रतिश्याये मन्देऽग्नौ श्वयथौ क्षये।
मुखप्रसेके जठरे कुष्ठे नेत्रामये ज्वरे ॥ ७१ ॥
व्रणे च मधुमेहे च पिबेत्पानीयमल्पकम् ॥ ७२ ॥

टीका—अरुचि, प्रतिश्याय, मन्दाग्नि, सूजन, क्षय, मुखप्रसेक, उदररोग, कुष्ठ, नेत्ररोग, ज्वर व्रणमें, मधु प्रमेहमें भी थोड़ा जल पीवै ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

अथ जलपानावश्यकता।

जीवानां जीवनं जीवो जगत्सर्वं तु तन्मयम्।
नातोऽत्यन्तनिषेधेन कदाचिद्वारि वार्यते ॥ ७३ ॥
हारीतश्च।
तृष्णा गरीयसी घोरा सद्यः प्राणविनाशिनी।
तस्माद्देयं तृषार्ताय पानीयं प्राणधारणम् ॥ ७४ ॥
तृषितो मोहमायाति मोहात्प्राणान् विमुञ्चति।
अतः सर्वास्ववस्थासु न क्वचिद्वारि वर्जयेत् ॥ ७५ ॥

टीका—जल पीनेकी आवश्यकता–जल प्राणियोंका प्राण है और सम्पूर्ण जगत तन्मय है, इसवास्ते अत्यन्त निषेधमें भी जल कदाचित भी मना नहीं है ॥ ७३ ॥ हारीतने कहा है–बढ़ी तृषा घोर सद्यः प्राणको हरनेवाली है, इसवास्ते तृषासे पी-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डितके अर्थ जल प्राणधारण है ॥ ७४ ॥ प्याससे मोहको प्राप्त होता है, मोहसे प्राणको छोड़देता है, इसवास्ते सब अवस्थामें कहींपर जलको न त्यागदेवै ॥७५॥

अथ प्रशस्तजलम्।

अगन्धमव्यक्तरसं सुशीतं तर्षनाशनम्।
अच्छं लघु च हृद्यं च तोयं गुणवदुच्यते ॥ ७६ ॥

टीका—अब प्रशस्त जल-स्वच्छ हलका और हृद्य ऐसा जल स्वच्छ कहा है, गन्धरहित अव्यक्तरस अच्छा कहा है ॥ ७६ ॥

अथ निन्दितजलम्।

पिच्छिलं कृमिलं क्लिन्नं पर्णशैवालकर्दमैः।
विवर्णं विरसं सान्द्रं दुर्गन्धं निन्दितं जलम् ॥ ७७ ॥
कलुषं छन्नमम्भोजपर्णनीलीतृणादिभिः।
दुःस्पर्शनमसंस्पृष्टं सौरचान्द्रमरीचिभिः ॥ ७८ ॥
अनार्तवं वार्षिकं तु प्रथमं तच्च भूमिगम्।
व्यापन्नं परिहर्त्तव्यं सर्वदोषप्रकोपनम् ॥ ७९ ॥
तत्कुर्यात्स्नानपानाभ्यां तृष्णाध्मानचिरज्वरान्।
कासाग्निमान्द्याभिष्यन्दकण्डूगण्डादिकं तथा ॥ ८० ॥

टीका—पिच्छिल, कृमियुक्त और पत्ता सेवाल कीचड़ इनसे सड़ाहुआ, विवर्ण, विरस, गंदला, दुर्गन्धयुक्त, रखाहुआ जल ॥ ७७ ॥ काला और कमलपत्ते नीलतृण आदियोंसे ढकाहुआ, दुःस्पर्श और सूर्य तथा चांदकी किरणोंसे स्पर्श नहीं कियागया ॥ ७८ ॥ बेऋतुका, वार्षिकका पहिला और वह जमीनपरका व्यापन्नजल त्यागनेयोग्य व सब दोषोंको प्रकोप करनेवाला है ॥७९॥ वह स्नान और पानसे तृषा,आध्मान, पुराना ज्वर इनको करता है और कास, अग्निमांद्य, अभिष्यन्द, कण्डू तथा गण्डादिक, इनको करता है ॥ ८० ॥

अथ निन्दितजलशोधनप्रकारः।

निन्दितं चापि पानीयं क्वथितं सूर्यतापितम्।
सुवर्णं रजतं लोहं पाषाणं सिकतामपि ॥ ८१ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भृशं सन्ताप्य निर्वाप्य सप्तधा साधितं तथा ।
कर्पूरजातिपुन्नागपाटलादिसुवासितम् ॥ ८२ ॥
गालितं सान्द्रवस्त्रेण क्षुद्रजन्तुविवर्जितम् ।
स्वच्छं कनकमुक्ताद्यैः शुद्धं स्याद्दोषवर्जितम् ॥ ८३ ॥
पर्णमूलबिसग्रन्थिमुक्ताकनकशैवलैः ।
गोमेदेन च वस्त्रेण कुर्यादम्बुप्रसादनम् ॥ ८४ ॥

टीका—अनंतर दुष्टजलको निर्दोष करनेका उपाय–निंदित भी जल औटाया-हुआ और सूर्यके द्वारा गरम हुआ तथा सोना, चांदी, लोहा, पत्थर और सिकता भी इनको ॥ ८१ ॥ खूब गरम करके सातवार बुझाकर सिद्ध कियाहुआ और कपूर, चमेली, सुफेद कमल और पाटला आदिसे सुवासित ॥ ८२ ॥ पवित्र, सान्द्र (गाढ़े) कपड़ेसे छनाहुआ, क्षुद्रजन्तुसे रहित, स्वच्छ, सोना मोती आदिसे शुद्ध, दोषवर्जित ॥ ८३ ॥ पत्ते मूल बिस गांठ मोती सोना सेवाल इनसे और गोमेद तथा वस्त्रसे जलको स्वच्छ करै ॥ ८४ ॥

अथ पीतजलपाकविधिः ।

पीतं जलं जीर्यति यामयुग्माद्यामैकमात्राच्छृतशीतलं च ।
तदर्द्धमात्रेण शृतं कदुष्णं पयःप्रपाके त्रय एव कालाः ॥ ८५ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे वारिवर्गः समाप्तः ।

टीका—अनन्तर पियेहुए जलकी पाकविधि–कच्चा पानी पियाहुआ दो पहरसे पचता है और औटाके शीतल कियाहुआ एक पहरमें पचता है. और औटायाहुआ कुछ गुनगुना पानी आधे प्रहरमें पचता है. जलके पाकमें तीनही काल हैं ॥ ८५ ॥

इति हरीतक्यादिनिघण्टे वारिवर्गः समाप्तः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ

हरीतक्यादिनिघण्टे

दुग्धवर्गः।

दुग्धस्य नामानि गुणाश्च।

दुग्धं क्षीरं पयः स्तन्यं बालजीवनमित्यपि।
दुग्धं सुमधुरं स्निग्धं वातपित्तहरं सरम्॥ १॥
सद्यः शुक्रकरं शीतं सात्म्यं सर्वशरीरिणाम्।
जीवनं बृंहणं बल्यं मेध्यं वाजीकरं परम्॥ २॥
वयःस्थापनमायुष्यं सन्धिकारि रसायनम्।
विरेकवान्तिबस्तीनां तुल्यमोजोविवर्धनम्॥ ३॥
जीर्णज्वरे मनोरोगे शोषमूर्च्छाभ्रमेषु च।
ग्रहण्यां पाण्डुरोगे च दाहे तृषि हृदामये॥ ४॥
शूलोदावर्त्तगुल्मेषु बस्तिरोगे गुदाङ्कुरे।
रक्तपित्तेऽतिसारे च योनिरोगे श्रमे क्लमे।
गर्भस्रावे च सततं हितं मुनिवरैः स्मृतम्॥ ५॥
बालवृद्धक्षतक्षीणाः क्षुद्व्यवायकृशाश्च ये।
तेभ्यः सदातिशयितं हितमेतदुदाहृतम्॥ ६॥

टीका—अब दुग्धके नाम और गुण कहते हैं-दुग्ध, क्षीर, पय, स्तन्य, बालजीवन, ये दूधके नाम हैं. दूध मधुर, चिकना, वातपित्तको हरता, सर॥ १॥ तत्काल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शुक्रको करनेवाला, शीतल, सब प्राणियोंको सात्म्य होता है. जीवन, पुष्ट, बलको करनेवाला, परम वाजीकर ॥ २ ॥ वयस्थापन करनेवाला, सन्धिकारी, रसायन है. और विरेक वमन बस्ति इनके तुल्य ओजको बढ़ानेवाला है ॥ ३ ॥ जीर्णज्वर, मानसिक रोग, शोष, मूर्च्छा भ्रम इनमें भी और संग्रहणी, पाण्डुरोग, दाह और तृषा इनमें तथा हृद्रोगमें ॥ ४ ॥ शूल उदावर्त्त गुल्म इनमें, बस्तिरोगमें, गुदांकुरमें, रक्तपित्तमें, अतीसारमें, योनिरोगमें, श्रममें, क्लममें, गर्भस्रावमें भी हित है ऐसा मुनिवरोंने कहा है ॥ ५ ॥ बाल, वृद्ध, क्षतक्षीण, क्षुधा मैथुन इनसे जो कृश हैं उनको सदा अतिशयकरके यह हित कहा है ॥ ६ ॥

अथ गव्यदुग्धस्य गुणाः ।

गव्यं दुग्धं विशेषेण मधुरं रसपाकयोः ।
शीतलं स्तन्यकृत्स्निग्धं वातपित्तास्रनाशनम् ॥ ७ ॥
दोषधातुमलस्रोतःकिञ्चित्क्लेदकरं गुरु ।
ज्वरे समस्तरोगाणां शान्तिकृत्सेविनां सदा ॥ ८ ॥

टीका—गायका दूध विशेषकरके रसपाकमें मधुर कहा है और शीतल, दुग्धको करनेवाला, चिकना, वात रक्तपित्त इनको हरता है ॥ ७ ॥ दोष, धातु, मल, स्रोत, किञ्चित् इनके क्लेदको करनेवाला, भारी, सदा सेवन करनेवालोंके ज्वर और समस्त रोगोंकी शांति करनेवाला है ॥ ८ ॥

अथ गवां वर्णविशेषाद्दुग्धगुणविशेषाः ।

कृष्णाया गोर्भवेद्दुग्धं वातहारि गुणाधिकम् ॥ ९ ॥
पीताया हरते पित्तं तथा वातहरं भवेत् ।
श्लेष्मलं गुरु शुक्लाया रक्ता चित्रा च वातहृत् ॥ १० ॥

टीका—अनन्तर वर्णविशेषसे गुण विशेषको कहेते हैं—काली गायका दूध वात हरता, गुणमें अधिक है ॥ ९ ॥ पीलीका दूध पित्तको हरता है तथा वातहर भी है. सफेद गायका दूध कफकारी तथा भारी है. और लाल चित्ररंगवालीका भी वात हरता है ॥ १० ॥

अथ बालवत्सविवत्सगवां दुग्धस्य गुणाः ।

बालवत्सविवत्सानां गवां दुग्धं त्रिदोषकृत् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—छोटे बच्चे वाली और बेबच्चेवाली गायके दूधका गुण–छोटे बच्चेवाली और बेबच्चेवाली गायोंका दूध त्रिदोषको करनेवाला है.

अथ बष्कयिणीगोदुग्धगुणाः ।

बष्कयिण्यास्त्रिदोषघ्नं तर्पणं बलकृत्पयः ॥ ११ ॥

टीका—बकेनीका दूध त्रिदोषको हरता, तर्पण, बलको करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ देशविशेषाद्गुणविशेषाः ।

जाङ्गलानूपशैलेषु चरन्तीनां यथोत्तरम् ।
पयो गुरुतरं स्नेहो यथाहारं प्रवर्तते ॥ १२ ॥

टीका—अनन्तर देशविशेषकरके गुणविशेषको कहते हैं–जाङ्गल, आनूप, पहाड़, इनमें चरनेवालियोंका दूध यथोत्तर बहुत भारी होता है और घृत आहारके अनुसार निकलता है ॥ १२ ॥

अथाहारविशेषाद्गुणविशेषाः ।

स्वल्पान्नभक्षणाज्जातं क्षीरं गुरु कफप्रदम् ।
तत्तु बल्यं परं वृष्यं स्वस्थानां गुणदायकम् ।
पलालतृणकार्पासबीजजातं गुणैर्हितम् ॥ १३ ॥

टीका— स्वल्प अन्न भक्षणसे हुआ क्षीर भारी, कफको करनेवाला होता है; वह बलको हित, अत्यन्त शुक्रको करनेवाला और स्वस्थोंको गुण देनेवाला है, खल, घास, कपासके बीज इनके खानेसे हुआ दूध गुणकरके हित होता है ॥ १३ ॥

अथ महिषीदुग्धगुणाः ।

माहिषं मधुरं गव्यात्स्निग्धं शुक्रकरं गुरु ।
निद्राकरमभिष्यन्दि क्षुधाधिक्यकरं हिमम् ॥ १४ ॥

टीका—अब भैंसके दूधका गुण–भैंसका दूध मधुर, चिकना, शुक्रको करनेवाला, भारी, निद्राको करनेवाला, अभिष्यन्दि, अधिक क्षुधाको करनेवाला, शीतल है ॥ १४ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ छागदुग्धगुणाः ।

छागं कषायं मधुरं शीतं ग्राहि तथा लघु ।
रक्तपित्तातिसारघ्नं क्षयकासज्वरापहम् ॥ १५ ॥
अजानामल्पकायत्वात्कटुतिक्तनिषेवणात् ।
स्तोकाम्बुपानाद्व्यायामात्सर्वरोगापहं पयः ॥ १६ ॥

टीका—अब बकरीके दूधका गुण—बकरीका दूध कसेला, मधुर, शीतल तथा हलका होता है ॥ १५ ॥ और रक्त पित्त अतीसार इनको हरता, क्षय कास ज्वर इनको हरता है. बकरियोंका छोटा शरीर होनेसे और कटुतिक्तके सेवनसे, थोड़ा जल पीनेसे, कसरतसे उसका दूध सब रोगको हरता है ॥ १६ ॥

अथ मृगीदुग्धगुणाः ।

मृगीनां जाङ्गलोत्थानामजाक्षीरगुणं पयः १७ ॥

टीका—अब मृगीके दुग्धका गुण—जंगलके मृगोंका दूध बकरीके दूधके समा होता है ॥ १७ ॥

अथ आविकदुग्धगुणाः ।

आविकं लवणं स्वादु स्निग्धोष्णं चाश्मरीप्रणुत् ।
अहृद्यं तर्पणं वृष्यं शुक्रपित्तकफप्रदम् ।
गुरुकासेऽनिलोद्भूते केवले चानिले वरम् ॥ १८ ॥

टीका—भेड़ीका दूध नमकीन, मधुर, चिकना, गरम और पथरीको हरता है. अहृद्य, तर्पण, पुष्ट, शुक्र, पित्त कफ इनको करनेवाला भारी होता है और वातके कासमें और केवल वातमें श्रेष्ठ है ॥ १८ ॥

अथ वडवादुग्धगुणाः ।

रूक्षोष्णं वडवाक्षीरं बल्यं शोषानिलापहम् ।
अम्लं पटु लघु स्वादु सर्वमेकशफं तथा ॥ १९ ॥

टीका—घोड़ीका दूध रूखा, गरम, बलको हित, शोष वातको हरता, खट्टा, लवण, हलका, मधुर है. ऐसे ही सब एकशफवालोंका होता है ॥ १९ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ औष्ट्रदुग्धगुणाः ।

औष्ट्रं दुग्धं लघु स्वादु लवणं दीपनं तथा ।
कृमिकुष्ठकफानाहशोथोदरहरं सरम् ॥ २० ॥

टीका—अब ऊंटनीका दूध–ऊंटनीका दूध हलका, मधुर, लवण तथा दीपन, और कृमि कुष्ठ कफ अफारा सूजन उदररोग इनको हरता, सर होता है ॥ २० ॥

अथ हस्तिनीदुग्धगुणाः ।

बृंहणं हस्तिनीदुग्धं मधुरं तुवरं गुरु ।
वृष्यं बल्यं हिमं स्निग्धं चक्षुष्यं स्थिरताकरम् ॥ २१ ॥

टीका—अनंतर हथिनीका दूध–हथिनीका दूध मधुर, कसेला, भारी, शुक्रको करनेवाला, बलको हित, शीतल, चिकना, नेत्रको हित, स्थिरताको करनेवाला होता है ॥ २१ ॥

अथ नारीदुग्धगुणाः ।

नार्या लघु पयः शीतं दीपनं वातपित्तजित् ।
चक्षुःशूलाभिघातघ्नं नस्याश्च्योतनयोर्वरम् ॥ २२ ॥

टीका—अब स्त्रीदुग्धके गुण–स्त्रीका दूध हलका, शीतल, दीपन, वातपित्तको हरनेवाला, नेत्रशूल अभिघात इनको हरता और नस्य, आश्चोतनमें श्रेष्ठ है ॥ २२ ॥

अथ धारोष्णगोदुग्धगुणाः ।

धारोष्णं गोपयो बल्यं लघु शीतं सुधासमम् ।
दीपनं च त्रिदोषघ्नं तद्धाराशिशिरं त्यजेत् ॥ २३ ॥

टीका—अब गायके धारोष्णदूधका गुण–धारोष्ण गायका दूध बलको हित, हलका, शीतल, अमृतके समान होता है. और दीपन, त्रिदोष हरता है. और वह धाराशिशिर सेवन न करै ॥ २३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ गव्यादिभेदेन धारोष्णादिगुणाः ।

धारोष्णं शस्यते गव्यं धाराशीतं तु माहिषम् ।
शृतोष्णमाविकं पथ्यं शृतशीतमजापयः ॥ २४ ॥

टीका--धारोष्ण गायका हित होता है और धाराशीत भैंसका अच्छा होता है । औटाया हुआ गरम भेड़ीका और औटायाहुआ शीतल बकराकी दूध हित होता है ॥ २४ ॥

अथामक्षीरगुणाः ।

आमं क्षीरमभिष्यन्दि गुरुश्लेष्मामवर्धनम् ॥ २५ ॥
ज्ञेयं सर्वमपथ्यं तु गव्यमाहिषवार्जितम् ।
नारीक्षीरं त्वाममेव हितं न तु शृतं हितम् ॥ २६ ॥

टीका-कच्चा दूध अभिष्यन्दी, भारी, कफ आमको बढ़ानेवाला होता है ॥२५॥ गाय और भैंसका दूध छोड़के सब अहित है. स्त्रीका दूध कच्चा ही हित है. औटायाहुआ अहित है ॥ २६ ॥

अथ श्रृतोष्णादिक्षीरगुणाः ।

श्रृतोष्णं कफवातघ्नं श्रृतं शीतं तु पित्तनुत् ।
अर्धोदकं क्षीरशिष्टमामाल्लघुतरं पयः ॥ २७ ॥
जलेन रहितं दुग्धमतिपक्कं यथा यथा ।
तथा तथा गुरु स्निग्धं वृष्यं बलविवर्धनम् ॥ २८ ॥

टीका—औटा गरम कफवातको हरता और औटा शीतल पित्त हरता है. आधा पानी मिलाके बाकी बचाहुआ दूध कच्चेसे बहुत हलका होता है ॥ २७ ॥ जलसे रहित दूध जैसे जैसे बहुत औटायाहुआ होता है वैसे वैसे भारी, चिकना, शुक्रको करनेवाला, बलको बढ़ानेवाला होता है ॥ २८ ॥

अथ पीयूषकिलाटक्षीरशाक-तक्रपिण्डमोरटानां लक्षणानि गुणाश्च ।

क्षीरं तत्कालसूताया घनं पीयूषमुच्यते ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नष्टदुग्धस्य पक्कस्य पिण्डः प्रोक्तः किलाटकः ॥ २९ ॥
अपक्कमेव यन्नष्टं क्षीरशाकं हि तत्पयः ।
दध्ना तक्रेण वा नष्टं दुग्धं बद्धं सुवाससा ।
द्रवभावेन सहितं तक्रपिण्डः स उच्यते ॥ ३० ॥
नष्टदुग्धं भवेन्नीरं मोरटं जेज्जटोऽब्रवीत् ॥ ३१ ॥
पीयूषं च किलाटश्च क्षीरशाकं तथैव च ।
तक्रपिण्ड इमे वृष्या बृंहणा बलवर्धनाः ॥ ३२ ॥
गुरवः श्लेष्मला हृद्या वातपित्तविनाशनाः ।
दीप्ताग्नीनां विनिद्राणां विद्रधौ चाभिपूजिताः ॥ ३३ ॥
मुखशोषतृषादाहरक्तपित्तज्वरप्रणुत् ।
लघुर्बलकरो रुच्यो मोरटः स्यात्सितायुतः ॥ ३४ ॥

टीका—अनन्तर पीयूष, किलाट, क्षीरशाक, तक्रपिंड, मोरट इनके लक्षण और गुण—तत्काल ब्याई हुई गाय आदिके दूधको पीयूष और लोकमें पिवस कहते हैं. नष्ट दूधके पके पिण्डको किलाट कहते हैं. किलाटको 'गिजिरी' इसप्रकार लोकमें कहते हैं. ॥२९॥ कच्चाही जो फटा दूध है उसको क्षीरशाक कहतेहैं. इसको लोकमें तुषिभरा कहते हैं. दही अथवा मट्ठेसे फटेहुए दूधको अच्छे कपड़ेसे बांधकर उस द्रवभावके सहितको तक्रपिण्ड कहते हैं ॥ ३० ॥ फटेहुए दूधके पानीको मोरट जेज्जटने कहते हैं ॥ ३१ ॥ पीयूष, किलाट, क्षीरशाक और तक्रपिण्ड ये वृष्य, पुष्ट, बलको बढ़ानेवाले ॥ ३२ ॥ भारी, कफको करनेवाले, हृद्य, वातपित्तको हरते हैं और दीप्ताग्नियोंको, बेनींदवालोंको और विद्रधिमें श्रेष्ठ हैं ॥ ३३ ॥ और मुखशोष तृषा दाह रक्तपित्त ज्वर इनको हरते हैं. चीनीके सहित मोरठ हलका, बलकर, रुचिका करनेवाला है ॥ ३४ ॥

अथ सन्तानिकाया (मलाईके) गुणाः ।

सन्तानिका गुरुः शीता वृष्या पित्तास्रवातनुत् ।
तर्पणी बृंहणी स्निग्धा बलासबलशुक्रला ॥ ३५ ॥

टीका—मलाईके गुण—मलाई भारी, शीतल, शुक्रको करनेवाली, रक्तपित्त

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वात इनको हरनेवाली, तर्पण, पुष्ट, चिकनी और कफ बल शुक्र इनको करनेवाली है ॥ ३५ ॥

अथ शर्करादियुक्तदुग्धगुणाः ।

खण्डेन सहितं दुग्धं कफकृत्पवनापहम् ।
सितासितोपलायुक्तं शुक्रलं त्रिमलापहम् ॥
सगुडं मूत्रकृच्छ्रघ्नं पित्तश्लेष्मकरं परम् ॥ ३६ ॥

टीका—अनन्तर खांडआदिसे युक्त दुग्धका गुण—खांडके सहित दुग्ध कफको करनेवाला, वात हरता है. चीनी और मिश्रीसे युक्त शुक्रको करनेवाला, त्रिदोषको हरता है. गुडके सहित मूत्रकृच्छ्रको हरता और परम पित्तकफको करनेवाला है ॥ ३६ ॥

अथ प्राभातिकादिदुग्धसेवनगुणाः ।

रात्रौ चन्द्रगुणाधिक्याद्व्यायामाकरणात्तथा ।
प्रभातिकं तदा प्रायः प्रादोषाद्गुरु शीतलम् ॥ ३७ ॥
दिवाकरकराघाताद्व्यायामानलसेवनात् ।
प्राभातिकात्तु प्रादोषं लघु वातकफापहम् ॥ ३८ ॥

टीका—रात्रिमें चन्द्रगुणोंकी अधिकतासे तथा व्यायाम न करनेसे सबेरेका दूध प्रायः सायंकालके दूधसे भारी, शीतल होता है ॥ ३७ ॥ सूर्यके किरणोंके आघातसे और व्यायाम अग्नि इनके सेवनसे सायंकालका दूध सबेरेके दूधसे हलका, वात कफको हरता है ॥ ३८ ॥

अथ कालविशेषाद्दुग्धसेवनगुणाः ।

वृष्यं बृंहणमग्निदीपनकरं पूर्वाह्णकाले पयो
मध्याह्ने तु बलावहं कफहरं पित्तापहं दीपनम् ।
बाले वृद्धिकरं क्षये क्षयकरं वृद्धेषु रेतोवहं
रात्रौ पथ्यमनेकदोषशमनं क्षीरं सदा सेव्यते ॥ ३९ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वदन्ति पेयं निशि केवलं पयो भोज्यं न तेनेह सहौदनादिकम् ।
भवत्यजीर्णे निशि पीतशर्करा क्षीराल्पपानस्य तु शेषमुत्सृजेत् ४०

विदाहीन्यन्नपानानि दिवा भुङ्क्ते हि यन्नरः ।
तद्विदाहप्रशान्त्यर्थं रात्रौ क्षीरं सदा पिबेत् ॥ ४१ ॥
दीप्तानले कृशे पुंसि वातवृद्धे पयःप्रिये ।
मतं हिततमं पथ्यं सद्यः शुक्रकरं यतः ॥ ४२ ॥

टीका—अनन्तर दुग्धसेवनसमयमें गुण विशेषको कहते हैं–पहिले पहरमें पियाहुआ दूध शुक्रको करनेवाला, पुष्ट, अग्निको दीपन करनेवाला और मध्याह्नमें बल करनेवाला, कफ हरता, पित्त हरता, दीपन होता. है बाल अवस्थामें वृद्धि करनेवाला, क्षयमें क्षयकर, वृद्ध अवस्थामें शुक्रको करनेवाला और रातमें हित, अनेक दोषोंका शमन करनेवाला दूध है. इसवास्ते सदा सेवन किया जाता है ॥ ३९ ॥ कहते हैं कि रातमें केवल दूध पीना चाहिये. उसके साथ चावल आदिक न खाने चाहिये. अजीर्णके होनेमें रातमें थोड़ा दूध शक्कर पीनेवालेके बाकी सब निकल जाता है ॥ ४० ॥ जिससे मनुष्य विदाही अन्न पान दिनमें भोजन करता है उस कारण विदाहप्रशान्तिके अर्थ रातमें दूधको सदा पीवै ॥ ४१ ॥ दीप्ताग्नि, कृश, वातवृद्धि और दुग्धप्रिय ऐसे पुरुषको बहुत हित और पथ्य है. क्यों कि तत्काल शुक्रको करता है ॥ ४२ ॥

अथ मथितदुग्धगुणाः ।

क्षीरं गव्यमथाजं वा कोष्णं दण्डाहतं पिबेत् ।
लघु वृष्यं ज्वरहरं वातपित्तकफापहम् ॥ ४३ ॥
गोदुग्धप्रभवं किंवा छागीदुग्धसमुद्भवम् ।
भवेदेतत्त्रिदोषघ्नं रोचनं बलवर्धनम् ॥ ४४ ॥
वह्नेर्वृद्धिकरं वृष्यं सद्यस्तृप्तिकरं लघु ।
अतीसारेऽग्निमान्द्ये च ज्वरे जीर्णे प्रशस्यते ॥ ४५ ॥

टीका—गायके अथवा बकरीके कुछ गरम मथेहुएको पीदै और हलका, शुक्रको करनेवाला,ज्वर हरता,वात पित्त कफको हरता है ॥४३॥गोदुग्धसे उत्पन्न हुआ अथवा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बकरीके दूधसे हुआ त्रिदोष हरता, रोचन, बलको बढ़ानेवाला ॥४४॥ अग्निको करनेवाला, शुक्रको करनेवाला, तत्काल तृप्तिको करनेवाला, हलका होता है और अतीसार अग्निमांद्य तथा जीर्णज्वर इनमें प्रशस्त है ॥ ४५ ॥

अथ वर्ज्यं दुग्धम् ।

विवर्णं विरसं चाम्लं दुर्गन्धं ग्रथितं पयः ।
वर्जयेदम्ललवणयुक्तं बुद्ध्यादिहृद्यतः ॥ ४६ ॥

इति श्रीहरीतक्यानिघण्टे दुग्धवर्गः समाप्तः ।

टीका—विवर्ण,विरस, खट्टा दुर्गन्ध और गठीला ऐसा दूध त्याग देवै. क्योंकि अम्ल लवण युक्त वृद्धि आदिको हरता कहा है ॥ ४६ ॥

इति हरीतक्यादिनिघण्टे भाषाटीकायां दुग्धवर्गः समाप्तः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ

हरीतक्यादिनिघण्टे

दधिवर्गः ।

अथ दधिगुणाः ।

दध्युष्णं दीपनं स्निग्धं कषायानुरसं गुरु ।
पाकेऽम्लं श्वासपित्तास्रशोथमेदःकफप्रदम् ॥ १ ॥
मूत्रकृच्छ्रे प्रतिश्याये शीतगे विषमज्वरे ।
अतीसारेऽरुचौ कार्श्ये शस्यते बलशुक्रकृत् ॥ २ ॥

टीका—दहीके गुण–दही उष्ण, दीपन, चिकना, पीछेसे कसेला, भारी, पाकमें अम्ल; श्वास, रक्त, पित्त, शोथ, मेद, कफ इनको करनेवाला है ॥ १ ॥ मूत्रकृच्छ्रमें, प्रतिश्यायमें, शीतवाले विषमज्वरमें, अतीसारमें, अरुचिमें, कृशतामें प्रशस्त है. बल शुक्रको करनेवाला है ॥ २ ॥

अथ दधिभेदः।

आदौ मन्दं ततः स्वादु स्वाद्वम्लं च ततः परम् ।
अम्लं चतुर्थमत्त्यम्लं पञ्चमं दधि पञ्चधा ॥ ३ ॥

टीका—अनन्तर दहीके भेद–पहिले मन्द, उसके अनन्तर मधुर, और उसके बाद खट्टा-मीठा, चौथा खट्टा, तथा पांचवा बहुत खट्टा, ऐसे दही पांच प्रकारका होता है ॥ ३ ॥

अथ मन्दाख्यदध्नो लक्षणं गुणाश्च ।

मन्दं दुग्धं यदव्यक्तरसं किञ्चिद्घनं भवेत् ।
मन्दं स्यात्सृष्टविण्मूत्रदोषत्रयविदाहकृत् ॥ ४ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—दुग्ध जो अव्यक्त रस और कुछ गाढ़ा होता है, वह मन्द है. मन्द मलमूत्रको करनेवाला, त्रिदोष तथा विदाह इनको करनेवाला है ॥ ४ ॥

अथ स्वादुदधिलक्षणगुणाः ।

यत्सम्यग्घनतां यातं व्यक्तस्वादुरसं भवेत् ।
अव्यक्ताम्लरसं तत्तु स्वादु विज्ञैरुदाहृतम् ॥ ५ ॥
स्वादु स्यादत्यभिष्यन्दि वृष्यं मेदःकफावहम् ।
वातघ्नं मधुरं पाके रक्तपित्तप्रसादनम् ॥ ६ ॥

टीका—जो अच्छीतरह गाढ़ा होजाता है और व्यक्त स्वादुरस जिसमें होता है उसको बुद्धिमानोंने मधुर कहा है ॥ ५ ॥ मधुर अति अभिष्यन्दी होता है. शुक्रको करनेवाला और मेद कफको करनेवाला, वात हरता, पाकमें मधुर, रक्त-पित्तको अच्छा करनेवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ स्वाद्वम्लदधिलक्षणगुणाः ।

स्वाद्वम्लसान्द्रमधुरं कषायानुरसं भवेत् ।
स्वाद्वम्लस्य गुणा ज्ञेया सामान्यदधिवज्जनैः ॥ ७ ॥

टीका—मीठा-खट्टा सान्द्र मधुर, पीछेसे कसेला होता है. सामान्य दहीके समान मीठे खट्टेका गुण जानना चाहिये ॥ ७ ॥

अथाम्लदधिलक्षणगुणाः ।

यत्तिरोहितमाधुर्यं व्यक्ताम्लत्वं तदम्लकम् ।
अम्लं तु दीपनं पित्तरक्तश्लेष्मविवर्धनम् ॥ ८ ॥

टीका—जिसमें मधुरता ढकी है और अम्लता व्यक्त है, वह खट्टा है. खट्टा दीपन, रक्त, पित्त, कफ इनको बढ़ानेवाला है ॥ ८ ॥

अथात्यम्लदधिलक्षणगुणाः ।

तदत्यम्लं दन्तरोमहर्षकण्ठादिदाहकृत् ।
अत्यम्लं दीपनं रक्तवातपित्तकरं परम् ॥ ९ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—जो दंतहर्ष, रोमहर्ष, कण्ठ आदिका दाह करनेवाला है, वह बहुत खट्टा है. बहुत खट्टा दीपन, रक्त, वात, पित्त इनको करनेवाला है ॥ ९ ॥

अथ गोदधिगुणाः ।

गव्यं दधि विशेषेण स्वाद्वम्लं च रुचिप्रदम् ।
पवित्रं दीपनं हृद्यं पुष्टिकृत्पवनापहम् ।
उक्तं दध्नामशेषाणां मध्ये गव्यं गुणाधिकम् ॥ १० ॥

टीका—गायके दहीका गुण-गायका दही विशेषकरके मधुर, अम्ल, रुचिको करनेवाला, पवित्र, दीपन, हृद्य, पुष्टिको करनेवाला, वातको हरता है सब दहियोंके बीचमें गायका दही गुणमें अधिक कहा है. ॥ १० ॥

अथ माहिषदधिगुणाः ।

माहिषं दधि सुस्निग्धं श्लेष्मलं वातपित्तनुत् ।
स्वादुपाकमभिष्यन्दि वृष्यं गुर्वस्रदूषकम् ॥ ११ ॥

टीका—भैंसका दही बहुत चिकना, कफको करनेवाला, वातपित्तको हरता, पाकमें मधुर, अभिष्यन्दी, शुक्रको करनेवाला, भारी, रक्तदूषक होता है. ॥ ११ ॥

अथाजदधिगुणाः ।

आजं दध्युत्तमं ग्राहि लघु दोषत्रयापहम् ।
शस्यते श्वासकासार्शःक्षयकार्श्येषु दीपनम् ॥ १२ ॥

टीका—बकरीके दहीका गुण—बकरीका दही बहुत उत्तम, काबिज, हलका, तीनों दोषोंको हरता है और श्वास, कास, बवासीर, क्षय, कार्श्य इनमें प्रशस्त है तथा दीपन होता है ॥ १२ ॥

अथ पक्वदुग्धजदधिगुणाः ।

पक्वदुग्धभवं रुच्यं दधि स्निग्धं गुणोत्तमम् ।
पित्तानिलापहं सर्वधात्वग्निबलवर्धनम् ॥ १३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—औटायेहुए दूधके दहीका गुण–पकेहुए दूधका दही रुचिको करनेवाला, चिकना, गुणमें अच्छा, पित्त वातको हरता और सब धातु अग्नि बल इनको बढ़ानेवाला है ॥ १३ ॥

अथासारदधिगुणाः ।

असारं दधि संग्राहि शीतलं वातलं लघु ।
विष्टम्भि दीपनं रुच्यं ग्रहणीरोगनाशनम् ॥ १४ ॥

टीका—असार दही काबिज, शीतल, वातको करनेवाला, हलका, विष्टंभी, दीपन, रुचिको करनेवाला, ग्रहणीरोगको हरता है. ॥ १४ ॥

अथ गालितदधिगुणाः ।

गालितं दधि सुस्निग्धं वातघ्नं कफकृद्गुरु ।
बलपुष्टिकरं रुच्यं मधुरं नातिपित्तकृत् ॥ १५ ॥

टीका—निचोडे हुए दहीका गुण–निचोडा दही बहुत चिकना, वात हरता, कफको करनेवाला, भारी, बल पुष्टीको करनेवाला, रुचिकर, मधुर और अति पित्त करनेवाला है. ॥ १५ ॥

अथ शर्करादियुक्तदधिगुणाः ।

सशर्करं दधि श्रेष्ठं तृष्णापित्तास्रदाहजित् ।
सगुडं वातनुद्वृष्यं बृंहणं तर्पणं गुरु ॥ १६ ॥

टीका—शर्कराके सहित दही श्रेष्ठ, तृषा रक्त पित्त दाह इनको जीतनेवाला है और गुडके सहित वातनाशक, शुक्रको करनेवाला, पुष्ट, तर्पण, भारी, होता है ॥ १६ ॥

अथ दध्नो रात्रौ निषेधः ।

न नक्तं दधि भुञ्जीत न चाप्यघृतशर्करम् ।
नामुद्गसूपं नाक्षौद्रं नोष्णं नामलकैर्विना ॥ १७ ॥

(अयमर्थः । रात्रौ दधि न भुञ्जीत, भुञ्जीत चेत्तदा अघृतशर्करम-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मुद्गसूपमक्षौद्रमनुष्णं विनामलकैश्च दधि न भुञ्जीत। तेन घृतशर्करादियुक्तं दधि रात्रावपि भुञ्जीतेत्यर्थः। तथाच—)

शस्यते दधि नो रात्रौ शस्तं चाम्बुघृतान्वितम्।
रक्तपित्तकफोत्थेषु विकारेषु तु नैव तत्॥ १८॥

टीका—अब रातमें दधिभोजनका निषेध रातमें दही न खावै और जो खावे तो शर्करा घृतके भी विना न खावै तथा विना मुद्गकी दालके और विना मधुके भी न खावै और न विना गरम किये तथा आवलोंके विना न खावै॥ १७॥ रातमें दही न खावै और खावे तो बे घी, शक्कर, मूगकी दाल, मधु और, उष्ण किये विना तथा विना आंवलोंके भी दही न खावै. इससे घृतशर्करादियुक्त दही रातमें भी खावै यह अर्थ है ऐसा कहा भी है, रातमें दही प्रशस्त नहीं है और जल घृतसे युक्त प्रशस्त है. रक्त पित्त कफके विकारोंमें वह प्रशस्त नहीं है॥१८॥

अथ ऋतुविशेषाद्दध्नोविधिनिषेधौ।

हेमन्ते शिशिरे चापि वर्षासु दधि शस्यते।
शरद्ग्रीष्मवसन्तेषु प्रायशस्तद्विगर्हितम्॥ १९॥

टीका—हेमन्त शिशिर और वर्षामें दही प्रशस्त है और शरद् ग्रीष्म वसन्तमें प्रायः वह निंदित है॥ १९॥

अथ अविधिना दधिसेवने दोषाः।

ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपाण्ड्वामयभ्रमान्।
प्राप्नुयात्कामलां चोग्रां विधिं हित्वा दधिप्रियः॥ २०॥

टीका—अब विना विधिसे दधि सेवनमें दोष कहते हैं-विधि छोड़के दही सेवन करनेसे ज्वर रक्तपित्त वीसर्प कुष्ठ पांडुरोग भ्रम और उग्र कामलारोगमें होते हैं॥ २०॥

अथ सरमस्तुनोर्लक्षणगुणाः।

दध्नस्तूपरि यो भागो घनः स्नेहसमन्वितः।
स लोके सर इत्युक्तो दध्नो मण्डस्तु मस्त्विति॥ २१॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सरः स्वादुर्गुरुर्वृष्यो वातवह्निप्रणाशनः ।
साम्लो बस्तिप्रशमनः पित्तश्लेष्मविवर्धनः ॥ २२ ॥
मस्तु क्लमहरं बल्यं लघु भक्ताभिलाषकृत् ।
स्रोतोविशोधनं ह्लादि कफतृष्णानिलापहम् ॥ २३ ॥
अवृष्यं प्रीणनं शीघ्रं भिनत्ति मलसंचयम् ॥ २४ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे दधिवर्गः समाप्तः ।

टीका—दहीके ऊपरका जो गाढ़ा चिकनाईसे युक्त हिस्सा है उसको लोकमें 'सर' ऐसा कहते हैं. और दहीके पानीको 'मस्तु' ऐसा कहते हैं ॥२१॥ सर मधुर, भारी, शुक्रको करनेवाला, वात अग्निको हरता और खटाईके सहित बस्तिका शमन करनेवाला तथा पित्त कफको बढ़ानेवाला है ॥ २२ ॥ दहीका पानी श्रम हरता, बलको हित, हलका, भोजनमें रुचिको करनेवाला, सोतोंका शोधन करनेवाला, ह्लादि, कफ तृषा वात इनको हरता है ॥ २३ ॥ अवृष्य, प्रीणन और शीघ्र मलके संचयको फोड़ता है ॥ २४ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे भाषाटीकायां दधिवर्गः समाप्तः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ

हरीतक्यादिनिघण्टे

तक्रवर्गः ।

अथ तक्रस्य नामानि गुणाश्च ।

घोलं तु मथितं तक्रमुदश्विच्छच्छिकापि च ।
ससरं निर्जलं घोलं मथितं त्वसरोदकम् ॥ १ ॥
तक्रं पादजलं प्रोक्तमुदश्वित्त्वर्धवारिकम् ।
छच्छिका सारहीना स्यात्स्वच्छा प्रचुरवारिका ॥ २ ॥
घोलं तु शर्करायुक्तं गुणैर्ज्ञेयं रसालवत् ।
वातपित्तहरं ह्लादि मथितं कफपित्तनुत् ॥ ३ ॥
तक्रं ग्राहि कषायाम्लं स्वादुपाकरसं लघु ।
वीर्योष्णं दीपनं वृष्यं प्रीणनं वातनाशनम् ॥ ४ ॥
ग्रहण्यादिमतां पथ्यं भवेत्सङ्ग्राहि लाघवात् ।
किञ्चित्स्वादुविपाकित्वान्न च पित्तप्रकोपणम् ॥ ५ ॥
अम्लोष्णं दीपनं वृष्यं प्रीणनं वातनाशनम् ।
कषायोष्णविकाशित्वाद्रौक्ष्याच्चापि कफापहम् ॥ ६ ॥
न तक्रसेवी व्यथते कदाचिन्न तक्रदग्धाः प्रभवन्ति रोगाः ।
यथा सुराणाममृतं सुखाय तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः ॥७॥
उदश्वित्कफकृद्बल्यमामघ्नं परमं मतम् ।
छच्छिका शीतला लघ्वी पित्तश्रमतृषाहरी ॥ ८ ॥
वातनुत्कफकृत्सा तु दीपनी लवणान्विता ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—अब तक्रवर्ग कहता हूं । उसमें मट्ठेके अलग नाम और लक्षण तथा गुण—घोल, मथित, तक्र, उदश्वित्, छच्छिका ये मट्ठेके नाम हैं. पूर्वोक्त सरके सहित निर्जलको घोल कहते हैं और मथित जिसमें सर और जल न हो उसको कहते हैं ॥ १ ॥ जिसमें चौथाई जल होता है उसको तक्र कहा है और जिसमें आधा जल होता है उसको उदश्वित् कहा है-तथा सारहीन, स्वच्छ, बहुत जलसे युक्तको छच्छिका कहते हैं. छाछ इस प्रकार लोकमें कहते हैं ॥ २ ॥ शर्करायुक्त घोल रसालके गुणमें जानना चाहिये. महया इसप्रकार लोकमें कहते हैं ॥ ३ ॥ मथित वातपित्तको हरता, ह्लादी, कफपित्तको हरता है. तक्र काबिज, कसेला, खट्टा, पाकरसमें मधुर, हलका, वीर्यमें उष्ण, दीपन, शुक्रको करनेवाला, प्रीणन, वात हरता है ॥ ४ ॥ और संग्रहणीवालेको हित है. मठ्ठा काबिज होता है. हलकेपनसे, मधुर पाक होनेसे पित्तप्रकोप करनेवाला नहीं है ॥ ५ ॥ खट्टा, उष्ण, दीपन, वृष्य, प्रीणन, वात हरता है. कसेला, उष्ण काशी होनेसे और रूक्षतासे भी कफ हरता है ॥ ६ ॥ तक्रका सेवन करनेवाला कदाचित् क्लेश नहीं पाता. तक्रसे दग्ध रोग उत्पन्न नहीं होते. जैसे देवताओंको सुखके वास्ते अमृत होता है वैसेही मनुष्योंको भूलोकमें तक्र कहा है ॥ ७ ॥ उदश्वित् कफको करनेवाला, बलको हित, परम आमको हरता कहा है. छच्छिका शीतल, हलकी, पित्त श्रम तृषाको हरती है ॥ ८ ॥ वात हरती, कफको करनेवाली है और वह लवणसे युक्त दीपन है.

अथ समुद्धृतघृतादितक्राणां गुणाः ।

समद्धृतघृतं तक्रं पथ्यं लघु विशेषतः ॥ ९ ॥
स्तोकोद्धृतघृतं तस्माद्गुरु वृष्यं कफावहम् ।
अनुद्धृतघृतं सान्द्रं गुरु पुष्टिकफप्रदम् ॥ १० ॥

टीका—अच्छीतरह घी निकालाहुआ तक्र पथ्य और विशेष करके हलका होता है ॥ ९ ॥ थोड़ा घृत निकालाहुआ उससे भारी, शुक्रको करनेवाला और कफको करनेवाला है. बे निकालाहुआ सान्द्र, भारी, पुष्टि कफको करनेवाला है ॥ १० ॥

अथ दोषव्याधिविशेषात्तक्रविशेषगुणाः ।

वातेऽम्लं शस्यते तक्रं शुण्ठीसैन्धवसंयुतम् ।
पित्ते स्वादु सितायुक्तं सव्योषमधिके कफे ॥ ११ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हिङ्गुजीरयुतं घोलं सैन्धवेन च संयुतम् ।
भवेदतीव वातघ्नमर्शोऽतीसारहृत्परम् ॥ १२ ॥
रुचिदं पुष्टिदं बल्यं बस्तिशूलविनाशनम् ।
मूत्रकृच्छ्रे तु सगुडं पाण्डुरोगे सचित्रकम् ॥ १३ ॥

टीका—अनन्तर रोगविशेषमें तक्रविशेषको कहते हैं-वातमें अम्लतक्र सैन्धवसे युक्त. पित्तमें मधुर चिनीके सहित और कफमें त्रिकटुके सहित हित है ॥ ८१ ॥ हींग जीरेके सहित और सैन्धवके सहित घोल अतीव वात हरता और बवासीर अतीसारका परम हरता है ॥ १२ ॥ तथा रुचिको करनेवाला, पुष्टिको देनेवाला, बलको हित, बस्तिशूलको हरता है. मूत्रकृच्छ्रमें गुडके सहित और पाण्डुरोगमें चित्रकके सहित हित है ॥ १३ ॥

अथामपक्वतक्रगुणाः ।

तक्रमामं कफं कोष्ठे हन्ति कण्ठे करोति च ।
पीनसश्वासकासादौ पक्वमेव प्रयुज्यते ॥ १४ ॥

टीका—अनन्तर कच्चे और पके तक्रका गुण-कच्चा मट्ठा कोष्ठमें कफको हरता है और कण्ठमें कफको करता है. पीनस श्वास कासादिकमें पक्काही योजना किया जाता है ॥ ७४ ॥

अथ तक्रसेवननिमित्तानि च ।

शीतकालेऽग्निमान्द्ये च तथा वातामयेषु च ।
अरुचौ स्रोतसां रोधे तक्रं स्यादमृतोपमम् ॥ १५ ॥
तत्तु हन्ति गरच्छर्दिप्रसेकविषमज्वरान् ।
पाण्डुमेदोग्रहण्यर्शोमूत्रग्रहभगन्दरान् ॥ १६ ॥
मेहं गुल्ममतीसारं शूलप्लीहोदरारुचीः ।
श्वित्रकोष्ठगतव्याधीन्कुष्ठशोथतृषाक्रमीन् ॥ १७ ॥

टीका—अनन्तर तक्र सेवनके कारण-शीतल काल, अग्निमान्द्य तथा वातरोगमें भी, अरुचिमें, स्रोतोंके अवरोधमें, तक्र अमृतके समान होता है ॥ १५ ॥ वह

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विष वमन प्रसेक विषमज्व इनको और पाण्डुरोग, मेद, ग्रहणीरोग, बवासीर, मूत्रग्रह, भगन्दर इनको ॥ १६ ॥ तथा प्रमेह बायगोला अतीसार शूल प्लीहोदर अरुचि श्वित्र कोष्ठगत रोग कुष्ठ शोथ तृषा कृमि इनको हरता है ॥ १७ ॥

अथ तक्रनिषेधः ।

नैव तक्रं क्षते दद्यान्नोष्णकाले न दुर्बले ।
न मूर्च्छाभ्रमदाहेषु न रोगे रक्तपित्तजे ॥ १८ ॥

टीका—तक्रका अविषय तक्र क्षतमें न देवै, न उष्ण कालमें, न दुर्बलमें, न मूर्च्छा भ्रम दाहमें, न रक्तपित्तके रोगमें देवै ॥ १८ ॥

अथ गव्यादितक्रविशेषगुणाः ।

यान्युक्तानि दधीन्यष्टौ तद्गुणं तक्रमादिशेत् ॥ १९ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे तक्रवर्गः समाप्तः ।

टीका—अनन्तर गायआदिके तक्रोंका विशेष गुण-जो आठ दहियोंके गुण कहे हैं वेही गुण तक्रमें जानलेवै ॥ २९ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे भाषाटीकायां तक्रवर्गः समाप्तः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ

हरीतक्यादिनिघण्टे

नवनीतवर्गः ।

तत्र नवनीतस्य नामानि गुणाश्च ।

म्रक्षणं सरजं हैयङ्गवीनं नवनीतकम् ।
नवनीतं हितं गव्यं वृष्यं वर्णबलाग्निकृत् ॥ १ ॥
संग्राहि वातपित्तासृक्क्षयार्शोऽर्दितकासनुत् ।
तद्धितं बालके वृद्धे विशेषादमृतं शिशोः ॥ २ ॥

टीका—माखनके नाम और गुण—म्रक्षण, सरज, हैयङ्गवीन, नवनीत ये माखनके नाम हैं. गायका माखन पथ्य, शुक्रको करनेवाला, वर्ण बल अग्निको करनेवाला, ॥ १ ॥ काबिज, वात पित्त रक्तक्षय बवासीर अर्दित कास इनको हरता है. वह बालक वृद्धको हित है. विशेषकरके बालकको अमृतके समान है ॥ २ ॥

अथ माहिषनवनीतगुणाः ।

नवनीतं महिष्यास्तु वातश्लेष्मकरं गुरु ।
दाहपित्तश्रमहरं मेदःशुक्रविवर्धनम् ॥ ३ ॥

टीका—भैंसका माखन वात कफको करनेवाला, भारी, दाह पित्त श्रमको हरता, मेद शुक्रको बढ़ानेवाला है ॥ ३ ॥

अथ दुग्धजनवनीतगुणाः ।

दुग्धोत्थं नवनीतं तु चक्षुष्यं रक्तपित्तनुत् ।
वृष्यं बल्यमतिस्निग्धं मधुरं ग्राहि शीतलम् ॥ ४ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—दूधके माखनका गुण—दूधका माखन नेत्रको हित, रक्तपित्तको हरता, शुक्रको करनेवाला, बलको हित, बहुत चिकना, मधुर, काबिज, शीतल है ॥ ४ ॥

अथ सद्यस्कनवनीतगुणाः ।

नवनीतं तु सद्यस्कं स्वादु ग्राहि हिमं लघु ।
मेध्यं किञ्चित्कषायाम्लमीषत्तक्रांशसंक्रमात् ॥ ५ ॥

टीका—ताजे माखनका गुण—ताजा माखन, मधुर, काबिज, शीतल, हलका, कान्तिको करनेवाला, थोड़े, मट्ठेके अंश मिलेनेस कुछ कसैला और खट्टा है॥ ५ ॥

अथ चिरन्तननवनीतगुणाः ।

सक्षारकटुकाम्लत्वाच्छर्द्यर्शःकुष्ठकारकम् ।
श्लेष्मलं गुरु मेदस्यं नवनीतं चिरन्तनम् ॥ ६ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे नवनीतवर्गः समाप्तः ।

टीका—पुराने माखनका गुण—क्षारके सहित, कटुक, खट्टापन होनेसे वमन बवासीर कुष्ठ इनको करनेवाला है. कफको करनेवाला, भारी, मेदको करनेवाला, पुराना माखन है ॥ ६ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे भाषाटीकायां नवनीतवर्गः समाप्तः !

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ

हरीतक्यादिनिघण्टे

घृतवर्गः ।

अथ घृतस्य नामानि गुणाश्च।

घृतमाज्यं हविः सर्पिः कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ।
घृतं रसायनं स्वादु चक्षुष्यं वह्निदीपनम् ॥ १ ॥
शीतवीर्यविषालक्ष्मीपापपित्तानिलापहम् ।
अल्पाभिष्यन्दि कान्त्योजस्तेजोलावण्यबुद्धिकृत् ॥ २ ॥
स्वरस्मृतिकरं मेध्यमायुष्यं बलकृद्गुरु ।
उदावर्तज्वरोन्मादशूलानाहव्रणान् हरेत् ॥
स्निग्धं कफकरं रक्षःक्षयवीसर्परक्तनुत् ॥ ३ ॥

टीका--अनन्तर घृतवर्ग, उसमें घृतके नाम और गुण कहते हैं-घृत, आज्य, हवि, सर्पि, ये घृतके नाम हैं. और रसायन, मधुर, नेत्रको हित, अग्निदीपन ॥१॥ शीतवीर्य है और विष अलक्ष्मी पाप पित्त वात इनको हरता है. थोड़ा अभिष्यन्दी, कान्ति ओज तेज लावण्य बुद्धि इनको करनेवाला ॥ २ ॥ स्वर स्मृतिको करनेवाला, मेध्य, आयुको, हित बलको करनेवाला, भारी, उदावर्त्त ज्वर उन्माद शूल अफरा व्रण इनको हरता है. चिकना, कफको करनेवाला, राक्षस क्षय वीसर्प रक्त इनको हरता है ॥ ३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ गोघृतगुणाः ।

गव्यं घृतं विशेषेण चक्षुष्यं वृष्यमग्निकृत् ।
स्वादु पाककरं शीतं वातपित्तकफापहम् ॥ ४ ॥
मेधालावण्यकान्त्योजस्तेजोवृद्धिकरं परम् ।
अलक्ष्मीपापरक्षोघ्नं वयसः स्थापकं गुरु ॥ ५ ॥
बल्यं पवित्रमायुष्यं सुमङ्गल्यं रसायनम् ।
सुगन्धं रोचकं चारु सर्वाज्येषु गुणाधिकम् ॥ ६ ॥

टीका—गायके घृतका गुण–गायका घृत विशेषकरके नेत्रको हित, शुक्रका करनेवाला, अग्निको करनेवाला, मधुर, पाकको करनेवाला, शीतल और वात पित्त कफ इनको हरता है ॥ ४ ॥ और मेधा लावण्य कान्ति ओज तेज इनकी परमवृद्धिको करनेवाला, अलक्ष्मी पाप राक्षस इनको हरता, वयका स्थापक, भारी ॥ ५ ॥ बलको हित, पवित्र, आयुको हित, सुमंगल्य, रसायन, सुगन्ध, रोचन, सुदंर, सब घृतोंसे गुणमें अधिक है ॥ ६ ॥

अथ माहिषघृतगुणाः ।

माहिषं तु घृतं स्वादु पित्तरक्तानिलापहम् ।
शीतलं श्लेष्मलं वृष्यं गुरु स्वादु विपच्यते ॥ ७ ॥

टीका—अनन्तर भैंसके घृतका गुण–भैंसका घृत मधुर, पित्तरक्त वात इनको हरता, शीतल, कफको करनेवाला, शुक्रको करनेवाला, भारी और पाकमें मधुर होता है ॥ ७ ॥

अथाजघृतगुणाः ।

आजमाज्यं करोत्यग्निं चक्षुष्यं बलवर्धनम् ।
कासे श्वासे क्षये चापि हितं पाके भवेत्कटु ॥ ८ ॥

टीका—अनन्तर बकरीके घृतका गुण–बकरीका घृत अग्निको करता है और नेत्रको हित, बलको बढ़ानेवाला, कास श्वास क्षयमें भी हित है और पाकमें भी कटु है ॥ ८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथौष्ट्रघृतगुणाः ।

औष्ट्रं कटु घृतं पाके शोषक्रिमिविषापहम् ।
दीपनं कफवातघ्नं कुष्ठगुल्मोदरापहम् ॥ ९ ॥

टीका—अनन्तर ऊंटनीका घृत-ऊंटनीका घृत पाकमें कटु और शोष कृमि विष इनको हरता, दीपन, कफ वातको हरता, कुष्ठ बायगोला उदरोग इनको हरता है ॥ ९ ॥

अथाविकघृतगुणाः ।

पाके लघ्वाविकं सर्पिः सर्वरोगविनाशनम् ।
वृद्धिं करोति चास्थीनामश्मरीशर्करापहम् ॥ १० ॥
चक्षुष्यमग्निकृद्धृष्यं वातदोषनिवारणम् ॥ ११ ॥

टीका—भेडका घृत पाकमें हलका, सब रोगोंको हरता और हड्डियोंकी वृद्धिको करता है तथा पथरी शर्करा इनको हरता है ॥ १० ॥ नेत्रको हित, अग्निको करनेवाला और वातदोषका निवारक है ॥ ११ ॥

अथ नारीघृतगुणाः ।

कफेऽनिले योनिदोषे पित्ते रक्ते च तद्धितम् ।
चक्षुष्यमाज्यं स्त्रीणां वा सर्पिः स्यादमृतोपमम् ॥ १२ ॥

टीका—स्त्रीका घृत कफ वात योनिदोष पित्तरक्तमें हित है. नेत्रको हित और अमृतके समान होता है ॥ १२ ॥

अथ वडवाघृतगुणाः ।

वृद्धिं करोति देहाग्नेर्लघु पाके विषापहम् ।
तर्पणं नेत्ररोगघ्नं दाहनुद्वडवाघृतम् ॥ १३ ॥

टीका—घोड़ीका घृत-देहाग्निकी वृद्धिको करता है और पाकमें हलका, विष हरता, तर्पण, नेत्ररोगको हरता, दाह हरता, घोड़ीका घृत होता है ॥ १३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ दुग्धजघृतगुणाः ।

घृतं दुग्धभवं ग्राहि शीतलं नेत्ररोगहृत् ।
निहन्ति पित्तदाहास्रमदमूर्च्छाभ्रमानिलान् ॥ १४ ॥

टीका—दूधका घृत काबिज,शीतल, नेत्ररोगको हरता और पित्त दाह रक्त मद मूर्च्छा भ्रम वात इनको हरता है ॥ १४ ॥

अथ ह्यस्तनदुग्धोत्थघृतगुणाः ।

हविर्ह्यस्तनदुग्धोत्थं तत्स्याद्धैयङ्गवीनकम् ।
हैयङ्गवीनं चक्षुष्यं दीपनं रुचिकृत्परम् ।
बलकृद्बृंहणं वृष्यं विशेषाज्ज्वरनाशनम् ॥ १५ ॥

टीका—पूर्वदिन किये दहीके घृतको हैयङ्गवीन कहते हैं. यह घृत नेत्रको हित, दीपन, परम रुचिको करनेवाला है और बलको करनेवाला,पुष्ट,शुक्रको करनेवाला है और विशेष करके ज्वरको हरता कहा है ॥ १५ ॥

अथ पुराणघृतगुणाः ।

वर्षादूर्ध्वं भवेदाज्यं पुराणं तत्त्रिदोषनुत् ।
मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादापस्मारतिमिरापहम् ॥ १६ ॥
यथा यथाऽखिलं सर्पिः पुराणमधिकं भवेत् ।
तथा तथा गुणैः स्वैः स्वैरधिकं तदुदाहृतम् ॥ १७ ॥

टीका—बरसके ऊपर घी पुराना होता है, वह त्रिदोष हरता है ॥ १६ ॥ और मूर्च्छा कुष्ठ विष उन्माद अपस्मार तिमिर इनको हरता है. सब घृत जैसे २ पुराना होताहै वैसे वैसे अपने गुणोंकरके अधिक कहा है ॥ १७ ॥

अथ नवघृतविषयाः ।

योजयेन्नवमेवाज्यं भोजने तर्पणे श्रमे ।
बलक्षये पाण्डुरोगे कामलानेत्ररोगयोः ॥ १८

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ घृतनिषेधः ।

राजयक्ष्मणि बाले च वृद्धे श्लेष्मकृते गदे ।
रोगे सामविषूच्यां च विबन्धे च मदात्यये ॥ १९ ॥
ज्वरे च दहने मन्दे न सर्पिर्बहु मन्यते ॥ २० ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे घृतवर्गः समाप्तः ।

टीका—राजरोगमें बालक और वृद्धको कफके रोगमें आमके रोगमें विषूचिकोंम विबन्धमें मदात्ययमें और ज्वरमें मन्दाग्निमें बहुत घृत अच्छा नहीं है ॥ १९ ॥ २० ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे भाषाटीकायां घृतवर्गः समाप्तः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ

हरीतक्यादिनिघण्टे

मूत्रवर्गः ।

अथ गोमूत्रगुणाः ।

गोमूत्रं कटु तीक्ष्णोष्णं क्षारं तिक्तं कषायकम् ।
लघ्वग्निदीपनं मेध्यं पित्तकृत्कफवातहृत् ॥ १ ॥
शूलगुल्मोदरानाहकण्ड्वक्षिमुखरोगजित् ।
किलासगदवातामबस्तिरुक्कुष्ठनाशनम् ॥
कासश्वासापहं शोथकामलापाण्डुरोगहृत् ॥ २ ॥
कण्डूकिलासगदशूलमुखाक्षिरोगान्
गुल्मातिसारमरुदामयमूत्ररोधान् ।
कासं सकुष्ठजठरक्रिमिपाण्डुरोगान्
गोमूत्रमेकमपि पीतमपाकरोति ॥ ३ ॥
सर्वेष्वपि च मूत्रेषु गोमूत्रं गुणतोऽधिकम् ।
अतोऽविशेषात्कथने मूत्रं गोमूत्रमुच्यते ॥ ४ ॥
प्लीहोदरश्वासकासशोथवर्चोग्रहापहम् ।
शूलगुल्मरुजानाहकामलापाण्डुरोगहृत् ॥ ५ ॥
कषायं तिक्तं तीक्ष्णं च पूरणात्कर्णशूलनुत् ॥ ६ ॥

टीका—अथ गोमूत्रका गुण–गोमूत्र कटु. तीखा, उष्ण, क्षार, तिक्त, कषाय, हलका, अग्निदीपन, मेध्य, पित्तको करनेवाला, कफवातको हरता है ॥ १ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शूल बायगोला उदर आनाह कंडू नेत्ररोग मुखरोग इनको हरने वाला है. किलासरोग आमवात बस्तिपीडा कुष्ठरोग इनको हरता है. कास श्वास इनको हरता, सूजन कामला पाण्डुरोग इनको हरता है ॥ २॥ खुजली किलासरोग शूल मुखरोग नेत्ररोग गुल्म अतिसार वातरोग मूत्ररोग कास कुष्ठके सहित उदररोग क्रिमि पाण्डुरोग इनको एक गोमूत्र पियाहुआ हरता है ॥ ३ ॥ सब मूत्रोंमें गोमूत्र गुणमें अधिक है इसवास्ते सामान्य करके कहनेमें मूत्र गोमूत्रको कहते हैं ॥ ४ ॥ प्लीह उदर श्वास कास सूजन मलग्रह इनको हरता है, शूल बायगोला पीडा अफारा कामला पांडुरोग इनको हरता, कसेला, तिक्त, तीखा, डालनेसे कर्णशूलको हरता है ॥ ५ ॥ ६ ॥

अथ नरमूत्रगुणाः ।

नरमूत्रं गरं हन्ति सेवितं तद्रसायनम् ।
रक्तपामाहरं तीक्ष्णं सक्षारलवणं स्मृतम् ॥ ७ ॥

टीका—मनुष्यका मूत्र विषको हरता है और सेवन कियाहुआ वह रसायन है. और रक्त पामाको हरता, तीखा, क्षार, लवणयुक्त कहा है ॥ १२१ ॥

अथ जातिपरत्वेन मूत्रगुणाः ।

गोजाविमहिषीणां तु स्त्रीणां मूत्रं प्रशस्यते ।
खरोष्ट्रेभनराश्वानां पुंसां मूत्रं हितं स्मृतम् ॥ ८ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे मूत्रवर्गः समाप्तः ।

टीका-गाय, बकरी, भैंस, इन स्त्रियोंका मूत्र प्रशस्त है और गधा, ऊंट, हाथी, मनुष्य, घोड़ा इनमें नरोंका मूत्र हित कहा है ॥ १२२ ॥

इति हरीतक्यादिनिघण्टे भाषाटीकायां मूत्रवर्गः समाप्तः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ

हरीतक्यादिनिघण्टे

तैलवर्गः ।

अथ तैलस्य स्वरूपनिरूपणम् ।

तिलादिस्निग्धवस्तूनां स्नेहस्तैलमुदाहृतम् ।
तत्तु वातहरं सर्वं विशेषात्तिलसम्भवम् ॥ १ ॥

टीका—अब तैलवर्गको कहते हैं. उसमें तेलका निरूपण-तिलादि स्निग्ध पदार्थोंकी चिकनाईको तेल कहते है. वह सब वातको हरता है, परंतु तिलका तेल विशेषकरके वातहर है ॥ १ ॥

अथ तिलतैलगुणाः ।

तिलतैलं गुरु स्थैर्यं बलवर्णकरं सरम् ।
वृष्यं विकाशि विशदं मधुरं रसपाकयोः ॥ २ ॥
सूक्ष्मं कषायानुरसं तिक्तं वातकफापहम् ।
वीर्येणोष्णं हिमं स्पर्श बृंहणं रक्तपित्तकृत् ॥ ३ ॥
लेखनं बद्धविण्मूत्रं गर्भाशयविशोधनम् ।
दीपनं बुद्धिदं मेध्यं व्यवायि व्रणमेहनुत् ॥ ४ ॥
श्रोत्रयोनिशिरःशूलनाशनं लघुताकरम् ।
त्वच्यं केश्यं च चक्षुष्यमभ्यङ्गे भोजनेऽन्यथा ॥ ५ ॥
छिन्नभिन्नच्युतोत्पिष्टमथितक्षतपिच्चिते ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भग्नस्फुटितविद्धाग्निदग्धविश्लिष्टदारिते ॥ ६ ॥
तथाभिहतनिर्भुग्नमृगव्याघ्रादिविक्षते ।
बस्तौ पानेऽन्नसंस्कारे नस्ये कर्णाक्षिपूरणे ॥ ७ ॥
सेकाभ्यङ्गावगाहेषु तिलतैलं प्रशस्यते ।

टीका--तिलका तैल भारी, स्थैर्य बल वर्ण इनको करनेवाला, सर, शुक्रको करनेवाला, विकाशी, विशद, रसपाकमें मधुर ॥ २ ॥ सूक्ष्म, पीछेसे कसेला, तिक्त, वातकफको हरता, वीर्यमें उष्ण, स्पर्शमें शीतल, पुष्ट, रक्तपित्तको करनेवाला ॥ ३ ॥ लेखन, मलमूत्रको बांधनेवाला, गर्भाशयका शोधन, दीपन, बुद्धिको देनेवाला, मेधा, (स्मरणशक्ति) हित, व्यवायि, व्रण प्रमेहको हरता ॥ ४ ॥ कर्ण, योनि, शिर इनके शूलको हरता और हलकापन करनेवाला, त्वचाको हित, नेत्रको हित है. अभ्यङ्गमें ये गुण हैं और भोजनमें इसके विपरीत गुण हैं ॥ ५ ॥ छिन्न, भिन्न, च्युत, उत्पिष्ट, मथित, क्षत, पिच्चित, भग्न, स्फुटित, विद्ध, अग्निदग्ध, विश्लिष्ट, दारित ॥ ६ ॥ तथा अभिहत, निर्भुग्न, मृग व्याघ्र आदि विक्षत, इनका विशेष भग्ननिदानमें किया है. इनमें, बस्तिमें, पीनेमें, अन्नके संस्कारमें, नस्यमें, कर्णनेत्रके भरनेमें ॥ ७ ॥ सेक, अभ्यङ्ग, अवगाह इनमें तिलका तेल प्रशस्त है.

ननु बृंहणलेखनयोः कथं सामानाधिकरण्यमित्याह-
रूक्षादिदुष्टः पवनः स्रोतः सङ्कोचयेद्यदा ।
रसोऽसम्यग्वहन् कार्श्यं कुर्याद्रक्ताद्यवर्धयन् ॥ ८ ॥
तेषु प्रवेष्टुं सरत्वसौक्ष्म्यस्निग्धत्वमार्दवैः ।
तैलं क्षमं रसं नेतुं कृशानां तेन बृंहणम् ॥ ९ ॥
व्यवायि सूक्ष्मतीक्ष्णोष्णसरत्वैर्मेदसः क्षयम् ।
शनैः प्रकुरुते तैलं तेन लेखनमीरितम् ॥ १० ॥
द्रुतं पुरुषं बध्नाति स्खलितं तत्प्रवर्तयेत् ।
ग्राहकं सारकं चापि तेन तैलमुदीरितम् ॥ ११ ॥
घृतमब्दात्परं पक्कं हीनवीर्यं प्रजायते ।
तैलं पक्कमपक्कं वा चिरस्थायि गुणाधिकम् ॥ १२ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—शंका-बृंहण और लेखनका कैसे सामानाधिकरण्य है ? सो कहते हैं-रूक्षादिकरके दुष्टहुआ पवन जब संकोच करता है और रस अच्छी तरह बहता हुआ रक्तादिकोंको न बढ़ाता हुआ कृशताको करता है ॥८॥ तब सरत्व, सौक्ष्म्य, स्निग्धता और मृदुता इनकरके उनम प्रवेश करनेको और रस लेजानेको तैलही समर्थ है. इसवास्ते कृशोंको पुष्ट करनेवाला है ॥ ९ ॥ व्यवायि, सूक्ष्म, तीक्ष्ण, उष्ण और सरत्व इनसे मेदका क्षय धीरे धीरे करता हैं इसवास्ते तेल लेखन कहा है ॥ १० ॥ पतले मलको बांधता है और उस स्खलितको निकालता है उससे तेल काबिज और सारक कहा है ॥ ११ ॥ पकाहुआ घृत बरसभरके ऊपर हीनवीर्य होता है और तेल कच्चा वा पकाहुआ चिरस्थायी गुणमें अधिक है ॥ १२ ॥

अथ सार्षपराजिकतैलगुणाः ।

दीपनं सार्षपं तैलं कटु पाकरसं लघु ।
लेखनं स्पर्शवीर्योष्णं तीक्ष्णं पित्तास्रदूषकम् ॥ १३ ॥
कफमेदोऽनिलार्शोघ्नं शिरःकर्णामयापहम् ।
कण्डूकुष्ठक्रिमिश्वित्रकोठदुष्टक्रिमिप्रणुत् ॥ १४ ॥
तद्वद्राजिकयोस्तैलं विशेषान्मूत्रकृच्छ्रकृत् ॥ १५ ॥
(राजिकयोः कृष्णराई आरक्तराई इति द्वयोः ।)

टीका—सरसोंका तेल दीपन, पाक और रसमें कटु, हलका, लेखन, स्पर्श और वीर्यमें उष्ण, तीखा, रक्तपित्तका दूषक ॥ १३ ॥ कफ, मेद, वात, बवासीर, शिरोरोग, कर्णरोग इनको हरता और कंडू, कुष्ठ, कृमि, श्वित्र, कोढ़, दुष्ट कृमि, इनको हरता है ॥ १४ ॥ वैसेही दोनों राइयोंका तेल है. विशेषकरके मल, मूत्र, कृच्छ्रको करनेवाला है. (राई काली और लाल दोनोंके तेलका यह गुण है.) ॥ १५ ॥

अथ तुवरीतैलगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णं तुवरीतैलं लघु ग्राहि कफास्रजित् ।
वह्निकृद्विषहृत्कण्डूकुष्ठकोठक्रिमिप्रणुत् ॥ १६ ॥
मेदोदोषापहं चापि व्रणशोथहरं परम् ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—तुवरीतैलके गुण—तीखा, उष्ण, हलका, काबिज, कफरक्तको हरनेवाला, अग्निको करनेवाला, विष हरता और खुजली कुष्ठ कोठ कृमि इनको हरता है ॥ १६ ॥ मेदोदोषको हरता और परमव्रणशोथको हरता है.

अथातसीतैलगुणाः ।

अतसीतैलमाग्नेयं स्निग्धोष्णं कफपित्तकृत् ॥ १७ ॥
कटुपाकमचक्षुष्यं बल्यं वातहरं गुरु ।
मलकृद्रसतः स्वादु ग्राहि त्वग्दोषहृद्घनम् ॥ १८
बस्तौ पाने तथाभ्यङ्गे नस्ये कर्णस्य पूरणे ।
अनुपानविधौ चापि प्रयोज्यं वातशान्तये ॥ १९ ॥

टीका—अलसीका तेल आग्नेय, चिकना, उष्ण, कफपित्तको करनेवाला ॥ १७ ॥ पाकमें कटु, नेत्रको अहित, बलको हित, वात हरता, भारी होता है. मलको करनेवाला, रसमें मधुर, काबिज, त्वचाके दोषको हरता, गाढा होता है ॥ १८ ॥ बस्तिमें, पीनेमें, अभ्यङ्गमें, नासमें, कानके डालनेमें, अनुपानविधिमें भी वातशांतिके अर्थ इसकी योजना करनी चाहिये ॥ १ ॥

अथ कुसुम्भतैलगुणाः ।

कुसुम्भतैलमम्लं स्यादुष्णं गुरु विदाहि च ।
चतुर्भ्यामहितं बल्यं रक्तपित्तकफप्रदम् ॥ २० ॥

टीका—कुसुम्भके तेलका गुण—कुसुम्भका तेल खट्टा होता है और उष्ण, भारी, विदाही, नेत्रोंको अहित, बलको हित, रक्त पित्त कफ इनको करनेवाला है ॥ २० ॥

अथ खसबीजतैलगुणाः ।

तैलं तु खसबीजानां बल्यं वृष्यं गुरु स्मृतम् ।
वातहृत्कफहृच्छीतं स्वादुपाकरसं च तत् ॥ २१ ॥

टीका—अथ खसखसके तेलका गुण—खसखसका तेल बलको हित, शुक्रको

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

करनेवाला, भारी कहा है. वात हरता, और कफ हरता, शीतल, रसपाकमें मधुर होता है ॥ २१ ॥

अथ एरण्डतैलगुणाः ।

एरण्डतैलं तीक्ष्णोष्णं दीपनं पिच्छिलं गुरु ।
वृष्यं त्वच्यं वयःस्थापि मेधाकान्तिबलप्रदम् ॥ २२ ॥
कषायानुरसं सूक्ष्मं योनिशुक्रविशोधनम् ।
विस्रं स्वादु रसे पाके सतिक्तं कटुकं सरम् ॥ २३ ॥
विषमज्वरहृद्रोगपृष्ठगुह्यादिशूलनुत् ।
हन्ति वातोदरानाहगुल्माष्ठीलाकटिग्रहान् ॥
वातशोणितविड्बन्धब्रध्मशोथामविद्रधीन् ॥ २४ ॥
आमवातगजेन्द्रस्य शरीरवनचारिणः ।
एक एव निहन्तायमेरण्डस्नेहकेसरी ॥ २५ ॥

टीका—अथ अंडीका तेल-अंडीका तेल तीखा, गरम, दीपन, पिच्छिल, भारी, शुक्रको करनेवाला, त्वचाको हित, वयको स्थापन करनेवाला, मेधा कान्ति बल इनको करनेवाला है ॥ २२ ॥ पीछेसे कसेला, सूक्ष्म, योनि शुक्रका शोधन, दुर्गंधियुक्त रसमें मधुर और पाकमें कुछ तिक्त, कटुक, सर ॥ २३ ॥ विषमज्वर, हृदयरोग, पीठ, गुदा आदिके शूलको हरता है. वातोदर, अफरा, बायगोला, अष्ठीला, कटिग्रह, वातरक्त, बद्धमल, बद, सूजन, आमविद्रधि इनको हरता है ॥ २४ ॥ शरीररूपी वनमें विचरनेवाले आमवातरूपी गजेन्द्रको एकही हरनेवाला अंडीका तेलरूप सिंह है ॥ २५ ॥

अथ रालतैलगुणाः ।

तैलं सर्जरसोद्भूतं विस्फोटव्रणनाशनम् ।
कुष्ठपामाक्रिमिहरं वातश्लेष्मामयापहम् ॥ २६ ॥

टीका—अब रालके तेलका गुण-रालका तेल विस्फोट, व्रण इनको हरता है और कुष्ठ, पामा, क्रिमि इनको हरता तथा वात कफके रोगको हरता है ॥ २६ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ सर्वतैलगुणाः ।

तैलं स्वयोनिगुणकृद्वाग्भटेनाखिलं मतम् ।
अतः शेषस्य तैलस्य गुणा ज्ञेया स्वयोनिवत् ॥ २७ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे तैलवर्गः समाप्तः ।

टीका–सब तेलके गुण–जिसका तेल होता हे उसीके समान गुणमें होता है, ऐसा वाग्भटनें सब तेलोंको माना है, इसवास्ते बाकी तेलके गुण अपने कारणके समान जानना चाहिये ॥ २७ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे भाषाटीकायां तैलवर्गः समाप्तः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ

हरीतक्यादिनिघण्टे

सन्धानवर्गः ।

तत्र काञ्जिकस्य लक्षणं गुणाश्च ।

सन्धितं धान्यमण्डादि काञ्जिकं कथ्यते जनैः ॥ १ ॥
काञ्जिकं भेदि तीक्ष्णोष्णं रोचनं पाचनं लघु ।
दाहज्वरहरं स्पर्शात्पानाद्वातकफापहम् ॥ २ ॥
माषादिवटकैर्यत्तु क्रियते तद्गुणाधिकम् ।
लघु वातहरं तत्तु रोचनं पाचनं परम् ॥ ३ ॥
शूलाजीर्णविबन्धामनाशनं बस्तिशोधनम् ।
शोषमूर्च्छाभ्रमार्तानां मदकण्डूविशोषिणाम् ॥ ४ ॥
कुष्ठिनां रक्तपित्तानां काञ्जिकं न प्रशस्यते ।
पाण्डुरोगे यक्ष्मणि च तथा शोथातुरेषु च ॥ ५ ॥
क्षतक्षीणे तथा श्रान्ते मन्दज्वरनिपीडिते ।
एतेषां न हितं प्रोक्तं काञ्जिकं दोषकारम् ॥ ६ ॥

टीका—अनन्तर सन्धानवर्ग । उसमें काँजीका लक्षण और गुण कहते हैं—सन्धान कियेहुए धान्यमण्डादिकको जन काँजी कहते हैं ॥ २८ ॥ कांजी भेद करनेवाली, तीखी, उष्ण, रोचन, पाचन, हलकी होती है. स्पर्शसे दाह ज्वरको हरती और पीनेसे वातकफको हरती है ॥ २९ ॥ उड़द आदिके बड़े

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डालके जो की जाती है वह गुणमें अधिक होती है. हलकी, वात हरती, रोचन, परम पाचन होती है ॥ ३० ॥ शूल अजीर्ण विबन्ध आम इनको हरती, बस्ति-शोधन, शोष मूर्च्छा भ्रम इनसे पीडितको और मद कण्डू विशोषवालोंको ॥ ३१ ॥ कुष्ठवालोंको, रक्तपित्तवालोंको कांजी अच्छी नहीं है. पाण्डुरोग राज-यक्ष्मा तथा शोषसे पीडित ॥ ३२ ॥ क्षतक्षीण तथा श्रान्त, मन्द ज्वरसे पीडित इनको कांजी अहित और दोषकारक कही है ॥ ३३ ॥

अथ तुषोदकलक्षणगुणाः ।

तुषोदकं यवैरामैः सतुषैः शकलीकृतैः ॥ ७ ॥
(यवैः उदके संहितैः संधानवर्गोक्तत्वात् ।)
तुषाम्बु दीपनं हृद्यं पाण्डुकृमिगदापहम् ।
तीक्ष्णोष्णं पाचनं पित्तरक्तकृद्बस्तिशूलनुत् ॥ ८ ॥

टीका—मयछिलके तक कच्चे टुकड़े कियेहुए जवोंसे तुषोदक होता है ॥ ७ ॥ (उदकमें भिगोये हुए यवोंसे तुषोदक बनता है, क्योंकि सन्धानवर्गमें कहनेसे)॥३४॥ तुषोदक दीपन, हृद्य, पाण्डुरोग कृमिरोग इनको हरता, तीखा, उष्ण, पाचन, पित्तरक्तको करनेवाला, बस्तिशूलको हरता है ॥ ३५ ॥

अथ सौवीरलक्षणगुणाः ।

सौवीरं तु यवैरामैः पक्वैर्वा निस्तुषैः कृतम् ।
गोधूमैरपि सौवीरमाचार्याः केचिदूचिरे ॥ ९ ॥
सौवीरं तु ग्रहण्यर्शःकफघ्नं भेदि दीपनम् ।
उदावर्ताङ्गमर्दास्थिशूलानाहेषु शस्यते ॥ १० ॥

टीका—कच्चे जव अथवा पकेहुए बे छिलकोंकेसे कियाहुआ सौवीर है. कोई आचार्य 'गेहूंसे भी सौवीर होता है' ऐसा कहते हैं ॥ ३६ ॥ सौवीर संग्रहणी, बवासीर, कफ, इनको हरता; भेदी, दीपन है. उदावर्त्त, अङ्गमद, अस्थिशूल, अफरा इनमें प्रशस्त है ॥ ३७ ॥

अथारनाललक्षणगुणाः ।

आरनालं तु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषीकृतैः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पक्वैर्वा सन्धितैस्तत्तु सौवीरसदृशं गुणैः ॥ ११ ॥

टीका—अनन्तर आरनालका लक्षण और गुण—बे छिलकेके कच्चे गेहुँओसे आरनाल होता है. अथवा पके सन्धान किये गेहुँओंसे वह सौवीरके सदृश गुणमें होता है ॥ ३८ ॥

अथ धान्याम्ललक्षणगुणाः ।

धान्याम्लं शालिचूर्णं च कोद्रवादिकृतं भवेत् ॥ १२ ॥
धान्याम्लं धान्ययोनित्वात्प्रीणनं लघु दीपनम् ।
अरुचीवातरोगेषु सर्वेष्वास्थापने हितम् ॥ १३ ॥

टीका—अनन्तर धान्याम्लका लक्षण और गुण—चावलका चूर्ण और कोदों आदिसे बनायाहुआ धान्याम्ल होता है ॥ ३९ ॥ धान्यसे होनेसे धान्याम्ल होता है. वह प्रीणन, हलका, दीपन है. अरुचिमें, वातरोगमें और सब आस्थापनोंमें हित है ॥४०॥

अथ शण्डाकीलक्षणगुणाः ।

शण्डाकी राजिकायुक्तैः स्यान्मूलकदलद्रवैः ।
सर्षपस्वरसैर्वापि शालिपिष्टकसंयुतैः ।
(संधितैरिति शेषः ।)
शण्डाकी रोचनी गुर्वी पित्तश्लेष्मकरी स्मृता ॥ १४ ॥

टीका—अनन्तर शण्डाकीका लक्षण और गुण—राईसे युक्त मूलीके पत्तोंका रस और सरसोंके स्वरसमें भी चावलकी पिट्ठीसे युक्त शण्डाकी होती है. शण्डाकी रोचन, भारी, पित्तको करनेवाली कही है ॥ ४१ ॥

अथ शुक्तलक्षणगुणाः ।

कन्दमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च ।
यत्र द्रव्येऽभिषूयन्ते तच्छुक्तमभिधीयते ॥ १४ ॥
शुक्तं कफघ्नं तीक्ष्णोष्णं रोचनं पाचनं लघु ।
पाण्डुक्रिमिहरं रूक्षं भेदनं रक्तपित्तकृत् ॥ १५ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका--शुक्तका लक्षण और गुण-कन्द मूल फल आदि और चिकनाई लवण ये जिस द्रव्यमें पड़ते हैं उसको शुक्त कहते हैं ॥ ४२ ॥ शुक्त कफ हरता, तीखा, उष्ण, रोचन, पाचन, हलका, पाण्डु क्रिमिको हरता, रूखा, भेदन, रक्तपित्तका करनेवाला है ॥ ४३ ॥

अथासुतलक्षणगुणाः ।

कन्दमूलफलाढ्यं यत्तु विज्ञेयमासुतम् ।
तद्रुच्यं पाचनं वातहरं लघु विशेषतः ॥ १५ ॥

टीका--अब सन्धानका लक्षण और गुण-कन्द मूल फलसे जो युक्त होता है उसको आसुत जानना चाहिये. वह रुचिको करनेवाला, पाचन, वात हरता, विशेषकरके हलका होता है ॥ ४४ ॥

अथ मद्यनामलक्षणगुणाः ।

मद्यं तु सीधुमैरेयमिरा च मदिरा सुरा ।
कादम्बरी वारुणी च हालापि बलवल्लभा ॥ १६ ॥
पेयं यन्मादकं लोके तन्मद्यमभिधीयते ।
यथारिष्टं सुरा सीधुरासवाद्यमनेकधा ॥ १७ ॥
मद्यं सर्वं भवेदुष्णं पित्तकृद्वातनाशनम् ।
भेदनं शीघ्रपाकं च रूक्षं कफहरं परम् ॥ १८ ॥
अम्लं च दीपनं रुच्यं पाचनं चाशुकारि च ।
तीक्ष्णं सूक्ष्मं च विशदं व्यवायि च विकाशि च ॥ १९ ॥

टीका—मद्य, सीधु, मैरेय, इरा, मदिरा, सुरा, कादंबरी, वारुणी, हाला, बलवल्लभा ये मदिराके नाम हैं ॥ ४५ ॥ जो पीनेका पदार्थ नशा करनेवाला है उसको लोक मद्य कहते हैं. जैसे-अरिष्ट, सुरा, सीधु, और आसव आदि अनेक प्रकार हैं ॥ ४६ ॥ सब मद्य उष्ण, पित्तको करनेवाले, वात हरते, भेदन, शीघ्रपाकी, रूखे, परम कफ हरते हैं ॥ ४७ ॥ और खट्टे, दीपन, रुचिको करनेवाले, पाचन, आशुकारी, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, विशद, व्यवायी और विकाशी होते हैं ॥ ४८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथारिष्टस्य लक्षणं गुणाश्च ।

पक्वौषधाम्बुसिद्धं यन्मद्यं तत्स्यादरिष्टकम् ॥ २० ॥
(अरिष्टं मद्यमिति लोके । यथा-द्राक्षारिष्टम् ।
दशमूलारिष्टम् । बब्बूलारिष्टमिति ।)
अरिष्टं लघु पाकेन सर्वतश्च गुणाधिकम् ।
अरिष्टस्य गुणा ज्ञेया बीजद्रव्यगुणैः समाः ॥ २१ ॥

टीका—पक्व औषध और जलसे जो सिद्ध मद्य है उसको अरिष्ट कहते हैं ॥ ४९ ॥ (लोकमें अरिष्टको मद्य कहते हैं. जैसे-द्राक्षारिष्ट, दशमूलारिष्ट, बब्बूलारिष्ट इसप्रकार.) अरिष्ट पाक करके हलका और सबसे गुणमें अधिक होता है. बीजद्रव्यगुणके समान अरिष्टका गुण जानना चाहिये ॥ ५० ॥

अथ सुराया लक्षणं गुणाश्च ।

शालिषष्टिकपिष्टादिकृतं मद्यं सुरा स्मृता ।
सुरा गुर्वी बलस्तन्यपुष्टिमेदःकफप्रदा ।
ग्राहिणी शोथगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत् ॥ २२ ॥

टीका—सांठी चावलकी पिट्ठी आदिसे बनायेहुए मद्यको सुरा कहते हैं. सुरा भारी, बल दुग्ध पुष्टि मेद कफको करनेवाली, काबिज, सूजन बायगोला बवासीर संग्रहणी मूत्रकृच्छ्र इनको हरती है ॥ ५१ ॥

अथ वारुणीलक्षणगुणाः ।

पुनर्नवा शिलापिष्टैर्वारुणी विहिता स्मृता ॥ २३ ॥
संहितैस्तालखर्जूररसैर्या सापि वारुणी ।
सुरावद्वारुणी लघ्वी पीनसाध्मानशूलनुत् ॥ २४ ॥
(सुरातो भेदार्थं लघ्वीति ।)

टीका—अब सुराका भेद वारुणी उसका लक्षण और गुण-शिलापिष्ट पुनर्नवासे विहित वारुणी कही है ॥ ५२ ॥ और ताड खजूर इनके सन्धानसे जो होती है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वहभी वारुणी है. सुराके समान वारुणी हलकी और पीनस शूल इनको हरती है ॥ ५३ ॥ (सुरासे भेदार्थ हलकी ऐसा कहा है.)

अथ सीधुलक्षणगुणाः ।

इक्षोः पक्करसैः सिद्धः सीधुः पक्करसश्च सः ।
आमैस्तैरेव यः सीधुः स च शीतरसः स्मृतः ॥ २५ ॥
सीधुः पक्करसैः श्रेष्ठः स्वराग्निबलवर्णकृत् ।
वातपित्तकरः सद्यः स्नेहनो रोचनो हरेत् ॥ २६ ॥
विबन्धमेदःशोफार्शःशोफोदरकफामयान् ।
तस्मादल्पगुणः शीतरसः संलेखनः स्मृतः ॥ २७ ॥

टीका—अब दोनों सीधुका लक्षण और गुण-ईखके पक्करसमें सिद्ध सीधु और पक्करस कहा है. तथा उसी कच्चे रससे जो सीधु होता है उसको शीतरस कहते हैं ॥ ५४ ॥ पक्करस सीधु श्रेष्ठ है. वह अग्नि बल वर्ण इनको करनेवाला और वातपित्तको करनेवाला, तत्काल स्नेहन, रोचन होता है ॥ ५५ ॥ और विबन्ध मेद शोफ बवासीर शोफोदर कफके रोग इनको हरता है. उससे अल्पगुण शीतरस कहा है और लेखन कहा है ॥ ५६ ॥

अथ आसवानां गुणाः ।

यदपक्कौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः ।
आसवस्य गुणा ज्ञेया बीजद्रव्यगुणैः समाः ॥ २८ ॥

टीका—अब आसवका लक्षण और गुण कहते हैं- जो अपक्क औषध और जलसे सिद्ध मद्य वह आसव है. जैसे लोहासव आदि. आसवके गुण बीज द्रव्यगुणके समान जानना चाहिये ॥ ५७ ॥

अथ नूतनानूतनमद्यगुणाः ।

मद्यं नवमभिष्यन्दि त्रिदोषजनकं सरम् ।
अहृद्यं बृंहणं दाहि दुर्गन्धं विशदं गुरु ॥ २९ ॥
जीर्णं तदेव रोचिष्णु कृमिश्लेष्मानिलापहम् ।
हृद्यं सुगन्धि गुणवल्लघु स्रोतोविशोधनम् ॥ ३० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—अनन्तर नये और पुराने मद्यका गुण—नवीन मद्य अभिष्यंदी, त्रिदोषको करनेवाला, सर, अहृद्य, पुष्ट, दाहको करनेवाला, दुर्गन्ध, विशद, भारी है ॥ ५८ ॥ और वही जीर्ण (पुराना) रुचिको करनेवाला, कृमि कफ वात इनको हरता, हृद्य, सुगन्धि-गुणयुक्त, हलका, शोथोंका शोधन करनेवाला है ॥ ५९ ॥

अथ प्रकृतिभेदेन मद्यगुणाः।

सात्त्विके गीतहास्यादि राजसे साहसादिकम्।
तामसे निन्द्यकर्माणि निद्रां च मदिरा चरेत् ॥ ३१ ॥

टीका—मद्य पीनेवाले सात्विकादिकोंके चेष्टाविशेष—सात्विकके गीत हास्य आदि, राजसमें साहसादिक, तामसमें निन्द्यकर्म निद्रा इनको मदिरा करती है ॥ ६० ॥

अथ मद्यपानप्रकारः।

विधिना मात्रया काले हितैरन्नैर्यथाबलम्।
प्रहृष्टो यः पिबेन्मद्यं तस्य स्यादमृतं यथा ॥ ३२ ॥
किन्तु मद्यं स्वभावेन यथैवान्नं तथा स्मृतम्।
अयुक्तियुक्तं रोगाय युक्तियुक्तं यथामृतम् ॥ ३३ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे संधानवर्गः समाप्तः।

टीका-विधि और मात्रासे समयपर हित अन्नके साथ बलानुसार हर्षयुक्त हुआ जो पीता है, उसको मद्य अमृतके समान जानना चाहिये ॥ ६१ ॥ मद्य स्वभावसे जैसे अन्न, वैसे कहा है. लेकिन, बेतरकीबसे पियाहुआ रोगको करता है और तरकीबके साथ पियाहुआ अमृतके समान होता है ॥ ६२ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे भाषाटीकायां सन्धानवर्गः समाप्तः।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ

हरीतक्यादिनिघण्टे

मधुवर्गः ।

तत्र मधुनो नामानि गुणाश्च ।

मधुमाक्षीकमाध्वीकक्षौद्रसारघ्यमीरितम् ।
मक्षिका-वरटी-भृङ्गवान्तपुष्परसोद्भवम् ॥ १ ॥
मधु शीतं लघु स्वादु रूक्षं ग्राहि विलेखनम् ।
चक्षुष्यं दीपनं स्वर्यं व्रणशोधनरोपणम् ॥ २ ॥
सौकुमार्यकरं सूक्ष्मं परं स्रोतोविशोधनम् ।
कषायानुरसं ह्लादि प्रसादजनकं परम् ॥ ३ ॥
वर्ण्यं मेधाकरं वृष्यं विशदं रोचनं हरेत् ।
कुष्ठार्शःकासपित्तास्रकफमेहक्लमकृमीन् ॥ ४ ॥
मेदस्तृष्णावमिश्वासहिक्कातीसारविड्ग्रहान् ।
दाहक्षतक्षयांस्तत्तु योगवाह्यल्पवातलम् ॥ ५ ॥

टीका-अथ मधुवर्ग। उसमें मधुके नाम और गुण कहते हैं-मधु, माक्षीक, माध्वींक, क्षौद्र, सारघ्य ये मधुके नाम हैं. मक्खी, बरटा, भँवरा, इनके गेरेहुए पुष्परससे उत्पन्न ॥१॥ मधु शीतल, हलका, मधुर, रूखा काबिज, लेखन, नेत्रको हित, दीपन, स्वरको अच्छा करनेवाला, व्रणशोधन, रोपण है ॥ २ ॥ सुकुमारताको करने-वाला, सूक्ष्म, अत्यन्त सोतोंका शोधन, पींछेसे कसेला, हर्षको देनेवाला और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परम स्वच्छताको करनेवाला है ॥ ३ ॥ वर्णको हित, कान्तिको करनेवाला, शुक्रको करनेवाला, विशद, रोचन है और कुष्ठ बवासीर कास रक्तपित्त कफ प्रमेह क्लम क्रमि इनको ॥ ४ ॥ और मेद तृषा वमन श्वास हिचकी अतीसार मलग्रह इनको तथा दाह क्षत क्षय इनको भी दूर करता है और योगवाही, अल्प वातको करनेवाला है ॥ ५ ॥

अथ मधुभेदाः ।

मक्षिकं भ्रामरं क्षौद्रं पौत्तिकं छात्रमित्यपि ।
आर्घ्यमौद्दालकं दालमित्यष्टौ मधुजातयः ॥ ६ ॥

टीका—अब मधुके भेदोंको कहते हैं—माक्षिक, भ्रामर, क्षौद्र, पौत्तिक, छात्र, आर्घ्य, औद्दालक और दाल इसप्रकार आठ मधुकी जाती हैं ॥ ६ ॥

अथ माक्षिकलक्षणगुणाः ।

माक्षिकाः पिङ्गवर्णास्तु महत्यो मधुमक्षिकाः ।
ताभिः कृतं तैलवर्णं माक्षिकं परिकीर्तितम् ॥ ७ ॥
माक्षिकं मधुषु श्रेष्ठं नेत्रामयहरं लघु ।
कामलार्शःक्षतश्वासकासक्षयविनाशनम् ॥ ८ ॥

टीका—उनमें माक्षिकका लक्षण—मक्षिका पिङ्गवर्ण बड़ी जो मधुमख्खी होती हैं उनसे कियाहुआ व तेलके समान वर्ण ऐसेको माक्षिक कहते हैं ॥७॥ माक्षिक मधु श्रेष्ठ, नेत्ररोगको हरता, हलका होता है और कामला बवासीर क्षत श्वास कास क्षय इनको हरता है ॥ ८ ॥

अथ भ्रामरलक्षणगुणाः ।

किञ्चित्सूक्ष्मैः प्रसिद्धेभ्यः षट्पदेभ्योऽलिभिश्चितम् ।
निर्मलं स्फटिकाभं यत्तन्मधु भ्रामरं स्मृतम् ॥ ९ ॥
भ्रामरं रक्तपित्तघ्नं मूत्रजाड्यकरं गुरु ।
स्वादुपाकमभिष्यन्दि विशेषात्पिच्छिलं हिमम् ॥ १० ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका-अनन्तर भ्रामरका लक्षण और गुण-किंचित् सूक्ष्म प्रसिद्ध षट्पद (भँवरा) से संग्रह कियाहुआ निर्मल स्फटिकके समान जो होता है उसको भ्रामर कहते हैं ॥ ९ ॥ भ्रामर रक्तपित्तको हरता, मूत्र जडता इनको करनेवाला, भारी, पाकमें मधुर, अभिष्यंदी, विशेषकरके पिच्छिल और शीतल होता है ॥ १० ॥

अथ क्षौद्रलक्षणगुणाः।

मक्षिकाः कपिलाः सूक्ष्माः क्षुद्राख्यास्तत्कृतं मधु।
मुनिभिः क्षौद्रमित्युक्तं तद्वर्णात्कपिलं भवेत्।
गुणैर्माक्षिकवत्क्षौद्रं विशेषान्मेहनाशनम् ॥ ११ ॥

टीका-अब क्षौद्रका लक्षण और गुण कहते हैं-सूक्ष्म, कपिल, क्षुद्र नाम जो मक्षिका होती हैं, उनका कियाहुआ जो मधु है उसको मुनियोंने क्षौद्र ऐसा कहा है. वह वर्णमें कपिल होता है, गुणमें माक्षिकके समान होता है. विशेषकरके प्रमेहको हरता है ॥ ११ ॥

अथ पौतिकलक्षणगुणाः।

कृष्णा या मशकोपमा लघुतरा प्रायो महापीडिका
वृक्षाणां पृथुकोटरान्तरगताः पुष्पासवं कुर्वते।
तास्तज्ज्ञैरिह पूतिका निगदितास्ताभिः कृतं सर्पिषा
तुल्यं यन्मधु तद्वनेचरजनैः संकीर्तितं पौतिकम् ॥ १२ ॥
पौतिकं मधु रूक्षोष्णं पित्तदाहास्रवातकृत्।
विदाहि मेहकृच्छ्रघ्नं ग्रन्थ्यादिक्षतशोषि च ॥ १३ ॥

टीका-अब पौतिकका लक्षण और गुण-जो काळी मच्छरके समान बहुत छोटी प्रायः बड़ी पीडिका पुराने वृक्षके खोड़में रहनेवाली पुष्पके आसवको करती हैं उनको उनके जाननेवाले मनुष्योंने यहांपर पूतिका ऐसा कहा है. उनका बनाया-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हुआ घृतके समान जो मधु होता है उसको वनके विचरनेवाले जनोंने पौतिक कहा है ॥ १२ ॥ पौतिक मधु रूखा, उष्ण, पित्त दाह रक्त वात इनको करनेवाला, विदाही और प्रमेह मूत्रकृच्छ्र इनको हरता तथा गांठआदिका शोषीभी है ॥ १३ ॥

अथ छात्रलक्षणगुणाः ।

वरटाः कपिलाः पीताः प्रायो हिमवतो वने ।
कुर्वन्ति छत्रकाकारं तज्जं छात्रं मधु स्मृतम् ॥१४॥
छात्रं कपिलपीतं स्यात्पिच्छिलं शीतलं गुरु ।
स्वादुपाकं कृमिश्वित्ररक्तपित्तप्रमेहजित् ॥
भ्रमतृण्मोहविषहृत्तर्पणं च गुणाधिकम् ॥ १५ ॥

टीका—छात्रका लक्षण और गुण—बर्रे कपिल पीली प्रायः हिमालयके वनमें होती हैं वे छातेके आकारको बनाती हैं उसका मधु छात्र कहाता है ॥ १४ ॥ छात्र कपिल, पीला होता है और पिच्छिल, शीतल, भारी, पाकमें मधुर होता है और कृमि श्वित्र रक्त पित्त प्रमेह इनको हरनेवाला है तथा भ्रम तृषा मोह विष इनको हरता, तर्पण और गुणमें अधिक होता है ॥ १५ ॥

अथार्घ्यलक्षणगुणाः ।

मधूकवृक्षनिर्यासजरत्कार्वाश्रमोद्भवम् ।
स्रवन्त्यार्घ्यं तदाख्यातं श्वेतकं मालवे पुनः ॥ १६ ॥
तीक्ष्णतुण्डास्तु याः पीता मक्षिकाः षट्पदोपमाः ।
आर्घ्यास्तास्तत्कृतं यत्तदार्घ्यमित्यपरे जगुः ॥ १७ ॥
आर्घ्यं मध्वतिचक्षुष्यं कफपित्तहरं परम् ।
कषायं कटुकं पाके तिक्तं च बलपुष्टिकृत् ॥ १८ ॥

टीका—जरत्कारुके आश्रममें उत्पन्न महुवेके वृक्षका जो सफेद गोंद झिरता है उसको आर्घ्य ऐसा कहते हैं और मालवेमें भी होता है ॥ १६ ॥ जो भौरेके समान मक्खियां तीक्ष्णमुखवाली पीली होती हैं वे आर्घ्य हैं, उनका

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कियाहुआ जो मधु है उसको और आचार्य आर्ध्य कहते हैं ॥ १७ ॥ आर्ध्य मधु नेत्रको अति हित और अत्यन्त कफपित्तको हरता है और कसेला, पाकमें कटू, तिक्त बल पुष्टिको करनेवाला है ॥ १८ ॥

अथोद्दालकलक्षणगुणाः ।

प्रायो वल्मीकमध्यस्थाः कपिलाः स्वल्पकीटकाः ।
कुर्वन्ति कपिलं स्वल्पं तत्स्यादौद्दालकं मधु ॥ १९ ॥
औद्दालकं रुचिकरं स्वर्यं कुष्ठविषापहम् ।
कषायमुष्णमम्लं च कटुपाकं च पित्तकृत् ॥ २० ॥

टीका—प्रायः बांबीके बीच रहनेवाले कपिल छोटे कीड़े होते हैं. वे थोड़ा कपिल वर्ण मधु करते हैं उसको औद्दालक मधु कहते हैं ॥ १९ ॥ औद्दालक रुचिको करनेवाला, स्वरको हित, कुष्ठ विषको हरता, कसेला, उष्ण, खट्टा, पाकमें कटु, पित्तको करनेवाला होता है ॥ २० ॥

अथ दालस्य लक्षणं गुणाश्च ।

संस्रुत्य पतितं पुष्पाद्यत्तु पत्रोपरि स्थितम् ।
मधुराम्लकषायं च तद्दालं मधु कीर्तितम् ॥ २१ ॥
दालं मधु लघु प्रोक्तं दीपनीयं कफापहम् ।
कषायानुरसं रूक्षं रुच्यं छर्दिप्रमेहजित् ॥ २२ ॥
अधिकं मधुरं स्निग्धं बृंहणं गुरु भारिकम् ॥ २३ ॥
(लघु पाके गुरु भारिकं तुलितम् ।)

टीका—जो पुष्पसे चूकर पत्तेपर गिरा ठहरा रहता है मीठा, खट्टा, कसेला उसको दाल मधु कहते हैं ॥ २१ ॥ दाल मधु पाकमें हलका, दीपन, कफहर्ता कहा है और पीछे कसेला, रूखा, रुचिको करनेवाला और वमन तथा प्रमेहको हरनेवाला है ॥ २२ ॥ बहुत मीठा, चिकना, पुष्टि करनेवाला और तोलमें भारी होता है ॥ २३ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ नूतनानूतनमधुगुणाः ।

नवं मधु भवेत्पुष्ट्यै नातिश्लेष्महरं सरम् ।
पुराणं ग्राहकं रूक्षं मेदोघ्नमतिलेखनम् ॥ २४ ॥
मधुनः शर्करायाश्च गुडस्यापि विशेषतः ।
एकसंवत्सरेऽतीते पुराणत्वं स्मृतं बुधैः ॥ २५ ॥

टीका—नया मधु पुष्ट होता है, बहुत कफहर्ता नहीं होता तथा सर होता है. पुराना काबिज, रूखा, मेदहर्ता, अतिलेखन होता है ॥ २४ ॥ मधु, शर्करा और विशेष करके गुड ये एक बरसके बाद पुराने होते हैं ऐसा पंडितोंने कहा है ॥ २५ ॥

अथ शीतोष्णमधुगुणाः ।

विषपुष्पादपि रसं सविषा भ्रमरादयः ।
गृहीत्वा मधु कुर्वन्ति तच्छीतं गुणवन्मधु ॥ २६ ॥
विषान्वयात्तदुष्णं तु द्रव्येणोष्णेन वा सह ।
उष्णार्तस्योष्णकाले च स्मृतं विषसमं मधु ॥ २७ ॥

टीका—अनंतर शीतमधुका गुणाधिक्य और उष्णतामें निषेध कहते हैं—विषपुष्पसे भी रसको विषवाले भ्रमरादिक लेकर मधु करते हैं तिससे शीतगुणवाला मधु होता है ॥ २६ ॥ विषसे उत्पन्न होनेसे उष्ण वह मधु, उष्ण द्रव्यके साथ उष्णसे पीडितको उष्णकालमें विषके समान कहा है ॥ २७ ॥

अथ मयननामगुणाः ।

मयनं तु मधूच्छिष्टं मधुशेषं च सिक्थकम् ।
मध्वाधारो मदनकं मधूषितमपि स्मृतम् ॥ २८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मदनं मृदु सुस्निग्धं भूतघ्नं व्रणरोपणम् ।
भग्नसन्धानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित् ॥ २९ ॥
इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे मधुवर्गः समाप्तः ।

टीका—मयन, मधूच्छिष्ट, मधुशेष, सिक्थक, मध्वाधार, मदनक, मधूषित, ये मोम के नाम कहे हैं ॥ २८ ॥ मोम मृदु, चिकना, भूतको हरता, व्रणरोपण, टूटे हाड़को जोड़नेवाला, वात कुष्ठ वीसर्प रक्त इनको हरनेवाला है ॥ २९ ॥

इति हरीतक्यादिनिघण्टे भाषाटीकायां मधुवर्गः समाप्तः ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ

हरीतक्यादिनिघण्टे

इक्षुवर्गः ।

तत्र इक्षोर्नामानि गुणाश्च ।

इक्षुर्दीर्घच्छदः प्रोक्तस्तथा भूमिरसोऽपि च ।
गूढमूलोऽसिपत्रश्च तथा मधुतृणः स्मृतः ॥ १ ॥
इक्षवो रक्तपित्तघ्ना बल्या वृष्या कफप्रदाः ।
स्वादुपाकरसाः स्निग्धा गुरवो मूत्रला हिमाः ॥ २ ॥

टीका—अनन्तर इक्षुका वर्ग। उसमें ईखके नाम और गुण–इक्षु, दीर्घच्छद, भूमिरस, गूढमूल, असिपत्र, मधुतृण, ये ईखके नाम हैं ॥ १ ॥ ईख रक्तपित्तको हरती, हित, बलको और शुक्रको करनेवाली, कफको करनेवाली, पाक और रसमें मधुर, चिकनी, भारी, मूत्रको करनेवाली तथा शीतल है ॥ २ ॥

अथेक्षुभेदाः ।

पौण्ड्रको भीरुकश्चापि वंशकः शतपोरकः ।
कान्तारस्तापसेक्षुश्च काण्डेक्षुः सूचिपत्रकः ॥ ३ ॥
नैपालो दीर्घपत्रश्च नीलपोरोऽथ कोशकः ।
मनोगुप्ता च इत्येता जातयस्तत्र कीर्तिताः ॥ ४ ॥

टीका—पौण्ड्रक, भीरुक, वंशक, शतपोरक, कान्तार, तापसेक्षु, काण्डेक्षु, सूचिपत्रक ॥ ३ ॥ नैपाल, दीर्घपत्र, नीलपोर, कोशक और मनोगुप्ता इस प्रकार ये ईखकी जाति हैं. अब गुणोंको कहते हैं ॥ ४ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ पौण्ड्रकभीरुकयोर्गुणाः ।

वातपित्तादिशमनो मधुरो रसपाकयोः ।
सुशीतो बृंहणो बल्यः पौण्ड्रको भीरुकस्तथा ॥ ५ ॥

टीका--वात पित्तके शमन, मधुर, रस और पाकमें सुशीत, पुष्ट, बलको हित पौंडा और भौररी होते हैं ॥ ५ ॥

अथ कोशकारगुणाः।

कोशकारो गुरुः शीतो रक्तपित्तक्षयापहः ।

टीका—अनन्तर काले गन्नेके गुण-काला गन्ना भारी, शीतल, रक्तपित्त क्षय इनको हरता है.

अथ कान्तारेक्षुगुणाः।

कान्तारेक्षुर्गुरुर्वृष्यः श्लेष्मलो बृंहणः सरः ।

टीका—कान्तार इखके गुण-कान्तार ईख भारी, शुक्रको करनेवाला, कफको करनेवाला, पुष्ट, सर होता है.

अथ दीर्घपत्रगुणाः ।

दीर्घपत्रः सुकठिनः सक्षारो वंशकः स्मृतः ॥६ ॥

टीका—अनन्तर लंबी पोरका ईख बहुत कठिन; क्षारके सहित वंशक कहा-गया है ॥ ६ ॥

अथ शतपर्वगुणाः ।

शतपर्वा भवेत्किंचित्कोशकारगुणान्वितः ।
विशेषात्किश्चिदुष्णश्च सक्षारः पवनापहः ॥ ७॥

टीका—अनंतर शतपोरका गुण-शतपोर कुछ कोशकारके समान गुणमें होता है. विशेषकरके कुछ गरम, क्षारके सहित वात हरता है ॥ ७ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ तापसेक्षुगुणाः ।

तापसेक्षुर्भवेन्मृद्धी मधुरा श्लेष्मकोपनी ।
तर्पणी रुचिकृच्चापि वृष्या च बलकारिणी ॥ ८ ॥

टीका—अनन्तर तापसेक्षुके गुण—तापसेक्षु मुलायम, मधुर, कफके कोपको करानेवाला, तर्पण, रुचिको करनेवाला, शुक्रको करनेवाला, बलको करनेवाला है ॥ ८ ॥

अथ काण्डेक्षुगुणाः ।

एवं गुणैस्तु काण्डेक्षुः स तु वातप्रकोपनः ॥ ९ ॥

टीका—काण्डेक्षुका गुण—ऐसेही गुणवाला काण्डेक्षु होता है और वह वातको करनेवाला है ॥ ९ ॥

अथ सूचीपत्र-नीलपोर-नैपाल-दीर्घपत्रगुणाः ।

सूचीपत्रा नीलपोरा नैपाला दीर्घपत्रकाः ।
वातलाः कफपित्तघ्नाः सकषाया विदाहिनः ॥ १० ॥

टीका—अनन्तर सूचीपत्र, नैपाली, दीर्घपत्र, नीलपोर, इनके गुण—सूचीपत्र, नीलपोर, नैपाल, दीर्घपत्र, ये वातको करनेवाले, कफपित्तको हरते, कषायके सहित, विदाही होते हैं ॥ १० ॥

अथ मनोगुप्तागुणाः ।

मनोगुप्ता वातहरी तृष्णामयविनाशिनी ।
सुसीता मधुरातीव रक्तपित्तप्रणाशिनी ॥ ११ ॥

टीका—मनोगुप्ताके गुण—मनोगुप्ता वात हरती, तृषारोगको हरती, शीतल, मधुर, अतीव रक्तपित्तको हरती है ॥ ११ ॥

अथ बालादीक्षुगुणाः ।

बालइक्षुः कफं कुर्यान्मेदोमेहकरश्च सः ।
युवा तु वातहृत्स्वादुरोषत्तीक्ष्णश्च पित्तनुत् ॥
रक्तपित्तहरो वृद्धः क्षतहृद्बलवीर्यकृत् ॥ १२ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका-अनन्तर बाल, युवा ,वृद्ध ऐसे ईखके गुण-बाल ईख कफको करता है और मेदमेहको करनेवाला है. युवा वात हरता, मधुर, थोड़ा तीखा, पित्त हरता है. वृद्ध रक्तपित्तको हरता, क्षत हरता और बलवीर्यको करनेवाला है ॥ १२ ॥

अथाङ्गभेदेनेक्षुगुणभेदाः ।

मूले तु मधुरोऽत्यर्थं मध्येऽपि मधुरः स्मृतः ।
अग्रे ग्रन्थिषु विज्ञेय इक्षुः पटुरसो जनैः ॥ १३ ॥

टीका—अब अंगभेदसे भेद-मूलमें अत्यंत मधुर, मध्यमें भी मधुर कहा है. अग्रमें और ग्रन्थिमें ईख लवणरस कहा है ॥ १३ ॥

अथ दन्तयन्त्रादिपीडितेक्षुरसस्य गुणाः।

दन्तनिष्पीडितस्येक्षो रसः पित्तास्रनाशनः ।
शर्करासमवीर्यः स्यादविदाही कफप्रदः ॥ १४ ॥
मूलाग्रजन्तुग्रन्थ्यादि-पीडनान्मलसङ्करात् ।
किंचित्कालविधृत्या च विकृतिं याति यान्त्रिकः
तस्माद्विदाही विष्टम्भी गुरुः स्याद्यान्त्रिको रसः ॥ १५ ॥

टीका—अब दन्तपीडित ईखके रसका गुण-दन्तपीडित ईखका रस रक्तपित्तको हरता है, शर्कराके सम वीर्य होता है, अविदाही, कफको करनेवाला है ॥ १४ ॥ अनंतर कोल्हूमें पेरेहुए ईखके रसका गुण- मूल अग्र गांठ आदिके पीडनसे, मलसंकरसे, कुछ देर रखनेसे कोल्हूका रस बिगड़ जाता है इस वास्ते विदाही, विष्टंभी, भारी, होता है ॥ १५ ॥

अथ पर्युषितरसगुणाः ।

रसः पर्युषितो नेष्टो ह्यम्लो वातापहो गुरुः ।
कफपित्तकरः शोषी भेदनश्चातिमूत्रलः ॥ १६ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—अनंतर बासीईखके रसका गुण–बासी रस अच्छा नहीं होता और खट्टा, वात हरता, भारी, कफपित्तको करनेवाला, शोष करनेवाला, भेदन और बहुत मूत्र उतारनेवाला है ॥ १६ ॥

अथ पक्करसगुणाः ।

पक्को रसो गुरुः स्निग्धः सुतीक्ष्णः कफवातनुत् ।
गुल्मानाहप्रशमनः किंचित्पित्तकरः स्मृतः ॥ १७ ॥

टीका—अनन्तर पकेहुए ईखके रसका गुण– पकेका रस भारी, चिकना, तीखा, कफवातको हरता और बायगोला अफारा इनका शमन करनेवाला, कुछ पित्तको करनेवाला कहा है ॥ १७ ॥

अथेक्षुविकारगुणाः ।

इक्षोर्विकारास्तृड्दाहमूर्च्छापित्तास्रनाशनाः ।
गुरवो मधुरा बल्याः स्निग्धा वातहराः सराः ।
वृष्या मोहहराः शीता बृंहणा विषहारिणः ॥ १८ ॥

टीका—अब ईखके रसके विकारोंका गुण—ईखके विकार तृषा दाह मूर्च्छा रक्तपित्त इनको हरते हैं; भारी, मधुर, बलको हित, चिकने, वात हरते, सर हैं; शुक्रको करनेवाले, मोह हरते, शीतल, पुष्ट, विष हरते हैं ॥ १८ ॥

अथ फाणितस्य (राबके) लक्षणगुणाः ।

इक्षो रसस्तु यः पक्कः किंचिद्गाढो बहुद्रवः ।
स एवेक्षुविकारेषु ख्यातः फाणितसंज्ञया ॥ १९ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फाणितं गुर्वभिष्यन्दि बृंहणं कफशुक्रकृत् ।
वातपित्तश्रमान् हन्ति मूत्रबस्तिविशोधनम् ॥ २० ॥

टीका—अनन्तर राबका लक्षण और गुण—ईखका रस पकाहुआ कुछ गाढ़ा, बहुत पतला ईखके विकारोंमें फाणित (राब) नामसे प्रसिद्ध है ॥ १९ ॥ राब भारी, अभिष्यन्दी, पुष्ट, कफ शुक्रको करनेवाली वातपित्तश्रमोंको हरती है और मूत्र बस्तिशोधन है ॥ २० ॥

अथ मत्स्यण्डी (मींजा) लक्षणगुणाः ।

इक्षो रसो यः सम्पक्वो घनः किञ्चिद्द्रवान्वितः ।
मन्दं यत्स्पन्दते तस्मात्तन्मत्स्यण्डी निगद्यते ॥ २१ ॥
मत्स्यण्डी भेदिनी बल्या लघ्वी पित्तानिलापहा ।
मधुरा बृंहणी वृष्या रक्तदोषापहा स्मृता ॥ २२ ॥

टीका—ईखका रस जो पकाहुआ गाढ़ा, कुछ पतला जो थोड़ा टिघलता है इसवास्ते उसको मत्स्यंडी कहते हैं ॥ २१ ॥ मत्स्यंडी भेदन, बलको हित, हलकी, पित्तवातको हरती, मधुर, पुष्ट, शुक्रको करनेवाली, रक्तदोषको हरती कही है ॥ २२ ॥

अथ गुडलक्षणगुणाः ।

इक्षो रसो यः सम्पक्वो जायते लोष्टवद्दृढः ।
स गुडो गौडदेशे तु मत्स्यण्डयेव गुडो मतः ॥ २३ ॥
गुडो वृष्यो गुरुः स्निग्धो वातघ्नो मूत्रशोधनः ।
नातिपित्तहरो मेदःकफकृमिबलप्रदः ॥ २४ ॥

टीका—ईखका रस जो पकाहुआ ढेलेके माफिक दृढ होता है वह गुड है. और गौडदेशमें मत्स्यंडीको ही गुड कहते हैं ॥ २३ ॥ गुड शुक्रको करनेवाला,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भारी, चिकना, वात हरता, मूत्रका शोधन करनेवाला न अति पित्तको हरता, मेद कफ कृमि बल इनको करनेवाला है ॥ २४ ॥

अथ जीर्णगुडगुणाः ।

गुडो जीर्णो लघुः पथ्योऽनभिष्यन्द्यग्निपुष्टिकृत् ।
पित्तघ्नो मधुरो वृष्यो वातघ्नोऽसृक्प्रसादनः ॥२५ ॥

टीका—अनन्तर पुराने गुडका गुण-पुराना गुड हलका, पथ्य, अनभिष्यन्दी, अग्नि पुष्टिको करनेवाला, पित्त हरता, मधुर, शुक्रको करनेवाला, वात हरता, रुधिरको स्वच्छ करनेवाला है ॥ २५ ॥

अथ नवीनगुडस्य गुणाः ।

गुडो नवः कफश्वासकासक्रिमिकरोऽग्निकृत् ॥ २६ ॥

टीका—नया गुड कफ कास श्वास कृमिको करनेवाला, अग्निदीपन है ॥ २६ ॥

अथानुपानभेदेन गुडगुणभेदाः ।

श्लेष्माणमाशु विनिहन्ति सदार्द्रकेण
पित्तं निहन्ति च तदेव हरीतकीभिः ।
शुण्ठ्या समं हरति वातमशेषमित्थं
दोषत्रयक्षयकराय नमो गुडाय ॥ २७ ॥

टीका—गुड अद्रकके साथ शीघ्र कफको हरता है, हरड़के साथ पित्तको हरता, सोंठके साथ अशेष वातको हरता है. ऐसे त्रिदोषहर्ता गुडको नमस्कार है ॥ २७ ॥

अथ खण्ड (खांड) गुणाः ।

खण्डं तु मधुरं वृष्यं चक्षुष्यं बृंहणं हिमम् ।
वातपित्तहरं स्निग्धं बल्यं वान्तिहरं परम् ॥ २८ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टीका—खांड मधुर, शुक्रको करनेवाली, नेत्रको हित, पुष्ट, शीतल, वात पित्तको हरती, चिकनी, बलको हित, परम वमनको हरती है ॥ २८ ॥

अथ शर्करा (चीनी, बूरा) गुणाः ।

खण्डं तु सिकतारूपं सुश्वेतं शर्करा सिता ॥ २९ ॥
सिता सुमधुरा रुच्या वातपित्तास्रदाहहृत् ।
मूर्च्छाछर्दिज्वरान् हन्ति सुशीता शुक्रकारिणी ॥ ३० ॥

टीका—अनन्तर जो चीनी इसप्रकार लोकमें प्रसिद्ध है, उसका लक्षण और गुण-खांड तो बालूसरीखी होती है और बहुत सुफेद शर्कराको चीनी कहते हैं ॥ २९ ॥ चीनी बहुत मधुर, रुचिको करनेवाली और वात रक्त पित्त दाह इनको हरनेवाली है और मूर्च्छा ज्वर वमन इनको हरती है. बहुत शीतल, शुक्रको करनेवाली है ॥ ३० ॥

अथ पुष्पासिता (सफेदबूरा) गुणाः ।

भवेत्पुष्पसिता शीता रक्तपित्तहरी लघुः ।

टीका—अब गुडशर्कराके गुण-गुडशर्करा (सफेद बूरा) शीतल, रक्तपित्तको हरती, हलकी होती है.

अथ सितोपला (मिश्री) गुणाः ।

सितोपला सरा लघ्वी वातपित्तहरी हिमा ॥ ३१ ॥

टीका—मिश्री सर, हलकी, वातपित्तको हरती, शीतल है ॥ ३१ ॥

अथ मधुजशर्करागुणाः ।

मधुजा शर्करा रूक्षा कफपित्तहरी गुरुः ।
छर्द्यतीसारतृड्दाहरक्तहृत्तुवरा हिमा ॥ ३२ ॥

टीका—अनन्तर मधुखण्डके गुण-मधु (शहद) की शर्करा रूखी, कफ पित्तको हरती, भारी, वमन अतीसार तृषा दाह रक्त इनको हरती, कसेली, शीतल होती है ॥ ३२ ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परिभाषा ।

यथा यथैषां नैर्मल्यं मधुरत्वं तथा तथा ।
स्नेहलाघवशैत्यादि सरत्वं च तथा तथा ॥ ३३ ॥

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टे इक्षुवर्गः समाप्तः ।

टीका—शकर-जैसी जैसी सफाई होती है वैसी वैसी मधुरता और चिकनाई हलकापन, शैत्य और सरसत्व आदि शकरमें होते हैं ॥ ३३ ॥

इति हरीतक्यादिनिघण्टे इक्षुवर्गः समाप्तः ।

पं० जयनारायण कपूरिया वैद्य
६०, गाँधी गली, देहली-६

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्रीः ।

अथ

हरीतक्यादिनिघण्टे

अनेकार्थनामवर्गः ।

तत्र व्द्यर्थानि नामानि ।

यथा । अश्मन्तकः–अम्ललोणिका, कोविदारश्च । कठिल्लकः–कारवेल्लः, रक्तपुनर्नवा च । कुलकः–पटोलः, कुपीलुश्च । कुपीलुः 'कुचिला' इति लोके प्रसिद्धः । कोशातकी–महाकोशातकी, राजकोशातकी च । दीप्यकः–यवानी, अजमोदा च । मरुबकः–फणिज्जकः, पिण्डीतकश्च । मरुबकः 'मरुषा' इति लोके । पिण्डीतकः 'मयनफर' इति लोके । मधूलिका–मूर्वा, जलयष्टी च । रुचकम्–सौवर्चलम्, बीजपूरकं च। लोणिका-लोणीशाकम्, चाङ्गेरीशाकं च। वस्तुकः–रक्तार्कः, क्षारलवणश्च । बाल्हीकम्–कुङ्कुमम्, हिङ्गु च। वितुन्नकम्–धान्याकम्, तुत्थं च। स्वादुकण्टकः गोक्षुरः विकङ्कतश्च। अग्निमुखी-भल्लातकी, लाङ्गली च । अग्निशिखम्–कुङ्कुमम्, कुसुम्भश्च । अजशृङ्गी–मेषशृङ्गी, कर्कटशृङ्गी च । प्रियङ्गुः–फलिनी, कङ्गुश्च । भृङ्गः–भृङ्गराजः, त्वक्च । समङ्गा–मञ्जिष्ठा, लज्जालुश्च । अमोघा–विडङ्गम्, पाटला च ।

टीका––अब अनेकार्थनामवर्गमें दो अर्थ वाले नाम कहते हैं । जैसे–

अश्मन्तक–लोनिया साग और लाल कचनार । इन दोनोंका यह एक नाम है. (ऐसेही सर्वत्र समझना.)

कठिल्लक–लाल गदह पूरना और करेला ।

कुलक––पटोल और कुचिला ।

कोशातकी–दोनों तुरई ।

दीप्यक–अजमोदा और अजमाइन ।

मरुबक–मरसा और मयनफल ।

मधूलिका–मरोड़फली और जलयष्टी ।

रुचक–सोचल और बिजोरा ।

लोणिका–लोनिया और चूक ।

वस्तुक–लाल आक और खारी नमक ।

बाल्हीक–केसर और हींग ।

वितुन्नक–धनिया और लीलाथोथा ।

स्वादुकण्टक–गोखरू और विकङ्कत ।

अग्निमुखी–भिलावां और करिहारी ।

अग्निशिख–केसर और कुसुम ।

अजशृङ्गी–मेढ़ासींगी और काकड़ासींगी.

प्रियङ्गु–कगुंनी और फूलप्रियङ्गु.

भृङ्ग–भांगरा और दालचिनी ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मोचा—कदली, शाल्मलिश्च । कुटन्नटः—स्योनाकः, कैवर्तीमुस्तं च । कुनटी—धनिका, मनःशिला च । घोण्टा—पूगः, बदरी च । त्रिपुटा—त्रिवृत्, सूक्ष्मैला च । शटी—कर्चूरः, गन्धपलाशी च । दन्तशठः—जम्बीरः, कपित्थं च । दन्तशठा—अम्लिका, चाङ्गेरी च । अरुणम्—मञ्जिष्ठा, अतिविषा च । कणा—पिप्पली, जीरकं च । तालपर्णी—मुशली, मुरा च । पीलुपर्णी—मूर्वा, बिम्बी च । ब्राह्मणी—भार्ङ्गी, स्पृक्का च । अपराजिता—विष्णुक्रान्ता, शालिपर्णी च । आस्फोता—अपराजिता, सारिवा च । पारावतपदी—ज्योतिष्मती, काकजङ्घा च । शारदी—सारिवा, जलपिप्पली च । उग्रगन्धा—वचा, यवानी च । परिव्याधः—कर्णिकारः, जलवेतसश्च । अञ्जनम्—स्रोतोऽञ्जनं, सौवीरश्च । अग्निः—चित्रकः, भल्लातश्च । कृमिघ्नः—विडङ्गः, हरिद्रा च । तेजनः—शरः, वेणुश्च । तेजनी—तेजस्वती, मूर्वा च । रोचनः—कम्पिल्लः, रोचना च । (रोचना—गोरोचना ।) राजादनम्—क्षीरिका, प्रियालश्च । शकुलादनी—कटुका, जलपिप्पली च । गोलोमी—श्वेतदूर्वा, वचा च । पद्मा—पद्मचारिणी, भार्ङ्गी च । श्यामा—सारिवा प्रियङ्गुश्च । धान्यम्—धान्याकम्, शाल्यादि च । सहस्रवीर्या—नीलदूर्वा, महाशतावरी च । सेव्यम्—उशीरम्, लामज्जकं च । उदुम्बरः—जन्तु-

समङ्गा—मजीठ और छुईमुई (लाजालु) ।
अमोघा—बायबिडंग और पाटला ।
मोचा—केला और सेमल ।
कुटन्नट—सोनापाठा और जलमोथा ।
कुनटी—धनिया और मैनसिल ।
घोण्टा—सुपारी और बेर ।
त्रिपुटा—निसोथ और छोटी इलायची ।
शटी—कचूर और गन्धपलाशी ।
दन्तशठ—जंबीरी और कैथ ।
दन्तशठा—इमली और चूक ।
अरुण—मजीठ और अतीस.
कणा—पीपल और जीरा ।
तालपर्णी—मुसली और मुरा ।
पीलुपर्णी—मरोड़फली और कुन्दुरू ।
ब्राह्मणी—भारंगी और स्पृक्का ।
अपराजिता—विष्णुक्रान्ता और सालपर्णी ।
आस्फोता—कुरंट और सारिवा ।
पारावतपदी—मालकांगनी और काकजंघा ।
शारदी—सारिवा और जलपीपल ।
उग्रगन्धा—वच और अजमायन ।
परिव्याध—अमलतास और जलबेत ।
अंजन—रसौत और सुरमा ।
अग्नि—चित्रक और भिलावां ।
कृमिघ्न—बायबिडंग और हलदी ।
तेजन—शरपत और बांस ।
तेजनी—मरोड़फली और मालकांगनी ।
रोचन—खूबकला और गोरोचन ।
राजादन—खिरनी और चिरोंजी ।
शकुलादनी—कुटकी और जलपीपल ।
गोलोमी—सफेद दूब और बच ।
पद्मा—कमलिनी और भारंगी ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फलम्, ताम्रं च। ऐन्द्री–इन्द्रवारुणी, इन्द्राणी च। कटम्भरा–कटुका, स्योनाकं च। क्षारः–यवक्षारः, स्वर्जिका च। गण्डीरः–गण्डारी (शाकविशेषः 'गण्डिनी' इति लोके।), मञ्जिष्ठा च। गन्धारी–दुरालभा, गन्धपलाशी च। चित्रा–इन्द्रवारुणी, बृहद्दन्ती च। तुण्डिकेरी–कार्पासी, बिम्बी च। धारा–गुडूची, क्षीरकाकोली च। बालपत्रः–खदिरः, यवासश्च। वारि–बालकम्, उदकं च। अङ्गारवल्ली– भार्ङ्गी, गुञ्जा च। अमृणालम्—लामज्जकम्, उशीरं च। कुण्डली–गुडूची, कोविदारश्च। गन्धफली–प्रियङ्गुः, चम्पककलिका च। दीर्घमूलः–यवासः, शालिपर्णी च। पिच्छिला–शाल्मली, शिंशिपा च। पुष्पफलः–कपित्थः कूष्माण्डश्च। पोटगलः–नलः, काशश्च। यवफलः–कुटजः, वंशश्च। देवी–मूर्वा, स्पृक्का च। विश्वा–शुण्ठी, अतिविषा च। शीतशिवम्–सैन्धवम्, मिश्रेया च। कर्कशः–काम्पिल्लः, कासमर्दश्च। चर्मकषः–शातला, मांसरोहिणी च। नन्दिवृक्षः–अश्वत्थभेदः गोमुखपत्रशाखः ('बेलिया पीपर' इति लोके।), तुणिश्च। पयः–क्षीरम्, उदकं च। रुहा–दूर्वा, मांसरोहिणी च। सिंही–बृहती, वासा च।

अथ त्र्यर्थानि नामानि।

क्रमुकः–पूगः, तूदः, पट्टिकालोध्रश्च। क्षुरकः–

श्यामा–सारिवा और प्रियंगु।
धान्य–धनिया और धान।
सहस्रवीर्या–नीली दूब और बड़ी सतावर।
सेव्य–खस और पीली खस।
उदुंबर–गूलर और ताम्बा।
ऐन्द्री–इन्द्रायन और इन्द्राणी।
कटंभरा–कुटकी और सोनापाठा।
क्षार–जवाखार और सज्जीखार।
गण्डीर–गांडर और मजीठ।
गन्धारी–जवासा और गन्धपलाशी।
चित्रा–इन्द्रायन और बड़ी दन्ती।
तुंडिकेरी–कपासी और कुन्दुरू।
धारा–गिलोय और क्षीरकाकोली।
वालपत्र–खैर और जवासा।
वारि–सुगंधबाला और जल।
अंगारवल्ली–भारंगी और घोंघची।
अमृणाल–पीली खस और खस।
कुण्डली–गिलोय और लाल कचनार।
गंन्धफली–प्रियंगु और चंपककलिका।
दीर्घमूल–जवासा और शालिपर्णी।
पिच्छिला–सेमल और सीसम।
पुष्पफल–कैथा और पेठा।
पोटगल–नल और कास।
यवफल–कुरैया और बांस।
देवी–मरोड़फली और स्पृक्का।
विश्वा–सोंठ और अतीस।
शीतशिव–सेंधा और मिश्रेया।
कर्कश–कबीला और कसौंदी।
चर्मकषा–सीकाकाई और मांसरोहिणी।
नन्दिवृक्ष–पीपलका भेद और तुन,
पय–दूध और पानी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कोकिलाक्षः,गोक्षुरः, तिलकनामपुष्पविशेषश्च । प्रियकः–प्रियङ्गुः,कदम्बः,असनश्च । पृथ्वीका-कालाजाजी, बृहदेला, हिङ्गुपत्री च । भूतीकम्–भूनिम्बम्, कत्तृणम्,भूस्तृणं च । सोमवल्कः–कट्फलः, श्वेतखदिरः, घृतपूर्णकरञ्जश्च । सौगन्धिकम्–कह्लारम्, कत्तृणम्, गन्धकं च । भृङ्गः–भृङ्गराजः, त्वक्,भ्रमरश्च । अरिष्टः–निम्बः,रसोनम्, मद्यं च । मर्कटी–कपिकच्छूः, अपामार्गः, करञ्जी च । अम्बष्ठा–पाठा, चाङ्गेरी, मांचिका च । कृष्णा–पिप्पली, कालाजाजी, नीली च । क्षीरिणी–दुग्धिका, क्षीरकाकोली, श्वेतसारिवा च । मधुपर्णी–गुडूची, गम्भारी, नीला च । मण्डूकपर्णः–स्योनाकः (पुं०) स्त्रियां तु मञ्जिष्ठा, ब्रह्ममाण्डूकी च । श्रीपर्णी–गम्भारी, गणिकारिका, कट्फलं च । अमृता–गुडूची, हरीतकी, धात्री च । अनन्ता–दुरालभा, नीलदूर्वा, लाङ्गली च । ऋष्यप्रोक्ता– अतिबला, महाशतावरी, कपिकच्छूश्च । कृष्णवृन्ता–पाटली, गम्भारी, माषपर्णी च । जीवन्ती–गुडूची, शाकविशेषः, वन्दा च । लता–सारिवा, प्रियङ्गुः, ज्योतिष्मती च । समुद्रान्ता–दुरालभा, कार्पासी, स्पृक्का च । हैमवती–हरीतकी, श्वेतवचा, पीतदुग्धः सेहुण्डश्च (यस्य मूलं चोक इति प्रसिद्धम्) । अव्यथा–हरीतकी,महाश्रावणी, पद्मचारिणी च । षड्ग्रन्था–वचा, गन्धपलाशी, करञ्जी च । वरदा–सुव-

रुहा–दूर्वा और मांसरोहिणी ।
सिंही–कटेली और वासा ।

तीन अर्थवाले नाम ।

क्रमुक–सुपारी, सहतूत और पठानी लोध ।
क्षुरक–मखाना, गोखरू और तिलकनाम पुष्पविशेष ।
प्रियक–प्रियंगु, कदंब और असन ।
पृथ्वीका—स्याह जीरा, बड़ी इलायची और हिंगुपत्री ।
भूतिक–चिरायता, कत्तृण और भूस्तृण ।
सोमवल्क–कायफर, सफेद कत्था और घृतपूर्ण करंज ।
सौगन्धिक–कह्लार, कत्तृण, और गन्धक ।
भृङ्ग—भांगरा, त्वक् और भौंरा ।
अरिष्ट—नीम, लहसन और मद्य ।
मर्कटी–किमाच, अपामार्ग और करंजी ।
अम्बष्ठा–पाटला, चोक और किमाच ।
कृष्णा–पीपल, काला जीरा और नील ।
क्षीरिणी–दुग्धी, क्षीरकाकोली और श्वेतसारिवा।
मधुपर्णी—गिलोय, कुम्हेरन और नील ।
मण्डूकपर्णी–सोनापाठा, मजीठ और ब्राह्मी ।
श्रीपर्णी–कुम्हेरन, अरनी और कायफल ।
अमृता–गिलोय, हरड़ और आंवला ।
अनंता–जवासा, नीलदूर्वा और लांगली ।
ऋष्यप्रोक्ता–अतिबला, बड़ी सतावर और किमाच ।
कृष्णवृन्ता–पाटली, कुम्हेरन और माषपर्णी ।
जीवन्ती–गिलोय, शाकविशेष और बन्दा ।
लता–सारिवा, प्रियंगु और मालकांगनी ।
समुद्रान्ता–जवासा, कार्पासी और स्पृक्का ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चेला (दुरद्दुर इति लोके ।), अश्वगन्धा, वाराही (गेठीति लोके ।) च । इक्षुगन्धा–काशः, कोकिलाक्षः, गोक्षुरः, क्षीरविदारी च । कालस्कन्धः–तमालः, तिन्दुकम्, कालखदिरश्च । महौषधम्–शुण्ठी, रसोनः, विषं च । मधु–क्षौद्रम्, पुष्परसः, मद्यं च । कपीतनः–आम्रातकः, शिरीषः, गर्दभाण्डश्च । मदनः–पिण्डीतकः, धत्तूरः, सिक्थकं च । शतपर्वा–वंशः, दूर्वा, वचा च । सहस्रवेधी–अम्लवेतसः, मृगमदः, हिङ्गु च । ताम्रपुष्पी-धातकी, पाटला, श्यामा त्रिवृच्च । सदापुष्पः–श्वेतार्कः, रक्तार्कः, कुन्दश्च । सुरभी–सल्लकी, मुरा, एलावालुकं च । लक्ष्मीः–ऋद्धिः, वृद्धिः, शमी च । कालानुसार्यम्–कालीयकम्, तगरम्, शैलेयं च । चाम्पेयः–चम्पकः, नागकेशरः, पद्मकेशरश्च । नादेयी–गणिकारिका, जलजम्बूः, जलवेतसी च । पाक्यम्–बिडम्, सौवर्चलम्, यवक्षारश्च । विशल्या–लाङ्गुली, गुडूची, लघुदन्ती च । इन्द्रद्रुः–ककुभः, देवदारुः, कुटजश्च । काश्मीरम्–कुङ्कुमम्, पुष्करमूलम्, गम्भारी च । काश्मीरी–गुन्द्रः, पटेरकः, शरश्च । गुन्द्रा–प्रियङ्गुः, भद्रः, मुस्तकश्च । चुक्रम्–चुक्रम्, अम्लवेतसम्, वृक्षाम्लश्च । पारिभद्रः–निम्बः, पारिजातः, देवदारुश्च । पीतदारु–हरिद्रा, देवदारुः, सरलश्च । वीरः–ककुभः, वीरणम्, काकोली च । वीरतरुः–ककुभः, वीरणम्, शरश्च ।

हैमवती–हरीतकी, सफेद बच और पीले दूधवाला सेहुण्ड (जिसकी जड़को ‘ चोक ’ ऐसा कहते हैं । इस वृक्षको कहीं २ ‘ करुआ ’ भी कहते हैं.) ।

अव्यथा–हरीतकी, बड़ी मुंडी और पद्मचारिणी ।

षड्ग्रन्था–बच , गन्धपलाशी और करंज ।

वरदा–दुरदुर, असगन्ध और सुथनी ।

इक्षुगन्धा–काश, तालमखाना, गोखरू और क्षीरविदारी ।

कालस्कंध–तमाल, तेन्दू और काला खदिर ।

महौषध–सोंठ, लहसन और विष ।

मधु–क्षौद्र, पुष्परस और मद्य ।

कपीतन–अम्बाड़ी, सिरिस और पिलखन ।

मदन–मैनफल, धतूरा और मोम ।

शतपर्वा–बांस, दूब और बच ।

सहस्रवेधी–अमलबेत, कस्तूरी और हींग ।

ताम्रपुष्पी–धव, पाटला और काली निसोथ ।

सदापुष्प–सफेद आक, लाल आक और कुन्द ।

सुरभी–सलई, मरोड़फली और एलवालुक ।

लक्ष्मी–ऋद्धि, वृद्धि और शर्मा ।

कालानुसार्य–पीतचन्दन, तगर और शिलारस ।

चाम्पेय–चम्पा, नागकेसर और पद्मकेसर ।

नादेयी–अरनी, जलजामुन और जलबेत ।

पाक्य—बिड, सोचल और जवाखार ।

विशल्या—करिहारी, गिलोय और छोटी दन्ती ।

इन्द्रद्रु–अर्जुन, देवदार और कुरैया ।

काश्मीर–केसर, पुष्करमूल और कुम्हेरन ।

काश्मीरी–गुन्द्र, पटेरक , और शर ।

गुन्द्रा–प्रियंगु, बडा मोथा और मोथा ।

चुक्र–अमलबेत, चूक और वृक्षाम्ल ।

पारिभद्र–नीम, पारिजात और देवदार ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मयूरः–अपामार्गः, अजमोदा, तुत्थं च। रक्तसारः–रक्तचन्दनम्, पतङ्गम्, खदिरश्च। बदरा–सुवर्चला, अश्वगन्धा, वाराही च। वशिरः–रक्तापामार्गः, गजपिप्पली, सामुद्रलवणं च। सौवीरम्–अञ्जनभेदः, बदरम्, संधानभेदश्च। वञ्जुलः–अशोकः, वेतसः, तिनिशश्च। शिला–मनःशिला, जतु, गैरिकं च। सोमवल्ली–बाकुची, गुडूची, ब्राह्मी च। अक्षीबः–शोभाञ्जनः, महानिम्बः, सामुद्रलवणं च। कारवी–कालाजाजी, शताह्वा, अजमोदा च। धामार्गवः–रक्तापामार्गः, राजकोशातकी, महाकोशातकी च। दुःस्पर्शः–यवासः, कपिकच्छूः, कण्टकारी च।

पलाशः–किंशुकः, गन्धपलाशी, पत्रं च। कालमेषी–मञ्जिष्ठा, बाकुची, श्यामा त्रिवृच्च। पलंकषा-गुग्गुलुः, गोक्षुरः, लाक्षा च। मधुरसा–द्राक्षा, मूर्वा, गम्भारी च। रसा–रास्ना, शल्लकी, पाठा च। श्रेयसी–हरीतकी, रास्ना, गजपिप्पली च। लोहम्—अयः, कांस्यम्, अगरु च। सहा–मुद्गपर्णी, बलाभेदः (ककही इति लोके।), शतपत्री (सेवती गुलाब इति लोके।) च। रास्ना–नाकुली, नीलपुष्पः, सिन्दुवारश्च।

पीतदारु–हल्दी, देवदारु और सरई।
वीर—अर्जुन, वीरण और काकोली।
वीरतरु–अर्जुन, वीरण और सरपत।
मयूर–अपामार्ग, अजमोद और तूतिया।
रक्तसार—रक्तचन्दन, पतंग और खैर।
बदरा–सुवर्चला, असगन्ध, और वाराहीकन्द।
वशिर–लाल अपामार्ग, गजपीपल और खारी नमक।

सौवीर—अंजनभेद, बेर और सन्धानभेद।
वंजुल–अशोक, बेत और तिनिश।
शिला–मैनसिल, शिलाजीत और गेरू।
सोमवल्ली–बावची गिलोय और ब्राह्मी।
अक्षीब–सहिँजन, महानिम्ब और सामुद्रलवण।
कारवी–काला जीरा, सौंफ और अजमोदा।
धामार्गव–लाल अपामार्ग और दोनों तुरई।
दुःस्पर्श–जवासा, किमाच और कटेली।
पलाश–ढाक, गन्धपलाशी और पत्रज।
कालमेषी–मजीठ, बावची और काली निसोथ।

पलंकषा–गूगल, गोखरू और लाक्षा।
मधुरसा–दाख, मरोड़फली और कुम्हेरन
रसा–रास्ना, सलई और पाठा।
श्रेयसी–हरड, रास्ना और गजपीपल।
लोह–लोहा, कांसा और अगर।
सहा–मुद्गपर्णी, ककही और सेवती।
रास्ना–नाकुली, नीलपुष्प और सिन्दुवार।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ बह्वर्थानि नामानि ।

अक्षशब्दः स्मृतोऽष्टासु सौवर्चलविभीतके ।
कर्षपद्माक्षरुद्राक्षशकटेन्द्रियपाशके ॥ १ ॥
काकाख्यः काकमाची च काकोली काकणन्तिका ।
काकजङ्घा काकनासा काकोदुम्बरिकापि च ।
सप्तस्वर्थेषु कथितः काकशब्दो विचक्षणैः ॥ २ ॥
सर्पद्विरदमेषेषु सीसके नागकेशरे ।
नागबल्ल्यां नागदन्त्यां नागशब्दः प्रयुज्यते ॥ ३ ॥
मांसे द्रवे चेक्षुरसे पारदे मधुरादिषु ।
बालरोगे विषे नीरे रसो नवसु वर्तते ॥ ४ ॥

टीका—अनंतर बहुत अर्थवाले नाम-अक्षशब्द-आठ अर्थोंमें कहा है. जैसे सोचल, बहेड़ा, एक कर्ष (तोला), पदमाख, रुद्राक्ष, गाड़ीका अवयव, इन्द्रिय और चौपड़ आदि खेलनेका पासा. इसप्रकार अक्षशब्दके आठ अर्थ हैं ॥ १ ॥ काक शब्द—काकमाची, काकोली, गुञ्जा, काकजंघा, कौवा-ढोढी, कठिया गूलर और काक पक्षी इन सात अर्थोंमें काकशब्द बुद्धिमानोंने कहा है ॥२॥ नागशब्द-सांप, गज, मेंढा, सीसा, नागकेसर, नागबेल, नागदन्ती, इन अर्थोंमें नागशब्द कहा है ॥ ३ ॥ रस-मांस, द्रव वस्तु, ईखका रस, पारद, मधुरादिक रस, बालरोग, विष, जल और शृंगार आदि नव रस इन नव अर्थोंमें रसशब्द प्रसिद्ध है ॥ ४ ॥ इति हरीतक्यादिनिघंटकी भाषाटीका समाप्त।

इति हरीतक्यादिनिघण्टे नानार्थवर्गः ।

इति श्रीहरीतक्यादिनिघण्टः समाप्तः ।

Vaidyaraj Zinda Bhatji
National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
000031

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेद विद्यापीठ महाविद्यालय
दिल्ली

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection